वृन्द-ग्रंथावली

[कविवर वृन्द की अप्रकाशित मूल रचनाएं]

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता प्राप्त

सम्पादक

डा० जनार्दन राव चेलेर

एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच० डी०

हिन्दी-विभाग

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय

तिरुपति (आंध्र)

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

उस अभागिन माँ की
संजीवनी स्मृति को—

जिसने एक कुम्हलाते हुए पौधे को
जिलाने के लिए अपने सम्पूर्ण
जीवन का उत्सर्ग किया था।

—जनार्दन राव चेलेर

भूमिका

श्री वेंकटेश्वर विद्यालय (तिरुपति) मे जब स्नातकोत्तर हिन्दी-अध्ययन और शोध का कार्य आरम्भ हुआ, तब डा० जनार्दन राव चेलेर का नाम विभाग के प्रथम शोधार्थी के रूप मे पंजीकृत हुआ था। आज डा० चेलेर का स्वीकृत शोधप्रबंध प्रकाशित हो रहा है। यह मेरे लिए बडे हर्ष की बात है।

जब 'वृन्द और उनका साहित्य' विषय स्वीकृत हुआ, तब ऐसा अनुभव किया जाने लगा था कि सुदूर दक्षिण मे स्थित विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के लिए यह विषय अधिक उपयुक्त नही है। वृन्द की अल्पज्ञात या अज्ञात कृतियो का अनुसंधान यहाँ रहकर करना कठिन है, साथ ही शुद्ध ब्रजभाषा की रचनाओ का विश्लेषण एवं पाठानुसधान भी अधिक न्यायपूर्वक होना संभव नही है। डा० चेलेर ने जिस धैर्य एवं अध्यवसाय के साथ शोधकार्य संपन्न किया, वह उल्लेखनीय है। यह इस बात का प्रमाण है कि यदि अनुसधित्सु मनोयोग से कार्य मे प्रवृत्त होता है, तो कोई भी विषय उसके लिए उपयुक्त हो सकता है।

डा० चेलेर ने वृन्द की रचनाओ की खोज के लिए दो बार राजस्थान की यात्रा की। वृन्द के वंशजो से उन्होने सौहार्द बढाया। उनसे सामग्री भी प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त चेलेरजी ने राजस्थान के हस्तलिखित ग्रंथो के अन्य सग्रहो को भी देखा। राजस्थान के कई अधिकारी विद्वानो से उन्होने सम्पर्क स्थापित किया। फलत: वृन्द की प्राय सभी कृतियाँ एकत्र हो गयी। इनमे से कुछ रचनाए अल्पज्ञात थी। उनके केवल उल्लेख मिलते थे। कुछ अज्ञात रचनाएं भी प्राप्त हुई। वृन्द का मूल्याकन अब तक प्राय: नीति-कवि के रूप मे होता रहा था। प्राप्त कृतियो के आधार पर वृन्द का शृङ्गारी कवि के रूप मे भी व्यक्तित्व उभरने लगा। ऐतिहासिक मूल्य-महत्त्व की वचनिकाएँ भी प्रकाश मे आयी। इनके आधार पर तत्कालीन ऐतिहासिक परिवेश मे भी वृन्द का व्यक्तित्व भास्वर हो उठा। तात्पर्य यह कि वृन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व की अज्ञात परिधियाँ प्रकाश मे आयी।

यही नही, डा० चेलेर जी का शोधकार्य भी पूर्व निर्धारित सीमाओ से अधिक

विस्तृत होने लगा। वृन्द-ग्रंथावली की सम्भावना अब यथार्थ बन गयी थी। शोधकार्य के साथ इसका सम्पादन भी सम्बद्ध हो गया। प्रबंध का अवतरण अध्ययन और सम्पादन, इन दो धरातलो पर हुआ। शोध के ये दोनो ही धरातल स्वीकृत और प्रशसित हुए। इस प्रकार विभाग का प्रथम शोध-अनुष्ठान सम्पन्न हुआ।

वृन्द-ग्रंथावली का तो आकर-ग्रन्थ के रूप मे महत्त्व निर्विवाद है। इससे काव्यरूपो के सम्बन्ध मे वृन्द की प्रयोगशीलता भी सिद्ध होती है। वचनिका से जहाँ वृन्द की ऐतिहासिक चेतना सामने आती है, वहाँ राजस्थानी गद्य-साहित्य की दृष्टि से भी इस विधा का महत्त्व है। वृन्द-ग्रथावली मे रीतिकाल की सभी प्रवृत्तियाँ अपने-अपने वैशिष्ट्य के साथ प्रतिबिंबित मिलती हैं। वृन्द-ग्रंथावली के रूप मे चेलेरजी ने एक महत्त्वपूर्ण आकर-ग्रंथ हिन्दी को दिया है।

वृन्द के साहित्य का मूल्याकन करते समय लेखक शोधपरक दृष्टि से निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न करता रहा है। शोध-पद्धति से प्राप्त तथ्यो का वस्तुपरक विश्लेषण ही लेखक का अभीष्ट रहा है। सर्वत्र ही एक प्रबुद्ध एव सक्रिय तटस्थता मिलती है।

जहाँ लेखक वृन्द की कृतियो को खोजने के लिए राजस्थान की भूमि से सपर्क बनाए रहा, वहाँ उस भूमि से वह वृन्द के जीवन के लिए आवश्यक साक्ष्यो का भी सग्रह करता रहा। वचनिका और अन्य कृतियो के अंत.साक्ष्य से पुष्ट, उपर्युक्त साक्ष्यो के आधार पर वृन्द के जीवन की रेखाओ को स्पष्ट किया गया है। किन्तु लेखक की दृष्टि सदैव जीवन की रेखाओ मे से वृन्द के व्यक्तित्व को उभारने की ओर रही है। व्यक्तित्व के साथ कृतित्व को सबद्ध करने मे लेखक सक्रमण की प्रक्रिया का वैज्ञानिक निरूपण कर सका है।

वृन्द की कृतियो मे जो कृतित्व प्रकट होता है, उसके आतरिक पक्षो का उद्घाटन ही शोधप्रबध का लक्ष्य है। नीतिकार वृन्द के अनुभव, ऐतिहासिक परिज्ञान और पूर्ववर्ती नीति-साहित्य के अवगाहन ने उनके नीति-साहित्य को वस्तुगत गौरव प्रदान किया है। इस साहित्य के लिए प्रभावशील अप्रस्तुत विधान मे पर्याप्त मौलिकता है। इस भाग के विश्लेषण मे लेखक ने बडी रुचि ली है। यही वह क्षेत्र है, जहाँ शृंगारी कवि वृन्द की नीतिकार वृन्द से मैत्री होती है। शृङ्गारी अप्रस्तुत नीति-कथन को विशेष चमत्कारपूर्ण बना देता है। शृङ्गारी वृन्द के रूप को स्पष्ट करना तो उनके एक अज्ञात सौंदर्य-बोध को प्रकाश मे लाना है। भाव पंचाशिका, यमक सतसई आदि कृतियो मे यद्यपि रूढ वस्तु ही समाविष्ट है, तथापि उक्ति-चमत्कार अपने ढंग का है। अनुभूति का पक्ष तो सभी रीति-कवियो की भाँति वृन्द का भी शिथिल है, किन्तु उक्ति-वैभव मे वृन्द की देन निश्चित रूप से उत्कृष्ट है। इसीलिए रीतिकालीन साहित्य का शोधार्थी बरबस कला-प्रविधियो के विश्लेषण मे रम जाता है। डा० चेलेर जी ने वृन्द के कला-पक्ष को अपनी निजी पद्धति से उजागर किया है।

शोधप्रबंध के अन्तिम भाग मे आदान-प्रदान और स्थानाकन है। आदान भाग मे लेखक ने कवि के व्यक्तित्व को अतीत के स्रोतो से संवद्ध किया है और प्रदान के द्वारा भावी परम्परा मे वृन्द के व्यक्तित्व की विस्तृति दिखलाई है। इस प्रकार एक परम्परा मे वृन्द का व्यक्तित्व अपना स्थान सिद्ध करता है।

यहाँ शोधप्रबंध की विधिवत् समीक्षा मेरा उद्देश्य नही है। प्रबध-निर्देशक के रूप मे प्रबंध की कतिपय विशेषताओ की ओर संकेत मात्र कर दिया गया है। विषय-निर्धारण से लेकर अन्त तक मेरा इस शोध-प्रवन्ध से सम्वन्ध रहा है। डा० चेलेर मेरे प्रिय शिष्यो मे हैं। उनके वहुभाषा ज्ञान, प्रतिभा तथा अध्यवसाय से मैं अधिक प्रभावित रहा हूँ।

अंत मे शोधप्रबंध के स्वागत के प्रति मैं अपनी कामना और आशा व्यक्त करता हूँ। शोध के जिस स्तर को डा० चेलेर ने प्राप्त करने का प्रयत्न किया है, वह अपने आप मे उल्लेखनीय है। इस सफल कृति के लिए मैं डा० चेलेर को हार्दिक वधाई देता हूँ।

—डा० विजयपाल सिंह
आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी-विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

रामनवमी, स० २०२८
वाराणसी

प्राक्कथन

कविवर वृन्द का आनुसधानिक अध्ययन अलग से 'वृन्द और उनका साहित्य' शीर्षक से प्रकाशित हो रहा है। उसकी आधारभूत सामग्री संप्रति 'वृन्द ग्रन्थावली' के रूप मे स्वतन्त्रत. प्रकाशित की जा रही है जिसमे वृन्द कवि का सम्पूर्ण साहित्य एकत्र, सकलित एव सम्पादित किया गया है। प्रस्तुत वृन्द की रचनाओ की हस्त-लिखित प्रतियो का विवरण देना मात्र अभिप्रेत है।

कविवर वृन्द की कुल रचनाएँ निम्न प्रकार है—

(१) सम्मेत सिखर छन्द (२) वारहमासा (३) अक्षरादि दोहे (४) भाव पंचाशिका (५) श्रृ गार शिक्षा (६) नैन वत्तीसी (७) पवन पच्चीसी (८) वचनिका अथवा रूपसिह की वार्त्ता (९) सत्य सरूप रूपक (१०) नीति सतसई (११) यमक सतसई (१२) हितोपदेशाष्टक (१३) भाषा हितोपदेश (१४) पुष्कराष्टक (१५) भारत कथा तथा (१६) स्फुट छन्द। इनमे से संख्या २ से १२ तक की रचनाएँ पूर्णरूपेण उपलब्ध है। भाषा हितोपदेश का नामोल्लेख मात्र मिलता है। शेष के कुछ ही छन्द प्राप्त होते हैं। स्फुट छन्दो की उपलब्ध सख्या लगभग १५० तक पहुँचती है। इन कृतियो के प्रमुख स्रोत है—कवि के ही वर्तमान वंशज जो किशनगढ (राजस्थान) मे रहते हैं। इनके अतिरिक्त प्रधान स्रोत हैं—(१) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, (२) श्रीयुत अगरचन्द नाहटा जी का निजी संग्रहालय, वीकानेर तथा (३) अनूप संस्कृत लायब्रेरी, वीकानेर। गौण स्रोत हैं—सुमेर पब्लिक लायब्रेरी, जोधपुर, चिरंजीव पुस्तकालय, आगरा, मुनि कातिसागर जी का निजी संग्रहालय, उदयपुर। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग तथा नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी। नीति सतसई तो वृन्द की सुप्रसिद्ध रचना है जो अनेक वार प्रकाशित हो चुकी है। प्रायः सभी सग्रहालयो मे इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ अवश्य उपलब्ध होती हैं। श्रृंगार शिक्षा पहली वार सन् १९१३ मे अजमेर से प्रकाशित हुई थी, जिसकी केवल एक प्रकाशित प्रति चिरंजीव पुस्तकालय, आगरा मे उपलब्ध होती है। भाव पंवाशिका एक वार सन् १९२६ मे अजमेर से ही प्रकाशित हुई थी, जिसकी केवल एक-एक प्रति चिरंजीव

पुस्तकालय आगरा तथा सुमेर पब्लिक लायब्रेरी, जोधपुर मे उपलब्ध होती है। इनके अतिरिक्त शेष सभी रचनाएँ अप्रकाशित हैं। जून, १९२८ मे वृन्द जी के वंशज कवीश्वर घनश्यामजी तथा विजयदयाल जी ने शाकद्वीपीय ब्राह्मण बंधु पत्रिका का 'वृन्द विशेषाक' निकाला था जिसमे उन्होंने वृन्द की जीवनी तथा कृतित्व के परिचय के साथ उनकी कृतियो के कुछ उद्धरण भी प्रकाशित कराये थे।

वृन्द की उपर्युक्त कृतियो मे से केवल नीति सतसई की ही ह० लि० प्रतियाँ सर्वाधिक संख्या मे उपलब्ध होती है। इसके बाद क्रम आता है भाव पंचाशिका का, जिसकी चार-छह हस्तलिखित प्रतियाँ यत्र-तत्र देखने मे आयी। इनके अतिरिक्त शेष कृतियो की ह० लि० प्रतियाँ एक-दो से अधिक नही मिलती। स्फुट सग्रहो की गुटिकाओ मे भाव पंचाशिका, शृंगार शिक्षा तथा पवन पच्चीसी के छन्दो के अतिरिक्त वृन्द के स्फुट छन्द भी प्राय सकलित किये हुए मिलते हैं। मैंने वृन्द के स्फुट छन्दो का इसी प्रकार विभिन्न सग्रहो से चयन किया है। वशजो के पास उपलब्ध प्रतियाँ पूर्ण तथा उनके पाठ प्राय शुद्ध हैं। इनमे से अधिकाश प्रतियाँ वृन्द के प्रपौत्र कवि दौलतराम के द्वारा लिपिबद्ध की हुई हैं। अन्यत्र उपलब्ध प्रतियो में क्षेपकों की मात्रा बहुतायत मे होने के कारण उनके पाठ भी प्राय॰ अशुद्ध दिखायी देते हैं। प्राय लिपिकर्ताओ की प्रातीयता तथा उनके शिक्षा-संस्कारो की योग्यता प्रतियो मे पाठभेद उत्पन्न करने मे विशेष रूप से कारणीभूत हुई है। और यह पाठभेद भी प्राय स्थूल रूप मे ही हुआ है। इस प्रकार, एक तो वृन्द की रचनाओ की हस्तलिखित प्रतियाँ ही अधिक नही मिलती, और दूसरे जिन रचनाओ की एकाधिक प्रतियाँ मिली भी तो उनमे मात्राओ के ह्रस्व-दीर्घ-परक अन्तर के अतिरिक्त कोई ऐसा पाठातर नही मिलता जिससे अर्थान्तर लक्षित किया जा सके। पाठभेदाध्ययन का लक्ष्य होता है संभावित अर्थभेद का विवेक करके मूल कवि-अभिप्रेत अर्थ का अन्वेषण करना। वृन्द की रचनाओ की ह० लि० प्रतियो मे ऐसा पाठभेद लक्षित नही हुआ। यह रूप-भेद भी विशेष रूप से कारको मे ही लक्षित होता है, जैसे—सूं-सो-सौ, कूं-को-कौं, कें-कैं, सें-सै, तें-तै, मे-मैं, हूँ-हौ, हो-ह्रौ तथा कुछ हद तक क्रियापदो मे भी, यथा—वर्तमानकालिक रूप जराय-जराइ तथा पूर्वकालिक कृदंत रूप हस-हसि। इनके अतिरिक्त लिपि मे इ-अि, ओ-वो, ऐ-अैं, व-ब तथा ष-ख जैसा भेद भी दिखायी देता है।

अब प्रत्येक कृति की हस्तलिखित प्रतियो का परिचयात्मक विवरण दिया जाता है—

(१) **बारहमासा (रचनाकाल संवत् १७२५)**—इसकी केवल एक प्रति श्रीयुत अगरचन्द नाहटा, बीकानेर के निजी संग्रहालय मे प्राप्त हुई, जहाँ कवितासंग्रह की एक ह० लि० प्रति (गुटिका न० ६६ उप०) मे यह सकलित था। प्रति की भाषा-शैली काफी गडवड दिखायी देती है। गडवडी का कारण लिखक का कदाचित् अल्पशिक्षित होना है।

(२) **अक्षरादि किंवा अंत्याक्षरी दोहे** (सं० १७४२)—इसकी कुल तीन ह० लि० प्रतियाँ देखने को मिली—दो वंशजो के पास तथा एक प्रति श्री नाहटा जी के पास। नाहटा जी वाली प्रति वंशजो की प्रति की तुलना मे काफी भ्रष्ट प्रतीत होती है। वंशजो के पास एक पूर्ण प्रति है और दूसरी अपूर्ण। एक लम्बे-से सिले हुए नोट-बुक मे अत्यन्त सुपाठ्य तथा बडे-बडे अक्षरो मे यह लिखा हुआ है। प्रति पूर्ण सुरक्षित है। इसका लिपिकाल स० १९७१ दिया गया है।

(३) **भाव पंचाशिका** (सं० १७४३)—इसकी प्रकाशित प्रतियाँ चिरंजीव पुस्तकालय, आगरा तथा सुमेर पब्लिक लायब्रेरी, जोधपुर मे देखने को मिली। इसकी ह० लि० प्रतियाँ वंशजो के अतिरिक्त बीकानेर मे नाहटा जी, जोधपुर मे प्रतिष्ठान तथा काशी मे नागरी-प्रचारिणी सभा मे सुरक्षित है। इसकी प्राचीनतम ह० लि० प्रति जोधपुर के प्रतिष्ठान मे देखने को मिली जिसका लिपिकाल सं० १७९३ है। इसके अतिरिक्त 'प्रतिष्ठान' की दो अन्य प्रतियो का लिपिकाल है सं० १७९८ तथा १८३९। नाहटाजी की प्रति का लिपिकाल सं० १७९९ है और वशजो की प्रति का लिपिकाल स० १८५५। मैंने इन सभी प्रतियो का मिलान करके देखा। वंशजो की प्रति सभवत कवि के वंशज दौलतराम के हाथो लिखी हुई है। इसी को मैंने अधिक शुद्ध पाया। वैसे पाठातर यत्र-तत्र ही पाया गया; विशेषकर कारको के रूपो मे।

(४) **शृंगार शिक्षा** (सं० १७४८)—इसकी केवल एक प्रकाशित प्रति आगरे के चिरंजीव पुस्तकालय मे मिली तथा केवल एक हस्तलिखित प्रति वशजो के पास जिसका लिपिकाल सं० १८५५ है। प्रकाशित प्रति मे लिपिकाल सं० १८७४ दिया गया है। किशनगढ की प्रति कवि-वंशज दौलतराम के ही हाथो की लिखी हुई सुपाठ्य अक्षरो मे सुरक्षित है। दोनो प्रतियो मे पाठभेद प्रायः नही के बराबर है।

(५) **नैन बत्तीसी** (सं० १७४३)—यह कवि वृन्द के नाम की एक सर्वथा अनुल्लिखित—पूर्व रचना है जिसकी केवल एक प्रति जोधपर के प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे प्राप्त हुई। ह० लि० ग्रं० सं० ४४५२। इसकी प्रामाणिकता पर मैंने अपने शोधप्रबन्ध 'वृन्द और उनका साहित्य' मे पूर्ण विस्तार के साथ विचार किया है। इसका लिखक तथा लिपिकाल दोनो अज्ञात है। यह प्रति काफी भ्रष्ट प्रतीत होती है जिसमे प्रक्षेपाश भी पर्याप्त लक्षित होता है। लिपिकर्ता कोई राजस्थानी प्रतीत होता है जिसके हाथो लिपि करने मे इसकी भाषा मे डिंगल का प्रभाव आ गया है। सिवाय इसकी भाषा-शैली मे एकरूपता बाधित दिखायी देती है। कुल मिलाकर लिपि करने मे लिखक ने काफी असावधानी बरती है; यहाँ तक कि काव्यार्थ-सगति मे भी बाधा पडने लगती है।

(६) **पवन पच्चीसी** (सं० १७४८)—इसकी केवल एक पूर्ण प्रति वशजो के पास प्राप्त हुई, जहाँ एक गुटिका मे पवन पच्चीसी के बाद वृन्द का ही 'हितोपदेशा-

ष्टक' तथा अत में वृन्द के ही चार स्फुट छद लिखे गये थे। प्रति सुपाठ्य अक्षरो मे पूर्ण सुरक्षित है। लिपिकाल स० १६६६ दिया गया है। नाहटा जी के पास इसकी एक अपूर्ण तथा किंचित् भ्रष्ट प्रति उपलब्ध है।

(७) **वचनिका अथवा रूपसिंह की वार्त्ता** (सं० १७६२)—इसकी केवल एक ही प्रति वशजो के पास सुरक्षित है। यह प्रति मोटे पुट्ठो वाली सजिल्द है, किन्तु जिल्द टूट गयी है, प्रति पुरानी हो गयी है और कागज भी नरम पड गये हैं। नमी लग जाने के कारण जगह-जगह काले धब्बे भी दिखायी देते हैं। कुल १०८ पन्ने हैं। आरभ के २८ पन्नों मे एक दूसरे लिखक का हस्तलेख दिखाई देता है, विशेपकर २८ वाँ पन्ना तो काफी बचपने से मोटे-तिरछे अक्षरो मे लिखा गया है। २८ पन्नो तक की लिपि भी अत्यन्त खराब है, कागज भी जीर्ण हो गये हैं। २८वें पन्ने पर आधे मे ही लेखन छूट गया है। फिर २९वें पन्ने पर क्रम जारी रखा गया है। ऐसा लगता है कि आरम्भ के ये २८ पन्ने अलग से जोडे गये हैं। इसके वाद के पन्ने अच्छे हैं, लिपि भी सुलेख तथा सुपाठ्य है। बीच-बीच मे 'बचनिका' 'छंद' आदि शीर्षक लाल अक्षरो मे लिखे गये है। प्रत्येक पृष्ठ पर 'केदार' लिखा गया है। ये केदार कवि के ही एक वशज थे। वस्तुत बचनिका की इस प्रति के भी लिखक दौलतराम ही दिखायी देते हैं। संभवत' आरम्भ के २८ पन्ने खो जाने के कारण दूसरे वशज केदार जी ने उनकी प्रतिलिपि करके आरम्भ मे जोड दिया होगा। इनका हस्तलेख बहुत ही खराब है और पाठक के रूप मे प्रत्येक पृष्ठ पर अपना नाम अकित किया है।

(८) **सत्य सरूप रूपक** (स० १७६४)—इसकी एक पूर्णप्राय प्रति वंशजो के पास उपलब्ध है। इसके कुल ३५ पन्ने उपलब्ध हैं। शायद ३६वें पन्ने पर दो-एक छन्दो के साथ रचना समाप्त होती है। अतिम पन्ना न होने के कारण पुष्पिका भी लुप्त है। लिपि को देखते हुए लगता है कि यह भी दौलतराम की ही लिखी हुई प्रति है जो अव काफी जीर्ण हो चली है, तथा पन्ने नरम पड चले हैं। अक्षर सुपाठ्य है। इसकी एक अपूर्ण प्रति उदयपुर मे मुनि कातिसागर जी के पास उपलब्ध है। उसके आदि तथा अन्त के पृष्ठ लुप्त हो गये हैं। प्रति का आरम्भ १५ वें छन्द से होता है तथा अन्त ३५०वें दोहे के वाद एक अधूरे सवैये के साथ। इसका लिपिकाल ज्ञात नही है।

(९) **यमक सतसई** (सं० १७६३)—वशजो के पास इसकी दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं। एक दौलतराम की लिखी हुई पुरानी प्रति तथा दूसरी अपेक्षाकृत आधुनिक काल की जिल्दवाली अधूरी प्रति, जिसके लिखक का ज्ञान नही है। इस जिल्दवाली दूसरी प्रति मे २२७ दोहे हैं, कागज मोटा, अक्षर सुपाठ्य, यत्रतत्र सशोधन भी किया गया है। प्रति अधूरी है। पहली प्रति पर्याप्त पुरानी हो गयी है, कागज पतला व पुराना। स्वतंत्र पन्ने कुल ६१ है, वीच-वीच मे फटे हुए स्थान पर गोद से चिपकाया गया है। इनमे से २४, २५, २६, २७, ५१ और ५८ संख्यक कुल ६ पन्ने खो गये हैं। अक्षर वैसे सुपाठ्य हैं, किन्तु यह सवसे अधिक गडवड प्रति है। कही छन्द-सख्या मे व्यति-

क्रम हुआ है तो कही दोहो के चरण दुहराये गए हैं, किंवा कही कोई दोहा अथवा उसका कोई चरण ही छूट गया है। वास्तव मे रचना की संगति बैठाना बडा कठिन है। इसका लिपिकाल सं० १८७८ दिया गया है। तीसरी प्रति जोधपुर के राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे सुरक्षित है जो अपेक्षाकृत नवीन है, लिपिकाल सं० १९०१। यह जोधपुर मे ही लिखी हुई है। दोनो प्रतियो मे कुल दोहे ७१५ है। प्रति अत्यन्त सुन्दर है, अक्षर सर्वथा सुपाठ्य व सुडौल।

(१०) **नीति सतसई (सं० १७६१)**—यह 'वृन्द-सतसई' के नाम से सुप्रसिद्ध रचना है जो कई बार प्रकाशित हो चुकी है। ऐसा कोई संग्रहालय नही होगा जहाँ इसकी एकाध प्रति—पूरी किंवा अधूरी नही होगी। वशजो के पास भी इसकी दो-तीन प्रतियाँ उपलब्ध है। एक प्रति का लिपिकाल सं० १८९५ दिया गया है। जोधपुर के प्रतिष्ठान मे लगभग एक दर्जन प्रतियाँ देखी गयी। वहाँ पर प्राचीनतम प्रति सं० १८१३ की उपलब्ध हुई। सभी प्रतियो का परस्पर मिलान करके देखने पर पर्याप्त वैविध्य दिखायी देता है जो इसकी लोकप्रसिद्धि को देखते हुए स्वाभाविक लगता है। इसमे प्रक्षेप भी काफी हुआ है। दोहो की सख्या मे व्यतिक्रम होना तो साधारण बात है। उनके प्रथम एव द्वितीय चरणो मे भी यत्रतत्र व्यतिक्रम हुआ है। कुछेक प्रतियो की भाषा भी स्पष्टत भ्रष्ट की हुई मिलती है। लिपि-कर्ताओ ने जगह जगह नवीन दोहे भी जोडे है। इसलिए दोहो की कुल सख्या मे भी व्यत्यास मिलता है। अधिकतम सख्या ७२०-७२५ तक चली गयी है तथापि प्रकाशित प्रतियो मे से 'सतसई सप्तक' मे संगृहीत डा० श्यामसुन्दरदास द्वारा संपादित संस्करण तथा काशी से श्रीकृष्णदास द्वारा संपादित संस्करण अधिक निर्भरयोग्य प्रतीत होते हैं।

शेष रचनाएँ प्रायः अधूरी है। इनमे से 'सम्मेत शिखर छंद' के कुल ८ छप्पयो मे से अंतिम 'राजस्थान भारती'—जुलाई-अक्तूबर, १९४६ मे श्रीयुत नाहटा जी द्वारा उद्धृत किया गया था। 'पुष्कराष्टक' के भी केवल दो ही छप्पय उपलब्ध हो सके, जो वशजो के पास एक गुटिका मे संगृहीत थे। वशजो के पास ही किसी संग्रह मे 'कवि वृन्द-कृत भारतकथा के दोहे' लिखे हुए थे, जिनकी कुल संख्या केवल ११ है। वैसे कथा-प्रसग इनमे पूरा आ गया है। इसकी प्रामाणिकता प्रश्ननीय है। इस पर मैंने अपने शोधप्रवन्ध 'वृन्द और उनका साहित्य' मे पूर्ण विस्तार के साथ विचार किया है। स्फुट छन्दो की संख्या तो लगभग १००० तक भी बतायी जाती है। यत्रतत्र शृंगार, नीति, वैराग्य तथा भक्ति-परक सग्रहो मे वृन्द के छन्द भी संकलित किये हुए मिलते है। विशेप प्राप्ति-स्थान है—किशनगढ मे वंशज, बीकानेर मे श्रीयुत नाहटाजी का निजी संग्रह तथा अनूप सस्कृत लाइब्रेरी तथा जोधपुर का प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान। इनमे से मुझे कुछ ही छंद प्राप्त हो सके। इनमे से कुछ तो 'वृन्द विशेषांक' मे ही प्रकाशित किये गए थे।

कुल मिला कर, कवि वृन्द ने बहुत अधिक लिखा था, जिसको सुरक्षित रखने का बहुत कुछ श्रेय उनके वंशजो को ही है। वृन्द की रचनाओ मे से 'नीति-सतसई' को छोड अन्य रचनाओ का प्रसार बहुत नही हो सका था। इसीलिए उनकी हस्तलिखित प्रतियाँ भी सर्वत्र नही पायी जाती। वर्तमान वंशजो के पूर्वज वृन्द के समस्त साहित्य को प्रकाशित कराने की योजना बना रहे थे, किन्तु अकाल मे ही कालकवलित हो गये। अतत 'शाकद्वीपीय ब्राह्मण बन्धु' पत्रिका का 'वृन्द विशेषाक' निकालकर ही संतोष करना पडा।

प्रस्तुत कार्य मेरे शोध-प्रबन्ध के लिए आधारभूत सामग्री-सकलन के रूप मे सन् १९६० मे शुरू किया गया था। पश्चात् सन् १९६५ मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से, तीसरी बार राजस्थान की यात्रा करने के बाद वृन्द का सम्पूर्ण साहित्य संगृहीत किया गया। इस प्रकार पाठ-संकलन का कार्य आयोग की आर्थिक सहायता से ही पूरा हो सका। एतदर्थ मैं आयोग का हार्दिक रूप से कृतज्ञ हूँ। अतत कविवर वृन्द का सपूर्ण लेखन प्रस्तुत 'ग्रंथावली' के रूप मे पहली बार एकत्र, क्रमबद्ध होकर प्रकाश मे आ रहा है। इति शम् भूयात्।

बहुत सावधानी बरतने पर भी कतिपय कारणोवश मुद्राराक्षस से बचना सभव नही हो सका है। अत पाठको से निवेदन है कि वे कृपया ग्रन्थावली के अंत मे सलग्न 'शुद्धिपत्र' को अवश्य देखें।

जनवरी, १९७०
तिरुपति, (आध्र)

—जनार्दन राव चेलेर

ग्रन्थ-सूची

संकेत-सारणी

अनूप	अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर। ह० लि० ग्रं० संख्या १६२।
प्रतिष्ठान	राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। ह० ग्रं० संख्या ४६०६।
वशज	वृन्द कवि के वंशजो के निजी सग्रह से प्राप्त, किशनगढ
वृ० वि०	शाकद्वीपीय ब्राह्मण बधु पत्रिका का 'वृन्द विशेपाक', जून १६२८।

१

सम्मेत शिखर छन्द

वीर जिनेसर वंदि जनम जग सफल करिज्जै।
करिय पूज रस कजि पुण्य भंडार भरिज्जै ॥
चित्त नरस तजि भरस करम भय दूरि हरिज्जै।
केसर अगर कपूर भाव भरपूर भरिज्जै ॥
सतरै पचीस संवत सरस फागण सुदि तृतिय सु रहिय।
सम्मेत सिखर सोभा सु भरि वृंद सुकवि कीरत्ति किय ॥८॥[1]

इति सम्मेत शिखर छंद समाप्तः ॥

---

१. राजस्थानी भारती—जुलाई-अक्तूवर, १९४६ मे श्रीयुत अगरचन्द नाहटा द्वारा उद्धृत। कुल आठ छप्पयो मे से अन्तिम पुष्पिका।

२

बारह्मासा

मास वसंत मधुर महि सुदर लाग रह्यो रित सुंदर वानी ।
नीली धरा तरु पिक डहकत फूलत पूर महक सुहानी ।।
प्राणी मनोहर केसर घोर कं कंचन सूरत पूज रचानी ।
चैत्र कं मास मै आदि जिनेसर पूज रचै कवि वृंद सदानी ।।१।।

वैसाखे वन खंड हरे मधुरी मनु कोकिल कूज रही ।
सबरु सरूप वनावणै रस लूटत मंजर में न वही ।।
सखी केसर चदन पूर कपूर सुघोर करो मिल रंग रही ।
इम मास वैसाख मै आदि जीणेशर वृंद कहै सुषमैण गही ।।२।।

नित घाम तपै घण वायु फुरै रज रुद्धत गैण कुंढारत है ।
बहु छांह सुहावत भौन चढौ निस कामनी अग सवारत है ।।
सखी माल गुलाब गलै प्रभु कें लही चदन चोप चढावत है ।
पुनि जेष्ठ के मास मैं आदि जिनेसर वृंद कहै सुख साजत है ।।३।।

जलधार घुरै धरणीधर ऊपर सीतल मारग चोंप छई ।
हरि आलि खुलै तरु नीर झरै मही रूप अनुपम शृंगार लही ।।
सखी नाटक भाव करो जिन आगम पुर रचौ विध भान तई ।
पुनि मास आसाढ मैं आदि जीनेशर वृंद कहै नित सुख दाई ।।४।।

वन श्रावण घोर मंडै घन डंबर गाज अवाज करै बहु तारी ।
सब हार श्रृंगार करै सहु माननी खेल करे झमकै सहु नारी ।।
सखी केसर कुंकम चंदन अंग मै नृत्त करौ मनु नेह सहारी ।
श्रावण मास मै आदि जिनेसर बंदत है कवि वृंद सभारी ।।५।।

भाद्रव मास मै घुरे धर अंबर बीज खीवै झलकै सधरी ।
झर लागत बुंद परै जुग तै मत रंग अमंडन कीर जरी ।।
भवी पूजत केसर चंदन सै घन धूप उखेवोउ करो सघरी ।
श्री आदि जिनेसर भाद्रव मास मै पूज रचै कवि वृंद करी ।।६।।

आसुज मास लग्यो ढिग अंबर भामनी भोग रमै रंग राती ।
नलनी बहु फूल रहै तटनी रित सीप उदंगन भूपर साती ।।
पूज रचो भवि सतर प्रकारन भामन भाव करो सुध वाती ।
मास आसोज मै आदि जिनेसर वंदत वृंद सदा सुहाती ।।७।।

कातिक मास मै रुद्धत पूरन पर्व बन्यो नित खेल दीवाली ।
सहु हार श्रृंगार परै नग भूषन वेस बनाव कीये सब लाली ।।
....
कवि वृंद प्रभुजि कूं भाव करी रस पूजत आंगर वाली ।।८।।

सीतल मारुत मंद फुरै महरी मन राज वसंत भरी ।
रात मान विहंगन प्रेम भरी उलसी मनुं अंबर ओढ खरी ।।
स्तवना प्रभुजी की करो विध सूं पुनि पूजत प्रेम सुं भेद परी ।
मिगसिर मै कवि वृंद कहै प्रभु आदि जिनेसर कूं न सरी ।।९।।

अति सीत ठंठार परै बहु पावक तापत नारि वहै विध ही ।
नव निध ही मंगल तूर परंगन नाटक नेह करो सीध ही ।।
. ...
कवि वृंद कहै जिन राजन कूं सहु वंदन ओपन पाय धरी ।।१०।।

माहज मास मै आवन मारुत पावक मांनन संघ बरै ।
पत वारी बिध बंगन की नित गुंजत कोकिल संघ परै ।।
अति आतुर होय कै पूज रचै घन केसर चंदन आण खरै ।
नित आदि जीनेसर वृंद कहै भवि ध्यान धरै हित नाम करै ।।११।।

फागुण मास मै फाग रमै कवि वृंद कहै सब नार खरी ।
नित आतुर मेनज गावत सुंदर प्रेम पलक्कन मे न जरी ॥
घनसारन केसर चंदन बावन बानी सुषासन आन बरी ।
प्रभु आदि जीनेसर प्रेम वढ्यो नित मंगल पूरित आण घरी ॥१२॥

इम द्वादस मास मैं आदरता सुं ए नेह श्रृंगार धर्‍यो मन ही ।
नित देव निरंजन ध्यान धरे धन तें नर मानत अंदर ही ॥
.. . .
सहु सुख मिलै जिन ध्यावन मै नित पावत सुर्ग निवावर ही ॥१३॥

३

अक्षरादि दोहे

श्री गुरु गनपति के चरन बंदन करि कवि वृंद ।
अक्षर अक्षर ऊपरै वरनै दोहा छंद ॥१॥

जो अक्षर जिहि छंद के छोर पढ़त कवि कोइ ।
सोई अक्षर आदि को इन दोहन मै होइ ॥२॥

मानसिंघ भूपाल सुत बीर धीर दातार ।
राजसिंघ सब विधि सरस राजै राजकुमार ॥३॥

वरनै ताके हुकम तै चित मै धरि अति चाव ।
प्रगटत इन दोहान तै सिंघ विलोकन भाव ॥४॥

अ—अति विचित्र सुंदर सुखद नाना रंगी अंग ।
नित्य विहारी ह्वै रहै ब्रज मै राधा संग ॥५॥

आ—आवत जाके दरस कौ मुनि धरि प्रेम उदोत ।
सो राधा को देखि मुख मोहन मोहित होत ॥६॥

इ—इक मन करि जाके चरण नमत कोटि सुर आइ ।
सो राधा के पांव परि लेत मनाइ मनाइ ॥७॥

ई—ईश विरंची अनंत गुन गावत जाको गान ।
सो निशि दिन हिय मै धरत श्री राधा को ध्यान ॥८॥

उ—उत राधे राधे रटत कृष्ण कमल दल नैन।
कृष्ण कृष्ण इत राधिका रटत रहत दिन रैन ॥६॥

ऊ—ऊषन कछुक पियूष के गुन सुनियत है कानि।
दूषत सकल मिठास को सुनि राधे तुव वानि ॥१०॥

ए—एक अनूपम बात सुनि आवत है अति हास।
तू गुनि भार भरी चलति सोतिन बढत उसास ॥११॥

ऐ—ऐसा समझि जु कहति है पिय किय अनत विलास।
इक मन हुतो सु तोहि दयो तऊ न जिय विसवास ॥१२॥

अैसी बेर न पाइहो हरिहि सुनइयो जात।
तिय सब राति जगै गई तिय पति गए बरात ॥१३॥

ओ—ओझिल ह्वै मुख चद कूं चितवन नैन चकोर।
इत चितहै वत चौंप सौं चद चकोरन ओर ॥१४॥

औ—औसर दरसन को दई मिलिहै कैसै जोग।
फूल परै चौसर करै ते हैं ब्रज के लोग ॥१५॥

अं—अजन दे खंजन नयनि किए निरजन नैन।
मै जानी तोकूं मिल्यो मनौ महा मुनि मैन ॥१६॥

क—कहै सदा मुख स्याम गुन रहै सील सत ठीक।
कलिजुग ही के दौर मै जे सज्जन तह कीक ॥१७॥

का—काहे कू लोचन किए अरुन वरन जनु सांझ।
राति न आयो या लिये भूलि पर्यो वन माझ ॥१८॥

ख—खरे अरे चितवन बदन कहा करी जिय आस।
गाय गई बछरा सहित मोहन दुहत अकास ॥१९॥

खल जन के ज्यौं संग तै होत दोष को पोष।
तैसे सज्जन संग तै सब पावै संतोष ॥२०॥

खा—खाति खवावति है बिरी हसि हसि सौहै खात।
जिहि छिन रूसि जुदे रहे तिहि छिन को पछितात ॥२१॥

ग—गरजत तरकत करत घन कारे पीरे रंग।
जीवन दाता होत नहिं तो को सहत कुढंग ॥२२॥

गा—गावत दादुर मोर गुन घन उपगारी अंग।
लपटत तरु तरु सों लता नदी नदीपति संग ॥२३॥

घ—घटत न तन तन की कला बढत सरस गुन ओघ।
अद्‌भुत सज्जन शशि उदित बोलत बचन अमोघ ॥२४॥

घा—घाम हरत छाया करत ताप सहत निज अंग।
फल दाता पक्षीन कूं धनि तरवर सुख संग ॥२५॥

ङ—ङण ङण शब्द सु कहत है जाहि नासिका रोग।
हैं अनुभव सु हास्य को कहत सयाने लोग ॥२६॥

च—चढत तरुनई चित चढ्यो मनमथ मत आलोच।
वारन जैसे बुधि बढी कुच बढि बढ्यो सकोच ॥२७॥

चा—चाह चढी पिय मिलन की चाहि करत सिंगार।
कहि काहे तैं कामिनी हिय पर धरत न हार ॥२८॥

छ—छवि छायो गुन तैं भर्‌यो जदपि शुद्ध शुभ सार।
पैं पिय हिय तैं अंतर परैं तातैं धरत न हार ॥२९॥

छा—छाती लखि छाया निरखि चरनाभरन सुधारि।
चलति छबीली छबि भरी उरतैं आंचरि टारि ॥३०॥

ज—जलज जुगल पर हंस हरि कुंत कंबु तिलराज।
बिंदु कुंवद पिक शुक मिरग अलि शशि अहितिय साज ॥३१॥

जा—जाति हुती बन मांह राधा अपने रंग सूं।
छल कर तरवर छांह भीरि लई हरि भरि भुजा ॥३२॥

झ—झलकी दिस मुख अरुनई भई तरुनई सांझ।
झमकि मिले हरि राधिका गोरज गहरी मांझ ॥३३॥

झा—झांकति झझकति झुकति अति सखि सौतिय सतराति।
रहति न हटकी लगन लगि मुख लखि लखि मुसकाति ॥३४॥

अ ड ण—अ ड णि यंत है प्रक्रिया वैयाकरणहि मांह।
ताकौ पढि समझै सुबुध पावत सुफल अथाह ॥३५॥

आ—आं आं कहि बालक जबै रुदन करै तब मांय।
लै उठाय चुंवन करत देवत दूध पिलाय ॥३६॥

ट—टगुलायै चितवत खरी धरत मिलन को घाट।
रेनु रंग्यो गइयन लियै हरि ऐहै इहि बाट ॥३७॥

टा—टारि सखी निस माजि सखि निकसि चलौ हित काज।
घिरि आई काली घटा मिल्यो मिलनु दिन आज ॥३८॥

ठ—ठमकि ठमकि पग धरि करति झमकि झसकि गृह काज।
आंगन मै दुलहनि फिरति लियै हियै अति लाज ॥३९॥

ठा—ठाट यहै जिय मै ठटै घटै न घट सै नेह।
पिय पै वचन पियूष को हँसि हँसि बरसत मेह ॥४०॥

ड—डरति हुती रति रंग तै भरति न पिय कूँ अंक।
सौतिनु लगी डरावने अब तिय भई निसंक ॥४१॥

डा—डार गहै ठाढी रहै हरि बिन लहै न चैन।
छिन छिन मॉझ घरी निसे ढारति भरि भरि नैन ॥४२॥

ढ—ढँपि ढँपि आँचर ते कुचनु देति उघारि उघारि।
हिय पर धरति सुधारि कै हार निहारि निहारि ॥४३॥

ढी—ढीली गति ढहि ढहि परत जानि परे हो ढीठ।
हर हर तिय सनमुख होत हो पै महि दै दै पीठ ॥४४॥

ण—णण णण णण नूपुर बजै कबहौं कल धुनि होत।
कबहौं कूजत किंकिनी रति रस रग उदोत ॥४५॥

णट्ठसि सुत्तण तुज्झ तण अज्ज बिदिट्ठ पियेण।
घण थण हर भर बक मइ गइ मंथर भावेण ॥४६॥

त—तरु तरु तर ठाडे रहै भेटति भरि भरि बाँह।
रंग भरे हरि राधिका रंग करत वन माँह ॥४७॥

ता—तारे उगलति गिलत शशि तम समूह इक साथ।
यह रति गति विपरीत अति राति करी रति साथ ॥४८॥

थ—थर थर काँपत स्वास तें ओर जुगल सुख कंद।
ललित लता ऊपर लसैं रति रस के आनंद ॥४९॥

था—थाकत नाँहिन रस छकी को तेरो यह थाट।
घर कौं आवत घाट तें घर तें जात जु घाट ॥५०॥

द—दरस दिवानी ह्वै रही गनत न ठौर कुठौर।
बूझत अनमिल सी कहै कछू और की और ॥५१॥

दा—दामिनि छिन मैं सघन मैं घन पुनि दामिनि माँह।
मानहु हरि राधा बहसि हिय भेटति भरि बांह ॥५२॥

ध—धरति न तिय जिय मैं धरक सुनि गरजन को सोर।
निकसी जाति घरी घरी उन कुंजन की ओर ॥५३॥

धा—धाम न ठहरति याम छिन मोही स्याम सुभाइ।
डोलति है पीछैं लगी अय चुंबक के भाइ ॥५४॥

न—नए नए कुच उच्च भए नए सुयंभु सुभाइ।
प्रकटी जमुना स्यामता गंगहि धरी दुराइ ॥५५॥

ना—नांही नांही कै कहैं काहे भए उदास।
याको अरथ विचारियै करियै बिबिधि बिलास ॥५६॥

प—पढि मत प्रेम पहेलिका परिहैं परबस प्रान।
फल न चढै फल नां लगैं पल ह्वै कलप समान ॥५७॥

पा—पावस आवत ही प्रकट घन लागे घहरान।
हर्‌यो भर्‌यो हिय प्रेम तरु जर्‌यो जवा सो जान ॥५८॥

फ—फल लागे तेरे हियें अति सुकृत अभिराम।
पिय के हिय के काम के सफल भए सब काम ॥५९॥

फा—फागुन खेलत फागु हरि हिलि मिलि गोपिन संग।
अति गुलाल की धुंधि मैं राधे हिलावति अंग ॥६०॥

ब—बहसि बहसि खेलति हसति खेल न निवरै लेत ।
हारै दाव हि देत हठि जीतै जान न देत ॥६१॥

बा—बाला जोवन मद छकी निस दिन रहत निसंक ।
रति विनोद पति सौं करति हँसि हँसि भरि भरि अंक ॥६२॥

भ—भली भई पिय सौं मिली हिलो मिलो दिन रैन ।
लखि जैहै गुरुजन दई लखि लखि रातैं नैन ॥६३॥

भा—भावति पिय मन रूसिबो छिनक रूसि बलि जाउँ ।
अवुज ऊपर चंद लखि रस करिहै परि पाउँ ॥६४॥

म—मनमोहन सौं मन मिल्यो सो पै आवत नाहिं ।
पट मै लपट्यो चुभि रह्यो मुकट चंद्रिका माँहि ॥६५॥

मा—माधव रस बरसत सरस फूली सब बनराइ ।
कुहु कुहु पिक कुहुकन लगे भौंर उठे भननाइ ॥६६॥

य—यह काहू देखी सुनी बिन रति रंग तरंग ।
चक्र जुगल पर चौप सौं गुन जुत खेलति गग ॥६७॥

या—यामै फेर न सार कछु मदन महीपति आप ।
कुच कलसन मै निधि धरी करी स्यामता छाप ॥६८॥

र—रजनीपति के डर डरी सोवति घर मै जाइ ।
जाल रध्र मग डारि कर तउ परसत है आइ ॥६९॥

रा—राम विजय लंका करी आवत बैठि विमान ।
पाज दिखावत सीय को करि करि वहोत बखान ॥७०॥

ल—लखत चौंप सौं शशि मुखी पाजन नैक लखाइ ।
झाँकत ही उमगत उदधि लहरिन मै छिपि जाइ ॥७१॥

ला—लागत ललित लतानि सौं तर्‌यो नीर निधि नीर ।
गहत गिरवर मद गति आवत श्रमित समीर ॥७२॥

व—वनी भसम तन सुमन रज सुखद मधुप गन साथ ।
हिम गिरि जात हरै हरै मलयानिल शिवनाथ ॥७३॥

वा—बात बात मै हसत है दे दे तारी हाथ।
कुंजन दुरि देषे चलो राधा मोहन साथ ॥७४॥

शा—शारद चंद अमंद छवि पुंडरीक सुख दाइ।
फूल्यो नभ सरवर विषै भ्रमर स्यामता भाइ ॥७५॥

शु—शुभ सोभा सरवर भरे नीरज छाए नीर।
तहां चलो हरि सूं मिलै परसै त्रिगुन समीर ॥७६॥

ष—षटपद पक्षि प्रभाव तै भाखि मधुर मुख भाष।
मिलि मिलि सुमन सुरंग सौं पूरत मन अभिलाष ॥७७॥

षा—षा लक्ष्मी कौ कहत है एकाक्षर के कोष।
जिहिं बिन देख्यो जगत मै होत न तन को पोष ॥७८॥

स—समझि दुरावत तिय कुचन कसि बाँधत इहिं भाइ।
स्याम बदन पर हिय हरन तिन को यहै उपाइ ॥७९॥

सा—साच कहै गुन संग्रहो गुन तै सबन सुहात।
गुन जुत हार हियै लगै गुन हीनौ गिरि जात ॥८०॥

ह—हम तुम सौ साँची कहै कहत सयाने लोग।
हरि कौं जे राखत हियै ते हरि ही से होइ ॥८१॥

हा—हाव भाव आनंद मय राग रंग रस चाव।
अैसै दिन चितवत सदा जैहै रसिक सुभाव ॥८२॥

क्ष—क्षन क्षन मै सुधि करि सवरि अहो चतुर चित चेत।
जाही ताही भाँति भरि हरि सूँ करिये हेत ॥८३॥

क्षा—क्षार समद ही मै पियत सीगी मीठी सीर।
कलि मै रहि हरि गुन गहै तैसै सजन सधीर ॥८४॥

सतरै बैतालीस बदि तेरस फागुण मास।
ए औरंगाबाद मै दोहा भए प्रकास ॥८५॥

❀

४

भाव पंचाशिका

अद्भुत अमित अनत अति अगम अपार अनूप।
व्यापक दृश्यादृश्य मय जय जय ज्योति सरूप ॥१॥

कवि लोकनि के भाव सुनि कछुक भयो चित चाव।
करी भाव पंचासिका वृंद सुकवि धरि भाव ॥२॥

भाव सहित सोभा लहैं पूजा जप तप मित्त।
यातैं वृंद विचारि कैं कीने भाव कवित्त ॥३॥

सतरै तेतालीस सुदि फागुन मंगलवार।
चौथि भाव पंचासिका [1]अवनि भयो अवतार ॥४॥

उक्ति युक्ति करि कैं कवित्त कीने भाव दुराय।
तैसैं भाव प्रकास कौं दोहा किए बनाय ॥५॥

बाजत ताल मृदंग उपंग महाधुनि तीनहु लोक छई है।
वृंद कहै सुर नर किन्नर भूत पिशाच पढै जस जुक्ति नई है॥
नाचत गौरि के हेत लियैं सितकंठ हियै अनुराग मई है।
च्यारहु ओर धराधर ऊपर मेघ विना जल वृष्टि भई है ॥१॥

पाठभेद .— १ प्रगटी अवनि उदार

गति अनेक नाचत तहाँ श्री सितकंठ सधीर।
भ्रमरी गति कौं लेत ही प्रसर्‌यौं[1] गंगा नीर ॥१॥

आवत है जल न्हावत है नर पावत देह हरि हर की जो।
तारनि तीनहु लोक विहारिनि पाप निवारिनि वंछित दीजो ॥
वृंद कहैं सु विवेक विचारि कै मेरी यहै विनती सुनि लीजो।
केसव मोहि करो जिन गंग ! कृपा करि मोहि सदासिव कीजो ॥२॥

हरि तोकौं पायनि धरी यह कछु और प्रसंग।
हर ह्वै कै राखौं सदा सिर पर तोकौं गंग ॥२॥

रंग भरी रस रूप[2] भरी पिय संगम कौ अँग अँग उमाहै।
इंद्र दिसा मुख पूरन बिंब सुधाधर कौ निज नैननि चाहै ॥
सोचि विचारि कछू डरिकै तिय चंपक के वन कौ चित चाहै।
वृंद कहैं कहौ कौन सुभाव ? सु भाव कहौ यह चाव कहा है ॥३॥

यह जानी शशि के उदै सवै कमल सकुचाय।
चंपक वन चाहत भ्रमर जिन मुख[3] पर मँडराय ॥३॥

एक समै सनि मंदिर मै रस मै पति काम कथा वहु कीनी।
चातुर केलि कुतूहल मै रति सी रमनी रति के रस भीनी ॥
कौन विचार विचारि कै देखि अरी धरि रोस कहा गति लीनी।
वृंद कहै अपराध बिना सखि ! प्रीतम के तिय लात की दीनी ॥४॥

प्रेम छकी सुधि भूलि कै निज प्रतिबिंब निहारि।
पर तिय रत पति कौं समुझि दई पाय की नारि ॥४॥

वैठि हिमाचल की तनया पिय सौं हिय सौं न कहौं हित हीनौ।
आए तहाँ भव आनंद सौं मन जोग रु भोग दुहून मै भीनौ ॥
गंग विलोकि गिरीस के सीस सु मान धर्‌यौ करि भाव नवीनौ।
वृंद कहा जिय गौरि विचारि कहा शिव के तव चुंबन कीनौ ॥५॥

समुझि सौति सम गंग कौं गौरि कोप उपजाय।
सविष[4] कंठ चुंबन कियो विष भक्षन के भाय ॥५॥

पाठभेद :—१ पसर्‌यो   २ रस रंग, रति रूप
३. परम डराय   ४. सिव कै

कुंभज धीर दयानिधि वीर छुवै न कहूँ कबहूँ छल छाँही।
वृंद कहैं उपगार परायन देव नरायन ध्यान धराँही॥
पान कियो सगरो मकरालय छाँड दियो बहुरो[1] क्षिति माँही।
जानत हौं विरही जन की तन की तन वेदन जानत नाँही॥६॥

पियत उदधि ससिहु पियौ छाँडत ज्यों[2] अधीर।
यातै मुनि जानत नहीं विरही जन की पीर॥६॥

वारद बीतै विसारद अबर सारद की निसि मैं हित पोसै।
सुच्छ अटा पर सैन कियौ पै खरी अकुलाय भरी अपसोसै॥
मानव देव अदेव पयोनिधि सेष सुमंदर की विधि दोसै।
वार ही वार कहौ इन कौं अब क्यौं सब रैन वियोगिनि कोसै॥७॥

सुर असुरनि मिलि दधि[3] मथ्यौ प्रगट कियौ यह चद।
यातै निंदति सबनि कौं लहि विरहिनि दुख दद॥७॥

आयो वसंत पै आयो न कत उदंत न तंत न मंत लहा है।
क्षीन भई अति काम तई तनकौं तन को न सरूप रहा है॥
वृंद कहैं तिय आतुर ह्वै मन मोहन सौं मन मोह महा है।
कूजहु कोकिल गुंजहु भौंर प्रकासै ससि यौं कहै सु कहा है॥८॥

पिक अलि के अति सोर तै जानति है अकुलाय।
प्रानपतो[4] सौं प्रान ए मिलै वेगि दै जाय॥८॥

रास कुमार खगे मृगया रस नैक रहो बलि जाउँ तिहारी।
वान कवांन घरीक धरौ निरवारहु होत कुलाहल भारी॥
वृंद कहै परिरंभन कौं शशि आये समीप सदा सुखकारी।
को हो छुवौ जिन आए कहाँ हो चकी चित बोलति रोहिनि नारी॥९॥

मृग भाग्यौ मृगया चकित शशि मंडल तैं मित्त।
रोहिनि कौं पर पुरुष की संका उपजी चित्त॥९॥

पाठभेद :—१. वहुर्‌यो　　२ उगलत ज्यो, उगलत उठो
३ नर सुर असुरन दधि　　४ प्रान प्रीति

अति तीखे कठोर उतंग कुच द्वय याते मनोहर तेरो हियो ।
कवि वृंद कहै पिय के हिय कौं तजि पीठ आलिंगन काहे दियो ॥
सखि मै रस रै रदन छद मै रदन छद दै रस रीझि पियो ।
यह रूसि रह्यौ पुनि मारग ऐबे कौ पाय सुभाय उपाय कियो ॥१०॥

दुपद बैल[1] यह छैल नहिं ताको कियो उपाय ।
तोदन[2] सौं प्रेर्यो चलै सीधै मारग आय ॥१०॥

कंत विदेश वसंत के आवत काम दशा दस हूँ दिसि[3] जागी ।
बागन बागन बीच इते पर कोकिल हो किल बोलन लागी ॥
वृंद कहैं उनके ढिग जाइ कछू तन पीर मिटावन पागी ।
कंठ मनोगि वियोगिनि नागरि राग[4] अलापनि कौ अनुरागी ॥११॥

मेरी धुनि सुनि सबै ह्वै है लजित अधीर ।
औ[5] सुनि कै चुप साधि है कछु घटि[6] है तन पीर ॥११॥

सावन मास भयो मन भावन घोर घुमंड घटा घहराई ।
खेलन कौ वन मांहि चली मिलि संग सखी बनि अंग सुहाई ॥
वृंद कहै फिरि आवत ही घन की घन बूंदन सौं छिति छाई ।
क्यौं न उताल सुचाल चली वह ? भीजत भीजत गेह लौ आई ॥१२॥

सती पक्ष मे—चलत उतावलि बढत श्रम, श्रम तै बढ़त उसास ।
जिन जिय असती जानि है ननंद जिठानी सास ॥१२अ॥

असती पक्ष में—चंदन चित्र सिंगार सब मिटे रमत रति चाव ।
गुरुजन जलते जानि है ह्वै है सुरत दुराव ॥१२आ॥

केसरि चंदन चित्र कपोलनि पाय महावर अंजन नैना ।
प्रात भये लखि सोति सरूप कहै कवि वृंद भयौ चित चैना ॥
लाल के लोचन लाल विलोकि लगे पल नांहि जगे सब रैना ।
यौं जिय जानि विषाद भयौ फिर कौंन विचार कहो कवि वैना ॥१३॥

पाठभेद —१ दुपद बैल नहिं छैल यह
२ प्राजन तोदन तोत्रमित्यमर' मरु देशे 'पुराणी' भाषा—समर्थदान की टिप्पणी
३ दिस हू दिसि, दिस दिस
४ पचम राग अलापनि लागि
५ सुनि
६ कटि

आयो असंत बसंत समैं निज कंत बिदेस दिगंत लियो है।
बागनि बागनि कोकिल कूकि बियोगिनि कौ दुख घोर दियो है॥
तानि कमान की बाननि सौं हनि कै तन व्याकुल काम कियो है।
चातुर नागरि आतुर ह्वै तब काहे मलैगिरि पोन पियो है ? ॥१७॥

गिल्यौ भुजंगम गरल जुत उगल्यौ मलय समीर।
पियत छुटै तन बेग ही मिटै बिरह की पीर॥१७॥

मुख बोलत सत्य न डोलत चित्त लियै सतसील सुभाइ भरै।
स्रुति भाषित रीति हियै ठहराय कै न्याय के पंथ मैं पाय धरै॥
कवि वृंद बिबेक बिचारि बिचारि गहै सतसंग कुसंग हरै।
इतने गुन होइ जो मानस मै तो रमापति को हिय ब्यौम करै॥१८॥

न्याय चलै बोलै भले है याको यह अर्थ।
हरि के हिय की सकल श्री सो नर लैन समर्थ॥१८॥

अति क्षाम तिहारे बियोगन[१] बाम असंगल की बिधि दूर निबारै।
तुव आगम बोलि बतावत बायस पै तिनको बलि भूमि न धारै॥
दुरि सोचि बिचार कै भींत के ऊपर देत निसंक ह्वै हाथ पसारै।
कबि वृंद कहै वह ताहि[२] निहारि कै चंद्रकला सम चित्त बिचारै॥१९॥

भूमि धरत बलि काग कौं बलय निकसि जिन जाय।
बलय सब्द तै चकित ह्वै अथवा लेत न आय॥१९॥

सखि सोन को अंक ससंक धर्‌यौ किसलै अलि तै अति सोभ छयौ[३]।
यह कंबु सुरेखित देखति है कुवलै जुग रंग बधूक लयौ॥
सुनि कै धुनि धूत सखी जन के मुख ब्यंग बिचार बिचार ठयौ।
कबि वृंद कहै मुगधा तिय कौ सठ[३] बापि सिनान कौ लैहि गयौ॥२०॥

सखी बचन सुनि कै स्रवन सठ समुझ्यो मन माँहि।
चिह्न सकल व्यभिचारि के जल क्रीडत मिटि जाँहि॥२०॥

दूरि दिगंतर[४] कारिज पाय प्रयान भयौ मन मोहन पी कौ।
मडि उठे दिगमडल मे घन सोर[५] भयौ अति घोर घनी कौ॥

पाठभेद —१ वियोग तें २. टाहि ३. संग ४. दिगंतर ५. घोर

वृंद कहै गुरु लाज समाज मै देखि उदास भयौ मन ती को।
नैन के नीर तै धीर कहो यह कैसै बिसीरन भाल कौ टीकौ ।।२१।।

तपत कुचन पर नैन जल उठ्यौ धूम भयौ स्वेद।
अलिक तिलक फैल्यौ तबै बिरहिन मन के खेद ।।२१।।

एक सखी सुमुखी विरहातुर लै कर लेखनि प्रेम उजागर।
वृंद कहैं सिगरी निस जागि कै लेख लिख्यौ सब सून्य कौ सागर ।।
सो पुनि भेजि दयो पिय पै पिय चातुर देखत ही वह कागर।
एक ही साथ भयो दुख आनंद पक्षि-पनो चित चाहत नागर ।।२२।।

ऐसी दसा बिचारि कै जिय दुख पायो पीय।
प्रेम नेम दृढ़ जानि कै हरख भयो अति हीय ।।२२।।

अति सुंदर अंग लसै तन सुंदरि है रति को मनु रूप हर्‌यो।
हृदयेस्वर प्रीतम ताके समीप चली हिय पूरन प्रेम भर्‌यो ।।
कबि वृंद ततखिन लायक भूषन हैं तऊ कौन बिचार कर्‌यो।
नन अंजन अंजित नैन किए न तो हार मनोहर कंठ धर्‌यो ।।२३।।

है कजरारे सहज ही लोचन बड़े बिसाल।
आंजत होत बिलब तिहि अजन दियो न बाल ।।२३अ।।
पिय हिय सौं अंतर परै इक तौ यहै बिचार।
कै झुरसै मदनागि तै तातै धर्‌यौ न हार ।।२३आ।।

सखि देखि कछूक उयो ससि मंडल सोभित सुंदर मोहि सुहावै।
तरु नूत के नूतन पल्लव सौं अवलोकत आनद कौ उपजावै ।।
सुखदायक है कबि वृंद कहै उपमा अति उत्तम सो जिय आवै।
हरि की दिस सुंदरि के मुख को कोउ अंग बिभूषन की छबि पावै ।।२४।।

हरि दिस ललना को मनो सोभित अलक[1] रसाल।
अथवा मनहु सिदूर कौ तिलक बिराजति भाल ।।२४।।

इत पुष्प सरासन के सर तै अति भिन्न हृदै सुधि है धन मै।
बिरही दिन मध्य मै प्यास लगी रितु ग्रीषम ब्याकुलता तन मै ।।

पाठभेद :—१. अलिक

कवि वृंद कहैं भय स्रांत त्रिषातुर धावत है जिय है बन मैं।
तऊ सूको सरोबर देखि सखी किहि कारन मोद भयो मन मैं ।।२५।।

जल अरु जलज अभाव तै भई मदन सर हानि।
बिरही सर सूको लख्यो भयो हरष उर आनि ।।२५।।

जान सुजान हौ प्रान के प्रान हौ बुद्धि निधान हौ[1] वाहि वहै वर।
वृंद कहैं अनुराग तिहारे को नारि कियो हिय[2] मैं अतिसै भर ।।
पांडु परै परिपाक समै अरु पत्र बिराजत अर्क प्रभा हर।
बात बिचारि निहारि-निहारि कै ऊख कै बांछति है तरुनी फर ।।२६।।

फलित ऊख उतपात तै धनि छोडि उठ जाय।
रहै अचल संकेत थल कल चाहत इहिं भाय ।।२६अ।।
होत सफल जब ऊख तब देत किसान जराय।
काम धनुष को छेद सो बिरहिनि कौं सुखदाय ।।२६आ।।

छीन भई तन[3] काम तई जिनके हित बाट इतै दिन हेरी।
आगम जोतिष बूझत ही नित देव मनावत सॉझ सबेरी ।।
आए है प्रान पती[4] परदेस तै देहु बधाई कही सुनि मेरी।
वृंद कहैं सुनि गारि दई पुनि मार निकारि दई उनि चेरी ।।२७।।

पिय को आगम सुनत ही फूली सब तन नारि।
बिरह दसा देखी न पिय यौ खिजि दई निकारि ।।२७।।

देखि री प्रीतम ठाढे समीप ए मान री मान सखी जु कहै है।
क्यों मुँह फेरि रही इहि बेर तू हेर इतै मनि मंदिर मै है ।।
वृंद कहैं सुनि ए सखि बैन भरी अति कोपु न उत्तर दैहै।
बार ही बार उदास ह्वै मानिनि दीरघ उष्ण उसास ही लैहै ।।२८।।

पति के अति अपराध तै कीनो कोप प्रकास।
ढॉपति पति प्रतिबिंब कौ भरि भरि उष्ण उसास ।।२८।।

बैठी जहॉ बनि आनिक सुंदरि नागर एक तहॉ चलि आयो।
नारि[5] निहारि कै चित्त बिचारि कै मोतिन को हिय हार बतायो ।।

पाठभेद :—१. चाहि वहै उर २. अतिसै उर भर ३. तिन ४. पिया ५. वार

वृंद कहै जिय की समुझी तिय ऐसै ही वाहि सखी समुझायो।
मन ही मन[1] कछु सिर धूनि[2] इतै करतै कच भार दिखायो ॥२६॥

दुहूँन समुझे[3] दुहूँन की बातै परगट[4] कीन।
नागर मन उज्जल कह्यो नागरि कह्यो मलीन ॥२६अ॥

अथवा हिय के हार ज्यौं हिय पर बसिए तीय।
मिलिहूँ कारी रैंन मैं जिय के प्यारे पीय ॥२६आ॥

मायके तै कबहौं कितहौं निकसी न सदा घर ही महँ खेली।
वृंद कहैं अब हौं मन भाँवती आई कै खेलि है संग सहेली॥
कालि ही कंटक बृक्षन के लगि कंटक अंग कहा गति मेली।
हौं बरजौं चित के हित तै बन कुंजन मैं जिन जाय अकेली ॥३०॥

पति समीप बैठे कही बन खेलन मति[5] जाई।
सखी कुचन नख चिह्न कौं गोपन कियो बनाई ॥३०॥

नैनन अंजन औठन रागत[6] मोर कौ पाय महावर नीकै।
वृंद कपोलन पत्र लता तन चंदन चित्र सदा सबही कै॥
देखत मेरे कहौंक किहीं छिन सास बृथा ही कहै बच फीकै।
सौत ए क्यो दुख पावति है अरु बोलति है तजि कै कुल लीकै ॥३१॥

सखि सौं बरनत सुंदरी सबही सोति सिंगार।
यामैं पिय को आप सौं प्रकटत प्रीति प्रकार ॥३१॥

सुन्दर देह विचित्र सखी घन चंदन चित्र महा छबि छाई।
मीठे सुधाधर बिब से उठत जावक राग रची अरुनाई॥
प्रात समै जु सिंगार कियो सु तौ हौं समुझी सजनी सुखदाई।
वृंद कहै यह कौन विचार सुचित्त बिचार करी चतुराई ॥३२॥

असमै कियो[7] सिंगार यह ताको है यह भाव[8]।
राति सुरत के चिह्न कौं कीनो प्रात दुराव ॥३२॥

पाठातर :—१. मौन ही मौन २. धून ३ समुझी ४ परतिछ ५ मत जाय
६ रगन ७ कीध ८ यौ चाव

पीन उतंग घनस्तनि सुंदरि जाहु बिलास निवास के भीतर।
तोहि बिलोकि अरी अबही जु धरै हिय माँहि संदेह सुधाकर॥
वृंद कहै यह कौंन बिचार है ऐसो बिचारत है चित अंतर।
जान कह्यो[1] कि अजान कह्यो[1] समुझ्यो कि नहीं बलमीक मुनीसर॥३३॥

कुच जुग चकवा ससिहिं लखि नहि बिछुरै छिन[2] मान।
राम साप झूठो कह्यो यो बालमीक अयान॥३३॥

चंद उदै सुख सग समै रस मै रति रीति रची मन मानी।
प्रीतम उद्धत काम भयो जब काम कला करिये यह ठानी॥
वृंद कहै मनि मंदिर भूमि मै देखि कछू जिय सोचि सयानी।
डारि कै चीर बिचारि कहा वह नारि कहो किहि[3] हेतु लजानी॥३४॥

ढाँप्यो[4] ससि प्रतिबिंब कौ अंगन गन मन मानि।
चंद छिपै तै चाँदनी छिपि जैहै यह जानि॥३४॥

लाल लखी पहलै ही समागम केलि कला मै प्रबीन है नारी।
प्रीतम कौ भ्रम सो उपज्यो लखि भीत पै प्यारी करी चित्रकारी॥
गर्भ ते छूटत ही धसि सिंह गयंद के कुंभ मै हाथल मारी।
हेतु कहा कहि वृंद चितै पिय होय प्रसन्न रच्यौ रस भारी॥३५॥

चित्र निरखि कै चतुर पिय समुझ्यौ याकौ भाव।
तिय प्रबीन रति रंग मै याको जाति सुभाव॥३५॥

फटिक रत्न सो निर्मल उज्वल नीर भर्‍यो सर होइ कहाँ ही।
ता मधि जो अरबिंद न होय तौ पान करौ जल होय तहाँ ही॥
हारि निहारि निहारि सुलोचनि मै बिन कौल कहौ जल नाँही।
वृंद कहै यह हेतु कहा सु बिचारि कहो अपने जिय माँही॥३६॥

देखति देखति है तिया मुख लोचन सर माँहि।
कहै कमल जल माँहि है बिना कमल जल नाँहि॥३६॥

हसि लागौ हियै फिरि उत्तर देहु सुनावहु बात पियूष मई।
तजि कोप प्रसन्न भये ही बनै अब चूक अचूक भई सु भई॥

पाठांतर :—१. कहौ २. दिन, निस ३. केहि ४. ढाँक्यो

कबि वृंद कहैं सुनि सासु कही अहो कीर कहै कहा बात नई।
ए जु सारिका मानवती तिनकौं सुक कैसे मनायति देखो दई ॥३७॥

राति कही सुक दिन कही सासु सुनी मन लाई।
ताकौं कियो दुराव तिय ऐसी जुगति बनाई ॥३७॥

एक समै मृगया रस खेलि कै आए है राम वही जग तारन।
खेद भयो परस्वेद भयो मुख की छवि देखि लगी जिय बारन॥
भाँति अनेकन भक्ति करी कवि वृंद कहै चित प्रीति सुधारन।
पै मनि कंकन मंडित पानि तै पाय छुए नहिं सो किहिं कारन ॥३८॥

बात अहल्या की सुनी यातै छुए न पाय।
ककन के मनि गन परसि जिन योषित ह्वै जाय ॥३८॥

आए बसत के चंपक अंब घने फल फूलन कुंज सुधार्‌यौ।
ताहि बिलोकन कौं सखि संग गई सब अंग सिंगार सिगार्‌यौ॥
रंग भरी छबि देखति-देखति वृंद कहै कबि नैन चितार्‌यौ।
लै फल एक बिदारि निहारि कै दर्पन मै मुख काहे निहार्‌यौ ॥३६॥

सम छवि दसन अनार की कबि उपमा जिय लेखि।
है कि नहीं निहचै कियो दर्पन मै मुख देखि ॥३६॥

चंद मुखी उजियारी निसा महि काम के बान लगे तन भेदन।
देत है गारि विधुंतुद कौं ए री ऐसे कहा घटि है घट बेदन॥
वृंद कहै सुन री सजनी सब तोसौं करौं यह भेद निबेदन।
दोस जितो गिन तू हरि कौं जिन कोपि कीयो इनको सिर छेदन ॥४०॥

होत उदर जो चंद कौं ग्रसत राहु जिहि रैन।
पचि जातो जठरागि तै उदित न होत अचैन ॥४०॥

जुद्ध जुरै दुरजोधन सौं, दुहू ओर तै जोर बिछूटत हैं सर।
एक इतै उत सत्रु अनेक तऊ सबकौं कलकान करै नर॥
वृंद पराक्रम देखि सबै सुर धूनत सीस सराहत हैं बर।
पै मुंडमाल[1] उतारत लौ चकि काहे बिलंब कियौ ससि सेखर ॥४१॥

पा०भेद :—१. मुख माल।

सुधा सुधाकर तें खिरत मुंड सजीवन होय।
यातें सिर कंप्यौ न सिब यह समुझौ सब कोय ॥४१॥

राम कुमार गये बन मैं मृगया रस खेलन कौं रुचि ठानी।
ह्वै नियरैं जब मारन कौ गहि बान कमान कसीस कै तानी॥
वृंद कहै यह कौन बिचार कहौ हिय मोद भरी मृगरानी।
देखि छकी बिझुकी न झुकी न हली न चली न चकी न डरानी ॥४२॥

रूप देखि मोहित भई जिय समुझी है काम।
यातें डरि भागी नहीं रही अचल मृग बाम ॥४२॥

मोतिन को हिय हार उदार है माँग सँवारी है मोतिन ही तें।
सेत दुकूल औ चंदन लेप है बेनी कौं मालति संजुत की तें॥
वृंद कहै सब सेत बनाव सु मैं समुझी सबही निज ही तैं।
तैं मुखतें सखि जीत्यौ सुधाकर जीत ही चाहत चाँदनी जी तैं ॥४३॥

सेत सरद की चाँदनी तामैं सेत सिंगार।
मैं समुझी चाहत कियौ अति अलषित अभिसार ॥४३॥

तुम पारथ हू तें बिसेस धनुर्द्धर प्रीति के बैन हिये धरियै।
यह चंद कलंकी करिहै बराबरि मो मुख की दिन दयो भरियै॥
कवि वृंद कबान के बान तें प्रान अहो इनके मृग के हरियै।
पिय प्रात ही चाहत हो जु प्रयान तौ काम इतौ अबही करियै ॥४४॥

प्रात भयो दाहति नही तिय प्रिय को प्रस्थान।
मृग बध तें निसि ससि रहै थिर ह्वै तिही सथान ॥४४-अ॥

अथवा तेरे बिरह तें तजिहौं निहचै जीव।
मो मुख सम ससि देखियौ मो पाछे तुम पीव ॥४४-आ॥

अति सुंदर चंद समान सखी सब काम कला भरपूर भर्यौ।
तिन सौं रति रग तरग रच्यौ वह तौ हित काज सबै बिसर्यौ॥
कवि वृंद कहै सुनि दूति के बैन न उत्तर दैन को काम पर्यौ।
यह कौन बिचार कहौ अपने मुख ऊपर आपनौ हाथ धर्यौ ॥४५॥

तरुन चंद सम तें कह्यौ मो मुख कमल सुभाव।
प्रीति रहित की रीति तहाँ होत प्रीति किंहि भाव ॥४५॥

जानकी नाथ अनाथ के नाथ भुजा भुव मंडल भार गहे तैं।
बैठे हैं राज सभा महि आइ मिले पुरलोक बिलोक सहे तैं।।
वृंद कहै सबही कौं कही यह बात विवेक विचार लहे तैं।
आजहि तैं मेरो नाम पृथीपति कोऊ कहो जिन मेरे कहे तैं।।४६।।

सीता पृथ्वी की सुता सासु भई इहि हेत।
तातै युक्त न पतिपनौं समुझहु भाव सचेत।।४६।।

प्रीतम कौं पतियाँ पठई नहि चातुर जानि करड पठायो।
तापर एक लिख्यौ अहि सुंदर फेरि लिख्यौ सिव जो जिय भायो।।
चाह सौं चपक चारु लिख्यौ पुनि ऐसैंहि भेद सबै समुझायो।
वृंद कहै यह भाव विचारि कहौ तिय[1] के जिय चाव कहायो।।४७।।

सिव के उर अहि सोभिजै त्यौं चपक को हार।
मेरे उर सोभा करै सो भेजहु भरतार।।४७।।

ग्रीषम बासर अग बनाय कै प्यारी मनोहर चित्र बनायो।
तामै लिख्यौ कमला अहि बारुन रुद्र लिख्यौ जिय जैसोहि भायो।।
बैठे है मित्र समाज मै प्रीतम लै सखि हाथ दै पीपै पठायौ।
वृंद कहैं सुबिचार कहौ जु कहा मन मोहन पास मँगायौ।।४८।।

अबर बर श्री साप गज एकादस उनमान।
पिय सताब दै भेजियो जो हो चतुर सुजान।।४८।।

चित उदास न कोमल हास उसास भरै मुख कीने रहै नत।
छीन सखीन के संग न बैठति देखियै दीन कहै न सुनै बत।।
वृंद कहै यह भाव कहा अति निंदति है बिधि कौं अपने मत।
याकौं न रोग न पीकौ बियोग न योग कलेस कौ ए री दसा कत।।४६।।

करिहै दिन दुंइ च्यार मै पिय परदेस पयान।
सुनत भई ऐसी दसा समुझहु भाव सयान।।४६।।

प्रानपती के पयान समै अति काम डरी हहरी हिय मै धन।
क्यौ जिय धीरज कौं धरिहैं रु कहा करिहै उपचार सखी जन।।

पाठभेद :—१. पिय पास कहा यो मँगायौ—समर्थदान की प्रति मे।

वृंद कहै घन घोर उठे करि सोर उठे पिक मोरन के गन।
यौं तकि संक निसंक भई पुनि सौंपि दियौ मनमोहन कौ मन ॥५०॥

तिय मन दीनौ पीय कौ जब ही कियो प्रयान।
अब डर कहा मनोज कौ समुझहु बुद्धि निधान ॥५०॥

कीने कवित्त मजूस बराबरि तामै जवाहर भाव भरे है।
सुच्छ सुदेस सुलच्छन पेखि महा निरदोस खरे सुथरे है॥
ताके दुराव के ताला दये समुझै बुधिवान दुराइ धरे है।
वृंद कहैं पुनि ताके प्रकास कौ कूँची समान के दोहा करे हैं ॥५१॥

रची भाव पंचासिका वृंद भाव सु बिचारि।
भूलि चूक कबि कुल सबै लीजो समझि सुधारि ॥५१॥

गुन सागर सुख सोम सम कासु वासु निधि वाद।
भई भाव पंचासिका यह औरंगाबाद॥

गुन=३, सागर=४, सुख=७ और सोम=१

५

नैन बत्तीसी

सरसति सांमन प्रणम करि बुधि बिमल बरदाय।
सूपसायै भाषा रची कहै कवि वृंद बनाय ॥१॥
राग रंग रस बिरह सुष पंच भाव कौ भेद।
ताको निरनौ वृंद कबि कहत विचार प्रवेद ॥२॥

प्रथम राग वर्णन

बिरही बिलास सुषी बहुत सुख निधांन कुं
न वे निधांन कुं प्रगट दरसावहै।
बिजौगी कुं आस होवै जोगी हठ जोग जागै
रोगी कुं पीर मिटै निद्रा टुक आवहै।
चतुर कुं हार सम बुधी कुं बुध बहु
ठग कुं ठगाई अधिक ऐसो इह भाव है।
मदन कौ दूत अरु मेघ कौ बिलास रस
नी कु रस जागै चित फूलत बिधावहै ॥३॥

पुन

पंचमो प्रवेद स्यौप याको न अंत पार
बिनोद को बिलास रंग मगन रस रात है।

वृंद कबि राग में रसीयो मदन तुर
आवै अकुलात नैन पल न मझ ठात है ।।
ताकी रति चपलता नैना रस लागी रही
कोया सब लालीयु विधांन रंग मात है ।
बिबिध नैन चरित कर लगन लागी
देह देखी रति नैन तोरी पिक जात है ।।४।।

दोहा

इह बिध नैना राग में भीनी जब भरपूर ।
अब गायन बैठी तरुन नैन चढायतु नूर ।।५।।

सवैया

ताल मृदंग उपंग बजावत तंत्रीय तूर पषावज बाजै ।
तार तुरी सहणाई वीणा (रस) सारंग राग अलापत आजै ।।
वृंद कहै सभी यौ बनयौ पुंन मेघ कौ दूत चिहूँ दिस गाजै ।
राग रसी अषियाँ इह बिधसूं दुष जु दुराय-दुराय कै भाजै ।।६।।

अथ रग वर्णन : दोहा

राग रंग में मगनता नैना रही लुभाय ।
वृंद कहै अब रंग कौ भेद सुनावत भाय ।।७।।
अंवर आभूषन रंजत मंजन अंजन नैन ।
ताको प्रथम बिचार कबि कहता है सुध बैन ।।८।।

अथ मजन वर्णन

नवन करै अति जुगत सूं अंजन चाहत नैन ।
अंबर आभूषन सबै रग चाहती मैन ।।९।।
सीस कुं गुंथाय रति राष री सवार बार
अलकां कपोल पर छाकी रस रदन मै ।
टीली कपोल पर काजर की रेष दई
तीषे तिलोने युं सलौनें रस मदन मै ।।

दुलरी चलो री गलै रही लपट लागी
कंकनन बाजु बंध चुरीयां चगन मै।
वृंद कबि ताकौ इह निरखौ न पायौ किन
ऐसी रंग सातो नैन मांनू णीक रसन मै ॥१०॥

अबर बिबिध बनाय जु राती अंगीयां ऐंन।
वृंद कहत रंग मै रसी राती राती नैन ॥११॥

गूंथे बाल ताहु पर फूलन की माल फबै
दतीयाँ दो मेष फूलि जरी है जराव मैं।
नक फूली नीकी फूली फूल कर्णहू के फूले
तिलोना ठोडी के बीच फूल्यौ है फलाव मै॥
आरसी लई हाथ बार बार देषै नैन
नलनो सिर धूणै मोकुं छीनी है छलाव मैं।
वृंद कहै ऐसें समै नैना रंग फूली परी
परी यु जरद गरदन रंग राव मै ॥१२॥

रंग मै नैना रस रही भीनी करत बिलास।
कहै कबि वृंद बनाय कै कर करले रस तास ॥१३॥

अथ रस वर्णन

प्रथम पयसिता घोर पीये गट कें गटी
दुतीय बेर पीय कुं भृंगार रस देत हैं।
अपने मदन की झलक में देषै प्यारो
ताकुं रस ढारी तेढी छैलै तनु वेत है॥
पियकुं पकर उर लपट है दावै धरै
अपनी जु नैन पीय कपोल पर पेत हैं।
नैनन सुं नेह रस पीवत हैं बार बार
मंद मुष पुलक आलिगन पीय प्रेत है ॥१४॥

पलकन के राग सारंग धुनि लेयननि
बिमल पर बान गुन गांन वह रेत हैं।
महर नहीं कहर कहाँ सरल नहीं तेढी परें
बिबिध दुपटां पीर पाटोरी स्वेत हैं॥

मनोगी बिनोदी बरन नहीं मनगकारी
हरन कौ हहरन कछु करन बर देत है।
ऐसै कबि वृंद रंग रस मगन राती माती
बिबिध के रस नैन रस ई रस लेत है ॥१५॥

रस नीको नैना तणौ रसी रसीली नैन।
वृंद कबिसर ताहि कौ बरन करत किह बैन ॥१६॥

अथ बिरह वर्णन

अब विरहै की रीत कबि कहत बिचार निसंक।
तीन भेद है बिरह के कहत न राषूं बंक ॥१७॥

प्रथम नैन देखन बिरह दुतीय प्रीत कौ ठाम।
रोम रोम कौ बिरह सब भेद सुनाऊँ नाम ॥१८॥

प्रथम नैन देखन बिरह

धीठे धीठे नैना अधीठ पर राषे अन्य
सुं बिहांनी युं सुखानी नैन नैन मै।
बहुर कहुं देषै नाह चिहुँ दिस जोवै करै
देषें न कहुँ तहाँ मगन ह्वै मदन मै।
किनही मिस लेहु बार जाहु दिस घेरै बिरह
तिय अकुलानी अंबु काढत ढिलन मै।
वृंद कबि इम कहै याकौ भाव कैसौ कहूँ
नैनन कौ विर बहे रीत समझनन मै ॥१९॥

इह बिध नैन मिलाप कौ बिरह जगावै ऐंन।
मानी ती बिरहै मगन अति ही अरीले नैन ॥२०॥

प्रीत रीत नैना बिरह बरनहुँ बहुत विचार।
ताकौ निरनौ वृंद कबि बिरह बरन हित धार ॥२१॥

अपनें सजन करत कर मिलत जु बिछुरै बांम।
ताको इह सुरतांत सब बिबिध विचार सुं माम ॥२२॥

अथ सज्जन विरह

चलत इत उतै चैन डोलत न पावै कहूँ
व पुछै मेरो सैन आज कहाँ गयो प्रात मे ।
कोउ कहै विदेसी हुवो तहाँ ढुरै नीर पार
सारी सरद कचुकि कै सरद वुंद गात मै ॥
लुषी परै की की ज्योति दरसात वै नांही कहूँ
काजर को वणाव सो उतार दीयो हात मै ।
ऐसें कवि वृद नैन विरह की छकी देषै
सूझै न कछू न ही[1] गडारत है भीत मै ॥२३॥

दोहा

सजन विछुरत नैन इम करत बिरह इह चाव ।
अब विरहो रस रोम को कहत वृंद धरि भाव ॥२४॥

अपनो पति को विछुरनो देषै तब तिय[2] नैन ।
वृंद कहै सुरतात सब चाहत कैसो चैन ॥२५॥

अथ रोम-रोम विरह वर्णन

अजन कुं धौय डारै अचुर[3] कु पौल डारै
फाटे से चिवर सै अग लपटानी है ।
सवही आभूषन षोल षोल डारे परे
मंजन न करै असा अस नहीं मानी है ॥
कबै ठकै गोडी ढारन षनसै तुंगो षिणै
चिहुँ दिस अँधेरी जान नैन धर धानी है ।
कहै कवि वृद युं सवार के पहुर नैना
ऐसी बिरहा की भीनी ठाढी दरसानी है ॥२६॥

परनारी पर नारकी ढुरती ढुरै न ठोर ।
कलवारी बिकलत भई सई पषनी कोर ॥२७॥

पाठभेद —१ न गहि डारत २. हिय ३. अंचर

लालन से सबे डोरे सो कारे परे रोम राजी
भ्रू हारे व लोट षाय अंष मध्य आए हैं।
लाल फीट स्वेतताई कोया बीच ढुरै नीर
श्रावण भद आयौ जिम झरै नीर धाए है ॥
कीकी की ज्यौति दोढ अंगुरी न सूझै टारी
गुदली पुंन डोडल चहुइ दीस न्हाए हैं।
कीकी अति नैन प्यारी फीकी वलि ज्योति धारी
कहै कबि वृंद नैन बिरह रस पाए हैं ॥२८॥

बार बार ऊँची पर चढै जाय अपने पीर
पीवन कुं ज्यौति दरसानी हैं।
डगर की रेष झांषें मेरो पीव आवै नांहि
लंबे निसास बुंद टलकत चितचानी हैं ॥
लंबे निसास लेहु पल पल कुं पलक[१] मोरें
निद्रा की निरासी नैन संकुची बिहानी हैं।
ऐसै कबि वृंद युं भानु कें उदै लौं चंद
ताको बिरह तें सो जान में सीही कुमलानी[२] है ॥२९॥

चसम के तीर सौ तो हूर तै दुराय दीनो
षंत को षंचाव जाय लाग्यौ असमान मै ॥
नैनन की चपलताई दई है उरोज हु कुं
देषनो दीयौ जाय चकोरन कुं थलान मै ॥
संजौगी गुमान देहु विजोगी कौ बिरह लीनौ
पीरन की पीर लई अपनें अंगान मै।
नैना रति प्यासी सो तो बिरह कौ अभ्यास कीनो
वृंद कबि कहै युं बिरहैं रहै बिहान में ॥३०॥

दोहा

इह बिध नैना बिरह मै भीनी है दिन रैन।
त्रिबिध बिरह की कठिनता रोम रोम रंग नैन ॥३१॥

पाठांतर :—१. गुंप्लक २. क्रमलानी

नैन अटारी अट रहीं ढुंढत अपनौ पीव।
जैसें पर नारी परैं घन गरजैं धर नीव ॥३२॥

पीवत न अंब निरासनी काढै छिन टमकाय।
प्रेम पीयाला नैन का सबहु- मलाने धाय ॥३३॥

बिरह बिथा नैना लगी ताकी जरी न कोय।
जाकी मूली वृंद कबि सुष कौ ओषद होय ॥३४॥

टंक रोम त्रीय टंक उरज सात टंक कर चूर।
टंक दसी भ्रमु हा तणौ सुष कौ औषद पूर ॥३५॥

बीस टंक पीय मिलन कौ ओषद ल्याई आन।
अंजन के गुण वृंद कबि टुकहि बषानै बान ॥३६॥

अंजन कीनौ नैन मै सुष भेषज तिह वार।
अब नैना देषो बनी हीये रें धरौ बिचार ॥३७॥

अथ अजन सुख वर्णन

बिकसी ललाई गई सब गुडलताई
कीकी सुं हारी स्याम दूंनी दरसात हैं।
स्वेत बिच डोरे परे कुंदन की सोभा लगी
भाफ नेबें लोट सौं उलोट धर षात हैं॥
सुष हू कौ काजर सौं तीषौ बन्यो है मानुं
अध षुली पलक सौं प्रफुल्ल डहडात हैं।
वृंद कबि कहै ऐसै औषद को प्रकार देषौ
कैसी बिथा कुं मेट ते ढी रस लात हैं॥३८॥

दोहा

अब उनमादी वस्तु सब ल्यावत अपनी ढूंढ[1]।
नीली नैन छिनाय कै केके बस्तु सगूंढ ॥३९॥

मछी की चपलताई नागन की लोट पोट
कोकल को सनेह अंब मंजर पर धाई है।

पाठ —१ ढुंढ

बीज चंद बक्रता भ्रमर ही के रोम लीनैं
चकोरन की चकोरताई दीनी सब लाई है ॥
सिकरा के परन जैसैं सूधे सर लीने छीने
सुकहु की ललाई लेह ठाम दरसाई है।
नैन को सषाई सौ मदन तब प्रगट्यौ दोर
वृंद कहै ठगोरी नैनन की निठुराई है ॥४०॥

अपने पीवन कुं देष लागे दोर पावै जाय
बरजे न माने काहु निडर धीध अटके।
सनन सनन बान वाहै लोकन की न संक जानै
भरीये बाजार बीच घाव देत झटके ॥
सुधा काम प्रेम रस बिरह जोग पंचबान
वाहै करार मगर साँझ मटके।
वृंद कहै ऐसें नैन मदन गढ़ी ढाहवै कुँ
चढ़ी चौंप चूँप चेत चरित रस लटके ॥४१॥

मतवाली मृदंग ज्यूँ कुदर में पीव से इपसार रसाल लीयें।
चकुरान के बान छलाछल वाहत घाव हू धार चिकाय दीयें ॥
कबि वृंद मनोरथ पूरन यो सुष पाय महाबर पान पीयें।
चिर जीवो सदा बैहूँ नैन सदा रंग आनंद मंगल होत हीयें ॥४२॥

दोहा

सुष उपज्यौ बिरहौ गयौ बिकसें नैन बिष्यात।
नैन अटारे गुन बहुत हमसे कह्या न जात ॥४३॥

चिर जीवौ जुग जुग नयन ज्योति ज्योति रस देह।
सब नैना के षेल है मुदै नैन गिन लेह ॥४४॥

नैन झरोषा बदन गढ़ कामदेब की सीष।
सुंदर नगरी बांम[1] की लेत रूप की भीष ॥४५॥

नैन नैन तुम कहा कहो नैन बड़े सुलतान।
नैन बिचारी नैन कौ लीयौ रसकनि दान ॥४६॥

पाठातर :—१. राम

सोरठा

रसीयौ नैन सुजान बिन रसीयौ माने नहीं।
भेद पंच परबान भले सुहाई नैन तुम ॥४७॥

जाने रस में कोय ताकुं नैन रसील है।
चिर जीवौ ए दोय चाटक चतुर लगावणी ॥४८॥

सार सृंगार बिरह रस सुंदर प्रेम बढ्यौ ढिग लैन गती सी।
भाव जु भेद कह्या सब सुंदर सैण सुं जाणल्यौ षौज इती सी ॥
संवत सतरै तेंतालीस वर्ष सु स्रावण क्रुस्न जु तीज तिथी सी।
वृंद भनै सुंगनी[1] नर चाह कें नाम धर्‌यौ ईह नैन बतीसी ॥४९॥

पाठातर —१ सु गुनी

६

श्रृंगार-शिक्षा

परम ज्योति सब मै प्रगट परमानंद प्रकास।
ता प्रभु कौ बंदन करौं मन क्रम बचन बिलास ॥१॥

अबिचल गढ़ अजमेर मै परतषि ख्वाजे पीर।
मन बांछित पुरवै सदा धरत ध्यान चित धीर ॥२॥

बखत बिलंद दलेल दिल सब जग करत सराह।
नेक नजर पतिसाह की तहँ महंमद की सलाह ॥३॥

औरंगसाह महाबली महरबान सुबिहान।
सूबै गढ़ अजमेर कौ कियौ कुली दीवान ॥४॥

करत काम पतिसाह के भरत खजानै दाम।
या महंमद सलाह कै नेकी ही सौं काम ॥५॥

कवित्त

फैली है सुवास महि मंडल प्रकासमान
भासमान जमी आसमान हू कै घेर मै।
जहाँ तहाँ देस बिदिसि बिराजमान (बिदिसि)
नरेस सुरेस किंनरेस हू के नेर मै॥
छहूँ रितु एकसी बहार कबि वृंद कहैं
सोभित सरस सोभा साँझ हू सबेर मैं।

महंमद सलाह जू की नेकी की निकाई ऐसी
फूली है चंवेली जैसी गढ़ अजमेर मै ॥६॥

दोहा

ताको मिरजा कादरी सब बिधि सरस सुजान।
वीर धीर बानैतबर सुबुधि सुरूप निधान ॥७॥

दाता ग्याता भोगता अति चित परम उदार।
कुलमनि मिरजा कादरी रस-चातुर रिझवार ॥८॥

सरस समझि रस रीति मै करत प्रीति निरबाह।
राग रग रुचि रैन दिन चित चतुराई चाह ॥९॥

कवित्त

कहाँ लौं सराहौं जाके बस की बड़ाई उर
हीतै चलि आई जाकौं जानत जिहान है।
नेकी की निकाई महिमडल मै छाई सु तो
सज्जन सुहाई सब करत बखान हैं॥
राग रग रस मैं सरस कवि वृद कहैं
लेत जस देत गुनी लोकन कौं मान है।
जैसो मिरजा कादरी को नाव तैसो बडो मन
मन जैसी रीझ रीझ तैसो बडो दान हैं॥१०॥

दोहा

इहि हेत तै कादरी करत गुनिन को मान।
गुन सुनिबो अरु रीझिबो पुनि दीवो बहु दान ॥११॥

हित चित ताके हुकुम तै उर धरि अति आनंद।
यह सिंगार रचना रची यथा समझि कवि वृंद ॥१२॥

रस सिगार सिंगार की यह रचना अभिराम।
करि 'सिंगार सिच्छा' धर्यौ या पोथी को नाम ॥१३॥

रस मधि रस सिंगार जानत रसिक सुजान।
तिहि आलवन नाइका करियै ताहि वखान ॥१४॥

अथ नायिका-भेद

स्वकिया परकीया बहुरि बारबधू ए तीन।
इनके भेद अनेक है जानत है जिते प्रबीन ॥१५॥

अथ स्वकीया-लच्छन

ब्याहे पति सौ रति करै रहत एक रस नित्त।
सोई स्वकीया समुझियै चलै न कबहू चित्त ॥१६॥

स्वकीया-चेष्टा

सहज सील गुन बिनय जुत अचल चित्त चल नैन।
सेबत पति कौं हित सहित छमा लियै मृदु बैन ॥१७॥

प्रथम ब्याह बिधि कहत हौं कछुक प्रसंगहि पाइ।
जातै उपजत नाइका भेद अबस्था भाइ ॥१८॥

अथ कुल-लच्छन

बिद्या धन परिबार गुन धीर बिनय जुत सोइ।
तिन सौं संबंध कीजियै ज्यौं सुख सोभा होइ ॥१९॥

अथ कन्या-लच्छन

सीलवती सुंदर सरस सुभ लच्छन सब देह।
बहुरि बिचच्छन होइ सो कन्या निहचल नेह ॥२०॥

अथ कन्या गुन

लाँबे लाँबे बार मुख कंज ऐसो सुकुंवार
बड़े नैन कीर जैसी नासिका सुहाई है।
अधर अरुन दंत उज्जल मधुर बैन
कंबुकंठी भाई भुज करनि ललाई है॥
छीन कटि तट दहिनावरत नाभि जाकी
रंभा बिपरीत-रुख जंघा छबि छाई है।
कोमल बरन आछी अंगुरी पातरी देह
ऐसी कन्या ब्याहै ताकौं अति सुखदाई है ॥२१॥

अथ कन्या-दूषण

पिंगल नैन देह दूबरी असित ओठ
बिरल उरज बहु भोजन करति है।
अति बल नींद अति दुस्सह औ रोगबती
बोलत कपोल जाके गाठ-सी परति है॥
थूल कटि पाइ मध्य अँगुरी न लागै भूमि
पिसुन सुभाइ गति चल बिचरति है।
घटि वढ़ि अँगुरी अँगूठा घटि पाइ जाके
ब्याहिए न कन्या ए जु दूषन धरति है॥२२॥

अथ वर-गुन

सुन्दर बदन गात जीवन जगमगात
सीलबन्त धनबन्त जिनकौं सराहियै।
दोऊ कुल सुद्ध अबिरुद्ध है सुभाइ मृदु
बोल मुख बोलै प्रीति रीति थिरता हियै॥
परम पुनीत परिबार सुबिनीत जानै
नीकें राजनीति साँच बचन निबाहियै।
भोग मैं प्रबीन धीर सब गुन पीन ऐसो
दोष तें बिहीन वर ताकौं कन्या ब्याहियै॥२३॥

दोहा

जाति पाँति आचार सुभ धनवंत बिद्या पाठ।
नीरोगी परिबार जुत अरथी बर गुन आठ॥२४॥

अथ वर दोष

पाप की बुद्धि वसै अति दूर नपुंसक भिच्छुक जाहि सुनीजै।
वृद्ध कदर्य हियें कपटी जाके जीवन-वृत्ति विदेस की कीजै॥
होइ जो रोगि दुखी रिनिया अति मूरख दुष्ट सुभाव कहीजै।
ए जिनके घट दोष वसें सब ताहि कुमारिका धूलि न दीजै॥२५॥

दोहा

दूषन भूषन ए कहै यह वरनन व्यौहार।
सनवध सोई होत हैं जो कीनो करतार॥२६॥

च्यार बरन संसार मैं अपनी अपनी रीति।
जाति पाँति कुल होइ सम ब्याह करत करि प्रीति ॥२७॥

सवैया

गावत मंगलचार के गीत सु प्रीति हियै धरि मंडप छावै।
सौध सुधा सौ सुधारि कै सुंदर चित्रित चित्र बिचित्र बनावै ॥
दूलह संग बरात के आगम मांनि सबै मन आनंद पावै।
अंग उछाह सौं रंग के राह सौं चित्त की चाह सौ ब्याह रचावै ॥२८॥

अथ दुलही-बरनन

कंकन हाथ दियै महँदी गति देखत ही रति अंगन मैं।
वास तिलौनैं ति लौंनी बनी है सलौनी सबै छबि अंगन मै ॥
रंग भरी नर लोक मै है सुर लोक मै है न भु-अंगन मै।
आनंद सौं उलही उर मै दुलही फिरै अंगन मै ॥२९॥

अथ दूलह-वरनन

पाँनि रु पाँइ बिराजत कंकन सुंदरता छबि काम की पावै।
सोभत फूलन को सिर सेहुरा मंगल गीत गुनी मिली गावै ॥
वास बसे जर तार के वास जराव के भूषन जोति जगावै।
बाजत बाजे बरात लियै संग या बिधि दूलह ब्याहन आवै ॥३०॥

कवित्त

सब सनबंधी मित्र मंडली कौ संग लै कै
आवत बरात सनमुख जाइ ल्याइयै।
सोधि मुहूरत बीस बिसे सावधान ह्वै कै
अंचल दै गाँठि पांनि ग्रहन कराइयै ॥
चँवरी मैं बैठि च्यार फेरे लेत बिधि जुत
द्विज के बचन बाँच लेत गीत गाइयै।
छाँड़ि हथ-लेवा पाछे पाछे दुलहिनि आवै
आगै आगै दूलह परम सुख पाइयै ॥३१॥

मधुर मधुर पकवाननि सों पोप नीकें
वासन वसन वहु भूपन कों दीजियें।
मीठि मीठि गारि दै प्रगट कीजे मन मोद
कारन सकल सुख कारन के कीजियें॥
दान वहु देकें जस निज गेह आनें
राग रग रुचि अनुराग रस भीजियें।
रति-सी रमनि रति पति सों रमन मिलि
नीकें रति-मदिर में रति सुख लीजियें॥३२॥

अथ स्वकीया-भेद

सुकीया तीन प्रकार की जानत हैं वुधिवत।
मुग्धा मध्या प्रौढा पुनि तिन के भेद अनंअ॥३३॥

अथ नवोढा

वालापन मे व्याहियें वहे नवोढा वाम।
अति उर अति ही सकुचि तन नांहि काम सों काम॥३४॥

अथ विश्रब्ध नवोढा

सौंह विनय ते कछुक डर तजि पौढे पिय पास।
सो विस्रब्ध नवोढ़ा तिय चकित कछुक विसवास॥३५॥

अथ मुग्धा

लज्जा भय हैं मुख्य जिहि सो मुग्धा विख्यात।
सो अकुरित जोवना जोवन अंकुर गात॥३६॥

अथ अग्यात जोवना

जोवन आयो नां लखै अपने तन मै वांम।
सो अग्यात जोवना मुग्धा याको नाम॥३७॥

अथ ग्यात जोवना

अपने तन में जो लषै जोबन आयो बांम।
सोई ग्यात है जोबना अति सुंदर अभिराम ॥३८॥

अथ मध्या

कनक तुला की रीति ज्यौ लज्जा मदन समान।
जामै ऐसी रीति सो मध्या कहत सुजान ॥३६॥

अथ प्रौढा

कोक कला मै अति निपुन चाहै नित पति संग।
सो प्रौढ़ा अति प्रेम जुत अति रति रंग तरंग ॥४०॥

आसन आलिगन बहुरि चुंबन नख रद दान।
अधर पान मर्दन कुचन चाहत चित सुख दान ॥४१॥

रीझि रीझि रति रंग सौ करत सुरति बिपरीति।
कोबिद बचन बिलास मै प्रौढा की यह रीति ॥४२॥

हिय के परम हुलास तै प्रकटन प्रेम प्रकार।
तिय अपनै तन मै सजत ए सोरह सिंगार ॥४३॥

अथ सोरह सिगार नाम कथन · छप्पय

प्रथम सकल सुचि[1] समुझि बहुरि करियै तन मंजन[2]।
बसन[3] महाउर चरन[4] चिकुर रचना[5] मन रंजन॥
अंगराग[6] भूषन अनेक[7] मुख वास[8] राग[9] पुनि।
अंजन नैन[10] चितौंनि[11] मधुर बोलन[12] सुहसन धुनि[13]॥
चातुरी[14] चलन[15] पतिब्रतपन[16] वृंद नियम कबि यह धरत।
जद्यपि अपार सिंगार तऊ तिय सिंगार सोरह करत ॥४४॥

अथ सकल सुचि सिंगार—१

करत सकल सुचि देह की प्रथम यहै सिंगार।
पति हित नीकै रंग कौं करियै बिधि अनुसार ॥४५॥

सुचित एकंत ह्वै कै वासित सुबास लै कै
नासा मुख धारि नीकै संका निखारियै।
जथाजोग जल सौं पवित्र करि हाथ पाय
सुगंध दरब करि धोइकै सुधारियै।।
कीजियै करूरे रूरे क्षामि मुख आखें छाँटि
उज्जल अँगोछा औंछि सुंदर सँवारियै।।
अंतर बहिर ऐसै करियै सरीर सुचि
प्रथम यहै सिगार सुख कौं सिंगारियै।।४६।।

अथ मजन सिंगार—२

तन मन उज्जल होत सुख सब आरस मिटि जात।
मंजन द्वितीय सिंगार कौं इंहि बिधि करत सुहात।।४७।।

केसरि अगर घसि चदन कपूर पूर
सार मृग-सार लै फुलैल मैं मिलाइयै।
चंपक की बेली मन भाँवती सहेलिन के
कोमल कर निकर अंग उबटाइयै।।
वृंद कहि सुंदरी को सुंदर सरीर सब
सुच्छ उसनोदक गुलाब सौं न्हवाइयै।।
आछे आछे उज्जल अँगोछन सौं ओछि ओछि
दर्पन सो तन मन रंजन बनाइयै।।४८।।

अथ बसन सिंगार—३

अमल बसन दिसि बिदेस के पति के हित चित चाव।
यह सिंगार है तीसरो करियै अग बनाव।।४९।।

सारी सेत पीत लाल सबज सुरंगी सूही
बाँधनूं लहरिया चिनोठी ऊदी सार की।
सेत डोरया की पचतोरिया की कोरदार
तिल्लैकारी छौंट की मुकेसी जरतार की।।
लहँगा लसत उर अँगिया अनूप अंग
रूप रंग रुचि रितु रितु अनुसार की।

वृंद कहै कुसुम सुबासित कै बनि ठनि
करियै सरस सोभा बसन सिंगार की ॥५०॥

अथ जाबक-सिंगार—४

दीजत पाइ झबाइकै महा महाउर रंग।
इहि चौथे सिंगार तै पियसंग उपजत रंग ॥५१॥

कंचन रजत की अगर की जवाहर की
चंदन की चौकी बैठिन चौंप चित्त लाइयै।
मनके सुभाइन मै नाइन निपुनता मै
सनै सनै सुखसनै झबा तै झबाइयै॥
वृंद कहै आछे उसनोदक सौं उजराइ
अमल अँगोछें औंछि बिमल बनाइयै।
पंकज-नयनि ! पुनि पंकज से हाथनि सौं
पंकज से पाइनि महाउर दिवाइयै ॥५२॥

अथ केसपास सुधारिबो-सिंगार—५

सुचि सुकुवार सिबार से स्याम सचिक्कन बार।
सोधि सु धूप सुधारिबो यह पँचमौं सिंगार ॥५३॥

सोधन कै कॉक ही तै ब्यौरि अँगुरिनि
नैन नीकी नाइन निहारे बार बार हैं।
अगर सौं धूपि पुनि अंबर सौं धूपि ओपि
अंवर सौं अतर फुलेल मेलि सार है॥
माँग साधि पाटी पारि बैनी गुन लाल गूंदि
बंदन सौं माँग भरै वृंद सु विचार है।
छवा छुवै छूटे सुकुवार सटकारे कारे
ऐसे केसपास को सुधारिबो सिंगार है ॥५४॥

अथ अग राग सिगार—६

सब सुगंध इक ठौर करि करत बिलेपन अंग।
इहि छठएं सिगार तै होत अनंग उमंग ॥५५॥

मेलि मलयागिरि मै अतर अगर घसि
सॉनि घन सॉनियै अगर ही को सत है।
अतर मिलाइ पुनि अबर मिलाइ तामें
एन-सार कुंकुम गुलाव मिलवत हैं॥
वृंद कहैं तन की अतन सोभा होत
करियें अरगजा कि जैसो मनमत है।
सुनि हो सुहाग-भाग-भरी! आछै अग ऐसो
अगराग लायें रंग राग उपजत हैं॥५६॥

अथ भूषन सिंगार—७

पाच पेरोजा लसनिया मुकता लीला लाल।
पुष्पराग हीरा पनॉ ए नव रतन रसाल॥५७॥

रतन रचित ककन खचित चित रुचि भूषन धार।
यह सिंगार है सातवौं उर आनद विचार॥५८॥

बेनी मॉग सीसफूल खुटिला करनफूल
बिंदुली तिलक नक-बेसिर सुचाव के।
पोत कंठ-सरी कठ-हार उरबसी माला
बाजू-बंध बलया बलय भाव भाव के॥
पहुँची मुद्रिका छुद्र-घटिका सु जेहरि है
घुघरू अनौट बॉक बिछिया बनाव के॥
वृंद कहैं कीजै अग अग प्रति भूषित ए
जोत भरे भूषन सुरतन रचाव के॥५९॥

अथ मुखवास सिंगार—८

लौंग कपूर इलायची उर आनंद निवास।
यह सिंगार करि आठमो सुखकारी मुखबास॥६०॥

उज्जल बिमल अति सीतल सुगंध मय
होत है प्रसन्न ऐसे कपूर बरास तैं।

सुखद कुरंग-सार रंग उपजावत है
ललित लवंग रुचि बदन बिलास तैं ।।
जाती-फल जावतरी अमल जुगल एला
चारु दालचीनी परिमल के प्रकास तैं ।
वृंद कहै प्रिय प्रान प्यारी अनयास ही तैं
बसि कर लीजै प्यारो ऐसे मुखबास तैं ।।६१।।

अथ मुख राग सिंगार—६

मुख सोधन पावन करन क्रमुक चूर्ण कथ जोर ।
यह सिंगार नवमौ सुखद सब बिधि सरस तंबोर ।।६२।।

मधुर कसाय कटु तिक्त आदि रस जामैं
गरम नरम रुचिकारी गुन धरियै ।
मगही करंज पेंडी गंगेरी कपूर बेलि
परन पुराने पीत मध्य सीक हरियै ।।
काथ केवरे को फूल वासित क्रमुक-फूल
चूनौं चारु चित चातुरी तैं मित भरियै ।
वृंद कहै पीय सुख सदन रिझाइबे कौं
तरुनि तंबोर की बदन सोभा करियै ।।६३।।

अथ अंजन सिंगार—१०

काजर अनियारो अहो अनियारे दृग ठांनि ।
कर अ-नियारो लाल चित दसम सिंगार बखानि ।।६४।।

सुंदर सुघर नारि आनंद विचार अन
दर्पन निहारि मन मैन-रस भीजियै ।
तिलौंछि फुलैल सौं गुलाब सौं छिरकि कवि
वृंद कहै आछे अंगाछै अंगोछ लीजियै ।।
सुछम सुदेस सविसेस रेखियै सुरेख
अंजन-सलाका सारि अनियारी कीजियै ।
मीन मान भंजन से खंजन से नैननि कौं
पिय मन रंजन कौं अंजन यौं दीजियै ।।६५।।

अथ नैन चितौनी सिंगार—११

चख चितवनि सोई जिह चितै पिय चितबनि बस होत।
यह सिंगार इग्यारवौं जातै प्रेम उदोत ॥६६॥

अति अभिमान भरी बाँकी बाँकी डीठि करि
सोतिन के मन को गुमांन मींड डारियै।
प्यार भरी सरल प्रसन्न डीठ सखिन सौं
लाज भरी डीठ गुरुजन सौं बिचारियै॥
प्रीति रीति भरी रस रंग सौं सलौनी डीठ
तिरछी तरल पीय तन अनुसारियै।
वृंद कहैं मैन सैन दैनी चैन दैनी ऐसै
अमल कमल नैनी नैननि निहारियै ॥६७॥

अथ बोलन सिंगार—१२

रीझत जिहि पिय प्रान-प्रिय बोलत सोइ मुख बोल।
इहि सिंगार षट दून तै उपजत प्रीति अलोल ॥६८॥

स्रौनन कौं सुखकारी चित अति हितकारी
मित्त मान मधुर पियूष सम तोलियै।
भाव भरे चाव भरे चौंप चतुराई भरे
साँच भरे जिनतै कपट पट खोलियै॥
बानी के बिबेक चने चीकने सनेह सने
पीय बस होय काही रस मे झकोलियै।
वृंद कहैं ए हो लोल लोचनि ! अलोल चित्त
अमल असोल ऐसे बोलन सौं बोलियै ॥६९॥

अथ हास्य सिंगार—१३

हास जु च्यार प्रकार को हँसि हसि सुखद सुभाइ।
इहि तेरह सिंगार तै लीजै लाल रिझाइ ॥७०॥

अधर कपोल बिकसै दसन दुति
ऐसै मंदहास भास आनद बिलसियै।

वृंद कहैं कछु कछु कल-धुनि होत जहाँ
ऐसे कल-हास किये पीके चित बसियै ।।
रीझि रीझि दै दै करतारी अतिहास कीजै
काहू समै ए री परिहास कौं उल्हसियै ।
रस बरसावन कौं रंग उपजावन कौं
प्रीतम रिझावन कौ ऐसै हास हसियै ।।७१।।

अथ चातुरी सिगार—१४

चित चतुराई चाव तै चत्रत करि पिय चित्त ।
इहि चवदह सिंगार तै निकट राखिहै नित्त ।।७२।।

प्रथम प्रगट षट भाषा मै प्रबीन हूजै
बहुरौ सुदेस देस भाषा अवगाहियै ।
इंगित आकार तै बिचार गूढ़ जान लीजै
समयो समझि बोलि बचन निबाहियै ।
कामकला केलिकला रागकला रंगकला
इत्यादिक चौंसट कला कौं नीकै थाहियै ।।
प्रीतम चतुर को प्रसन्न चित्त करिबे कौं
वृंद कहैं ऐसी चारु चतुराई चाहियै ।।७३।।

अथ गति सिंगार—१५

अरी चलन सोई निरखि हसै नहि कोइ ।
इहि पनरहै सिंगार तै निहचै पिय बस होइ ।।७४।।

एहो राजहंस की सी रीति चित राखि राखि
सीधै मग आगै देखि देखि पैंड भरियै ।
आतुरी न कीजै एंड़ी बैंड़ी चाल छाँड़ दीजै
कंटकन सौं बचाइ धीरै पाइ धरियै ।।
वृंद कहै लाज लियै सखी को समाज लियै
काज लियै राह भूलिबे कै डर डरियै ।
चलियै री ! ऐसें जैसें नांऊ न धरत कोऊ
यातैं पनरहैं प्रांन प्यारो बस करियै ।।७५।।

पुन:

लाज लपटानी अति वलित ललित बानी
मंद मंद सारस की चाल अनुसारियै।
राजहंस कलहस मत्त गजराज के से
पाइन की धरनि धरनि पाइ धारियै॥
नूपुर नवल पुनि घूँघरू मधुर धुनि
किंकिनी कुनित होत पी पै अनुसरियै।
वृंद कहैं भूषन बसन बनि ठनि ऐसी
गति के गमन मन मोहन को हरियै॥७६॥

अथ पतिब्रत सिंगार—१६

पल पल पतिब्रत राखियै मन क्रम बचन बिचार।
यह सोरहो सिंगार हैं सब सिंगार को सारै॥७७॥

पीके जीय जीयै पीय ही को ध्यान हियै
पीय ही सौं प्रेम नेंम लियै पीके गुन कूजियै।
नैननि तै मन तै प्रतक्ष चित्र सुपने मै
पीय छाँड़ि और काहू देखियै न छूजियै॥
वृंद कहैं भोजन सयन पिय कियै कीजै
पिय ही की टहल पीय देवता कै पूजियै।
पीय के सुभाइ चलै मनसा न हलै चलै
ऐसो पतिब्रत राखि पतिब्रता हूजियै॥७८॥

दोहा

ए सोरह सिंगार सजि पूरन प्रेम प्रकास।
पिय के संग रति रंग के करत सु बिबिध बिलास॥७९॥

अथ रग भवन वर्णन

सुधा सौं सुधारि ओपि ओपि किए दर्पन से
चित्रित चरित्रता मै मन दीजियत हैं।
सुन्दर झरोखा नीकी जालिन के मग मृदु
सीतल सुगंध पौंन सुख लीजियत हैं॥

विविध वितांन ताने विमल बिछौंना ठाने
वृंद कहैं देखि देखि रस भीजियत है।
दीप जोति कौ प्रकास सोंधे की सुवास भास
ऐसे रंग महल मै रंग कीजियत है ॥८०॥

अथ सेज वर्णन

चंदन को पाट सूतबांन को पलिका ढारि
परस नरम सेज ऊपर विछाइयै।
कलाबूत रेसम के सेजबंध नीकै कसि
ऊपर उसीसा धरै अति छवि छाइयै॥
सेबती गुलाब कंज चंबेली के फूलन की
बीनी बीनी पंखुरीनि ऊपर बनाइयै।
तहाँ मिलि दंपति करत बहु भाँति केलि
वृंद कहै या बिधि सरस सोभा पाइयै ॥८१॥

अथ सेज सौझ वर्णन

एक ओर पीरे पीरे पान के धरत बीरे
एला दालचीनी लौंग कपूर समेत हैं।
फूलन के हारे बीजनां सँवारि धरे
एक ओर दर्पन निहारबे के हेत हैं॥
एक ओर सीतल सुगंध जल झारी धरी
अंबर अगर धूप धूपित निकेत है।
एक ओर पीकदांनी अतर गुलाब-दांनी
वृंद कहैं ऐसी सौंज कैसी सोभा देत हैं ॥८२॥

अथ राग समाज वर्णन

मुरज मृदंग ताल मिलित सुगंध बाजे
छंद भेद परनि प्रबंध भेद संग को।
धरु धुर पद चिद गाइन सुघर गावै
करिकै अलाप तांन तरल तरंग को॥

ग्राम सुर बीन बाजै पातर लै नृत्य नाचै
भावहि दिखावै च्चित चाव अग अंग को ।
सुनि सुनि रीझ कीजै रीझ रीझ मोज दीजै
वृ द कहै ऐसे सुख लीजै राग रग को ॥८३॥

अथ रति विलास वर्णन

आपस मै हाव भाव चौंप चाव दाव पाइ
पीवत अधर ह्वै निसक अंक भरि भरि ।
हसि हसि रीझि रीझि रस रग भीजि भीजि
प्रेम बसि कबहौं मनाई पाइ परि परि ॥
वृंद कहै तीक्षन कटाछिन बिलास होत
बचन रचन को हुलास जो मै धरि धरि ।
आछे रति मंदिर मै आछी सेज सौंज साजि
लेत सुख दपति सुरत केलि करि करि ॥८४॥

दोहा

सतरै अडतालै समै उत्तम आसू मास ।
सुदि पांचै बुधवार सुभ पोथी भई प्रकास ॥८५॥

७

पवन पचीसी

अथ वसंत पवन

पटु पराग पट पीत सुखद सुंदर तन सोहत ।
बंसी बंस सुमन खग मृग मन मोहत ॥
करि विलास रस केलि लता ललिता पुंजन मैं ।
सज्जन सदन संचरत धीर विचरत कुंजन मैं ॥
जल न्हात पदमनी बाल हर चढ़त सु विटप कदंब पर ।
माधव सरूप माधव पवन कहत वृंद आनंद कर ॥१॥

मलयाचल बस बान हौन पावन उर अंतर ।
गाहत गिरि वन गहन न्हात तीरत्थ निरंतर ॥
सुजन सुमन सौं मिलत सहज सीतल सुखकारी ।
लिय पराग रस बास भेट धीरज गुनधारी ॥
शिवनाथ चरन बंदन करन दरसन विविध बिलास कौं ।
कहि वृंद परस सेवक पवन जात चल्यो कैलास कौं ॥२॥

कुच गिरि चढ़ि सचरत केलि निरंतर ।
भ्रमर जजीरनि जरे झरत मधुमए घटाझर ॥
सर सरिता तन मंजि पुहुप रज रजि उछारत ।
आन विटप झकझोर तोर गहि मूर उखारत ॥

बन नगर रौर पारत फिरत मदोन्मत मंथर गवन ।
कहि वृंद मदन महिपाल के ए सिंधुर बंधुर पवन ।।३।।

अरु रूढ़ आरूढ सादि आमोद मोद किय ।
भ्रमराबलि गहि बाग प्रबल भुज ताहि ऐंचि लिय ।।
जल थल पर संचरत गहन बन गिरि अवगाहत ।
नीझर जल मुँह फेन खेद मधु स्वेद चुचाहत ।।
कहि वृंद पुहुप रज तें गगन धूरि भूरि पूरित करत ।
ए वाह मदन नर नाह के गंधवाह हठि मन हरत ।।४।।

प्रात समै रति सदन जाल रंध्रन कै आवत ।
हरैं हरैं संचरत तुरत दीपक हिवतावत ।।
करि दंपति रति नींद बस भये निहारत ।
प्रफुलित पदम पराग मोह चूरन गहि डारत ।।
करि वृंद सुरत के खेद के स्वेद बूँद मुक्ता हरत ।
चलि आलि आइ मलयागिरि तै पबन चोर चोरी करत ।।५।।

ढिग गुलाब के आय किलक कलिका मुख खोलत ।
परस सरस सुख देत चटक मिस तें हसि बोलत ।।
कहु केतकी कलित बेलि सौं वलित ललित गति ।
मिलत मालती मुदित सेवि सेवती करत रति ।।
पदमनी संग जल केलि जुत कहत चित चैन कौं ।
यह धीर पवन नायक रसिक अति अधीर रस लैन कौं ।।६।।

वदन कोकनद चूमि चुवत मधु पिवत अधर रस ।
कुच श्रीफल कौं गहत परसि पद पदम होत बस ।।
हरिष वास हठि हरत अंग चंपक आलिंगित ।
जंघ केलि लपटात करत सुख केलि असंकित ।।
रति खेद स्वेद मकरंद जुत मंद मद अति गति धरत ।
कहि वृंद रसिक जन मै पवन ए विलास निसि दिन करत ।।७।।

गहत रूप मंजरहिं चहत रस जुही तन ।
रहत केतकी संग सहत तीछन कंटक तन ।।
करत कमोदिनि केलि डरत नहिं तरत सरोवर ।
भरत अंग वांनरिहि टरत नहि चढ़त तरोवर ।।

कहि वृंद निरंतर रैन दिन पुहुपबती हिय सौं भिरत।
यह मलय पवन कामांध जन डारि संक निधरक फिरत ॥८॥

सुभ्र सरोबर भरे हेम कमलन बन छायो।
मलयाचल तैं चल्यो देखि मन लालच आयो॥
सुखद बास रस चोरि लेत जिनको झकझोरैं।
अलि जामिक किय सोर भोर पीछैं उठि दोरैं॥
कामिनी उच्च कुच गिरि चढ्यो डर्‌यो पर्‌यो गिरि खंज हुव।
कहि वृंद समीर बसंत को मन्द चलत इहि हेत ध्रुव ॥९॥

कुसुम धूरि धूसरित सारत जल सार लार मुख।
मंद चलत गिरि उठत होत हिय परस सरस सुख॥
किय कंठला अलि अबलि निहित किंशुक बधनहियाँ।
भरत अंक केतकी जुही सेवती उलहियाँ॥
बजि सुषिर बंस मुख मधुर धुनि रीझत रतिपति रति रवनि।
कहि वृंद मलयगिरि गरभ तैं बात पोत बिचरत अवनि ॥१०॥

मलयाचल तैं उठ्यो चढ्यो रस लोभ उच्च गिरि।
बिंध्याचल तलहटी खलित ह्वै तहाँ पर्‌यो गिरि॥
गिरत मूरछित भयो बेद—न गज उठि धाए।
दान सलिल तैं सींच कान बीजना हलाए॥
कहि वृंद सु पुहुप पराग मय औ धूरां मधुपनि मल्यो।
ह्वै सावधान दच्छिन पवन हरैं हरैं तब उठि चल्यो ॥११॥

मलय मलय भव बिटप गंध बंधुर सोभा सुठि।
बिषम फनी फन देखि डर्‌यौ थरहर्‌यो चल्यो उठि॥
केलि कला कुल कुसल करत कौतुक किलकारी।
कामिनि की कमनीय गुही वैनी किलकारी॥
अबलोकि बहै भ्रम है भयौ भयौ वनत न टर्‌यौ।
कहि वृंद हेत इंहि तें पवन मंद मंद गति संचर्‌यौ ॥१२॥

चुवत तुरत मधुपान करत अति दमत बिबस गत।
पुहुपवती जे लता लपकि लपट आलिंगित ॥
गिरि गिरि उठि सञ्चरत बिसम सम भूपर लेटत।
लिये मधुप गन संग सुमन सौ अंग धुरेटत ॥
कुल राह लोक उल्लंघिकै ठौर अगम्या तहँ गमन।
कहि वृंद सुकबि दच्छिन कहत मतवारो दच्छिन पवन ॥१३॥

गुंजन अलि अलि गुंज बस बाँसुरी बजावत।
तार तार तरु पात संग पिक गाइन गावत ॥
करत भेंटि कचनारि परस कर तरुनि पयोधर।
डारि पराग अबीर नीर नीझर पिचकी कर ॥
प्रति कुंज सुमन गन सुमन पैं रस फगुवा लै लै घिरत।
कहि वृंद मलय मारुत मनौं सुघर फाग खेलत फिरत ॥१४॥

कोस कोस कौ जोलि रंग बास सँभारत।
बलवत चल तरबारि भौंर चौरनि निरबारत ॥
नत लषि उन्नत ठवत निरिष—नलाबत।
सुमन प्रफुल्लित करत परसि भोगी सुख पावत ॥
कहि वृंद आन फेरत फिरत बस किय नाम अबाम कौ।
यह मलय समीर बजीर हुब काम नृपति के काम कौं ॥१५॥

कोमल सीतल सुरभि परस सुख करत संयोगिनी।
तीछन तपत बिगध कहत दुख भरन वियोगिनो ॥
जिंहि जिंहि विपिन बिहार भयो तिंहि बास प्रकासन।
फनी भखत भयो हीन पीन विरहिनी उसासन ॥
सुनि गनन परस निरगुन भयो कहत वृंद यह ठीक किय।
जहाँ गयो तहाँ दच्छिन पवन संगति पाय सुभाय लिय ॥१६॥

चन्दन वन घन चूरि बकुल कुल मुकुल प्रकासित।
अँबराइन अवगाहि चारु चम्पक किय कम्पित ॥
पाटल परिमल बहुल अमल अरवुज उनमीलित।
चढ़ि चढ़ि वर सिखर भरत झरना जल झीलित ॥

माननी मान मोचत फिरत मदन मोद मन मैं भरत।
कहि वृंद दक्ष दच्छिन पवन जोइ भावत सोइ सोइ करत ॥१७॥

त्रिगुन भई ज्यों जगत सजन ज्यों सब सुष पोषन।
पिय ज्यों लागत हीय चोर ज्यों धसत झरोषन॥
सिव ज्यों भसम पराग भयो बिधि ज्यो कमलासन।
मुनि ज्यों बन नाँहि बसत धरत गधी ज्यो बासन॥
बिप्र ज्यों सलिल मज्जन करत मंद मंद जति ज्यों गबन।
कहि वृंद रसिक ज्यों लेल रस घन ज्यों दच्छन पवन ॥१८॥

अथ ग्रीष्म पवन

बन बन ब्याकुल फिरत कुंज कुंजन प्रति चपत।
गिरि गिरि चढ़ि गिरि परत कूप बापी सर झँपत॥
दाबानल महि पतत बिरह आतप तन आबत।
जिहिं जिहिं परसत जाय ताप तिहि तिहि उपजाबत॥
कहि वृंद रंग रस बास तजि मलिन अंग निस दिन गमन।
सज्जन बसंत बिछुरत भयो बिरही जन ग्रीसम पवन ॥१६॥[1]

तोरि भौंर जंजीर डार आमोद महाबत।
पारत बन बन रोरि उर रिपुर घर महि आबत॥
भयो धूसरित गात धूर आकास उछारत।
झारत फल दल फुल झपटित समूर उखारत॥
सर सरित डोहि किय मलिन जल चपल चहूँ दिसि संचर्‌यो।
कहि वृंद बिसम ग्रीसम पवन जनु खुरग चीफर्‌यो ॥२०॥

पाठान्तर —१. गिर गिर तै चढै गिरत कूप बापी मँह झंपत।
करत उदधि बिस पान फनी फन दाघ न चंपत॥
दावानल मह परत विरह आतप तन लावत।
जिह जिह परसत जाय ताप तिह तिह तन लावत॥
कह वृन्द उदास विराग मय मलिन अंग निस दिन गवन।
सज्जन बसन्त विछुरत भयौ देखहु विरही जन पवन ॥१६॥

अथ वर्षा पवन

कुंजर घन पर चढ़्यो खड्ग चपला चमकावत।
इन्द्र धनुष धनु गहत प्रजा हित रस बरसावत॥
दल बद्दल छिन जोरि छिनक मैं ताहि बिछोरत।
उदधि हिलोरत चोर बिटप झकझोरत तोरत॥
जिहि दिसि प्रसन्न हुइ संचरत कृषि सज्जन फूलत फरत।
कहि वृंद पाबस पवन भूप रूप सोभा धरत॥२१॥

अथ शरद पवन

प्रात समैं जल न्हात बिमल जल भरित सरित बर।
अमल कमल कुल कलित ललित कमला कमलाकर॥
भयो जहाँ रस बास सहित सहि तन सुख कारी।
अलिहि बतावत पंथ जात जित जित उपकारी॥
जहँ तहँ बिलास बिलसत बसत परमहंस पद रज परस।
कहि वृंद सरद सम्मीर यह सज्जन सम सोभा परस॥२२॥

अथ हेमत पवन

ज्यौं ज्यौं आवत निकट कंप त्यौ त्यौं उपजावत।
सकुचावत सब अंग रुचिर रोमांच रचावत॥
अधरहिं खंडन करत नैन भरि आवत पानी।
सीतकार उच्चार होत मुख गद-गद बानी॥
हठि बसन हरत लागत हियैं मान मोच मैमंत कौ।
कहि वृंद कंत तिय सौ मिल्यौ कि चल्यौ पवन हेमंत कौ॥२३॥

फिरत प्रकृति फिरि गई भई बिपरीत गति।
जात किये उपगार तिनहि अपकार करत अति॥
पहिलें अहि खग पोसि बहुरि पाताल पठाए।
जिन पै लिय रस बास लता तप झपटि जराए॥
पदमनी संग रस मै रम्यौ ताहि मलिन किय वृंद कहि।
जोइ मारुत सत वसंत मै सोइ असंत हेमंत महि॥२४॥

अथ शिशिर पवन

चिर परचित दल झारि करत खरौ राज बन।
नव प्रबाल सौं नेल कंप उपजाबत तिहिं तन।।
जहाँ दंपति एकंत रचत जल केलिका गुपगि।
तहाँ जात न लजात रहत उर जात गात लगि।।
जे मित्र मित्र जीवन सरन तिन पदमन कौ परम रिपु।
कहि वृंद सिसिर रित पवन यह नीति रीति अनभिग्य नृप ।।२५।।

८

नीति सतसई

श्री गुरुनाथ प्रभाव तैं होत मनोरथ सिद्धि।
घन तैं ज्यों तरु बेलि दल फूल फलन की बृद्धि ॥१॥

किए वृंद प्रस्ताव के दोहा सुगम बनाय।
उक्ति अर्थ दृष्टांत करि दृढ कै दिए बसाय ॥२॥

भाव सरस समझत सबै भले लगैं यह भाय।
जैसे अवसर की कही बानी सुनत सुहाय ॥३॥

नीकी पै फीकी लगै बिनु अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में रस सिंगार न सुहात ॥४॥

फीकी पै नीकी लगै कहिए समय बिचारि।
सब को मन हरषित करै ज्यौं बिबाह में गारि ॥५॥

रागी अवगुन ना गनै यहै जगत की चाल।
देखौ सबही स्याम को कहत बाल सब लाल ॥६॥

जो जाको प्यारौ लगै सो तिहि करत बखान।
जैसे बिस कौं बिस-भखी मानत अमृत समान ॥७॥

---

३ इष्ट भाय। ६. ऐसे स्याम। ग्वाल गन लाल।

जो जाको गुन जानही सो तिहि आदर देत।
कोकिल अंबहि लेत है काग निबौरी लेत ॥८॥

अन-उद्यमही एक कौ यों हरि करत निबाह।
ज्यौं अजगर भख आनि कै निकसत वाही राह ॥९॥

हलन चलन की सकति है तौ लौ उद्यम ठानि।
अजगर ज्यौं मृगपति वदन मृग न परतु है आनि ॥१०॥

कहा होय उद्यम किए जौ प्रभु ही प्रतिकूल।
जैसै उपजे खेत कौ करं सलभ निरमूल ॥११॥

जाहीं तै कछु पाइयै करियै ताकी आस।
रीते सरवर पै गए कैसै बुझत पियास ॥१२॥

जो जाही को ह्वै रहै सो तिहि पूरै आस।
स्वाति बूँद बिनु सघन मै चातक मरत पियास ॥१३॥

गुन ही तऊ मनाइयै जो जीवन सुख भौन।
आग जरावत नगर तउ आग न आनत कौन ॥१४॥

रस अनरस समभै न कछु पढ़ै प्रेम की गाथ।
बीछू मंत्र न जानई साँप पिटारे हाथ ॥१५॥

कैसै निवहै निवल जन करि सवलन सों गैर।
जैसै वसि सागर बिषै करत मगर सो बैर ॥१६॥

कीजै समझ, न कीजिए बिन बिचारि बिवहार।
आय रहत जानत नही सिर को पायन भार ॥१७॥

दीबो अबसर को भलो जासौ सुधरै काम।
खेती सूखे बरसिबो घन को कौने काम ॥१८॥

अपनी पहुँच बिचारि कै करतब करियै दौर।
तेते पाव पसारिये जेती लाँबी सौर ॥१९॥

पिसुन-छल्यौ नर सुजन सो करत बिसास न चूकि।
जैसे दाध्यौ दूध कौ पीवत छाछहिं फूँकि ॥२०॥

---

८. हेत। ११ निपजै। १४. औगुन तऊ। गुन ही तं ते मानिये।

प्रान तृषातुर के रहै थोरेहूँ जलदान।
पाछे जल भर सहस घट डारे मिलत न प्रान ॥२१॥

बिद्या धन उद्यम बिना कहौ जु पावै कौन।
बिना डुलाए ना मिलै ज्यौं पखा का पौन ॥२२॥

बनती देख बनाइयै परन न दीजै खोट।
जैसी चलै बयार तब तैसी दीजे ओट ॥२३॥

ओछे नर की प्रीति की दीनी रीति बताय।
जैसे छीलर ताल जल घटत घटत घटि जाय ॥२४॥

अन-मिलती जोई करत ताही कौ उपहास।
जैसें जोगी जोग मै करत भोग की आस ॥२५॥

बुरे लगत सिख के बचन हिए बिचारौ आप।
करुबे भेषज बिन पियैं मिटै न तन कौ ताप ॥२६॥

बडे बड़न को दुख हरत, पै न नीच, यह थाप।
घन मेटत पै ना सरित गिरिवर ग्रीसम ताप ॥२७॥

गुरुता लघुता पुरुष की आस्रय बस तैं होय।
करी बूँद मैं बिंध्य सौं दर्पन मैं लघु सोय ॥२८॥

रहे समीप बड़ेन के होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त हैं वृक्ष बराबर बेल ॥२९॥

उपकारी उपकार जग सबसो करत प्रकास।
ज्यो कटु मधरे तरु मलय मलयज करत सुबास ॥३०॥

होय बड़ेरु न हूजिये कठिन मलिन मुख रग।
मर्दन बधन छति सहत कुच इन गुननि प्रसग ॥३१॥

कहूँ जाहु नाहिन मिटत जो विधि लिख्यौ लिलार।
अंकुस भय करि कुंभ कुच भये तहा नख मार ॥३२॥

---

२८. वृंद। २९. रहत।

बिधि रूठे तूठे कवन को करि सक सहाय ।
बन दव भय जल गत नलिन तहँ हिम देत जराय ।।३३।।

✓प्रेम पगत बरजी न क्यौ अब बरजत बेकाज ।
रोम-रोम बिस रमि रह्यौ नाहिन बनत इलाज ।।३४।।

फेर न ह्वै है कपट सों जो कीजै ब्यौपार ।
जैसै हाँडी काठ की चढ़ै न दूजो बार ।।३५।।

करियै सुख कौ होत दुख यह कहु कौन सयान ।
वा सोने को जारियै जासों टूटै कान ।।३६।।

नैना देत बताय सब हिय कौ हेत अहेत ।
जैसें निरमल आरसी भली बुरी कहि देत ।।३७।।

✓अति परिचै तें होत है अरुचि अनादर भाय ।
मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जराय ।।३८।।

सो ताके अबगुन कहै जो जिहिं चाहै नांहि ।
तपत कलंकी बिस भर्यौ बिरहिन ससिहि कहाहि ।।३९।।

सखदाई ए देत दुख सो सब दिन कौ फेर ।
ससि सीतल संयोग मै तपत बिरह की बेर ।।४०।।

विधि के बिरचे सुजन हू दुर्जन सम ह्वै जात ।
दीपहि राखै पवन ते अंचल वहै बुझात ।।४१।।

जासों जैसो भाव सो तैसो ठानत ताहि ।
ससिहि सुधाकर कहत कोउ कहत कलंकी आहि ।।४२।।

आप बुरे जग है बुरो भलौ भले जग जानि ।
तजत बहेरा छाँह सब गहत आँब की आनि ।।४३।।

सौं जु सयाने एक मति यहै कहाबत साँच ।
काँचहि पाच कहै न कोउ पाचहि कहै न काँच ।।४४।।

---

३५. चढत एक ही बार ।
ज्यौ नाई की । ४१ सुजन जन । ४२. कहत सब विरहनि मानत नाहि ।

भले बुरे जहँ एक से तहाँ न बसिए जाय।
ज्यौं अन्यायीपुर मै बिकै खर गुर एकै भाय ॥४५॥

भले बुरे सब एक से जौ लौं बोलत नाहि।
जान परतु है काक पिक रितु बसंत के माहि ॥४६॥

भाव भाव की सिद्धि है भाव भाव मे भेव।
जो मानो तो देव है नही भीत को लेव ॥४७॥

निष्फल सोता मूढ पै कबिता बच्चन बिलास।
हाव भाव ज्यौं तीय के पति के अधे के पास ॥४८॥

न करि नाम रंग देखि सम गुन बिन समझै बात।
गात धात गोदूध तें सेंहुड के ते घात ॥४९॥

बिन गुन कुल जाने बिना मान न करि मनुहारि।
ठगत फिरत सब जगत कौं भेष भक्त कौ धारि ॥५०॥

हित हूँ की कहियै न तिहि जो नर होय अबोध।
ज्यौं नकटे कौं आरसी होत दिखाये क्रोध ॥५१॥

अति अनीति लहियै न धन जो प्यारौ मन होय।
पाए सोने की छुरी पेट न मारै कोय ॥५२॥

मूरख कौ पोथी दई बाचन कौ गुन गाथ।
जैसै निरमल आरसी दई अध के हाथ ॥५३॥

मधुर बच्चन तै जात मिट उत्तम जन अभिमान।
तनिक सीत जल सो मिटै जैसै दूध उफान ॥५४॥

जासो रक्षा होत है ह्वै ताही सो घात।
कहा करै कोऊ जतन बारि ककरिया खात ॥५५॥

सबै सहायक सबल के कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग कौं दीपहि देत बुझाय ॥५६॥

कछु बसाय नहि सबल सो करै निबल पर जोर।
चलै न अचल उखारि तरु डारति पवन झकोर ॥५७॥

---

४८. वकता वचन विलास। ५५ - जवै।--

समय समझ कै कीजिये काम बढ़ै अभिराम।
सैंधव माँग्यौं जेवते घोरा कौ कहा काम ॥५८॥

जो जाही सों रमि रह्यौ तिहिं ताही सों काम।
जैसे किरवा आक कौ कहा करै बसि आम ॥५६॥

जिय चाहै सोई मिलै जियत भलौ हिय लागि।
प्यासौ चाहत नीर कौं कहा करै लै आगि ॥६०॥

जिय पिय चाहै तुम करौ घन चंदन उपचार।
रोग कछू औषध कछू कैसे होत करार ॥६१॥
बिरह तपन पिय बात ते उठत चौगुनी जागि।
जल के सीचे बढ़त है ज्यों सनेह की आगि ॥६२॥

रीस मिटै कैसै कहत रिस उपजावन बात।
ईंधन डारे आग मै कैसे आग बुझात ॥६३॥
अति हठ मत कर, हठ बढै बात न करिहै कोय।
ज्यौ ज्यौं भीजै कामरी त्यौं त्यौ भारी होय ॥६४॥

लालच हू ऐसौ भलौ जासौ पूरे आस।
चाटेहू कहुँ ओस के मिटै काहु की प्यास ॥६५॥

बिष हू ते सर सी लगै रिस में रस की भाख।
जैसे पित्त ज्वरीन कौ करवी लागति दाख ॥६६॥

जो जेहि भावे सो भलौ गुन को कछु न बिचार।
तजि गजमुक्ता भीलनी पहरति गुंजा हार ॥६७॥

हरि रस परिहरि बिषय रस संग्रह करत अयान।
जैसै कोऊ करत है छाँड़ि सुधा बिस पान ॥६८॥

कुल मारग छोड़ै न कोउ होहि बृद्धि कै हानि।
गज इक मारत दूसरो चढ़त महाबत आनि ॥६९॥

५८., सबै। ५९ आक नीव सवही सुखी कहा करै लै आव।
६० तामु रहियै लागि। ६१ जो जिय चाहै सोई करी। ६९. होहु विते की हानि।

जासों निबहै जीबिका करिए सो अभ्यास।
बेस्या पालै सील तौ कैसै पूरे आस ॥७०॥

दुष्ट न छाड़ै दुष्टता कैसे हू सुख देत।
धोएहू सौ बार कै काजर होए न सेत ॥७१॥

कहुँ अबगुन सोइ होत गुन कहुँ गुन अबगुन होत।
कुच कठोर त्यौं हैं भले कोमल बुरे उदोत ॥७२॥

असुभ कहत सोइ होत सुभ सज्जन बचन अनूप।
स्रवन पिता दिय दसरथहि स्राप भयो बर रूप ॥७३॥

एक भले सब कौ भलौं देखौ सबद बिबेक।
जैसै सत हरिचंद के उधरे जीब अनेक ॥७४॥

एक बुरे सब कौ बुरौ होत सबल के कोप।
अबगुन अर्जुन के भयौ सब क्षत्रिन कौ लोप ॥७५॥

बड़ेन पै जाँचै भलौ जदपि होत अपमान।
गिरत दंत गिरि ढाह तें गज कै तऊ बखान ॥७६॥

अबगुन करता और ही देत और कौं मार।
जो पहुँचै नहि रुद्र कौ जारत बिरहिनी मार ॥७७॥

मान होत है गुननि तैं गुन बिन मान न होइ।
सुक सारी राखै सबै काग न राखै कोइ ॥७८॥

आडंबर तजि कीजिए गुन संग्रह चित चाय।
छीर रहित गउ ना बिकै आनिय घंट बँधाय ॥७९॥

जैसौ गुन दीनौ दई तैसौ रूप निबंध।
ए दोऊ कहँ पाइयै सोनौ और सुगंध ॥८०॥

अभिलाषी इक बात के तिन मे होय बिरोध।
काज राज के राजसुत लरत भिरत करि क्रोध ॥८१॥

जो जाकौ चाहै भलौ सो ताही की पीर।
नीर बुझावै आग कौं सोखै ताहि समीर ॥८२॥

---

७६. वडकन। ७९ आनो। ८२. भीर।

अहित किएहू हित करैं सज्जन परम सधीर।
सोखे हू सीतल करैं जैसै नीर समीर ॥८३॥

ह्वै सहाय हित हू करैं तऊ दुष्ट दुख देत।
जैसें पावक पवन कौं मिलै जरायै लेत ॥८४॥

✓अपनी अपनी ठौर पर सोभा लहत बिसेष।
चरन महावर ही भलौ नैनन अंजन रेख ॥८५॥

जो चाहौ सोई करौ मेरो कछु न कहाव।
जंत्री के कर जंत्र है भावै सोइ बजाव ॥८६॥

जाको जैसो उचित तिहिं करिए सोइ बिचारि।
गीदर कैसे ल्याइहै गज-मुक्ता गज मारि ॥८७॥

जुदे न जैसे लहत है मिले बिरंगहु रंग।
काथ संग चूनो परत होत लाल मिलि संग ॥८८॥

नहिं इलाज देख्यौ सुन्यौ जासों मिटत सुभाव।
मधुपुट कोटिक देत तउ बिष न तजत बिषभाव ॥८९॥

जाकौ जासों मन लग्यो सो तिहि आवै दांय।
भाल भस्म बिस मुंड सिव तौऊ सिवा सुहाय ॥९०॥

होय कछू समझै कछू जाकी मति बिपरीत।
कनक भखी जैसे लखै स्याम सेत कौ पीत ॥९१॥

प्रेम निबाहन कठिन है समुझि कीजियै कोय।
भाँग भखन सुगम है पै लहर कठिन ही होय ॥९२॥

✓कोउ बिन देखे बिन सुनै कैसें कहै बिचार।
कूप भेख जाने कहा सागर को बिस्तार ॥९३॥

देव सेव फल देत है जाको जैसो भाय।
जैसौ मुख करि आरसी देखौ सोइ दिखाय ॥९४॥

कुल बल जैसो होय सो तैसी करिहै बात।
बनिक पुत्र जाने कहा गढ़ लैबे की घात ॥९५॥

जाकी ओर न जाइयै वैसे मिलिहै सोइ।
जैसै पच्छिम दिसि गए पूरब काज न होइ ।।९६।।

जैसो बंधन प्रेम कौ तैसो बंध न और।
काठहि भेदै कमल कौ छेद न निकरै भौंर ।।९७।।

जे उदार ते देत है रीझत जिहि तिहि चाल।
गाल बजाए हू करै गौरीकंत निहाल ।।९८।।

अपनी अपनी गरज सब बोलत करत निहोर।
बिन गरजै बोलै नहीं गिरबरहू कौ मोर ।।९९।।

जो सबही कौ देत है दाता कहियै सोइ।
जलधर बरषत सम बिसम थल न बिचारत कोइ ।।१००।।

तिन सों बिमुख न हूजियै जे उपकार समेत।
मोर ताल जल पान करि जैसै पीठ न देत ।।१०१

जो समझै जा बात कौं सो तिहिं कहै बिचार।
रोग न जानै जोतिसी बैद्य ग्रहन कौं चार ।।१०२।।

नवल नेह, आनँद उमँग, दुरै न, मुख चख और।
तब ही जान्यौ जात है ज्यौं सुगध कौ चौर ।।१०३।।

प्रकृति मिले मन मिलत है अनमिलते न मिलाय।
दूध दही तै जमत है काँजी तैं फटि जाय ।।१०४।।

बात कहन की रीति मै है अतर अधिकाय।
एक बचन तै रिस बढ़ै एक बचन तें जाय ।।१०५।।

एक वस्तु गुन होत है भिन्न प्रकृति के भाय।
भंटा एक कौं पित करत, करत एक कौं बाय ।।१०६।।

सुख मै होत सरीक जो दुख सरीक सो होय।
जाकौ मीठौ खाइयै कटुक खाइयै सोय ।।१०७।।

स्वारथ के सबही सगे विन स्वारथ कोउ नाहिं।
सेवैं पंछी सरस तरु निरस भएँ उड़ि जाहि ।।१०८।।

जो लायक जिहिं भाँति कौं तासों तैसी होय।
सज्जन सो न बुरी करै दुरजन भली न कोय ॥१०९॥

सुख बीते दुख होत है दुख बीते सुख होत।
दिबस गए ज्यों निसि उदित निसि गत दिबस उदोत ॥११०॥

जो भावै सोई सही बड़े पुरुष मुख बानि।
है अनंग ताकौ कहै महा रूप की खानि ॥१११॥

दोष भरी न उचारियै जदपि यथारथ बात।
कहै अंध कौ आँधरौ मानि बुरौ सतरात ॥११२॥

पर घर कबहुँ न जाइयै गए घटत है जोत।
रबि मंडल मैं जात ससि छीन कला छबि होत ॥११३॥

उर ही तै कोमल प्रकृति सज्जन परम दयाल।
कौन सिखाबत है कहौ राजहंस कौ चाल ॥११४॥

सज्जन अंगीकृत कियौ ताकौ लेत निबाहि।
क्षयी कलंकी कुटिल ससि तउ सिब तजत न ताहि ॥११५॥

जनि पंडित बिद्या तजहु धनि मूरख अबरेख।
कुलजा सीत न परिहरै कुलटा भूषित देख ॥११६॥

एक दसा निबहै नहीं जनि पछितावहु कोय।
रबि हू की इक दिबस में तीन अबस्था होय ॥११७॥

नर सम्पत दिन पाइके अति मत करियो कोय।
दुर्योधन अति मान तें भयो निधन कुल खोय ॥११८॥

होय सुद्ध मिटि कलुषता सत संगति कौ पाय।
जैसें पारस को परसि लोह कनक ह्वै जाय ॥११९॥

ब्रह्म बनाए बन रहे ते फिर और बनै न।
कान कहत नहिं बैन ज्यौं जीभ सुनत नहिं बैन ॥१२०॥

जाहि पर्‌यौ जैसौ ब्यसन ता बिन रहत न सोय।
सुरा सुरापी ना तजै जदपि बिकल गति होय ॥१२१॥

---

११२ प्रकासियै। ११४ औरहि तें। ११५ राखि कलंकी। ११६ मूरष धन अविरेप। ११७ एक सदा।

जे चेतन ते क्यौं तजै जाकौ जासों मोह।
चुंबक के पीछैं लग्यौ फिरत अचेतन लोह ॥१२२॥

घटति बढ़ति संपति सुमति गति अरहट की जोय।
रीती घटिका भरति है भरी सु रीती होय ॥१२३॥

प्रापति तैसी होति है जिहि जैसी लौ भाइ।
भाजन मित भर सरित में जल भरि भरि लै जाइ ॥१२४॥

उत्तम जन की होड़ करि नीच न होत रसाल।
कौवा कैसे चल सकै राजहंस की चाल ॥१२५॥

उत्तम जन के संग मै सहजै ही सुख भास।
जैसै नृप लावै अतर लेत सभा जन वास ॥१२६॥

या जग की बिपरीत गति समझौ देखि सुभाव।
कहै जनार्दन कृस्न कौं हर कौ संकर नाव ॥१२७॥

भले लगै सब कौं कहौ कोऊ हित के बैन।
पिय आगम के काग बच बिरहिन कौं सुख दैन ॥१२८॥

जो जाके हित की कहै सो ताके अभिराम।
पिय आगम भाखी भलौ बायस, पिक किहि काम ॥१२९॥

कोऊ कहै हित की कहे ह्वै ताही सों हेत।
सबै उड़ावत काक कौं पै बिरहिनि बलि देत ॥१३०॥

को चाहे अपनो तऊ जा सँग लहियै पीर।
जैसै रोग सरीर तै उपजत दहत सरीर ॥१३१॥

एक बिरानौ ही भलौ छिहि सुख होत सरीर।
जैसै बन की औषधी हरत रोग की पीर ॥१३२॥

जो पावै अति उच्च पद ताकौ पतन निदान।
ज्यौं तपि तपि मध्याह्न लौं अस्त होतु है भान ॥१३३॥

---

१२४. लाभाइ। १२६. धारे अतर।

अनुचित अति बल आपनौ कहे अनादर होय।
संग्रह कियौ न नृप दुहिन रुन का गयौ पति खोय ॥१३४॥

कलुष भाव देखै जहाँ उत्तम जन न रहायँ।
पावस मै सर तजि अनत राजहंस उड़ि जायँ ॥१३५॥

जेहि चाहै सोई लहै यौ सुख होइ सरीर।
ज्यौ प्यासे जिय कौ मिलै निरमल सीतल नीर ॥१३६॥

मन-भावन के मिलन बिनु यौ जिय होय उदास।
ज्यों चकोर की दिन दसा चकवा चंद प्रकास ॥१३७॥

जिहिं प्रसंग दूषन लगै तजिए ताकौ साथ।
मदिरा मानत है जगत दूध कलाली हाथ ॥१३८॥

जाके संग दूषन दुरै करिए तिहिं पहिचानि।
जैसै समुझौ दूध सब सुरा अहीरी-पानि ॥१३९॥

जिहिं देखै लांछन लगै तासों दृष्टि न जोर।
ज्यौं कोऊ चितवै नहीं चौथ चंद की ओर ॥१४०॥

मूरख गुन समझै नहीं तौ न गुनी मै चूक।
कहा भयो दिन को बिभौ देखै जो न उलूक ॥१४१॥

खल जन सों कहियै नही गूढ़ कबहुँ करि मेल।
यौं फैलै जग माँहि ज्यौ जल पर बूँद कि तेल ॥१४२॥

एकहि गुन ऐसौ भलौ जिहि अबगुन छिपि जात।
बारिद के ज्यौ रंग बद बरसत ही मिटि जात ॥१४३॥

मूढ़ तहाँ ही मानिए जहाँ न पंडित होय।
दीपक कौ रवि के उदै बात न पूछै कोय ॥१४४॥

बिन स्वारथ कैसै सहै कोऊ करुए बैन।
लात खाय पुचकारियै होय दुधारू धैन ॥१४५॥

सज्जन तजत न सजनता कीनेहू अपकार।
ज्यौ चंदन छेदै तऊ सुरभित करत कुठार ॥१४६॥

---

१४२. गुप्त। बुंदक तेल। १४६. कीन्हेउ दोप अपार।

दुष्ट न छाँड़ै दुष्टता पोखै राखै ओट।
सर्पहि केतौ हित करौ चपै चलाबै चोट ॥१४७॥

धन संच्यौ किहि काम कौ खाउ खरचु हरि प्रीति।
बँध्यौ गंधीलौ कूप जल बढ़ै बढ़ै इहि रीति ॥१४८॥

करै बुराई सुख चहै कैसे पावै कोइ।
रोपै बिरबा आक कौ आम कहाँ ते होइ ॥१४९॥

होय बुराई तें बुरौ यह कीनौ निरधार।
खाँड़ खनैगो और कौं ताकौं कूप तयार ॥१५०॥

दिये सहस गुन देत सो पावै यह सब बात।
बीज देत तिंहि कर सिरी और देत तिंहि दाँत ॥१५१॥

एक भेष के आसरे जाति बरन छिप जात।
ज्यौं हाथी के पाँव मे सबकौ पाँव समात ॥१५२॥

जाको जहँ स्वारथ सधै. सोई ताहि सुहात।
चोर न प्यारी चाँदनी जैसी कारी रात ॥१५३॥

जैसी हो भवितव्यता तैसी बुद्धि प्रकास।
सीता हरिबे तैं भयौ राबन कुल को नास ॥१५४॥

निहचै भाबी कौ कहौ प्रतीकार जौ होइ।
तौ नल-से हरिचद-से बिपत न भरते कोइ ॥१५५॥

कछू सहाय न चलि सकै होनहार के पास।
भीस्म जुधिस्ठिर से जहाँ भो कुरुबंस बिनास ॥१५६॥

अति ही सरल न हूजियै देखौ ज्यौं वनराय।
सीधे सीधे छेदियै बाँकौ तरु बच जाय ॥१५७॥

बहुतन कौं न बिरोधियै निबल जान बलबान।
मिलि भखि जाँहि पिपीलिका नागहि नग के मान ॥१५८॥

बहुत निबल मिलि बल करै करै जु चाहै सोय।
तिनकन की रसरी करी करी निबंधन होय ॥१५९॥

---

१४७. चुपै। १५३. प्यारी। १५४. रावन कौ कुलनास।

दुरजन के संसर्ग तै सज्जन लहत कलेस।
ज्यौ दसमुख अपराध तैं बंधन लह्यौ जलेस ॥१६०॥

सुजन कुसंगति संग तै सज्जनता न तजंत।
ज्यौ भुजंग गन संग तउ चंदन बिस न धरंत ॥१६१॥

कष्ट परेहूँ साधु जन नैक न होत मलान।
ज्यौ ज्यौं कंचन ताइयै त्यौ त्यौं निरमल बान ॥१६२॥

जे उत्तम ते असम सौं धरत न रिस मन माँहि।
घन गरजै हरि हुंकरै स्यार बोल सुनि नाँहि ॥१६३॥

खल बंचित नर सजन कौ नहि न बिसास करेहि।
डहक्यौ उडु प्रतिबिंब तै मुकुता हंस न लेहि ॥१६४॥

मिथ्या-भाषी साँच हूँ कहै न मानै कोय।
भाँड़ पुकारै पीर बस मिस समुझै सब लोय ॥१६५॥

सदा समै बलबान पै नाँहि पुरुष बलबान।
काबरि लरि गोपी लई बिरंथ भये रथबान ॥१६६॥

कन कन जोरै मन जुरै काढ़े निबरै सोय।
बूँद बूँद ज्यौ घट भरै टपकत बीतै तोय ॥१६७॥

थोरे ही गुन तै कहुँक प्रगट होत जग माँहि।
एक हि कर तै जय करी करी सहस कर नाँहि ॥१६८॥

ऊँचे बैठै ना लहै गुन बिन बड़पन कोइ।
बैठो देबल सिखर पर बायस गरुड़ न होइ ॥१६९॥

दुख पाए बिनहूँ कहूँ गुन पावत है कोइ।
सहैं वेध बंधन सुमन तब गुन संजुत होय ॥१७०॥

निपट अबुध समुझै कहा बुध जन बचन बिलास।
कबूँ भेक न जानई अमल कमल की बास ॥१७१॥

बिनसत सतगुन गुनिन के अगुन पुरुष के पास।
ज्यौं अंजन गिरि चंद कर नैकु न होत प्रकास ॥१७२॥

---

१६०. सहत। १६१. दोष तै। १६२. निरमल जान। १६७ खाते निवरै।

साँच झूठ निरनै करै नीति-निपुन जो होय।
राजहंस बिन को करै छीर नीर कौं दोय ॥१७३॥

इक समीप बसि अहित कर, इक हितकर बसि दूर।
हँस बिनासै कमल दल अमल प्रकासै सूर ॥१७४॥

दोषहि को उमहै गहै गुन न गहै खल लोक।
पियै रुधिर पय ना पियै लगी पयोधर जोक ॥१७५॥

भलौ न होवै दुष्ट जन भलौ कहै जो कोय।
बिष मधुरौ मीठौ लवन कहै न मीठौ होय ॥१७६॥

कारज करत असाधु के सब मैं साधु कहाय।
जैसें सीत हेमंत कौं बन जन देत जराय ॥१७७॥

एक उदर वाही समय उपज न इक से होय।
जैसे काँटे बेर के बाँके सीधे दोय ॥१७८॥

हरत दैवहू निबल अरु दुरबल ही के प्रान।
बाघ सिंह कौ छाँड़ि कै देत छाग बलिदान ॥१७९॥

जिहि जासो मतलब नहीं ताकी ताहि न चाह।
ज्यो निसप्रेही जीव के तृन समान सुरनाह ॥१८०॥

जे पर ते पर यह समझ अपनौ होय न कोय।
पालै पोसै काग तउ पिक-सुत काग न होय ॥१८१॥

दीजै सीख अजान कौ मानै सीख सुजान।
टारहि ताजन मारियै ज्यौं काँपे के कान ॥१८२॥

उद्यम कबहुँ न छाँड़ियै पर आसा के मोद।
गागरि कैसै फोरियै उनयौ देखि पयोद ॥१८३॥

कारज धीरै होतु है काहै होत अधीर।
समय पाय तरुवर फरै केतक सींचौ नीर ॥१८४॥

जो पहिलै कीजै जतन सो पाछै फलदाय।
आग लगे खोदै कुआँ कैसे आग बुझाय ॥१८५॥

होत सिद्धि जैसौ समय तैसौ ही अभिलाख।
कौड़ी बिन जात न लियो करी लेत दै लाख ॥१८६॥

क्यौं कीजै ऐस जतन जातै काज न होय।
परबत पै खोदै कुँआ कैसै निकसै तोय ॥१८७॥

साँची संपति और की और भागवै जाय।
कन संग्रह चैंटीन कौ ज्यौ तीतर चुगि जाय ॥१८८॥

सेयौ छोटौ ही भलौ जासौं गरज सिराय।
कीजै कहा पयोधि कौं जातै प्यास न जाय ॥१८९॥

स्रम ही तै सब मिलत है बिन स्रम मिलै न काहि।
सीधी अँगुरी घी जम्यौ क्यौ हू निकरै नाँहि ॥१९०॥

कहियै बात प्रमान की जासौं सुधरै काज।
फीकौ थोरे लौन तै अधिकै खारौ नाज ॥१९१॥

कहै रसीली बात सों बिगरी लेत सुधारि।
सरस लौन की दाल मै ज्यौ नीबू रस डारि ॥१९२॥

जो चाहै सोई करै बड़े असंकित अंग।
सबके देखत नगन हर धरत गौरि अरधंग ॥१९३॥

बड़े सहज ही बात तै रीझि देत बकसीस।
तुलसी दल तै बिस्नु ज्यौ आक धतूरे ईस ॥१९४॥

बड़े कहै सो कीजियै करै सु करियै नाँहि।
हर ज्यौ पंचन मै फिरै और जो बिकत कहाहि ॥१९५॥

काहू कियौ न कीजियै तिय जिय कौ बिस्वास।
गौर धरी अरधंग हर हरि घर घर में बास ॥१९६॥

सुधरी बिगरै बेग ही बिगरी फिर सुधरै न।
दूध फटे काँजी परे सो फिर दूध बनै न ॥१९७॥

न कछु, तऊ जाकी तलब ताही की मनुहार।
तिलक समय नृप लेत है तून हू हाथ पसार ॥१९८॥

गुनी तऊ अवसर बिना आदर करै न कोइ।
हिय तें हार उतारियै सयन समय जब होइ ॥१९९॥

---

१९६. कह्यौ। १९९. आग्रह।

जदपि आपनौ होय तउ दुख मै करत न सीर ।
ज्यौं दुखती अँगुरी निकट दूसरि ताहि न पीर ॥२००॥

बिद्या मिलै अभ्यास तैं सुजन सुभाव मिलै न ।
सौत बिपुल काननि करै बिपुल न ह्वै हैं नैन ॥२०१॥

काम समै पावै सु दुख जे निबलन के संग ।
मरदन खंडन सहत है ज्यो अबला के अंग ॥२०२॥

यह कहबत, जैसौ करै तैसौ पावै लोय ।
औरन कौ आँधे करै आँधी कहियत सोय ॥२०३॥

छोटे नर तैं रहत है सोभायुत सिरताज ।
निरमल राखै चाँदनी जैसै पायंदाज ॥२०४॥

हित हू भलौ न नीच कौ नाहिन भलौ अहेत ।
चाटि अपावन तन करै काटि स्वान दुख देत ॥२०५॥

सहज रसीली होय सौ करै अहित पर हेत ।
जैसै पीडित कीजिये ऊख तऊ रस देत ॥२०६॥

कर बिगरी सुधरै बचहिं जैसें बनिक बिसेख ।
हींग मिरच जीरौ कहै हग मर जर लिख लेख ॥२०७॥

अरि के संग कुटुंब लखि जिय उपजत है त्रास ।
बैसौं लगै कुठार कौं तब बनराइ बिनास ॥२०८॥

कबहुँ कुसंग न कीजियै किए प्रकृति की हानि ।
गूंगे कौं समझाइबो गूँगे की गति आनि ॥२०९॥

कोऊ काहू कौं बुरौ करै परै तिहि धाम ।
काटे पर की नाक कौं नकटी रानी नाम ॥२१०॥

कहा करै कोऊ जतन प्रकृति न बदलै कोइ ।
सानै सदा सनेह मैं जीभ न चिकनी होइ ॥२११॥

जदपि सहोदर होय तउ प्रकृति और की और ।
बिस मारै ज्यावै सुधा उपजै एकहि ठौर ॥२१२॥

---

२०२. जस निर्बल के अंग । २०९. कबहूँ संग । २१२, जीवै ।

डरे न कबहूँ दुष्ट सौ जाहि प्रेम की बान।
भौर न छाँड़ै केतकी तीखे कंटक जानि ॥२१३॥

बहुत किएहू नीच कौं नीच सुभाव न जात।
छाँड़ि ताल जल कुंभ मैं कौवा चोंच भरात ॥२१४॥

चतुर कूर इक से गनै जाके नाँहि बिबेक।
जैसै अबुध गँवार कौं पाँच काँच है एक ॥२१५॥

कूर न होवै चतुर नर कूर कहै जो कोइ।
मानौ काँच गँवार तउ पाँच काँच नहिं होइ ॥२१६॥

कैसै हू छूटत नहीं जा मै परी कुबानि।
काग न कोइल ह्वै सकै जो विधि सिखवै आनि ॥२१७॥

भेष बनावै सूर कौ कायर सूर न होय।
खाल उढ़ावै सिंह की स्यार सिंह नहिं होय ॥२१८॥

धन बाढ़ै मन बढ़ि गयौ नाहिन मन घट होय।
ज्यौ जल सँग बाढ़ै जलज जल घटि घटै न सोय ॥२१९॥

सब तैं लघु है माँगिबौ जा मै फेर न सार।
बलि पै जाँचत ही भए बाबन तन करतार ॥२२०॥

बड़े न लोपै लाज कुल लोपै नीच अधीर।
उदधि रहै मरजाद मै बहै उलट नद नीर ॥२२१॥

नाम भलौ होत न भलौ भाग जिहिं भाल।
लच्छि नाम माँगत फिरै भूखौ नाम भुवाल ॥२२२॥

उत्तम पर कारज करै अपनौ काज बिसार।
पूरै अन्न जहान कौ ता पति भिच्छाधार ॥२२३॥

देबन हू सौं देब प्रभु कहा सुरेस नरेस।
कीनौ मीत धनेस तउ पहरै चर्म महेस ॥२२४॥

सब इक से होत न कहूँ होत सबन मैं फेर।
कपरौ खादी बाफतौ लोह तबा समसेर ॥२२५॥

---

२१३. काहू। २१७. कोइल ज्यो खे।

अपनौ समै बिचारि कै अरि जीतिए अचूक।
दिबस काग घूघहि हनै कागहि निसि ज्यौं घूक ॥२२६॥

छल बल समय बिचारि कै अरि हनिए अनयास।
कियौ अकेले द्रोन-सुत निसि पांडव कुल नास ॥२२७॥

काम परे ई जानिए जो नर जैसौ होय।
बिन तायै खोटौ खरौ गहनो लखै न कोय ॥२२८॥

जैसी सगति तैसियै इज्जत मिलि है आय।
सिर पर मखमल सेहरै पनही मखमल पाय ॥२२९॥

अनघर सुघर समाज मै आय बिगारै रंग।
जैसै हौज गुलाब कौ बिगरै स्वान प्रसंग ॥२३०॥

अनमिल सुमिल समाज सो होत गए उठि चैन।
जैसै तिन पर देत दुख निकसै बिकसै नैन ॥२३१॥

चतुर सभा मै कूर नर सोभा पावत नाँहि।
जैसै वक सोहत नही हस-मंडली माँहि ॥२३२॥

रसिक सभा मे निरस नर होत होत रस हानि।
जैसै भैसा ताल परि मलिन करत जल आनि ॥२३३॥

मिल्यौ दुस्ट नाहिन भलो उपजत मिलै अहेत।
ज्यौं काँटौ गड़ि देह मै अटकि खटकि दुख देत ॥२३४॥

दोख धरै निरदोस कौं जे नर होय सदोस।
घटि उदार दाता कहै जाहि न जिय संतोस ॥२३५॥

होत सुसगति सहज सुख दुख कुसंग के थान।
गधी और लुहार की देखहु बैठि दुकान ॥२३६॥

भले बचन मुख नीच के नाहिन होत प्रकास।
हींग लसुन मे ना मिले घन कस्तूरी बास ॥२३७॥

सुधरै बिगरि कुसंग तै सत संगति कौं पाय।
बास बसी कर हींग की जीरा सँग मिटि जाय ॥२३८॥

---

२३८. बासहि सीकर।

नीच सुसंगति हू मिलै करत नीच सों प्यार।
खर कौं गंग न्हवाइयै तऊ न छाँड़ै छार ॥२३९॥

बिगरौ होय कुसंग जिहिं कौन सकै समझाय।
लसुन बसाए बसन कौं कैसै फूल बसाय ॥२४०॥

ह्वै है बड़े बड़ेन सों होय न छोटे काज।
गहे बिटप जु फनीन कौं गहि न सकै गजराज ॥२४१॥

अजुगत लखि नर नीच की काहू कौ न सुहात।
दाख बिरानी खात खर को न देखि अनखात ॥२४२॥

छाँड़ि सबल अरु निबल की कबहुँ न गहिए ओट।
जैसै टूटी डार सों लगै बिलंबै चोट ॥२४३॥

प्रेम छके मन कौं हटकि रखि न सकै कुल लाज।
कमल नाल के तंतु सों को बाँधे गजराज ॥२४४॥

बात प्रेम की राखिए अपने ही मन माँहि।
जैसे छाया कूप की बाहर निकसै नाँहि ॥२४५॥

ताकौं त्यौ समझाइए ज्यौं समझे जिहिं बानि।
बैन कहत मग अंध कौ ज्यौं बहरे कौं पानि ॥२४६॥

विपत परे सुख पाइए ता ढिग करिए भौंन।
नैन सहाई बधिर के अंध सहाई स्रौंन ॥२४७॥

हीन अकेलौ ही भलौ मिले भले नहिं दोय।
जैसै पावक पवन मिलि बिफरै हाथ न होय ॥२४८॥

जैसौ थानक सेइयै तैसौ पूरै काम।
सिंह गुफा मुक्ता मिलै स्यार खुरी खुर चाम ॥२४९॥

बाँके सीधे को मिलन निबहै नाँहि निदान।
गुन-ग्राही तौऊ तजत जैसे बान कमान ॥२५०॥

क्यों करिए प्रापति अलप जामें स्रम अति होय।
कौन जु गिरिवर खोदि कै चूहौ काढ़ै जोय ॥२५१॥

---

२३९. मिलै सुसगति उच्चहू। सुसंगति नीच हु मिलै करत नीच सु प्यार।

होय पहुँच जाकी जिती तेतौ करत प्रकास।
रबि ज्यौं कैसे करि सकै दीपक तम को नास ॥२५२॥

जहाँ चतुर नाहिन तहाँ मूढ़न कों ब्यवहार।
बर पीपर बिन हो रहे ज्यौं एरंड अधिकार ॥२५३॥

होय न कारज मो बिना यह जु कहै सु अयान।
जहाँ न कुक्कुट सबद तहँ होत न कहा बिहान ॥२५४॥

उत्तम कौ अपमान अरु जहाँ नीच कौ मान।
कहा भयौ जु हंस को निंदा काग बखान ॥२५५॥

जथाजोग की ठौर बिनु नर छबि पावै नाँहि।
जैसै रतन कथीर मै काँच कनक के माँहि ॥२५६॥

बिपति बड़ेई सहि सकै इतर बिपति तै दूर।
तारे न्यारे रहत हैं गहैं राहु ससि सूर ॥२५७॥

ठौर छुटे तै मीत हू ह्वै अमीत सतरात।
रबि जल उखरे कमल कौं जारत गारत जात ॥२५८॥

होत बहुत धन होत तउ गुन जुत भए उदोत।
नेह भर्‌यौ दीपक तऊ गुन बिनु जोति न होत ॥२५९॥

कहा भयौ जो धन भयौ गुन तै आदर होइ।
कोटि दोइ धारी धनुस गुन बिन गहत न कोइ ॥२६०॥

जात गुनी जात न तहाँ आडंबर जुत सोइ।
पहुँचे चंग अकास लौं जौ गुन संजुत होइ ॥२६१॥

गुनबारौ संपति लहै लहै न गुन बिन कोइ।
काढ़े नीर पताल तै जो गुन-जुत घट होइ ॥२६२॥

को करि सकै बड़ेन सौं कबहूँ प्रति उपकार।
गिरि सुर नर राख्यौ न दधि मुनि अँचयो जिहिं बार ॥२६३॥

बिद्या गुरु की भगति सो कै कीन्हे अभ्यास।
भील द्रोन के बिन कहै सीख्यौ बान बिलास ॥२६४॥

---

२६३. सुर तरु।

गुरुहु सिखावै ग्यान गुन सिस्य सुबुद्धि जो होय।
लिखै न खरदरि भीत पर चित्र चितेरौ कोय ॥२६५॥

पंडित पंडित सो मिलै संसै मिटत न वेर।
मिलै दीप दुहुँ दुहुँन कौं होत अँधेर निबेर ॥२६६॥

उद्दिम बुधि बल सों मिलै तब पावत सुख साज।
अंध कंध चढ़ि पंगु ज्यों सबै सुधारत काज ॥२६७॥

जाको हृदय कठोर तिहिं लगै न कोमल बैन।
मैंन बान ज्यों पथर मै क्यौं हू किए भिदै न ॥२६८॥

सबको रस मैं राखिए अंत लीजिए नाँहि।
बिस निकस्यो अति मथन तै रतनाकरहू माँहि ॥२६९॥

फल बिचारि कारज करौ करहु न ब्यर्थ अमेल।
तिल ज्यौं बारू पेरिए नाहिन निकसै तेल ॥२७०॥

पीछे कारज कीजिए पहिले पहुँच बिचार।
कैसे पावत उच्च फल बावन बाँह पसार ॥२७१॥

दुस्ट निकट बसिए नही बसि न कीजिए बात।
बदली वेर प्रसंग तैं छिदै कंटकन पात ॥२७२॥

तिनके कारज होत है जिनके बड़े सहाय।
कृस्न पच्छ पांडव जयी कौरव गए बिताय ॥२७३॥

पुन्य बिबेक प्रभाव तै निहचल लच्छि निवास।
जौं लौं तेल प्रदीप मैं तौं लौं जोति प्रकास ॥२७४॥

नर कारज की सिद्धि लौं करै अनेक प्रकार।
छूटै रोग सरीर तै को ढूँढ़े उपचार ॥२७५॥

अरि छोटौ गनिए नहीं जाते होत बिगार।
तृन समूह कौं छिनक मै जारत तनक अँगार ॥२७६॥

छोटे अरि पै चढ़हु सजि सुभट सस्त्र तन त्रान।
लीजै ससा अखेट पर नाहर कौ सामान ॥२७७॥

---

२७७. छोटे अरि पर चढत हू सजै सुभट तनत्रान। ससक सिकार पर।

गुन त संग्रह सब करै कुल न बिचारै कोय ।
हरि हू मृगमद को तिलक करत लेत जग मोय ॥२७८॥

बुरौ होय तउ सुकुल कौं तासो बुरी न होय ।
जदपि धुआँ है अगर को करत सुगंधित सोय ॥२७९॥

ताकौ अरि कहा करि सकै जाके जतन उपाय ।
जरै न तातो रेत सौं जाके पनही पाय ॥२८०॥

पंडित जन कौ स्रम मरम जानत जे मतिधीर ।
कबहूँ बाँझ न जानई तन प्रसूत की पीर ॥२८१॥

सूर बीर की संपदा कायर लै नहिं जाय ।
निहचै जानौ सिंह बलि स्यार न कबहूँ खाय ॥२८२॥

भूपति के सँग सुभट गन आपस मै यह रीत ।
बन अभीत ज्यौं सिंह ते बन तै सिंह अभीत ॥२८३॥

जाय दरिद कलि जनन कौं सेये राज समाज ।
सिंह तृपित तब होतु है हाथ चढ़ै गजराज ॥२८४॥

बीर पराक्रम ना करै तासौं डरत न कोइ ।
बालक हू कौ चित्र कौ बाघ खिलौंना होइ ॥२८५॥

बीर पराक्रम तै करै भुब मंडल कौं राज ।
जोराबर यातै करत बन अपनौ मृगराज ॥२८६॥

जोराबर अरि साधियै बुध बल कियै उपाय ।
कालयमन कौ ज्यौं किसन, पट मुचुकुंद उठाय ॥२८७॥

राजा के बल लोक सब फिरै चिरै चहुँ ओर ।
ज्यौं बन मैं छूटे चरै बाँधे हद के जोर ॥२८८॥

नृप प्रताप तै देस मै रहै दुस्ट नहिं कोइ ।
प्रगटें तेज दिनेस कौं तहाँ तिमिर नहि होइ ॥२८९॥

यहै बात सबही कहैं राजा करै सु न्याब ।
ज्यौं चौंपर के खेत मैं पासौ परै सु दाब ॥२९०॥

०. जाती । २८१ परम । है

कारज ताही को सरै करै जु समै निहारि।
कबहुँ न हारै खेल जो खेलै दाँउ बिचारि ॥२९१॥

सब देखै पै आपनौ दोष न देखै कोइ।
करै उजेरौ दीप पै तरे अँधेरौ होइ ॥२९२॥

संत कस्ट सहि आपुही सुखि राखै जु समीप।
आप जरै तउ और कौं करै उजेरौ दीप ॥२९३॥

मारै इक रच्छा करै एकहि कुल कौं होय।
ज्यौं कृपान अरु कबच ये एक लोह सों दोय ॥२९४॥

अपनी अपनी ठौर पर सबकौं लागै दाव।
जल में गाडी नाव पर थल गाड़ी पर नाव ॥२९५॥

मुनि मन सुथिर कुबात तै कैसे राखे कोइ।
जल प्रतिबिंबत बात बस थिर हू चंचल होइ ॥२९६॥

जो हाजिर अबसान पर सोई सस्त्र प्रमान।
दाभहि तै वलदेव ज्यौं हरे सूत के प्रान ॥२९७॥

बड़े अनीति करै तऊ बुरो कहै नहिं कोय।
बालि हन्यो अपराध विनु ताहि भजै सब कोय ॥२९८॥

नीति निपुन राजानि कौ अजुगत नाहिं सुहाय।
करत तपस्या सूद्र कौं ज्यौं मार्यौ रघुराय ॥२९९॥

लघु मिलिए गरुवे जदपि वड़े कछू लै नाहिं।
गिरिवर आने कपिन के ज्यौं मकरालय माँहि ॥३००॥

भले बुरे छोटे बड़े रहै वड़ेनि पै आय।
मकर असुर सुर गिरि अनल दधि मधि सकल बसाय ॥३०१॥

बड़े भार लै निरवहैं तजत न खेद बिचारि।
सेस धरा धरि भूधरे अब लौं देत न डारि ॥३०२॥

बुरी करै पर जे वड़े भली करै हित धारि।
जैसे दधि बाँध्यौ तऊ कपि दल दियौ उतारि ॥३०३॥

उत्तम जन सौं मिलत ही अबगुनहूँ गुन होय।
घन सँग खारो उदधि मिलि बरसै मीठौ तोय ॥३०४॥

काहू सौं नाहीं मिटै अपरापत के अंक।
बसत ईस के सीस तउ भयो न पूर्न मयक ॥३०५॥

कोऊ दूर न करि सकै बिधि के उलटे अंक।
उदधि पिता तउ चंद को धोय न सक्यो कलक ॥३०६॥

गहिए ओट बड़ेन की जहाँ मिटै दुखदद।
उदधि सरन मैनाक को कछु करि सक्यो न इ द ॥३०७॥

छल बल धर्म अधर्म करि अरि साधिए अभीति।
भारत में अरजुन किसन कहा करी युध रीति ॥३०८॥

गाहक सबै सपूत के सारै काज सपूत।
सबको ढंपन होत है जैसे बन कौं सूत ॥३०९॥

आप कस्ट सह और कौं सोभा करत सपूत।
चरखी पींजन चरन खिच जग ढाँकन ज्यौं सूत ॥३१०॥

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान ॥३११॥

सुख दिखाय दुख दीजियै खल सौं लरियै नाँहि।
जो गुर दीने ही मरै क्यो बिस दीजै ताहि ॥३१२॥

बिन बूडो ही जानिए बुध मूरख मन माँहि।
छलकै ओछे नीर घट पूरे छलकत नाँहि ॥३१३॥

सहज सतोस है साध कौं खल दुख दैन प्रबीन।
मछुवा मारत जल बसत कहा बिगारत मीन ॥३१४॥

सुंदर थान न छोडियै जौ लौं मिलै न और।
पिछलौ पाँउ उठाइयै देखि धरन को ठौर ॥३१५॥

फिर पीछे पछताइयै सो न करै मति सूध।
बदन जीभ हिय जरत हैं पीवत तातौ दूध ॥३१६॥

को सुख, को दुख देत है देत करम झकझोर।
उरझै सुरझै आप ही धुजा पवन के जोर ॥३१७॥

सब सुख है संतोस मै धरियै मन संतोस।
नेक न दुरवल होत है सर्प पवन के पोष ॥३१८॥

पॉय परेहू पिसुन सौ विससि न करिए बात।
नमत कूप को डोल ज्यों जीवन हर लै जात ॥३१९॥

सवल न पुस्ट सरीर को सवल तेज युत होय।
हृस्ट पुस्ट गज दुस्ट ज्यौं अंकुस के बस होय ॥३२०॥

कायर नर को देख रन मुख फीकौ दरसाय।
कॉचो रँग ज्यौं धूप मै झटक चटक उड़ि जाय ॥३२१॥

दोस धरै गुनि को पिसुन इह डर गुन न विसारि।
जूँ के भय ते वसन को देत कहा कोउ डारि ॥३२२॥

भली करत लागत बिलम बिलम न बुरे विचार।
भौन बनावत दिन लगै ढाहत लगति न वार ॥३२३॥

सोई जानो आपनो रहै निरंतर साथ।
होत परायो आपनो सस्त्र पराए हाथ ॥३२४॥

बिनसत बार न लागई आछे जन की प्रीति।
अंबर डंबर सॉझ के ज्यौं बारू की भीति ॥३२५॥

करिए वात न तन परस खल ढिग जैए नॉहि।
कटुक नीम तर जात ही मुख करुऔ ह्वै जाहि ॥३२६॥

निपट अमिलती वात को कैसे करिहै कोइ।
बसन नील के माट मै कबहूँ लाल न होइ ॥३२७॥

देखि ठिकानौ मॉगिए मॉगे मिलै जु होइ।
मुनि घर भीतर कांगही ढूँढ़ै लहत न कोइ ॥३२८॥

कहे मूढ़ की बात को करिए जो हित होय।
सौह दिवाए और के परे अगिन में कोय ॥३२९॥

---

३२१. रंग पतग ज्यौं। ३२४. सोई अपनो। ३२६ प्रात के। ३२९ जो चित होय।

झूठहु ऐसो बोलिए साँच बराबर होय।
ज्यौं अँगुरी सो भीत पर चाँद बतावै कोय ।।३३०।।

समझै अनसमझै कछुक कहिए मीठी बात।
बालक के सुनि सुनि बचन जैसे स्रवन सुहात ।।३३१।।

सुबुध बीच परि दुहुँन कौं हरत कलह रस पूर।
करत देहरी दीप ज्यौं घर आँगन तम दूर ।।३३२।।

अधिक दुखी लखि आप तैं दीजै दुख बिसराय।
धरम सुअन बन दुख हर्यौ मुनि नल बिपति बताय ।।३३३।।

होत बुरे हूँ तें भलो काहू समै प्रकास।
अधिक मास तें ज्यौं मिट्यौ पांडब फिर बनवास ।।३३४।

एक अनीति करै लहै सगी दुख सुख नाँहि।
भीम कीचकन कौं दिए मारि चिता के माँहि ।।३३५।।

बड़े बिपत मै हूँ करै भले बिराने काम।
किय बिराटपति की बिजय अरजुन करि सग्राम ।।३३६।।

बडे बड़े हू काम करि आप सिहाबत नाहिं।
जय जस उत्तर कौं दियो पथ बिराट के माहिं ।।३३७।।

बड़े बचन पलटै नहीं कहि निरबाहै धीर।
कियो बिभीसन लकपति पाय बिजय रघुबीर ।।३३८।।

बुरी करै तेई बुरे नाहिं बुरो कोउ और।
बनिज करै सो बानिया चोरी करै सो चोर ।।३३९।।

झूठ बसे जा पुरुष मै ताही की अप्रतीति।
चोर जुआरी सो भले यातें करत न प्रीति ।।३४०।।

कुल सपूत जान्यौ परै लखि सुभ लच्छन गात।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात ।।३४१।।

जनमत जननी उदर मै कुल को लेत सुभाव।
उछलत सिहनि को गरभ सुनि गरजन घनराव ।।३४२।।

---

३३१ सवै सुहात। ३४२ लपियत। नियमित। होत वियत घनराव।

बिना सिखाए लेत है जिहिं कुल जैसी रीति।
जनमत सिहनि कौ तनय गज पर चढ़त अभीति ।।३४३।।

सत्य बचन मुख जो कहत ताकी चाह् सराह् ।
गाहक आवत दूर ते सुनि इक सब्दी साह ।।३४४।।

प्रेम पगन जासो भई सुख दुख ताके संग।
बसत कमल अलि बास बस स-कमल भखत मतंग ।।३४५।।

चहल पहल अवसर परे लोक रहत घर घेर।
ते फिर दृष्टि न आवहीं जैसे फसल बटेर ।।३४६।।

बुद्धि बिना बिद्या कहो कहा सिखावै कोइ।
प्रथम गाँव ही नाहि तौ सींव कहाँ ते होइ ।।३४७।।

बहुत न बकिए कीजिए कारज औसर पाय।
मौन गहे बक दाँब पर मछरी लेत उठाय ।।३४८।।

भजत निरंतर संत जन हरि पद चित्त लगाय।
जैसे नट दृढ़ दृस्टि करि धरत बरत पर पाँय ।।३४९।।

का रस मै का रोष मै अरि ते जिनि पतियाय।
जैसै सीतल तप्त जल डारत आगि बुझाय ।।३५०।।

चप चप करती ना रहै नर लवार की जीह।
चल-हल दल जैसे चपल चलत रहै निसि दीह ।।३५१।।

जैसो प्रभ तैसो अनुग होय सुबात प्रमान।
बावन कर की लष्टिका बढ़े चढ़ी असमान ।।३५२।।

बढ़ै न ऐसो कौन है दान मान को पाय।
पाय धरा बामन भए सीस स्वर्ग धर पाय ।।३५३।।

अपनी कीरति कान सुनि होत न कौन खुस्याल।
नाग मंत्र के सुनत ही बिस छाँड़त है ब्याल ।।३५४।।

बिद्या याद किए बिना बिसरत इहि उनमान।
बिगर जात बिन खबर के ढोली कैसो पान ।।३५५।।

सबै धकावै निबल कौं सबल पुरातन पाठ।
डारै जारि बहाय दै अनिल अनल जल काठ ॥३५६॥

अंतर अँगुरी चारि कौ साँच झूठ मै होय।
सब मानै देखी कही सुनी न मानै कोय ॥३५७॥

निबहै सोई कीजिए पन अपने उनमान।
वैसै होत गरीब पै राजा कौ सौ दान ॥३५८॥

जोर न पहुँचै निबल कौं जो पै सबल सहाय।
भोडर की फानूस कौ दीप न बात बुझाय ॥३५९॥

कारन बिन कारज नहीं निहचै मान बचन्न।
करै रसोई जौ मिलै आग ज्वलन जल अन्न ॥३६०॥

परी बिपत तें छूटियै करियै जोर उपाव।
कैसै निकसै जतन बिन परी भौंर मै नाव ॥३६१॥

दुख सुख दीबे कौं दई है आतुर इहि ठाट।
अहि करंड मूसा पर्‌यौ भखि निकस्यौ उहि बाट ॥३६२॥

प्रेरक ही तें होत है कारज सिद्ध निदान।
चढ़ै धनुष हू ना चलै बिना चलाए बान ॥३६३॥

होय भले कै सुत बुरो भलौ बुरे कै होय।
दीपक कै काजर प्रगट कमल कीच तें होय ॥३६४॥

हार बड़े की जीत है निबल न जानहु तास।
बिमुख होय हरि ज्यौं कियौ कालयमन कौ नास ॥३६५॥

होय भले चाकरन तें भलौ धनी कौ काम।
ज्यौं अंगद हनुमान तें सीता पाई राम ॥३६६॥

सबकी समै बिनास मै उपजति मति बिपरीति।
रघुपति मार्‌यौ लंकपति जो हरि लै गयो सीति ॥३६७॥

जो धनबंत सु देय कछु देय कहा धनहीन।
कहा निचोरै नगन जन न्हान सरोबर कीन ॥३६८॥

---

६० इधन। जलन। ३६४ जोय। ३६५ मार वडे की हार है। मानैतास।

सुख सज्जन के मिलन कौं दुरजन मिलै जनाय ।
जाने ऊख मिठास कौ जब मुख नीम चबाय ।।३६९।।

होत चाह तब होतु है प्रेम सु सज्जन संग ।
पास दियै बिन बाँस पर चढ़ै न गहरौ रंग ।।३७०।।

जाहि मिलै सुख होतु है ता बिछुरै दुख होय ।
सूर उदै फूलै कमल ता बिन सकुचै सोय ।।३७१।।

झूठे ही करियै जतन कारज बिगरै नाँहि ।
कपट पुरुष ज्यौं खेत पर देखत मृग भज जाँहि ।।३७२।।

प्रेम नेम के पंथ कौ है कछु अद्‌भुत रूप ।
पिय हिय लागै लगत ज्यौं सरद जोन्ह सी धूप ।।३७३।।

दुखदाई सोइ देतु सुख सुखदाई सँग जात ।
घट जल भींजे चीर कौ लागि लूअ सियरात ।।३७४।।

सम सहाय के बिन मिले सुखदाई दुख देइ ।
भिँजे चीर बिन घट सलिल लागत तपत करेइ ।।०७५।।

कारज सोई सुधरिहै जो करियै सम भाय ।
अति बरषै बरषै बिना जौ करिसन कुम्हिलाय ।।३७६।।

सज्जनता ना मिलै कितौ जतन करौ किन कोइ ।
ज्यौ कर फार निहारियै लोचन बड़ौ न होइ ।।३७७।।

बिन बनाव बानिक बने ताही के कुबखान ।
दगले पर ज्यौं अरगजौ मीठे पर ज्यौं स्वान ।।३७८।।

तन बनाय उपजाय रुचि ठानत मान निदान ।
ज्यौं पंचामृत छाँड़ि कै करत तपत जल पान ।।३७९।।

तनको देतन तनत जो मन मिलयो तजि लाज ।
ज्यौ अंकुस कौ नटत कोउ दै गिरि सों गजराज ।।३८०।।

छोटे मन मै आइहै कैसैं मोटी बात ।
छेरी के मुँह में लियौ ज्यौ पेठा न समात ।।३८१।।

---

३७२. घन खेत पर । ३७३ सरद जौन । ३७८ गदले पर । मीठे पर तनत्रान ।

होत निबाह न आपनौ लीने फिरत समाज ।
चहा बिल न समात है पूँछ बाँधिए छाज ॥३८२॥

रहै प्रजा धन यत्न सौं जहँ बाँकी तरवार ।
सो फल कोउ न लै सकै जहाँ कटीली डार ॥३८३॥

जासौं परिचै होय सो पावै तिहि उनमान ।
रुपिया कौं खोटौ खरौ कैसे कहै अजान ॥३८४॥

बिना प्रयोजन भूलिहू ठटिए नाही ठाट ।
जैबो नहि जा गाँव कौं ताको पूछ न बाट ॥३८५॥

आपुहि कहा बखानियै भलौ बुरौ कौ जोग ।
ऊढ़े घन की बान कौं कहैं बटाऊ लोग ॥३८६॥

इंगित तै आकार तै जानि जात जो भेट ।
तासौं बात दुरै नहीं ज्यौं दाई सौं पेट ॥३८७॥

जानै सो बूझै कहा आदि अंत बिरतंत ।
घर जनमे पसु के कहा देखत कोऊ दंत ॥३८८॥

कहिबौ कछु करिबौ कछू है जग की बिधि दोय ।
देखन के अरु खान के और दुरद रद होय ॥३८९॥

आप कहैं नाहीं करै ताकौं है यह हेत ।
आप जाय नहि सासुरै औरन कौं सिख देत ॥३९०॥

जो कहियै सो कीजियै पहिलै करि निरधार ।
पानी पी घर पूछिबौ नाहिन भलौ बिचार ॥३९१॥

पीछे कारज कीजियै पहिलै जतन बिचार ।
बड़े कहत हैं बाँधियै पानी पहिले बार ॥३९२॥

अरिहू बूझै मत्र तौ कहियै साँच सुनाय ।
ज्यौं भीसम पाडबन कौं दीनौ मरन बताय ॥३९३॥

कहियै तासौं जो हितू भली बुरी हू जायि ।
चोर करै चोरी तऊ साँच कहै घर जायि ॥३९४॥

---

३८२ लगावै । ३८५ चलियै जाँही गाम की वहै पूचियै बाट । ३८५ बात कौ ।

संपत बीते बिलसिबौ सुख कौं चाहे कोइ।
रूख उखारे फूल फल कहु धौ कैसे होइ ॥३९५॥

रन सनमुख पग सूर के बचन कहे तै संत।
निकष न पीछे होत है ज्यौ गयंद के दंत ॥३९६॥

आय बसें जिहि दिन सुछिन जे सज्जन चित माँहि।
चित्र महावत दुरद पर ज्यौ चढ़ि उतरै नाँहि ॥३९७॥

बिन बूझे ही कहत हैं सज्जन हित के बैन।
भले बुरे को कहत हैं ज्यौं तमचुर गत रैन ॥३९८॥

बिछुरे गए बिदेस हू सज्जन बिछुरे नाँहि।
दूर भए ज्यौं कुरज की सुरति सुतन के माँहि ॥३९९॥

बसियै तहाँ बिचारि कै जहाँ दुष्ट गति नाँहि।
होत न कबहूँ भंवर डर ज्यौ चंपक बन माँहि ॥४००॥

दान देत धन हीनता होत तथापि बखान।
दुरबल तऊ सराहियै दुरद झरत जब दान ॥४०१॥

ठीक कियै बिन और की बात साँच मत थाप।
होत अँधेरी रैन मै परी जेंबरी साँप ॥४०२॥

झूठ बिना फीकी लगै अधिक झूठ दुख भौन।
झूठ तितौ ही बोलियै ज्यौ आटे में लौन ॥४०३॥

ठौर देखि कै हूजियै कुटिल सरल गति आप।
बाहर टेढ़ौ फिरत है बाँबी सूधौ साँप ॥४०४॥

एकत हू रह सजन खल तजत न अपनौ अंग।
मनि बिसहर बिस-कर सरप सदा रहत इक संग ॥४०५॥

भले वुरी जौ आदरै कौन सकै निरबारि।
सीत बिमल पावन करन चलत नीच गति बारि ॥४०६॥

दोऊ चाहैं मिलन कौं तौ मिलाप निरधार।
कबहूँ नाहिन बाजिहै एक हाथ सौ तार ॥४०७॥

---

४०२. थर्प। सर्प।

हिए दुष्ट के बदन तैं मधुर न निकसै बात।
जैसे करुबी बेल के को मीठे फल खात ॥४०८॥

रूखे बचन मिलाप मो कहत होत रस भंग।
बीन बजत ज्यौं तार के टूटे रहत न रंग ॥४०९॥

आप अकारज आपनौ करतु बुबुध के साथ।
पायँ कुल्हारी आपने मारतु मूरख हाथ ॥४१०॥

ताही कौं करियै जतन रहियै जिहिं आधार।
को काटै ता डार को बैठे जाही डार ॥४११॥

न्याय करत बिगरै कछू तौ न करहु अपसोस।
धार परत जौं राजपथ तौ न देत कोउ दोस ॥४१२॥

भले भली ही कहत हैं पै न कहत हैं दोष।
सूरदास कह अंध कौं उपजाबत हैं तोष ॥४१३॥

सदा सुथान प्रधान है बल न प्रधान बताव।
नाग डराबत गरुड कौं हर उर हार प्रभाव ॥४१४॥

जामे बिद्या नारदी बिगरन देत न लाग।
पैस चोर, भुंसि स्वान कौं कहत धनी सौं जाग ॥४१५॥

भाग हीन कौं ना मिलै भली बस्तु कौं भोग।
दाख पके मुख पाख कौ होत काग को रोग ॥४१६॥

सब कोऊ चाहत भलो मित्र मित्र की ओर।
ज्यौं चकई रबि कौं उदै ससि कौं उदै चकोर ॥४१७॥

भले बंस संतति भली कबहूँ नीच न होय।
ज्यौं कंचन की खान मै काँच न उपजै कोय ॥४१८॥

सूर बीर के बंस मै सूर बीर सुत होय।
ज्यौं सिहनि के गरभ मै हिरन न उपजै कोय ॥४१९॥

करै न कबहूँ साहसी दीन हीन कौ काज।
भूख सहै पर घास कौं नाँहि भखै मृगराज ॥४२०॥

---

४१९ ज्यो हिरनी के गरभ मैं सिंह न उपजै कोय। ४२० वनराज।

मान धनी नर नीच पै जाचै नाहिंन जाय।
कबहूँ न माँगै स्यार पै बरु भूखौ मगराय ॥४२१॥

छोटे नर सों बडिन कौ कबहूँ बुरौ न होय।
फूस आगि करि ना सकै तपत उदधि कौं तोय ॥४२२॥

नीचहु उत्तम संग मिलि उत्तम ही ह्वै जाय।
गंग संग जल निद्य हू गंगोदक के भाय ॥४२३॥

अधिक चतुर की चातुरी होत चतुर के संग।
नग निरमल के डाँक ते बढ़त जोति छबि रंग ॥४२४॥

परतछ नीके देखिए कह बरने कोउ ताहि।
कर कंकन कौ आरसी को देखत है चाहि ॥४२५॥

सहज सील गुन सजन के खल बुधि होत न भंग।
रतन दीप की ज्यों सिखा बुझत न बात प्रसंग ॥४२६॥

रति रस स्रुति रस राग रस पाय न चाहत और।
चाखत मधु अरबिंद को लै न ईख-रस भौंर ॥४२७॥

मोह महा तम रहत है जौं लौं ग्यान न होत।
कहा महा-तम रहि सकै आदित भए उदोत ॥४२८॥

सुबुध अबुध की सेब कौ यह सरूप जिय थाप।
थल में रोपित कमल ज्यों बधिर करन मै जाप ॥४२९॥

यों सेवा राजान की दीनी कठिन बताय।
ज्यों चुंबन ब्याली बदन सिंह मिलन के भाय ॥४३०॥

पंडित अरु बनिता लता सोभत आस्रय पाय।
है मानिक बहु मोल को हेम-जटित छबि छाय ॥४३१॥

इक गुन तें सोभा लहै इक औगुन अबरोह।
सोभ उरोजन पीनता त्यों कटि कृसता सोह ॥४३२॥

सुजन सुजन के दरस ही पावत जिय संतोष।
लहत कच्छ के बत्स ज्यों सोम-दृष्ट ते पोष ॥४३३॥

---

४२१. वलि। ४२२. ओछे। ४३०. नीकी कठिन।

सब संपति फल करत है सुहृद जनन को हेत ।
दूरहि सूरज उदित ज्यो कमलन कौं सुख देत ॥४३४॥

ऊँचे पद को पाय लघु होत तुरत ही पात ।
घन तें गिरि पर गिरत जल गिरिहूँ तै ढरि जात ॥४३५॥

अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूठ बनाय ।
वेस्या बरस घटावही जोगी बरस बढाय ॥४३६॥

अपने लालच के लिये दुखहू आवै दॉय ।
कान बिंधावै खाय गुर पहिरै बीर बधाय ॥४३७॥

धनी गुनी कौ न्याय ही धन अरपै धरि हेत ।
सगुन पात्र को कूपहू मिलतहि जीवन देत ॥४३८॥

गुन सनेह जुत होतु है ताही की छबि होत ।
गुन सनेह की दीप की जैसे जोति उदोत ॥४३९॥

सुनि मुख मीठी बात को को चाहत कटु बात ।
चाखि दाख के स्वाद को कौन निबौरी खात ॥४४०॥

रस की कथा सुनी न तिहि कूर कथा की चाहि ।
जिन दाखै चाखी नहीं मिष्ट निबौरी ताहि ॥४४१॥

प्रेमी प्रीत न छांडही होत न प्रन तें हीन ।
मरे परे हू उदर मै ज्यो जल चाहत मीन ॥४४२॥

अति उदारता बडेन की कहँ लौं बरनै कोय ।
चातक जाचै तनिक घन बरस भरै घन तोय ॥४४३॥

बड़े जु चाहैं सो करै करन मतो उर धारि ।
हरि गिरि तारे जलधि पर करी सिला तें नारि ॥४४४॥

अबसर बीते जतन को करिबो नहि अभिराम ।
जैसे पानी बह गये सेतुबध किहि काम ॥४४५॥

दुष्ट संग बसिये नहीं दुख उपजत इहि भाय ।
घसत बंस की अगिन तै जरत सबै बनराय ॥४४६॥

---

२३४ शिव सपति । ४३७ बलाय । ४४० सुनि सुनि । ४४१ सुनत नहि । न सुनत तिहिं । ४४३ महि तोय ।

करै अनादर गुनिन कौ ताहि सभा छबि जाय।
गज कपोल सोभा मिटत ज्यों अलि देत उड़ाय ॥४४७॥

कहूँ कहूँ गुन तें अधिक उपजत दोष सरीर।
मधुरी बानी बोलि कै परत पींजरा कीर ॥४४८॥

भले बुरे निबहै सबै महत पुरुष के संग।
चंद सर्प जल अगिन ये बसत संभु के अंग ॥४४९॥

बिना कहे हूँ सत पुरुष पूरैं पर की आस।
कौन कहत है सूर को घर घर करत प्रकास ॥४५०॥

कछु कहि नीच न छोड़िये भलो न बाको संग।
पाथर डारे कीच मै उछरि बिगारै अंग ॥४५१॥

हीन जानि न बिरोधियै वहै होत दुखदाय।
रजहू ठोकर मारिये चढै सीस पर आय ॥४५२॥

नाहिं करत उपकरन तें काज सिद्ध बलबान।
मुनि बन बसिबौ संग मृग किय अगस्त दधि पान ॥४५३॥

बिना दिए न मिलै कछू यह समझौ सब कोय।
देत सिसिर मै पात तरु सुरभि सपल्लव होय ॥४५४॥

यह निहचै करि जानिये जानहार सो जाय।
गज के भुक्त कपित्थ के ज्यो गिरि बीज बिलाय ॥४५५॥

जो सेबक कारन करै होत प्रभू को नाम।
तरत नील कर तें पथर कहत तिराये राम ॥४५६॥

दूर कहा नियरे कहा होनहार सो होय।
धुर सींचे नारेल के फल मै प्रगटे लोय ॥४५७॥

आये आदर ना करे पीछे लेत मनाय।
घर आये पूजै न अहि बाँबी पूजन जाय ॥४५८॥

---

४५१ न कछु नीच कौ सग। कबहू। ४५२ वह तो तन दुखदाय। ४५३. सिद्धि।
४५३. बसयौ। ४५४ होत सिसिर। ४५७ जड। आयो नाग न पूजई।

कहूँ अनादर पायकै गुनी न करहु अँदेस।
बिद्या है तौ करहिगे सब कोऊ आदेस ॥४५९॥

अपने अपने समय पर सबकौं आदर होय।
भोजन प्यारौ भूख मै तिस मै प्यारौ तोय ॥४६०॥

होय सो होय हिसाब सों बिन हिसाब नहिं होय।
भषै बदन तै अन्न ज्यो नाहि नाक तै कोय ॥४६१॥

जिंहि डर डरि करिये जतन उपजत सोइ अमेट।
लगै दूखती चोट ज्यो होति कनौडे भेट ॥४६२॥

मीठी कोऊ बस्तु नहि मीठी जाकी चाह।
अमली मिसरी छाँड़िकै आफू खात सराहि ॥४६३॥

बडी बडाई नीच कौं दीजै अपने काम।
खर हूँ कौ बोलत पथिक कहत विनायक नाम ॥४६४॥

कहा भयो जो नीच को देत बड़ाई कोय।
कहत बिनायक नाम पै खर न बिनायक होय ॥४६५॥

भले बुरे कौ जानिबौ जान बचन के बध।
कहै अंध को सूर इक कहै अंध को अध ॥४६६॥

जान बूझिकै करत नर अपने हेत अहेत।
झूठी साँची बात पर दोउ मुचलका देत ॥४६७॥

चिरजीवी तनहू तजै जाकौ जग जस बास।
फूल गयेहूँ फूल की रहै तेल मै वास ॥४६८॥

बहुत भये किहिं काम के भार निबाहक एक।
सेष धरै बर सीस पर मेढ़क-भखी अनेक ॥४६९॥

बृद्धि न ह्वैहै पाप तै बृद्धि धरम तै धार।
सुन्यो न देख्यौ सिंह के मृग को सो परिवार ॥४७०॥

---

४५९ मुद्रा। ४६८. गये तै। रहत। ४७०. वृद्ध, वृद्ध।

देखत कियो कछु नही मुख पै खल की प्रीति।
मृगतृस्ना में होति है ज्यो जल की परतीति ॥४७१॥

ऊपर दरसै सुमिल सी अंतर अनमिल आँक।
कपटी जन की प्रीति है खीरा की सी फाँक ॥४७२॥

निबल सबल के पक्ष तै सबलन सों अनखात।
हनत हिमायत की गधी ऐराकी कौ लात ॥४७३॥

दोष लगावत गुनिन को जाको हृदय मलीन।
धरमी को दंभी कहै छमियन को बलहीन ॥४७४॥

द्वै ही गति है बड़ेन की कुसुम मालती भाय।
केसव के सिर पर रहै कै बन मॉहि बिलाय ॥४७५॥

सब बिधि डरिये दुष्ट सों रहिये जतन समेत।
संभु सुधाकर सिर धर्‌यौ बिस बिसधर के हेत ॥४७६॥

खाय न खरचै सूम धन चोर सबै लै जाय।
पीछे ज्यो मधुमच्छिका हाथ मलै पछिताय ॥४७७॥

जगत बहुत जन तदपि मन बिन सज्जन अति दीन।
ससि तारा निसि हैं तऊ रबि बिन नलिन मलीन ॥४७८॥

कोऊ कहै न जानिये जोतिवन्त सुनि कोय।
हाथ दिया लै देखिये ऐसी आग न होय ॥४७९॥

खल निज दोष न देखई पर के दोषहि लागि।
लखै न पग तर सब लखै परबत बरती आगि ॥४८०॥

जैसो जैसो अधिक गुन तैसी ठौर मिलाय।
अहि-उर विष-गल अनल-चख सिव ससि-सीस बसाय ॥४८१॥

भाग-हीन को दैबहूँ देत सु लेत बनै न।
दीठ परै जहँ बस्तु तहँ जलै मूँदिकै नैन ॥४८२॥

---

४७१. देखत को पै कछू नही। ४७२ परस तै। देति ४७८ जन देखि, देखत।

दिन भले तै बिगरे न कछु रहौ निचीते सोय।
आवै चोरी करन को चोर आँधरो होय ॥४८३॥

दान दीन को दीजिये मिटै दरिद की पीर।
औषध वाको दीजिये जाके रोग सरीर ॥४८४॥

सबसो आगे होय कै कबहुँ न करिये वात।
सुधरे काज समाज फल बिगरे गारी खात ॥४८५॥

आवत समै बिपत्ति के मित्र सत्रु ह्वै जाय।
दुहत होत बछ बँधन कौं थंभ मातु कौं पाय ॥४८६॥

उत्तम बिद्या लीजिये जदपि नीच पै होय।
पर्यो अपावन ठौर मै कंचन तजत न कोय ॥४८७॥

बैर भाव तहँ भूलिहू मिलन न करिये कोय।
मूसे और बिलार मै कबहूँ प्रीति न होय ॥४८८॥

निहचै कारन बिपति को किये प्रीति अरि संग।
मृग के सुख मृगराज कौं होत कबहुँ तन भंग ॥४८९॥

जौ घर आवत सत्रु हू सुजन देत सुख चाहि।
ज्यो काटै तरु-मूल कोउ छाँह करत रह ताहि ॥४९०॥

ताको बुरो न ताकिये जासो जग ब्यवसाय।
छाँह फूल फल देत तरु क्यो तिहि कटन कराय ॥४९१॥

दुस्ट भाव हिय मुख मधुर तासो करहु न प्रीति।
भीतर बिस पय घट भर्यो ताहि न छुइ इहि रीति ॥४९२॥

दुस्ट न छाँड़ै दुस्टता बड़ी ठौर हू पाय।
जैसे तजत न स्यामता बिस सिब कंठ बसाय ॥४९३॥

बिन उद्यम मसलत किये कारज सिद्ध न ठाय।
रोग न जावत औषधी जानें, खाय तौ जाय ॥४९४॥

---

४९४ रोग तजत न औषधी जानै खायै जाय। जाइ जो खाय।

नृप अनीति के दोस तै चूकै मंत्र प्रयोग।
करै कुपथ ता पुरुष कौ कौन न उपजै रोग ।।४९५।।

कहा करै आगम निगम जो मूरख समझै न।
दरपन को दोस न कछू अंध बदन देखै न ।।४९६।।

दया दुस्ट के चित्त मै कबहूँ उपजै नाँहि।
हिंसा छोड़ी सिह यह क्यों आवै मन माँहि ।।४९७।।

प्रीति टुटेहु सजन के मन तै हेत छुटै न।
कमल नाल को तोरिये तदपि सूत टूटै न ।।४९८।।

सज्जन के प्रिय बचन तै तन संताप मिटाय।
जैसे चंदन लेप तै तापन तन को जाय ।।४९९।।

सजन बचन दुरजन बचन अंतर बहुत लखाय।
वे सबकों नीके लगैं वे काहू न सुहाय ।।५००।।

धन अरु गेद जु खेल कौ दोऊ एक सुभाय।
कर में आवत छिनक मै छिन मै कर ते जाय ।।५०१।।

प्रभु को चिन्ता सबन की आपु न करिये ताहि।
जनम अगाऊ भरत है दूध मातु थन माँहि ।।५०२।।

✓धन अरु जोबन कौ गरब कबहूँ करिये नाँहि।
देखत ही मिट जात हैं ज्यों बादर की छाँहि ।।५०३।।

नृपति चोर जल अनल तै धनि को भय उपजाय।
जल थल नभ मै मास कौं झख केहरि खग खाय ।।५०४।।

बड़े, बड़े कौ बिपति तै निहचै लेत उबारि।
ज्यों हाथी कौं कीच तै हाथी लेत निकारि ।।५०५।।

बड़े कस्ट हू जे बड़े करैं उचित ही काज।
स्यार निकट तजि खोज कै सिंह हनै गजराज ।।५०६।।

जिहि जेतौ उनमान तिहि तेतौ रिजक मिलाय।
कन कीड़ी कूकर टुकर मन भर हाथी खाय ।।५०७।।

---

४९५. क्यो नहि उपजै रोग। ४९९. मन चिंता। मन संताप। नीर तै।

बहु गुन स्रम तै उच्च पद तनिक दोष तै पात ।
नीठ चढ़ै गिरि पर सिला टारत ही ढुरि जात ॥५०८॥

छोटे अरि को साधिये छोटौ करि उपचार ।
मरै न मूसा सिंह तै मारै ताहि मजार ॥५०९॥

बडे, वडे सौं रिस करैं छोटे सो न रिसाय ।
तरु कठोर तोरै पवन कोमल तृन बचि जाय ॥५१०॥

सेबक सोई जानिये रहै बिपति मै सग ।
तन छाया ज्यो धूप मै रहै साथ इकरंग ॥५११॥

बुरौ तऊ लागत भलौ भली ठौर पै लीन ।
तिय नैननि नीको लगै काजर जदपि मलीन ॥५१२॥

जोरावरहूँ कौं कियो बिधि बस करन इलाज ।
दीप तर्माह अंकुस गर्जाह जलनिधि तरनि जहाज ॥५१३॥

दुस्ट रहै जा ठौर पर ताको करै बिगार ।
आगि जहाँ ही राखिये जारि करै तिहि छार ॥५१४॥

विना तेज के पुरुष की अबसि अवग्या होय ।
आगि बुझै ज्यो आग को आनि छुवै सब कोय ॥५१५॥

पाय प्रकृति बस कीजिये करि बुधि बचन बिबेक ।
लष्ट पुष्ट सो एक कौं यष्ट मुष्ट सो एक ॥५१६॥

नेह करति तिय नीच सो धन किरपन घर माँहि ।
बरसै मेह पहाड पै कै ऊसर बरसाहि ॥५१७॥

जहाँ रहै गुनवत नर ताकी सोभा होत ।
जहाँ धरै दीपक तहाँ निहचै करै उदोत ॥५१८॥

खाली तजि पूरन पुरुष जिहिं सब आदर देत ।
रीतौ कुआँ उसारिये ऍच भर्‌यो घट लेत ॥५१९॥

सब आसान उपाय तै तुरत फुरत फल देत ।
मथि अरनी अरु काठ तै आग प्रगट करि लेत ॥५२०॥

जाकी प्रापति होय सो मिलै आप ते आय।
मेबा कोस हजार को किहि किहि ठौर न पाय ॥५२१॥

मोह प्रबल संसार मै सबको उपजै आय।
पालै पोसै खग-बच्चन देहै कहा कमाय ॥५२२॥

खल सज्जन सूचीन के भाग दूहूँ सम भाय।
निगुन प्रकासै छिद्र कौ सगुन सु ढापत जाय ॥५२३॥

तुला सुई की तुल्यता रीति सजन की दीठि।
गरुबे दिसि नै जाति है हरुवे कौ दै पीठि ॥५२४॥

भले बुरे सों एक-सी मूढ़न की परतीति।
गुंजा सम तौलत कनक तुला पला की रीति ॥५२५॥

जिहि दिसि भय तिहि दिसि कबहुँ ना जैयै करि चोज।
गज तिहिं मग पग ना धरै जहाँ सिह कौ खोज ॥५२६॥

सिद्ध होत कारज सबै जाके जिय बिस्वास।
पूजत ऐपन को हथा तिय जिय पूरै आस ॥५२७॥

बहुत द्रब्य संचै जहाँ चोर राज भय होय।
काँसे ऊपर बीजुरी परति कहै सब कोय ॥५२८॥

जानि बूझि कै अजुगत करै तासों कहा बसाय।
जागत ही सोबत रहै तिहि को सकै जगाय ॥५२९॥

जहँ तहँ सजन मिलै नहीं गुन गरुबे जग माहिं।
जोति भरे पानिप भरे प्रति गज मुक्ता नाहिं ॥५३०॥

बिद्या बिन न बिराजहीं जदपि सरूप कुलीन।
ज्यौं सोभा पावै नहीं टेसू बास बिहीन ॥५३१॥

एकहि भले सुपुत्र तै सब कुल भलो कहाय।
सरस सुबासित बृक्ष तै ज्यो बन सकल बसाय ॥५३२॥

गुरुमुख पढ्यौ न कहत है पोथी अर्थ बिचारि।
सो सोभा पावै नहीं जार गरभ जुत नारि ॥५३३॥

.२७ पूजत अगनै कूँ हथा। ५२८ तहाँ चोर भय होय।

जाकौ बुधि बल होत है ताहि न रिपु कौं त्रास ।
घन बूँदें कह करि सकें सिर पर छलना जास ।।५३४।।

छमा खड़ग लीने रहै खल को कहा बसाय ।
अगिन परो तृन रहित थल आपहिं ते बुझि जाय ।।५३५।।

एकै थल बिस्राम कौं ताकौ तजि कहँ जाय ।
ज्यो पंछी सुजहाज कौ उडि उडि तहाँ बसाय ।।५३६।।

जिहिं जैसो अपराध तिहिं तैसो दंड बखानि ।
थाप ककरिया चोर को धन चोरहि जिय हानि ।।५३७।।

ओछे नर के पेट मैं रहै न मोटी बात ।
आध सेर के पात्र मै कैसे सेर समात ।।५३८।।

चलिये पैडे साँच के साई साँच सोहाय ।
साँचो जरै न आग तै झूठौ ही जरि जाय ।।५३९।।

गूढ मंत्र तौ लौं रहैं करै जु मिलि जन दोय ।
भई छकानी बात तब जानि जात सब कोय ।।५४०।।

गूढ मंत्र गरुबे बिना कोऊ राखि सकै न ।
कनक पात्र बिन और मैं बाघिन दूध रहै न ।।५४१।।

बहुत जु बीतें तनिक धन सचै सजन करै न ।
मनन हानि ऊपज तहाँ कन कन कबहुँ भरै न ।।५४२।।

भिरत भार सब ते उतरि धीरहिं पर ठहरात ।
नीर निचानहि पाइये ज्यो बीते बरसात ।।५४३।।

सील करम कुल स्रुत चतर पुरुष परिच्छा जान ।
ताडन छेदन कस तपन इनतै कनक पिछान ।।५४४।।

जो पै जैसो होय तिहि हित सो मिलि है आय ।
गाँठी चोरा चोर को साहै साह मिलाय ।।५४५।।

---

५३४ छजना । ५३६ एकौ, एकहि । सो विछुरे कहँ जाय । ५३७ तन हानि ।
५४१ घातु पात्र विन हेम को । ५४२ वहु घन वीतें । ५४३ गिरही पर ।

कबहूँ रन बिमुखी भयो तौ पुनि लरै सिपाह ।
कहा भयो काहू समय भाग्यो तऊ बराह ॥५४६॥

कबहूँ प्रीति न जोरिये जोरि तोरिये नाहिं ।
ज्यो तोरे जोरे बहुरि गाँठ परति गुन माँहि ॥५४७॥

अंतर तनिक न राखिये जहाँ प्रीति ब्यबहार ।
उर सों उर लागै न तहँ जहाँ रहति है हार ॥५४८॥

निरखत पलक न मारिये सज्जन मुख की ओर ।
उदय अस्त लौं एकटक चितबत चंद चकोर ॥५४९॥

सेबक साहिब के बढ़े बढ़ै बड़ाई ओज ।
जेतो गहिरो जल चढ़ै तेतो बढ़ै सरोज ॥५५०॥

ओछे नर के चित्त मै प्रेम न पूर्‌यो जाय ।
जैसे सागर को सलिल गागरि मै न समाय ॥५५१॥

जे न होय दृढ़ चित्त के तहाँ न रहै सटेक ।
ज्यो काँचे घट में सलिल ठहरत नहि छिन एक ॥५५२॥

रस पोषे बिन ही रसिक रस उपजाबत संत ।
बिन बरसे सरसै रहै जैसे बिटप बसंत ॥५५३॥

मन भाबन के मिलन के सुख को नाहिन छोर ।
बोलि उठै नचि नचि उठै मोर सुनत घन घोर ॥५५४॥

बिरही जन के चित्त कौ नाहिं रहतु बुधि बोध ।
थिर चर कौं बूझत फिरे राघब सीता सोध ॥५५५॥

जहाँ सजन तहँ प्रीति है प्रीति तहाँ सुख ठौर ।
जहाँ पुस्प तहँ बास है जहाँ बास तहँ भौंर ॥५५६॥

जो प्रानी परबस पर्‌यो सो दुख सहत अपार ।
जूथ बिछोही गज सहै बंधन अंकुस मार ॥५५७॥

गुनी होय स्रम कस्ट करि लहै राज दरबार ।
बेध बंध मुक्ता सहै तब उर हार बिहार ॥५५८॥

मन प्रसन्न तन चैन जहँ स्वेच्छाचार बिहार।
संग मृगी मृग सुख सबै बन बसि तृन आहार ।।५५९।।

रहनहार जाइ न बसत जदपि जतन निब्रहार।
देखौ सब के देखिये काहे द्वार बिचार ।।५६०।।

है पाँसे के दाँव पर कहाँ जीति कहँ हारि।
सारि उठै यो चौकसी छक पौ उठै न सारि ।।५६१।।

सबकौ ब्याकुल करति है एक जठर की आगि।
परै किलकिला जलधि मधि जल जलचर डर त्यागि ।।५६२।।

उदर भरन के कारनै प्रानी करत इलाज।
नाचै बाँचै रन भिरै राचै काज अकाज ।।५६३।।

दुरभर उदर न दीन कौं होत न तन संताप।
तौ जन जन कौं को सहत तरजन गरजन ताप ।।५६४।।

उदर धरन नर तै भलौ रहिय उदर तै हीन।
कबहूँ नाहिन होतु है जन जन को आधीन ।।५६५।।

करी उदर दुर भरन भय हर अरधगी दार।
जौ न होय तौ क्यो रहै अब लौं तनय कुमार ।।५६६।।

भरत पेट नट निरत कै डरत न करत उपाय।
धरत बरत पर पाँय अरु परत बरत लपटाय ।।५६७।।

एक एक कौ सत्रु है जो जातै बलबंत।
जल अनलहि जलहिं पबन सरप जु पबन भखंत ।।५६८।।

एक एक तै देखिये अधिक अधिक बलबंत।
सेस धरा धर गिर धरै गिरिधर हरि भगवन्त ।।५६९।।

देत न प्रभु कछु बिन दिये दियै देत यह बात।
लै तदुल धन द्विजहिं मुनि तृपत किये भखि पात ।।५७०।।

---

५६६ दुइ भरन भय। ५६८ जलहिं अनल अनलहिं पवन सरप जु पवन भखत।
५६८ जलहि अनल अनिलहि सरप सरपहि गरुड भखत।

जथासक्ति ही दै सकै जो कछु जाके पास।
ब्राह्मन कन चाबल दिये श्रीपति धन आबास ।।५७१।।

जोराबर को होत है सबके सिर पर राह।
हरि रुक्मिनि हरि लै गयो देखत रहे सिपाह ।।५७२।।

अगम पंथ है प्रेम को जहँ ठकुराई नाहिं।
गोपिन के पीछे फिरे त्रिभुवन पति बन माहिं ।।५७३।।

बचन रचन कापुरुष के कहे न छिन ठहरायँ।
ज्यों कर पद मुख कछप के निकसि निकसि दुरि जायँ ।।५७४।।

कबहूँ झूठी बात कौं जो करिहै पछपात।
झूठौ सँग झूठौ परत फिर पाछै पछितात ।।५७५।।

कुल कुपुत्र किहि काम कौ जिहिं सुख सोभा नाहिं।
ज्यौं बकरी कै कंठ थन दूध न जल लिहिं माहिं ।।५७६।।

बिगरनबारी बस्तु कौ कहौ सुधारै कौन।
डारै पय औटाय कै मिसरी भोरै नौन ।।५७७।।

काहू कौ हँसिये नहीं हँसी कलह कौ मूल।
हाँसी ही तैं है भयो कुल कौरब निरमूल ।।५७८।।

दुरजन गहत न सुजनता जतन करौ किन कोइ।
जो पै जौ कौ रोपिये कबहूँ सालि न होइ ।।५७९।।

जग परतीति बढ़ाइये रहिये साँचे होय।
झूठे नर की साँचहू साखि न मानै कोय ।।५८०।।

बड़े बड़ाई के जतन वहै बिरद की लाज।
भये चतुरभुज चोर तैं नृप कन्या के काज ।।५८१।।

है अयुक्त पै युक्त है करिये बहै प्रमान।
ब्राह्मन सों गुरुजनन सों हारे होत बखान ।।५८२।।

---

५७८ ह्वै गयो । कुल पाडव । ५७८ अति ही हाँसी तैं हुओ कौर पाडव निरमूल ।
हाँसी ही तैं है भये कुर पाडव जिरमूल । ५८१ गहै ।

जामै हित सो कीजिये कोऊ कहौ हजार।
छल बल साधि बिजै करी पारथ भारथ बार ।।५८३।।

सुनिये सबही की कही करिये स्वहित बिचार।
सर्ब लोक राजी रहै सो कीजै उपचार ।।५८४।।

प्रापति के दिन होत है प्रापति बारंबार।
लाभ होत ब्यौपार मै आमंत्रन अधिकार ।।५८५।।

अपरापति के दिनन मै खरच होत अविचार।
घर आबत हैं पाहुनो बिन जन लाभ लगार ।।५८६।।

दीन धनी आधीन ह्वै सीस नबाबत वाहि।
मान भंग की भूमि यह पेट दिखाबत ताहि ।।४८७।।

रूखे सूखे उदर कौं भरै होतु सतुष्ट।
ये मन लाख करोर के पायें तुष्ट न दुष्ट ।।५८८।।

एक एक के काम को रचि राखै जगदीस।
जैसे भरिये पेट कौं सबको निहुरै सीस ।।५८९।।

भली किये ह्वै है बुरी देखो बिधि विपरीति।
भक्ति करी द्विज जमदगनि अरजुन करी अनीति ।।५९०।।

कहे बचन पलटै नहीं जे सतपुरुष सधीर।
कहत सबै हरिचन्द नृप भर्यो नीच घर नीर ।।५९१।।

मति फिर जाय बिपत्ति मै राव रंक इक रीत।
हेम हिरन पाछै गये राम गँवाई सीत ।।५९२।।

जानहार सो जाय अरु होनहार ह्वै आय।
राबन तैं लंका गयी बसे बिभीषन पाय ।।५९३।।

अनउद्यम सुख पाइये जो पूरब कृत होय।
दुख को उद्यम को करत पाबत है नर सोय ।।५९४।।

प्यारी अनप्यारी लगै समै पाय सब बात।
धप सुहाबै सीत मै सो ग्रीषम न सुहात ।।५९५।।

---

५८५ आन मत्र। ५८६ वनिज न। ५८७ नाहि।

जनमत ही पावै नहीं भली बुरी कोउ बात ।
बूझत बूझत पाइये ज्यों ज्यो समझत जात ॥५९६॥

भये ग्यान अग्यान नहि है अग्यान नहि ग्यान ।
भानु उयौ तौ तम नहीं है तम उयौ न भान ॥५९७॥

सत पुरुषन तै उतरि कै होत नीच अधिकार ।
यह खटकत रबि से असित तम कौ जगत प्रचार ॥५९८॥

हरवी गरुवे के हिये ठहरति नाही बात ।
तूँबी जल मै दाबिये ज्यौं ऊपर ही जात ॥५९९॥

पावत बहुत तालस तै कर तै छूटी बात ।
आध मै टूटी गुडी को जाने कित जात ॥६००॥

पिय के बिछुरे बिरह बस मन न कहूँ ठहरात ।
धरनि गिरन बिच ही पिरत पर्‌यौ भँभूरे पात ॥६०१॥

होत अधिक गुन निबल पै उपजत बैर निदान ।
मृग मृगमद चमरी चमर लेत दुष्ट हति प्रान ॥६०२॥

आप तरै तारै अबर काठ नाव चित चाब ।
बूड़ै बोरै और को ज्यो पाथर की नाब ॥६०३॥

जूआ खेले होत है सुख संपति कौ नास ।
राज काज नल तै छुट्यौ पांडब किय बनबास ॥६०४॥

✓धन गुन जोबन रूप मद दुरै न एकौ संच ।
ज्यौं हाँसी खाँसी बहुर रोके रहत न रंच ॥६०५॥

✓सरसुति के भंडार की बड़ी अपूरब बात ।
ज्यों खरचै त्यौ त्यौ बढ़ै बिन खरचे घटि जात ॥६०६॥

यह अनखौही बात पर को न देखि अनखात ।
नकटी बूची इकनयनि पान खाय मुसकात ॥६०७॥

✓देखा देखी करत सब नाहिन तत्व बिचार ।
याकौ यह अनुमान है भेड़-चाल संसार ॥६०८॥

---

७ इह अनखीली । खाति ।

काज बिगारत और को इक निज काज सुधारि।
कियो मंत्रि मिलि राज नृप सुरथहिं दियो निकारि ॥६०९॥

काज बिगारत आपनौ एक और के काज।
बलहि निबारत नैन की हानि सही कबिराज ॥६१०॥

एक आपनौ और कौ साधत काज सतोल।
अंगद अपने राम कौ कीनो सभा सु बोल ॥६११॥

एक बिगारत आपनौ और परायो काज।
राबन को अरु आपनौ किय घननाद अकाज ॥६१२॥

देखन कौं सुंदर लगै उर मैं कपट बिषाद।
इन्द्रायन के फलन सम भीतर कटुक सवाद ॥६१३॥

बिरहानल ब्याकुल भये आयो प्रीतम गेह।
जैसे आवत भाग तैं आग लगे पर मेह ॥६१४॥

खरचत खात न जात धन औसर किये अनेक।
जात पुन्य पूरन भये अरु उपजै अबिबेक ॥६१५॥

चले जु पंथ पिपीलिका समुद पार ह्वै जाय।
जौ न चलै तौ गरुडहू पैड़हु चलै न पाय ॥६१६॥

भले बुरेहू सो करत उपकारी उपकार।
तरुबर छाया करत है नीच न ऊँच बिचार ॥६१७॥

एक एक अच्छर पढ़े जाने ग्रंथ बिचार।
पैंड़ पैंड़ हू चलत जो पहुँचै कोस हजार ॥६१८॥

सजन करत उपकार को बित माफिक जग माहि।
गहरे गहरी छाँह तरु बिरले बिरली छाँहि ॥६१९॥

बिन देखे जाने परै देखै जहाँ निसान।
दीप धरै धन लाख पर कोर धुजा फहिरान ॥६२०॥

भले बंस कौं पुरुष सो निहुरे बहु धन पाय।
नबै धनुस सदबस कौ जिहि द्वै कोटि दिखाय ॥६२१॥

---

६१२ इद्रजित कियौ। ६१४ विरह पीर।

एक एक सौ लगि रहै अन्नोदक संबंध।
चोली दामन ज्यों रच्यौ जगत जँजीरा बंध ॥६२२॥

नेगी दूर न होतु है यह जानो तहकीक।
मिटत न ज्यो क्यो हू किये जे हाथन की लीक ॥६२३॥

चिदानंद घट मै बसै बूझत कहाँ निबास।
ज्यों मृगमद मृग नाभि मै ढूँढ़त फिरत सुबास ॥६२४॥

कै सम समें कै अधिक सों लरिये करिये बाद।
हारे जीते होतु है दोऊ भाँति सबाद ॥६२५॥

निबल जानि कीजै नही कबहूँ बैर बिबाद।
जीते कछु सोभा नहीं हारे निंदा बाद ॥६२६॥

सज्जन सो रस पोखियै त्यों त्यों बढ़त हुलास।
जेतो मीठो बस्तु मै तेतो अधिक मिठास ॥६२७॥

करिये सभा सुहाबतो मुख तै बचन प्रकास।
बिनु समुझे सिसुपाल को बचनन भयो बिनास ॥६२८॥

जासो पहुँच न पाइये तासों बहस न ठान।
गई प्रतिस्ठा रुकम की फिर न बसे पुर आन ॥६२९॥

सब काहू की कहत है भली बुरी संसार।
दुरयोधन की दुस्टता बिक्रम कौ उपकार ॥६३०॥

जोति-सरूपी हिय बसै सब सरीर मै जोति।
दीपक धरिये ताक में सब घर आभा होति ॥६३१॥

वय समान रुचि होत है रुचि प्रमान मन मोद।
बालक खेल सुहाबही जोबन बिसय बिनोद ॥६३२॥

दान मान औसर उमँग अपनी अपनी बान।
छोटै छोटी गत कही मोटै मोटी मान ॥६३३॥

भले बुरे दोऊ रहौ चिरंचीब संसार।
जिनतै गुन अरु दोष कौ जान्यौ परत बिचार ॥६३४॥

करन। ६३३ दान मान सनमान अरु। छोटी छोटी गति कही। गति भई।

सरस निरस नर होत है समय पाय सब कोय ।
दिन मै परम प्रकास रबि चंद मद दुति होइ ॥६३५॥

बाँके नर तै होत है बंदनीक सब लोय ।
नमत दुतीया चंद कौं पूरन चद न कोय ॥६३६॥

करिये तहँ पैसार जहँ जो जानिये निसार ।
चक्रव्यूह अभिमन्यु कौ सुन्यो सबन ससार ॥६३७॥

अधिक अधिक जन फोरि कै कस हत्यो ब्रजराज ।
चढते चढ़ते मोल ज्यो दरसें बसन बजाज ॥६३८॥

परुष बचन तै रोष हित कोमल बचन समाज ।
रजक पछार्‌यौ कूबरी राखि लई ब्रजराज ॥६३९॥

सुदृढ सूर नाहिन चलै कायर लगि रन घात ।
देवल डिगै न पबन तै जैसे ध्वज फहरात ॥६४०॥

मित्र मित्र के काम कौं देत विभव करि हेत ।
जैसे चद प्रकास करि रबि मडल तै लेत ॥६४१॥

तन धन हू दै लाज के जतन करत जे धीर ।
टूक टूक ह्वै गिरत पै नहिं मुख फेरत बीर ॥६४२॥

भले बुरे गुरुजन बचन लोपत कबहूँ न धीर ।
राज काज को छाँड़ि कै चले बिपिन रघुबीर ॥६४३॥

बिपति समय हू देत है सतपुरुषन के काम ।
राज बिभीषन को दियो वैसी विरियाँ राम ॥६४४॥

लोकन के अपबाद कौं डर करिये दिन रैन ।
रघुपति सीता परिहरि सुनत रजक के बैन ॥६४५॥

भले भले बिधिना रचे पै सदोष सब कीन ।
कामधेनु पसु कठिन मनि दधि खारो ससि छीन ॥६४६॥

जैसो कारन होत है तैसो कारज थाप ।
कर सर धनु प्रानी हनत कर माला हरि जाप ॥६४७॥

---

६३८ वस । ६४४ विपत परेहू ।

इनकौ मानुष जन्म दै कहा कियो भगबान ।
सुंदर मुख बोल न सकै दै न सकै धनबान ॥६४८॥

कहा कहौं बिधि की अबिधि भूले परम प्रबीन ।
मूरख कौं संपति दई पंडित संपति हीन ॥६४९॥

वह संपति किहि काम की जनि काहू पै होय ।
नीठ कमाबै कस्ट करि बिलसै औरहि कोय ॥६५०॥

नर भूषन सब दिन छमा बिक्रम अरि घन घेर ।
ज्यों तिय भूषन लाज है निलज सुरति की बेर ॥६५१॥

यो निबाह सब जगत कौ रस रिस हेत अहेत ।
एक एक पै लेत है एक एक कौं देत ॥६५२॥

तृन हू तै अरु तूल तै हरुबो जाचक आहि ।
जानत है कछु माँगिहै पबन उड़ावत नाहि ॥६५३॥

नृप गुरु तिय बिहिन सेइयै मध्य भाग जग माँहि ।
है बिनास अति निकट तैं दूर रहे फल नाँहि ॥६५४॥

देखत है जग जातु है तऊ समता सो मेल ।
जानतु हौ या जगत मै देखत भूलौ खेल ॥६५५॥

भले बुराई तै डरै राख्यो चाहैं सोय ।
जानत है पै दुस्ट के अबगुन कहत न कोय ॥६५६॥

गुन तै अबगुन होतु है लिखे मिटत नहिं अंक ।
बढ़ति जाति ज्यों ज्यों कला त्यों त्यों ससि सकलंक ॥६५७॥

निस दिन खटकत तनक तृन परइ जु आँखिन माँहि ।
तिनमें सज्जन राखिये सो छिन खटकतु नाँहि ॥६५८॥

सजन बचाबतु कष्ट तै रहै निरंतर साथ ।
नैंन सहाई ज्यो पलक देह सहाई हाथ ॥६५९॥

धनी होत निरधन बहुरि निरधन तै धनबान ।
बड़ी होति निसि सीत रितु ज्यो ग्रीसम दिनमान ॥६६०॥

---

६५० नित्य । ६५४ सेइय नृप गुरु तिय अनिल ।

सबही कुल मै होत है एक एक सरदार ।
गज ऐरावत सुर सुरिंद तरुबर मै मंदार ॥६६१॥

जहाँ सनेही रहत तहँ भ्रमत भ्रमत मन आय ।
फिरत कटोरी मत्र की चोरहि पै ठहराय ॥६६२॥

प्रान पियारे के दरस हिय तै बढत हुलास ।
फैलत लगे बयार कै ज्यो फूलन मै बास ॥६६३॥

सुनत स्रबन पिय के बचन हिय बिकसै हित पागि ।
ज्यो कदब बरषा समै फूलत बूँदनि लागि ॥६६४॥

ज्यो ज्यो छूटै अयानपन त्यो त्यो प्रेम प्रकास ।
जैसे कैरी आँब की पकरत पकै मिठास ॥६६५॥

चोरा चोरी प्रीति के कीने बढत हुलास ।
अति खाये उपजै अरुचि थोरी बात मिठास ॥६६६॥

नीति अनीति बड़े सहै रिस भरि देत न गारि ।
भृगु उर दीनी लात की कीनी हरि मनुहारि ॥६६७॥

रहैं न कबहूँ दोय खल एक सदन के माहि ।
एक म्यान मै द्वै छुरी जैसे भावै नाहि ॥६६८॥

पर धन लेत छिनाय इक इक धन देत हसंत ।
सिसिरि करतु पतझार तरु गहिरे करतु बसंत ॥६६९॥

जो न परत किहि बात मै तिहिं मनुहारि न गारि ।
ऐसी खेल न खेलिये जामै जीति न हारि ॥६७०॥

गहत तत्व ग्यानी पुरुष बात बिचारि बिचारि ।
मथनिहार तजि छाछ कौ माखन लेत निकारि ॥६७१॥

मात पिता के पच्छ के पुरुषहि प्रगट प्रभाब ।
जामदग्नि मै देखिये सम रस बीर सुभाव ॥६७२॥

गुरु बच जोग अजोग हू करिये भ्रम बिसराय ।
राम हते जमदग्नि के बचन सहोदर माय ॥६७३॥

---

६६१ सुरप ।

पिता भगत सुत होय तौ पितु के चलत सुभाय।
राम राज सुख छाँड़ि कै बनबासी भये जाय ।।६७४।।

ओछी मति युबतीन की कहै बिबेक भुलाय।
दसरथ रानी के बचन बन पठये रघुराय ।।६७५।।

पूजनीक गुन तैं पुरुष बयस न पूजित होय।
यग्य तिलक किय कृस्न को छाँड़ि बड़े सब कोय ।।६७६।।

स्रबन करी त्यों कीजिये मात पिता की सेब।
काँधे काँबर लै फिर्यौ पूज्यो जैसे देब ।।६७७।।

बड़े जिती लघुता करैं तिती बड़ाई पाय।
काम करैं सब जगत के तातैं त्रिभुवन राय ।।६७८।।

अरि के कर मै दीजिये अबसर को अधिकार।
ज्यों ज्यों द्रब्य लुटाइयै त्यों त्यों जस बिस्तार ।।६७९।।

जा लायक जिहि होय सो ताही ठौर मनोग।
चंदेरीपति क्यों बरै रुक्मिनि स्रीहरि जोग ।।६८०।।

घनघेरे कौ मिलन सुख होत भरोसो नाहिं।
होय न होवै चाँदनी जैसे पाबस माहिं ।।६८१।।

बड़े भले सब लच्छ तैं नहि बिन लछ के जोग।
राम लखन धनु धरि बिपिन कहत पारखी लोग ।।६८२।।

ता बिन होत न काज सिधि जासों लागी बात।
गुड़ बिनु होय न चौथ ब्रत दूलह बिना बरात ।।६८३।।

प्रभु सों बात दुरी न तउ करिये अरज मुखेन।
रुक्मिनि आतुरता लिखी हरि कह जानत हे न ।।६८४।।

कठिन कला हू आइहै करत करत अभ्यास।
नट ज्यों चालत बरत पर साधे बरस छमास ।।६८५।।

जहँ उपजै सोई करै जिहिं कुल जो अभ्यास।
छोटे मच्छहु जल तिरैं पंच्छी उड़ैं अकास ।।६८६।।

बिद्या लच्छमी पुरुष पै होय नहीं इक ठाँय।
नाहिन सुख द्वै सौति मै पिय पै एकहि जाय ॥६८७॥

गुन प्रगटै अबगुन दुरै जाके कमला साथ।
तिय मारी परिहरी तउ कृस्न त्रिलोकीनाथ ॥६८८॥

मिलै दियो पूरब जनम न दिये न मिले सोइ।
कौन सयाने धन कियो किन अयान दियो खोइ ॥६८९॥

जाको न्योत जिमाइये ताही की मनुहारि।
परनै सोई गाइये बचन सुधारि सुधारि ॥६९०॥

निरस बात सोई सरस जहाँ होय हिय हेत।
गारीहू प्यारी लगै ज्यो ज्यो समधिन देत ॥६९१॥

जो जिहि कारज मै कुसल सो तिहि भेद प्रबीन।
नद प्रबाह मै गज बहै चढै उलट लघु मीन ॥६९२॥

जो जैसे तिहि तैसिये करिये नीति प्रकास।
काठ कठिन भेदै भ्रमर मृदु अरबिंद निबास ॥६९३॥

इन लच्छन तै जानिये उर अग्यान निबास।
ऊँघै कथा पुरान सुनि बिकथा सुनै हुलास ॥६९४॥

उर उछाव हित धरम सो असुभ करम की हानि।
मन प्रसन्न रुचि अन्न सो ज्यो ज्वर छूटै जानि ॥६९५॥

जपत एक हरिनाम तै पातक कोटि बिलाय।
एकहि कनिका आगि तै घास ढेर जरि जाय ॥६९६॥

जो समरथ सब बात मै तिहि भजिये तजि संक।
करै रक तै राब हरि अबर राब ते रक ॥६९७॥

गरब प्रहारी हरि सही यामे नहिं सदेह।
जरे लंक के लाख ज्यो लाख लाख के गेह ॥६९८॥

कहा बड़े छोटे कहा जहँ हित तहँ चित लागि।
हरि भोजन किय बिदुर घर दुरजोधन कौं त्यागि ॥६९९॥

पर जन सो मनसो करै परिहरि हरि सौं प्रीति।
झूठे सो मानै हरष अहो जगत बिपरीत ॥७००॥

अहै अबधि अबिबेक की देखि को न अनखाय।
काग कनक के पींजरा हंस अनादर खाय ॥७०१॥

मूरख कौं हित के बचन सुनि उपजतु है कोप।
साँपहि दूध पिबाइये ज्यों केवल बिस ओप ॥७०२॥

गुन गरुवो लघुता गहै तिहिं सनमानत धीर।
मन्द तऊ प्यारौ लगै सीतल सुरभि समीर ॥७०३॥

बड़ी ठौर को लघु लहै आये आदर भाय।
मलयाचल की ज्यौं पवन परसे मंद सुहाय ॥७०४॥

महिमा जुत कौ देत ही लेत न तन सकुचाय।
लेत भात जगनाथ कौं नृप हू सीस चढ़ाय ॥७०५॥

धन पूरन धनवान पै बिन दीने न लहात।
ज्यौ बिन बरसे सघन जल लियौ पयोधि न जात ॥७०६॥

इक बिन माँगे ही लहै माँगे एक लहै न।
घन जल सर सरिता भरै चातक चोंच भरै न ॥७०७॥

बड़कन की संपत्ति सबै लघु बिलसंत अनंत।
दधि-जल घन घन-जल धरा धर-जल जग बिलसंत ॥७०८॥

जिहि जेतो निहचै तितौ देत दई पहुँचाय।
सक्कर खोरे कौं मिलै जैसे सक्कर आय ॥७०९॥

जिय संतोष बिचारिये होय जु लिख्यौ नसीब।
खल गुर काच कथीर सौं मानत रली गरीब ॥७१०॥

जथा जोग सब मिलत है जो बिधि लिख्यो अकूर।
खल गुर भोग गँवारनी रानी पानि कपूर ॥७११॥

समै सार दोहानि कौं सुनत होय मन मोद।
प्रगट भई यह सतसई भाषा वृन्द विनोद ॥७१२॥

संवत ससि रस बार ससि कातिक सुदि ससिवार।
सातैं ढाका सहर मै उपज्यौ इहै विचार ॥७१३॥

अति उदार रिझवार जग साह अजीमुस्सान।
सतसैया सुनि वृन्द कौं कीनो अति सनमान ॥७१४॥

९

बचनिका अथवा रूपसिंह की वार्त्ता

गाहा छंद

संडा डंड प्रचंड गुंजै अलि भुंड तुंड रसलुब्धं ।
गणपति गुण भंडारं पाणि मुकर जोडि बिमल बर कज्जं ।।१।।
बाँनी ब्रह्मबिताँनी आगम निगम अगम अरुभाँनी ।
बरबाँनी बर बाँनी दीजै जगदंब कमल भवतनया ।।२।

वचनिका

जय जय लंबोदर । बर बरद बरद । सुखद सारद सारद बिसारद । जन अरज सुनि मानि लीजै । कृपा दृष्टि कीजै । बर दीजै । बर पाइ महाराज श्रीरूपसिंह जू को जस सरस बरनीजै । अंग उमंग धरूँ । ताके बंस कौ बरनन करूँ ।३।।

प्रथम ही राठौर बंस । अवतंस राजहंस । जगत प्रसंस । कमधज्ज कनवज्जतैं अबीहसीह राव सीहा आयौ । परकाजकूं धायौ । राव लाखो फूलानी मारि बिरद पायो । पर भौमि पंचाइन कहायो । तिन अपने तेजबर तपबर भुजबर करिबर बर । मुरधर धर सुद्ध कर । बंस बीज बायो । नवकोट गढ़ मढ़ । नगर नगर बगर बगर । घर घर पहार पहार । भार भार संतति गन तंतु अरुभायो । प्रकर कर बिस्तार पायो । दल फूल फल जस वास । प्रकास तै महि मंडल मंडप छायो ।।४।।

राव सीहा कै राव आसथान । बलवान बुद्धिबाँन । जोधबिद्या सावधाँन । करधर कृपाँन । षेडपति प्रतापसी प्रतापबाँन । तिनसूँ करि

घमसाँन। गोहिलौं कौं मारि कीने कतलाँन। बडे बड़े बिरद पाए। तहाँतें षेडेवे राठौर कहाए ॥५॥

आसथाँनकै राव घूहड। धरखंभ नरथंभ। आरंभ अचंभ। दलन दुर्जन दलदंभ ॥६॥

राव घूहड कै राव रायपाल। सुपक्ष प्रतिपाल। प्रतिपक्ष साल। अरिहर उथाल। सिरदार झुझार। वाहडमेर मार। जीते पमार। संसार सधार। भयौ 'महिरेलन' दातार ॥७॥

राव रायपाल कै कान्ह राव सिरदार। अभिनव श्री कान्ह ही कौ अबतार ॥८॥

राव कान्ह कै राव जाल्हण। जगप्रसिद्ध। आखाडसिद्ध ॥९॥

राव जाल्हणकै राव छाड़ा। तिन सतदत साहस कबहूँ न छाडा। खत्रीधरम धारी। बापके बैर भीनमाल मारी ॥१०॥

राव छाडाकै राव टीड़ा। तरवार बहादर। परकाज सादर ॥११॥

राव तीडाकै राव सलाखा। राजै पाजरखा। लाजरखा सुरसखा॥१२॥

राव सलखाकै बीरम बरियाँम। धरम धीरज धाँम। पातिसाही दल सौं, करि संग्राम। कारवाँन लूट किए भले भले कांम ॥१३॥

राव बीरम कै, राव चौंडा बीरबर। गढ मडोवर राजघर। करिबर बल तोर। असुरदल मोर। लीयौ पातसाही नगर नागोर ॥१४॥

राव चौंडा कै राव रिणमल। प्रबल भुजबल। दलन खल दलबल। करन उथल पुथल। मेदपाट पति की पति राखी। सब जगत कीयौ साखी ॥१५॥

राव रिणमल कै राव जोध जालिम। मही मंडल मालिम। साहस सधीर। धीरबीर। आजानुबाह। बीरबराह। मेबारघर मारि। जारि उजारि। जरा मूल डारी उखारि। गढ जोधपुर बसायौ। देसदेस बेस बेस। प्रताप तेज छायौ ॥१६॥

राव जोधा कै राव सूजा सिरदार। कुल छल बल भार भुज सहार। मुलक मारवारि कौ रखवार ॥१७॥

राव सूजा कै राव बाघा । बानैत । बिरदैत ॥१८॥

राव बाघा कै राव गांगा । गंगेव गहपूरति । साहसीक सूरति ॥१९॥

राव गांगा के राव मालदे छितपति छात्रैत । साथ सूर साखैत । जाकै असी हजार पवंग पखरैत । जंग जुरि जहाँ तहाँ पाई जैत । जाके डर देस देस थरहरै । अडँडी अरिडंड भरै । अनेक देस के देसपति सेव करै । दॉन कृपॉन तै जगत जीति जग हथकूं धरै ॥२०॥

राव मालदे कै राजा उदैसिंघ अभिनब आदीत । अहनिस अभीत । गई भूमि बाहरू । पुन्यपन पाहरू । कमधज कुलभूषन । दुर्जन गन दूषन । अकबर जलालदीन साहिब किरॉन । हजूर वुलाए भेजि फरमाँन । मुखजबाँ फुरमाया । 'मोटा राजा' कहि बतलाया । बौहत सनमॉन कीया । देस मुरधर गढ़ जोधपुर दीया ॥२१॥

सवैया

जाके उदै भयौ देस उदोत सुबंस उदोत छत्री ध्रम धारी ।
राज के काज बड़ौ सिरताज बड़े पुरुषॉन की लाज सुधारी ॥
दाँन कृपॉन पराक्रम के बल भागबली सब बात बधारी ।
आदि वराह धरा उधरी त्यौ गई धर कौं उदैसिंघ उधारी ॥२२॥

बचनिका

राजा उदैसिंघ कै राजा सूरजसिंघ राजा किसनसिंघ दोऊ सूरज समॉन । प्रतापबॉन । मुरधर देस के रिछपाल । प्रजा प्रतिग्या के प्रतिपाल ॥२३॥

दोहा

सूरजसिंघ अरु किसनसिंघ कुलमंडन कुलमौर ।
गहरै पौरस गहभरै ठहरै क्यौं इकठौर ॥२४॥

जैसै एकै म्यॉन मैं खडग न सावै दोय ।
तैसै एकै राज मै राजा दोय न होय ॥२५॥

जैसै एकै देह मै आतम दोय न होय ।
तैसै एकै राज मै राजा दोय न होय ॥२६॥

किये अकस बरकस किये सकस भयौ सिरताज।
असि तरकस को बड कसि किसन राज कै साज ॥२७॥

आप अदब अग्रज अदब माँन धर्‌यौ अभिमॉन।
देस कोस गढ स-बलदल सब बिधि भयौ समॉन ॥२८॥

जोध बसायौ जोधगढ जैसै अपने नाँम।
किसन बसायौ किसनगढ आप नाँम अभिराम ॥२६॥

संवत सोरह अठसठै सुभ मुहरत सुभ थाँन।
किसन बसायौ किसनगढ सुथिर सुमेर समाँन ॥३०॥

सवैया

साधि अभीच अराध गनेस सदा थिरभाव महूरत लीनौ।
बेद की सासन की विधि सूँ करि होम सुदाँन द्विजातन दीनौ ॥
नीनगमैमधिनायक ज्यौं नरनायक कौं सुखदाय प्रवीनौ।
त्यौं नवकोट मुरधर मै दसमौं गढ श्रीनृप केहर कीनौ ॥३१॥

कोऊ करै इक लाख पसाव तौ कोरिक सोच विचार हिये हैं।
हो कलि मे कलपद्रुम सो कबि के दुख दारिद दूरि किये हैं ॥
को करै किस्मत हिम्मत की नृप केहरि यौं जस बास लिये हैं।
लाख गुनी जन साख भरै दिन एक मैं बारह लाख दिये हैं ॥३२॥

कवित्त

कोप अति ऑना मेदपाट पति सो रिसॉना
चढ़ी जब सेना जहाँगीर जमरॉना की।
थहराँना अमर समर मै न ठहराना
बाँना-विसरॉना सुनि धमक निसॉना की ॥
छोडि-छोडि थॉना रहा छपन मै छाँना छॉना
दॉना खॉना की न सुधि रही हैं खजाँना की।
कोप कै किसन खैग खुरन सौं खूँदि खूँदि
दॉना दॉना सब करि डारी धर राँना की ॥३३॥

बचनिका

संवत सोरैह सै बौहत्तरै। पातिसाह जहाँगीर। आए अजमेर। जाकौ मन ऐसौ थिर। जैसौ गिरमेर। जाकै आगै बकरी से होय जाय सेर। थहरॉने मेर। चीते सचिते भये तिहिबेर। हाथ नगी समसेर। हुकम डारै फेर। तिन कौं मार डारै घेर घेर। केते जालमौ कौ कीए जेर। हुकम कीया। महाराजा किसनसिघ कौ भाटी गोइंददास मारनै का बीड़ा दीया। बीड़ा उठाइ सिर चढ़ाइ लीया। तिसही बखत कीनी असबारी। कुछ और न बिचारी। ऐसी तरवार मारी। जॉनत है खलक सारी। गोइंददास कौं मारा। जगत मै जस बिसतारा ।।३४।।

कवित्त

साह कौ हुकम पाय लौन की सरम गाजि
केहरी ज्यौं केहरी चढ़ौ है कोप करि कै।
सूरसिघ बंधु कौ बिचार न बिचार्‌यौ एक
स्वॉम ही के कॉम कौ बिचार उर धरि कै ।।
गढ़ अजमेर घनघाइन सौ घेर घेर
ढेर कीने अरि समसेरन सौ लरिकै।
जस बिसतारी भाटी गोइंद कौ मारि
देवलोक जाइक कीनौं देवंगना बरिकै ।।३५।।

बचनिका

राजा किसनसिंघ कै सहसमल जगमल भारमल हरीसिघ। सिघ के से भुजबल। एई च्यारि पुत्र रतन। जैसे राजा दसरथ कै च्यार सुतन। रामचन्द्र भरथ लषमन सत्रुघन ऐसे बिराजमॉन। जिनकौं जॉनै जहॉन। राजस्थॉन। राजा सहसमल। सहसदस खलदल। दलन भुजबल। सतदत साहस की सूरति। अभिरॉम कॉम मूरति। गहपूरति। जाकै जय जस ही की जरूरति। प्रभाकरि सौ प्रतापी। अबसॉन थॉन पाइ तापी। राजा सहसमल के पीछै राजपाट के अधिकारी। इंद्र अवतारी। राजा जगमाल। पातिसाहौं की पनाह कौं ढाल। सत्रुन के हियै मै ऐसे खटकट जैसे नटसाल। चित्त उदार ऊँची चाल। मौजा बगसि बगसि अनेक कबि लोगन कौं किए निहाल। जिस बखत पातिसाही फौजै खुरम के पीछै धाईं। साहिजादे

परवेज लीनी लड़ाई। पटाछूट जटाजूट हाथी रौर पारी। फौज विचलाय डारी। भार पर्‌यौ भारी। तिस वखत राजा जगमाल कुभी के कुभाथल मै साँग मारी। खुरम की फौज सिकस्त पाई। पातिसाही फौज फते पाई ॥३६॥

तिसमै की पैडी

मालिम जग सालम जगमल्ला कुल वडा कुदरत्तीदा।
लष्षाँ वगसन लष्षाँ लायक नायक वस दुछत्ती दा।
लडे षुर्‌म परवेज लड़ाई छल देव्वाॅ छत्रपत्ती दा।
जटाजूट सौं जोधा जुट्या धुज्या पिडर धत्तीदा॥
केहर हंदा जेहा केहा केहर खेसि वसमारत्ती दा।
सेल धमकै हत्थल मारी फट्या कुंभह सत्तीदा॥
जिस भीतर तै रत्त विछट्या भभक्या भकभक भत्तीदा।
निकस्या फोडि पाहाड किनारा पूर मनू ? सत्तीदा ॥३७॥

कवित्त

छूट्यौ जटाजूट जब सूड और भुसुडन सौं
भारी रौर पारी दलथल विचलायौ है।
साहस की सींव इत राजा जगमाल आयौ
भुजवल भींव जिम भारमल आयौ है॥
कोपि गजकुंभ मधि बज्र ज्यौ चलाई सेल
सूल ज्यौं चलाई असि हटकि हटायौ है।
मानूं पर्बतारि धायौ परबत पछारबे कौं
मानूं सभु दिग्गज पछारबे कौ धायौ है ॥३८॥

दाँन परवाह करि चित्त जस चाह करि
करत निदाह नरनाह पुन्यपन कौ।
अरि सर अरि करि जलमद सोखिवे कौं
प्रबल प्रताप जैसौं तपत तपन कौ॥
जहाॅ जोध जग करै छोह धरि लोह लरै
भार परै गाढ़ परै गाढ भरे मन कौ।

लाजभार राजभार जयभार जसभार
भारमल सीस सोहै भार भलपन कौ ।।३९।।

वचनिका

एक दिन मोहबत खॉन का बेटा अमॉनुला ऐसो नाम। काहू राजपूत सौ ह्वै आई खॉनाजंगी की धूमधॉम। तहॉ करि संग्राम। आए कॉम। निहचल राख्यौ नॉम ।।४०।।

कवित्त

काहू राजपूत सूँ ह्वै आई षॉनाजंगी जब
आयौ दल उलट अमाँनुला असुर कौ।
तब राजा जगमाल भारमल जोराबरी
रंग कियौ जंग कियौ संग कियौ सुर कौ।
केते षलमले दलमले षग चोटन सौं
भीर परै भीर करै है सुभाव धुर कौ।
किए परकाज राषी आपनी बिरॉनी लाज
भए सिरताज राज पायौ सुरपुर कौ ।।४१।।

दोहा

सोल पिच्यासी माह सुद बारस कर पर कॉम।
जगमल भारहमल जुगल कमधज आए कॉम ।।४२।।
पातसाह टीकौ दियौ हरीसिघ के भाल।
देस कोस घर पुर प्रकर रैतराज रिखपाल ।।४३।।

कवित्त

केहर किसनसिघ नंद हरीसिघ सिघ
उरहीते गाढ़ो मन गाढ़े गुन गहे है।
खातर मै आवै सोई हुकम बजाय ल्यावै
जंग कै विनॉही कई दौरि अरि दहे है।।
दॉन किरपॉन बॉन बिद्या के बिनॉन
करि केती दिलवरी कै सुभाव साहि सहे है।

और पातिसाहन कै मन हाथ लियै रहै
पातिसाह जाकौ मन हाथ लियै रहै है ॥४४॥

जा दिन जरायत कौ कछुक बिगार भयौ
सबसौं भई ही इत राजी पातिसाही की ।
चाकर कौ काहूकर काहू सिर काट दियौ
चूके उमराव दाव नैंक न पनाह की ॥
मॉन्यौ न हुकम कम कियो न धरम क्रम
साँची तरवारि हरीसिंघ नरनाह की ।
निजपनि राख्यौ सरनागत कौ तन राख्यौ
गाढ़ करि राखी रजपूतन की गाह की ॥४५॥

वचनिका

ऐसें राजा हरीसिंघ । निस्सक अंग । जैसें सिंघ । जाके मुंह आगै । जोति उद्योत जागै । सूरज बस मै सूरज सरभर । राजभार धुरंधर । बिराजमॉन । राजा भारमल नंद रूपराजांन । ताकौ जनम तैं लेकैं अवसाँन परयंत । सब कहूँ बिरतत ॥४६॥

दोहा

सोरह सै पिच्यासियै सुदि बैसाख सुजाँन ।
अति सुभ दिन एकादसी जनम रूप राजाँन ॥४७॥

वचनिका

बैसाख मास मे जनम भयौ । तातै बैसाख ही सरभर कौं उदयौ । उर आनंद भरै । कबि बर्नन करै ॥४८॥

पद्धडिका

लखियत बनत तरवर नगर लोग ।
सब हरभरे गहरे सभोग ॥
सुक सारिक पिक जाचक सहेत ।
दल फूलि फूलिफल तिन्है देत ॥४९॥

गुनि घन मधुकर मधु करत गाँन । रस वास लेत करि करि बषाॅन ।
गुनि नरबर सरबर गुन गहीर । अति निमल अमित आनंद नीर ।।५०।।

हिय-कमल कमल-मुख कमल-हत्थ । अति उल्हसि बिकसि बकसंत अत्थ ।
भइ घर घर बंदन माल भास । बन बन प्रत तरबर बर बिलास ।।५१।।

बचनिका

बहुरौ रूप । कैसौ सरूप । जैसी दुतीया कौ चंद । जगत बंद । आनंद कंद । देखत ही निजनंद । दाॅन तरंग तै उमगत राजा भारमल समंद । कबि चन्द सरभर करै । तहाँ अनेक उपमा कौं धरै । वह सोरह कला कौ भरै । यह बहुत्तर कला कौ अनुसरै । वाकी छबि दिन मैं रहै दबि । याकी निसदिन छबि रहै फबि । बाकी कला घटिबढ़ता कौं गहै । याकी कला निरंतर ही रहै । बाकै सत्रु मित्र सौं वक्रता । याकै सत्रु सु वक्रता मित्र सौं सरलता । कहै कबिता । वह संकलक । यह निकलंक । वह राह सौ ससंक । यह दोऊ राह सौ निसंक । वाकै उदै कुमुदगन फूलै । याकै उदै सुहृदजन फूलै । वाकै एक पच्छ उज्जल । याके दोऊ पच्छ निरमल । वाकै दिन दिन बपु रूप लावन्य गुन की वृद्धि कौ उदोत । तैसें याही कै बपु रूप लावन्य गुन की वृद्धता होत । कबिबर बखांनै । जे नर सयाॅनै । ते याके भाव-भेद जाॅनै माॅने ।।५२।।

पद्धडिका

सिसुता सुभाव सोभा समृद्ध । बपु बचन कला गुन होत बृद्ध ।
चटसाल पठन किय चित्त वाह । आनंद सहित कीनौ उछाह ।।५३।।

गुरु परम भक्त अनुरक्त भाव । सारदा पूजि गनपति सुचाव ।
मातृका पाठ पाठ मूलि मंत्र । सुर ब्यंजन अच्छर पर सुतंत्र ।।५४।।

बावन बरन अनेक बाॅन । जय सबद ब्रह्म ब्यापक जहाॅन ।
ब्रह्मादिक हे अनादि बेद । भनि पिंगल कहि सब छंद भेद ।।५५।।

ब्याकरन सबद साधन बिलास । निज कोष नाम निर्णय निबास ।
अत्रिय बैद्य सासत्र धार । किय कपिल सुमुनि धर्म्माधिकार ।।५६।।

रचि ब्रह्म भरंत संगीत रीति । निर्णीत बृहस्पति राजनीति ।
प्रगटे ज़गि अष्टादस पुराॅन । बिदग्धनि कला रचना तान ।।५७।।

बिस्तरित गनित जोतिष बिचार। सचि अलंकार साहित्यसार।
परब्रह्म सब्द कौ अगम पंथ। गुनि सुने सुचित केइ पढ़े ग्रंथ ॥५८॥

निस दिबस चिर रुचिर नबीन। पढ़ि भए रूप भूपति प्रबीन।
पुनि उदित सस्त्र बिद्या अभ्यास। बरबीर करत भुजबल बिलास ॥५९॥

समबंस सुभट सुत वै समाँन। सजि संग अंग बिक्रम सयाँन।
बलवाँन मिलित मन बुद्धिवाँन। सुचित उचित संदर संथान ॥६०॥

कर जोर जुक्तकर गहि कमॉन। अभ्यस्त नित्य गति ऑन ऑन।
दिढ़ मुष्टि दृष्टि गुन बॉन तॉन। निरखंत लक्ष्य वेधत्त निदॉन ॥६१॥

गहि करत खाक तूदै गरक्क। धुनि सुनि दुयन छाती धरक्क।
फिरि फुरति बॉन चहुँ ओर फेरि। राखति बिहंग आकास घेरि ॥६२॥

जल भरित फिरत घट भेदि जाय। चूके न हदफ दुहुँ दिसि चलाय।
बर बृत्त (?) वा भेदत कड़ाह। राजाँन रूप आजाँन वाह ॥६३॥

बारीक बार सर गिरह भेदि। छूटंत जाइ सर जिरह छेदि।
लषि लेत उचकि सर दीप लोइ। हठि स्रवति स्रोत सर पार होइ ॥६४॥

धर सुधर काच सीसी धराइ। जिँहि राषि अनॉमति भेदि जाइ।
बटपत्र चित्र सूरति बनाव। संग्रहित सब्दबेधी सुभाव ॥६५॥

ऊँचै उछारि गंदुक प्रकास। ताकि आबत भेदात बाँन तास।
इम सीखे बाँन बिद्या अनूप। संसार बिदित अर्जुन सरूप ॥६६॥

षनकंत करिय षॉषरन षेल। सामहै लेत कर झेल सेल।
सजि सुदिढ मूठि सहनेस तोल। अभ्यास करत करि मन अडोल ॥६७॥

प्रथमे तनई करि करि पगार। बदि बार करत तिहि बार बार।
रचि रोस रौस चाहंत रूक। चौरंग धाइ एकै दु टूक ॥६८॥

आरोप पच्छ मच्छका ओट। चित धीर करत बंदूक चोट।
मारै अचूक पारै न षोट। लाँगत होय भुँइ लोट पोट ॥६९॥

कबि बाँक फुल तापट ? फेर। आघात बक्रा बै चरु मेर।
अभ्यस्त जोध बिद्या अनेक। अधिपति रूप अधितिय एक ॥७०॥

परभात जागि जपत परमेस। ब्यायाम नित्त कीजै बिसेस।
स्रमजित सुभाव छलभल सभेद। खेदंत रिपुहि पावै न खेद ॥७१॥

हय सार सार हय दोष हीन। चाबष असि बारन सौंप दीन।
आवगी फेर कीने अनूप। सुष मुष सतेज नट गति सरूप ॥७२॥

तलवाग दुहुँ रुष फेर तंत। फबि फेर थार महीयाँ फिरंत।
ए बाजि साज असि वार होय। सजि साथि सुभट सोभित सकोय ॥७३॥

आसतैं प्रथम गति आँन आँन। धरि धुरी तुरी करि सावधाँन।
भरि लीह बाह बे बाह भत्त। धम धमैं पाइ धूजै धरत्त ॥७४॥

गहि करत कुंडली तेज गत्ति। परि बेष रेष जाँनी परत्ति।
फेरत पलहि करि अति फुरत्ति। जनु दुहूँ और मुहुँ इहीं जुगत्ति ॥७५॥

आसै धसै पोईय आँन। बदि वाह वाह कीजै बषाँन।
थाप लै कंध थुथुकारि थंभि। बारियै लौंन उपजै अचंभ ॥७६॥

चढ़ि चंचल चंचल अचल चित्त। नृप रूप रमै चोगाँन नित्त।
सम सुगम भूम सोभित सुदेस। स्रम उपसम क्रम मोहित सुरेस ॥७७॥

संग सुभट दुहूँ दिसि साबधाँन। धर धीर बीर छल बल निधाँन।
सजि छरी हरी पियरी सुरंग। गुजकुंभ बटा अंकुसि सुचंग ॥७८॥

सदबृत्त बटा सज्जन समाँन। रागी जन जैसे रागवाँन।
यह बटा किधौं जड़ भरथ अंग। संगृहित अनिछित होत संग ॥७९॥

संप्रति सुवृत्त मुनि मनस सोभ। छल षेद सहत माँनै न छोभ।
मिलि सकल छरिन की करत मार। हठ ढीठ भयौ माँनै न हार ॥८०॥

सजि बाजि चित्त करि करि सचेत। सब सुभट सुमन लोचन समेत।
सँग घिरत घिरत सँग जात जात। जनु बसीकरन जानत बिष्यात ॥८१॥

मन तुरी दृष्टि करि ताल मेल। षितिपाल रूप जीतै सु षेल।
नीसाँन बजत आवत नरेस। पूरन प्रत्तापजुत पुर प्रवेस ॥८२॥

दुति रूप भूप मुख देषि देषि। बरनत अनेक ओपम बिसेसि।
उच्चास इंद्र आरूढ़ एह। समतास किधौ सूरज सदेह ॥८३॥

वचनिका

ऐसे अभ्यास करत करत रूप राजाँन । अनेक बिद्या मिताँन । बिधि विधाँन बाँन । साधि साधि भए साबधाँन ॥८४॥

दोहा

सतरै सै बैसाख सुद आठम तिथ अभिराम ।
हरीसिंघ सुरलोक मै वासि कियौ बरियाम ॥८५॥

पद्धडिका

सतरैसै सई कै जेठ मास । पच्छ बहुल पंचमी तिथि प्रकास ।
थिर लगन मुहरत सुद्ध थाप । आनद कर बाँनी अलाप ॥८६॥

अति उद्दित मंगल बिधि अनेक । राजाँन रूप राज्याभिषेक ।
वपु आँवर आभूसन बनाय । चाव किय तिलक अच्छत चढ़ाय ॥८७॥

नागनेचि देवी नमस्कार । पूजन विधाँन नाना प्रकार ।
सुप्रसन्न होइ दिय खडग सिद्धि । सुप्रसिद्ध राज सतति समृद्धि ॥८८॥

आचार सुद्ध द्विज करि उवाच । विध बेद उक्त किम स्वस्ति वाच ।
सोभायमान सोभा सँभार । भारमल नद सिर राजभार ॥८९॥

वचनिका

यह वात सुनी साहब किरॉन । साहाँनसाह पातिसाह स्री साहजहाँन । सरै ऑम खास मै विराजमान । जहाँ हाथर जोरै ठाढे खाँन सुलतान । राव उमराव हिंदू मुसलमॉन । देखि देखि पातिसाहौ कै सॉन । केते होय हैराँन । केते भूल जायँ अवसॉन । तहाँ सुने महाराजा रूपसिंह के बखाँन । तब फुरमाया । लिख भेजौ फरमॉन । अब रूपसिंघ हभुर आवै । मुरातब मनसब पावै । हम फरमावै । सो हुकम वजाय लावै । राजा रूप हजूर आया । हजरत देख मनसब फुरमाया । दोय हजारी दोय हजार असवार । जडावरसो जड़ित खंजर तरवार । तेग दे तोल वधाया । प्यार करि किन्या । मजबूत पाया ॥९०॥

दोहा

संवछर पुन अयन रितु मास पच्छ दिनवार।
नच्छत्र जोग पुन करन गन कहौं नाम फलसार ॥६१॥

छप्पय

सोरह पिच्यासियैं समै ईस्वर संवछर।
उतरायन ग्रीसम हि सुरति बैसाख मास बर॥
सुदि पच्छ एकादसी बरन सनि हस्त नच्छत्रहि।
ब्रज जोग बरन निज करन गन देवगनिज्जहि॥
पूरनमल जनम सुनाँम प्रभु भारहमल गृहजनम भुव।
सुप्रसिद्ध नाँम संसार सिर रूपसिंघ राजाँन हुव ॥६२॥

वचनिका

अथ प्रथम ईस्वर नाम संवछर। तातै ईस्वर कै समबर। बरनत है कबिबर ॥६३॥

लीलावती छंद

कोपानल प्रबल ज्वाल कालानल दुयन गहन वन दहन कियं।
परतापबाँन गुनबाँन धरन गन हरषबाँन हितबाँन हियं॥
कुल कला कुसल कुल बिमल सील जुत भागबाँन उणाह भरियँ।
ईस्वर संवछर जनम रूपइल ईस्वर सरभरु अवतरियँ ॥६४॥

अथ उतरायन कौ फल

दिन प्रतदिन बृद्धि बृद्ध बपु दिन प्रत लछन छिन छिन बृद्धि लियं।
संतत सुप्रसत्ति चित्त उद्दित अति सुत कलत्र संतोष कियं॥
उद्दार परम आचार परायन धीर धरायन धरम धरं।
उतरायन जनम रूपसिंघ अधिपति देब नरायन भगति भरं ॥६५॥

अथ ग्रीषम रितु कौ फल

ऐस्वर्यबाँन धनबाँन दाँन मनि बिद्याबाँन बषांन बरं।
महि भोगबाँन बच अमल कमल-मुख केलि कुसल जल केलि करं॥

अरि तरवर सोखि सोखि अरि सरवर अरि फल पाँनप हठि हरियं ।
ग्रीषम रितु जनम रूप राजेसर ध्रुव गुन ग्रीषम फल धरियं ।।९६।।

अथ बैसाख मास कौ फल

लच्छित परतछ सुछ सुभ लछन परम बिबच्छन लच्छ परं ।
भूदेव भगति पुन देब बिसंभर सेवत मत कृत भेव भरं ।।
प्रफुलत बनराय राइ मन प्रफुलित कामित फलदल फलित कियं ।
बैसाष जनम नृप रूप बीरबर भारहमल नंद नंदन भनियं ।।९७।।

अथ सुकल पच्छ कौ फल

देदीप्यमॉन अति अमित उदित दुति दीपति कीरत दिस बिदिसं ।
स्त्री सहित सहित सतसील सहित हित नृमल कांति कृत निसि दिवसं ।।
नित नीत निपुन सु बिनीत रीत नित मन समंद आनंद मयं ।
पछ स-कल जनम गुन सुकल पच्छ सम रूपसिंघ राजाँन रयं ।।९८।।

अथ एकादसी तिथि कौ फल

आचार निपुन उपगार निपुन सुबिचार निपुन करतार कियं ।
हरि अरचा निपुन निपुन द्विज अरचा हरिगुन चरचा निपुन हियं ।।
सतकरम निपुन सतधरस निपुन पुनि परम निपुन अघ धरम हरं ।
एकादसि जनम रूपसिंघ अधिपति ब्रत एकादसि अमिट बर ।।९९

अथ सनिवार कौ फल

चित्त छितिपति सुथिर सुथिर छितिपति हरि भगति सुथिर चित्त सभरियं ।
संपति धरी सुथिर सुथिर संतति नित सुथिर पुन्यपन अनुसरियं ।।
गजराज सुथिर बरबाजि सुथिर महि राज सुथिर महाराज कियं ।
जगि सुथिर रूप जस सुथिर जगमगति थावर बार जनम थपियं ।।१००।।

अथ हस्त नच्छत्र कौ फल

दातार धीर उद्दार वार वर हृदय सदय पर पीर हर ।
नय बिनय बिहित द्विज देव भगतिरमय जय जय जय जय उदय कर ।
कमलाकर कमल बसै कमला ज्यौं त्यौं कमलाकर कमल बसै ।
हुव हस्त नच्छत्र नृप रूप जनम ध्रुव बलित ललित गुन ए बिलसै ।।१०१।।

अथ बज्र जोग कौ फल

बर बुद्धि बिमल गुन बृद्धि बिमल बल तेज प्रबल झलमलति तनं ।
उचरत बच साँच साँच बच इछ करत न परिच्छत कतरत रतनं ।।
भूषन मनि मुक्त जुक्त तन भूषन कुल भूषन दूषन दुयने ।
जिहि दिवस रूपसिंघ भूप जनम जगि बज्र जोग ए जोग बने ।।१०२।।

अथ वनज करन कौ फल

छत्र बाट हाट बाजार षेत षित तेग तराजू हाथ धरै ।
करि धराधरी घर निकर घरी भरि कनकन अरि करि गंज करै ।।
मनसब बहु लाभ लाभ महिमंडल जस अगनित धन भरत जमै ।
इहि बनिज रूप बहु अर्थ उपार्जित बनिज करन जस जनम समै ।।१०३।।

अथ देवगन कौ फल

सुर मधुर मधुर बय उकति सरलमसति सुलप सुभोजन भोज्य करं ।
सुगुनग्य तग्य सरवग्य हेत कृतजग्य हेत नित बित्त बितरं ।।
उत्तम आवास बास अति उत्तम कुसुम सुबासित बास तनं ।
नरदेव देव देवाधि सेव करि रूप भूप निज देव गनं ।।१०४।।

रूप नगर-सोभा बरनन

सुन्दर समाज राज भवन बिराजमान
सुधा तैं रवन सुरपुर सरभर को ।
उज्जल अवास आसपास च्यारो बरन के
भासत बिमान सौं सुरूप घरघर को ।।
चहुँ ओर फूले फले हरे भरे तरबर
सब सुख देखैं जल भरे सरबर को ।
ऐसे रूप नगर नगर रूप सौहै तहाँ
राजै राजा रूपसिंघ रूप मुरधर को ।।१०५।।

जहाँ ब्रह्म ब्रह्म करतूत मैं निपुन पुनि
बेद धुनि करै ध्यॉन धरै धुरधर कौ ।

जहाँ छत्री छत्री के धरम सावधॉन कर गहै
किरपॉन ताते अरि उर धर कौ ॥
जहॉ बैस सॉच व्यवहार मै सुजाँन
करै सूद्र द्विज भगति हुकम पुरधर कौ ।
ऐसौ रूपनगर नगर रूप सौहै जहॉ
राजै राजा रूपसिंघ रूप मुरधर कौ ॥१०६॥

पद्धडिका

कहुँ बचत भागबत रचत कित्ति । हरि भक्त सुनत हरि भक्ति नित्ति ।
कहुँ परमारथ भारथ प्रकास । कहुँ ब्रह्म ब्रह्म बिद्या बिलास ॥१०७॥

कहुँ धर्म्म कथा बरनत बिसाल । कहुँ कथा कुतूहल रस रसाल ।
कहुँ दवन दुरत नित हवन होति । कहुँ जगत जगत जगमगत जोति ॥१०८॥

धम धमति धाँम कहुँ अगर धूप । आरती करति कहुँ जन अनूप ।
घर घर घमंड कहुँ घंट घोष । प्रति पर्ब दिवस द्विज छ रस पोष ॥१०९॥

कहुँ देत सदा ब्रत अन्न दॉन । कहुँ ब्रत उद्यापन जुत बिधाँन ।
कहुँ रचित रग रुचि रागरंग । सतसंग सभा कहुँ अंग उमंग ॥११०॥

परपीर हरन पुरजन प्रबीन । नित नित हरष घरघर नवीन ।
नृप रूप राज यह राजनीत । रस रसित कहत यह सुकबि क्रीत ॥१११॥

अथ राजनीत वरनन

गुन पाइ बक्रता धनु गहंति । अरु लच्छ पाइ सर बधत अंति ।
दल देखि धनुष जुधि पीठ देत । लगि सरल बॉन हरि प्राँन लेत ॥११२॥

हठि छिद्र तकित पोषत हार । हार ही रह्यो यह कठ हार ।
सदबृत्त सुछ गुनबंत होइ । बिन हार गरै नहिं परत कोइ ॥११३॥

इक अधोगमन तरु जर अनेक । आभूषन हंसक नतहि एक ।
बृच्छ नहीं कटक जग बिख्यात । इक मुरज बदत दुहुँ बदन बात ॥११४॥

सर्प्प मुख दोइ जीहा सँपेखि । पुरबी मध्य उर तिमिर देखि ।
महि खडग गाढतर बद्ध मुष्टि । उपगार दाँन तप की अतुष्टि ॥११५॥

चोरियहु एक प्रानेस चिह्न । तोरियहु रोर जोरियहु बिह्न ।
बंधियै कबित्त छंद प्रबंध । बेधियहु मनी छेदियहु बंध ॥११६॥

परनारि पकरि संसार साख । रस देत बैद एकंत राखि ।
नीचाँन गमन इक करत नीर । सम बिषम ठोर बिचरत समीर ॥११७॥

दीसंत त्रदंडी हाथ डंड । माँननी होय इक माँन खंड ।
चल दल धूजहि चपल देखि । बिपरीत रीति इक रति बिसेसि ॥११८॥

अपमारग की रचि रुचि अछेह । मेटत सतमारग बरसि मेह ।
सोखंत एक दीपक सनेह । छीलर जल छिपमहि देत छेह ॥११९॥

दोहा

कलुष भाव अंतह करन तहाँ इक धरत न टाक ।
परम बियोगी होत है निसही मै चकवाक ॥१२०॥

तजत नेह खलता गहत इक तिलही तिहि ठौर ।
परबस चाक कुलाल कै भ्रमत रहत नहिं और ॥१२१॥

बिभव पाय दीन पाइ कै कुचही होत कठोर ।
दारू गोली कौं गहत इक बंदूक बरजोर ॥१२२॥

करत एक अपमाँन कौ उत्तम जन अपमाँन ।
इत उत कौं सिर धार धर खैंचत है खरसाँन ॥१२३॥

कवित्त

बात परजात यह रात थहरात तरुपात पै
न गात थहरात उतपात काहु भूप कै ।
घर पुर पर एक घन घोरि गाजै परि
अरि न सकल गाजि कारे पीरे रूप कै ॥
करति चकित चित चमकि चमकि बीज
रिपु कौ न ताप एक ताप तन धूप कौ ।
इति की न भीति भीति देखिये अँगारन की
ऐसी रीत राजनीत राजै राजा रूप कौ ॥१२४॥

सवैया

दाँन दया सतसील समेत प्रजाजन पूरब पुन्य उदै-सौ।
चारहु बरन सुधर्म्म मै धीर करै सुभ कर्म्म कह्यौ बिध तैसौ॥
ईति अनीति उपद्रव हान सुभिच्छ सदा सुख संपत जैसौ।
भूप सिरोमनि भूपति रूप कौ राजत राज जुधिठ्ठर कैसौ॥१२५॥

इति राजनीति।

अथ विसेस विधिक्रम वरनन

बचनिका

अरि तरवर कौं जैसौ करवर। अरि करबर कौं जैसौ केहर। अरि केहर कौं जैसौ घन। अरि घन कौं जैसौ तन पवन। अरि पवन कौं जैसौ सहसफन। अरि सहसफन कौं जैसौ गरुरतन। ऐसौ अरिगन गंजन। अरि माँन भंजन। पातिसाहौं मन रजन। प्रतिभट भय भंजन। ऐसी उत्तरोत्तर उपमा सौं बिराजमाँन। राजाधिराज रूप राजाँन॥१२६॥

अथ अरि तरवर कौ जैसौ करिवर कवित्त

कर करबर गहि धाय कै धकधकाइ पेड तै
हल हलाय कै धुजाइ डारे है।
झुकि झहराइ सत साष कौं मरौर तोर
दल फूल फल झकझोर जोर झारे हैं॥
फोर आलवाल कौं वहोर पच्छीजाल कौं
मिलाए ऐसे हाल कौ सु षलक निहारे हैं।
रूपसिघ भूप गजराज के सरूप गाजि
अरि तरवर सर मूल सौं उषारे हैं॥१२७॥

अथ अरि गजराजन कौ जैसौ मृगराज कवित्त

छहूँ रितु छाके ताके आपनै मता के
ताके मद गारिवे कौं जाकी गहरी अवाज है।
हाथल हथ्यारन सौं मारि सीस फार फार
लेत है निकास जस मुकता समाज है॥

छोरि छोरि थॉन तोरि तोरि लाज लंगरन
भाजि जात जानि जीय जीवन इलाज है।
गाढ़ गहै ऐसे गाढ़े अरि गजराजन कूँ
महाराजा रूप महाबली मृगराज है॥१२८॥

अथ सत्रुजन केहरि ताकौ घन सरभरि · कवित्त

सुनि सुनि गाज की अवाज सोस धुनि धुनि
उछरि उछरि गिरै होत कलकॉन है।
पाइकौ पछारै पंजा भूमि गहि मारै ले
जभाइ मुह फारै हीय हारे हलकॉन है।
नाँही कल परे हरि हेरि थरहरै धरपरै
तरफरै डरै परिहरै प्रॉन है।
सत्रु सारदूलन मै ऐसे हाल होत जॉनि
राजा रूपसिंघ देव सघन समॉन है॥१२९॥

अथ अरि घन की जैसौ तन पवन कवित्त

तौलौ चहुँ ओर घेर कै करत सोर
तौ लौ कारे पीरे दल बादल सरस है।
तौ लौं बीज बीज तरकत नर तर पर
तौ लौ सर बुंद झर मंडित अरस हैं॥
तौ लौं नाना रङ्ग कौ रँगीलौ चाप चमकत
देखियत तौ लौं ही सजीवन दरस है।
तौ लौ रिपुघन की सघनताई जौ लौं रूप
भूप तन पवन कौ होत न परस है॥१३०॥

अथ अरि पवन कौ सहसफन : कवित्त

तेज गति लीनै बन गहन बसन कीनै
काहू तै बस न कीनै बॉकी बॉकी ठौर के।
दिस दिस धावै रस बास लै लै आवै
पुन कंप उपजावै नर तर पुर पौर के॥

कबहू बिषम् भूमि कौ न भय मांनै ऐसे
दुरजन पवन अति दारुन कु दौर के।
महाराजा रूपसिंघ मनिधर फनिधर को
पकरि कीए सब एक एक कौर के ॥१३१॥

अथ अरि फनधर ताकौ गरुड समवर · कवित्त

टेढ़े गात टेढ़ेई चलात टेढ़े तुम किये जाके
आगे सीधी गति को न अनुसरचौ है।
बिष भरे कारे कारे षरे बिकराल भारे
जाकौ नांम मुनि निरष बिष पद धरचौ है॥
जाके पच्छबात तै थरहराइ भुरिभाइ सिर
नउढ़ा इम कैरो सम नमस्यौ है।
ऐसौ कौन अरि फनधर कहबाइ राजा
रूपसिंघ गरुड़ के डर तै नमस्यौ है ॥१३२॥

इति विसेष बिधि क्रम

अथ प्रताप बरनन

परम प्रकास महि मडल मै भासमांन
आसपास त्रास अंधकार कौं हरत है।
अरि कै सनेह सोखि जोति कौ उद्योत करै
कज्जल तै अरि मुख मलिन करत है॥
अमित अखड दुष्ट बात तै बितात नांही
राति दिन दूंनी दूंनी छबि कौं धरत है।
राजा रूप ऐसौ तेरौ प्रबल प्रताप दीप
तामै परे दुयन पतग ज्यौं जरत है ॥१३३॥

सवैया

जांनत है जग मांनत है जग खग्ग के पाँनिप सौं लपट्यौ है।
बैरि बधू चख नीर प्रवाह सौं होत है बृद्धि पै नांहि घट्यौ है॥
बृंद यहै उनमांनि कहै कबि ठीक लहै उपमांन ठट्यौ है॥
भूपति रूप तिहारौ प्रताप बड़े बड़वानल तै प्रगट्यौ है ॥ १३४ ॥

अथ दान वरनन . कवित्त

काहू कह्यौ मेरौ एक कन्या कौ बिवाह कीबौ
काहू कह्यौ सुत कौं जनेउ दीबौ आयौ है।
काहू कह्यौ बेद पढ्यौ दीजै गुर दच्छिना कौं
काहू आन कासी बेद पढिबौ बतायौ है।।
काहू कह्यौ ब्रह्म भोज करन उछाह चाह
काहू कह्यौ साह माँगै करज सतायौ है।
जोहि जिहि माँग्यौ आय ताही छिन दीनौ ताहि
भूप रूपसिघ बीर बिक्रम कहायौ है।। १३५।।

काहू कह्यौ मेरी बनता कै काच भूषन है
मनिन के भूषन कौ कन में उमाहियैं।
काहू कही भूँपरी पुराँनी टपकत पाँनी
तहाँ राजमंदिर को बाँनो ठाँनी चाहियै।।
काहू कही गजबाजि चढ़िबे की हौंस मेरै
गाँम ठाँम दीजै पन पूरन निबाहियै।
रूप भूप सबके मनोरथ के पूरन कौ
कैसी कैसी दाँन की उदारता सराहियै।। १३६।।

दोहा

सतरै सैरु बिड़ोतरै रूपसिघ राजाँन।
बलंक मुलक की मुहम कौ भेजे साहिजहाँन।। १३७।।

वचनिका

साहाँनसाह साहिजहाँन पातिसाह। आलमपनाह। नजर महंमद पातिसाह पर कोप कर उमराव बिदा किए। मनसब सिरोपाव दिए। बलख कौं जाइ घेरी। नजर महंमद काल की लपट सी हेरी। दोनू फौजें मुकाबलै भईं। कायरन की सुधि उड़ि गई। सूरबीर भए सावधाँन। छूटन लगे कमाँन बाँन। छायौ आसमाँन। भभक्यौ सोर चार्‌यौं ओर। जंग जुरे जोर। हरौल होइ महाराजा सार बजायौ। नजर महंमद पातिसाह कूँ भगायौ। फते कौ बिरद हाथ आयौ। लोक लोक जस गायौ।। १३८।।

कवित्त

कोप्यौ साहजहाँ जहाँ तहाँ जिन फौजें पेली
जब तलाबेली मेली गत्तर तलक मैं।
रूप भूप रूप तब सव तें अगाऊ ह्वै कै
षल निखराव कीने सुनी है षलक मैं॥
काढि समसेर झुकि झपकै झलमलाइ
चपला-सी चपल चलाई है ललक मैं।
कीनौ घमसाँन केते कीने कतलाँन
ऐसे बलकै हलहलाई बलक पलक मैं॥१३९॥

दुसह उदासी दसा बिन चंद्रिका-सी निसा
झुरसी लतासी भासी कोपागि झलक मैं।
कल नाँहीं पल नाँहीं परे पल नाँही माँही
पल जल भरि जाँही पलक पलक मैं॥
हियै धक धकी लियै षाइ न कछु न पियै
हाल हाल उचकत हिलकी हलक मैं।
राजा रूप तेरे डर अरिन के घर घर
ऐसै हाल बाल अरु बालक बलक मैं॥१४०॥

पातिसाही मद पातिसाही के सिपाही मद
गढ़ मद गाढ मद गाढ गहि गारे हैं।
सपद कौ मद पद मद सरहद मद
रद करि डारे भारमल नंद भारे हैं॥
तेज के तुरंग मद जोर मद सोर मद
गज के-से मद ज्यौं उतारे हैं।
रूपसिंघ सिंघ मारि करज प्रहारन सौं
नजर महमद के मद मींडि डारे हैं॥१४१॥

बलक सौं जेते उमराँव लच्चि लालच्च कौं
डरि उठि आए घरि हुकम कौं लोपि कै।
मन सबही सौं पातिसाँह कै विराजी भयौ
मनसब तब छीन लीन अति कोपि कै॥

उत इत राजी फुरमाई साहजहाँ गाजी
इत राजी ह्वै कै जर भूषन सौं ओपि कै।
दीने गज बाजी ऐसै कह्यौ राषी साजी बाजी
रूप राष्यौ रूप पर धर पग रोपि कै ॥१४२॥

वचनिका

षलक मै अरिन सौ अरि अरि। लोह लरि लरि। धीर उर धरि धरि। जंग जैत करि करि। हुकम सौ आए हजूर। पौरस पूर। मुजरा किया। पातिसाह बौहत प्यार किया। मनसब दिया। देस कौं हुकम दिया। ब्रज मंडल मै आया। स्रीनाथ का दरसन पाया। मन भाया। उर आनंद छाया ॥१४३॥

दोहा

सतरै सै चतुरोतरै ब्रज मंडल मै आइ।
निह्चल मन हरि नाँम सौं पग्यौ परम सुख पाइ ॥१४४॥
नृमल मंत्र हरि नाँम कौ दीनौ गुरु उपदेस।
उपज्यौ भगति उदोत सौं पूरन प्रेमाबेस ॥१४५॥

कवित्त

गाइन के पुंजन सौं अलिगन गुंजन सौं
बन घन कुंजन सौं कुंज के बिहारी सौ।
ब्रजरज मंजन सौ मुनि मन रंजन सौं
भव भय भंजन सौं राधा रिझवारी सौं॥
जमुन तरंगन सौ सुमन सुरगन सौं
हरि जन संगन सौ अति हितकारी सौं।
निज भाग जाग्यो आन धरम भरम भाग्यो
रूप मन अनुराग्यो गिरिबरधारी सौं ॥१४६॥

दोहा

दियौ दरस आग्या दई सुपने मै सुख सौंनि।
पधराएँ स्रीनाथ जी रूपनगर मै आँनि ॥१४७॥

कवित्त

आप गिरधारी गोपी गाइन उधारी ब्रज
मडल विहारी इहाँ प्रेम बस आयो है।
धेनु धौरी धूँवरी बुलाँहीं मुहुवरि गौरी
कपिला किसोरी सूँ परक छवि छायो है॥
घोप ज्यौं घमंड घने घुमत मथाने घोष
ब्रह्म घोप ब्रह्म पढ़ि हरि गुन गायो है।
नाथ जू सौं मन कों मगन करि रूपसिंघ
ब्रज को वनाव रूप नगर बनायो है॥१४८॥

सिसिर वसंत पुनि ग्रीषम सघन सुनि
सरद हिमत मै अनत सुख छाए हैं।
जैसे जैसे रितु के विलास तहाँ तैसे तैसे
हिय के हुलास सौं प्रकास दरसाए हैं॥
भाव करि चाव करि सुखद सुभाव करि
रूपसिंघ जू कै गिरिधारी जिय भाए हैं।
देखि देखि जन मन मोद होत चहूँ कोद
ब्रज के विनोद रूपनगर वनाए हैं॥१४६॥

अथ सरद रितु रास मर्मं को कवित्त

मोर को मुकुट कटि पीतपट वसीवट
विधि सूं वनाइ नटवर के वपुप कौं।
राधिका रसीली सग गोपिका सजीली रचि
भूपन वसन मन मोहन की रुख कौं॥
राग रग कौ उचारै गति की तरग धारै
कोटि कांमु रति वारै देखि दुहुँ मुख कौं।
सरद मै सेत चांदनी मै चांद चांदनी मै
राजा रूप लेत रास मडल के सुख कौं॥१५०॥

अथ अन्नकूट मर्मं को कवित्त

उत्तम अनेक अन्न विविध विवेक सिन्न
भिन्न-भिन्न ढेर करि-करि कै धरत है।

मेवा पकवाॅन फलदल आँन आॅन पाँन
आँनि आॅनि राषे सोभा कही नाॅ परत है ।।
व्यंजन बिनाँन नाना भाॅति के संधाॅन
दधि दूध मिसरी सौं लाँनि भाजन भरत है ।
राजा रूप प्रीति रीति पागैं नाथ जू के आगैं
कातिक मै अंन्नकूट उछव करत है ।।१५१।।

अथ नौधा भगति नाम कथन : छप्पय

प्रथम बिस्नु गुन स्रवन करहि हरि कथा कीरतन ।
पूजन हरिपद पदम सदा हरि नाॅमहि सुमिरन ।।
चित हित सेवन चरन बार बहुधाॅ अभिबंदन ।
दासभाव पुनि सखा भाव आतमाँ निबेदन ।।
हरि भक्त नित्त अनुरक्त हिय खीर नीर जैसै खगति ।
नृप रूप करत स्रीनाथ की भाव सहित नौधा भगति ।।१५२।।

अथ स्रवन भगति : वचनिका एव कवित्त

प्रथम स्री गिरिधारी जू की स्रवन भगति । जैसै करी परीच्छत । हित चित । तैसै राजा रूपसिंघ हरि गुन करत निति निति ।।१५३।।

सागर सुधा कौ हरि जस कौ उजागर है
निर्मल रतन गुन आगर धरत है ।
ताप हरै पाप हरै बिषय बिलाप हरै
कलि के कलाप हरै आनंद भरत है ।।
स्रवन सुबरन के कटोरन सौं भरि-भरि
अंचवत अति हिय हौंस न हरत है ।
भूपति परीच्छत ज्यो भूप रूप नित प्रति
भगति सूँ भागवत स्रवन करत है ।।१५४।।

अथ गुन कीरतन भगति

दूजे भगति स्री नारायन गुन कीरतन । तासौं जाकौ निहचल मन पूरन ताकौ कीजै बरनन ।

आतम तरन परमातम करन सम
महातमहरन महातम बतायो है ।
असरन सरन सरन ताके कोऊ आंन
धरनि धरन हू न जाकौ पार पायौ है ॥
पल पल छिन छिन प्रतिदिन प्रति रैंन
सुपन सूपन हू मैं भुलि न भुलायौ है ।
रूप भूप भगति सूं भागवत सुनि सुनि
सुक मुनि की सी धुनि हरिगुन गायो है ।१५५॥

अथ पूजन भगति

एक भगति हरि पद पकज कौ पूजन । ताहि करै भक्त जन । जैसे राजा पृथु भगति करी । तैसै राजा रूप चित्त मैं धरी ॥

एनसार घनसार कुंकम उबटि अग
गगजल सौं न्हवाइ तामैं मन दीनौ है ।
वसन बनाइ गन भूषन बनाइ तन
चंदन चढ़ाइ रुचि रुचि रस भीनौ है ॥
पुहुप चढ़ाइ बनमाला पहिराइ धूप
दीप दरसाइ बाल भोग आगै कीनौ है ।
पृथ्वीपति पृथु जैसे प्रभु पद पूजि पूजि
रूप भूप पूजन भगति फल लीनौ है ॥१५६॥

अथ सुमिरन भगति

और एक भगति हरि सुमिरन । तामै दीजै मन । जैसे सावधांन भए प्रहलाद । तैसै राजा रूप पायौ भक्ति सुधा कौ सबाद ।

गुरु उपदेस पाइ और बिसराइ ताहि
बिसरचौ न छिन हिय पाटी माँहि मढ़चौ है ।
करि मन मनका सुरति सूत सुद्ध करि
ब्रह्मगांठि दै कै करी माला चाउ चढ़चौ है ।
रैंन दिन रस रसी रसनाते छिन छिन
फेर फेर फिरि फिरि यहै रट रट्यौ है ।

रूप प्रह्लाद जैसै धरि धर हरि और
नॉम परहरि गिरिधर नाम पढ़्यौ है ।।१५७।।

अथ चरन सेवन भगति

और एक भगति चरन सेवन करन। सुष करन। दुष हरन। ताकौ जैसै कमला कै पन। तासौं तैसे अनुरागी भयौ राजा रूप मन ।।

करि थिरताई परहरि कै अथिरताई
सेवत सदाई सुष वेद मुष भाष्यौ है।
परम सुवास परिपूरन प्रकास बसि
ताही मै बिलास और कौन अभिलाष्यौ है ।।
कोमल अमल प्रेम रस सौं सरस भरे
सोई रस अमित सुचित चित चाष्यौ है।
भूप रूपसिंघ कमला ज्यौं कमलापति के
चरन कमल के सरन मन राष्यौ है ।।१५८।।

अथ वदन भगति

बहुरौ एक बंदन भगति। अति हित सहित। अलस रहित। जैसै करी अक्रूर नितप्रति। तैसै राजा रूप करी दंडवत जुगति ।।

तन करि मन करि बचन रचन करि
नयन निहारि अनुहारि चित्त धरी है।
पद जानु उर सिर भूमि सौ छुवाइ अति
मूरति मधुर सौ सुमति अनुसरी है ।।
प्रभु पद पंकज परसि कर कंजन सौं
जैसै दंडवत रचि रचि रुचि भरी है।
पूरि पूरि हित नित प्रति ही अक्रूर जैसै
भूप रूप बंदन भगति भली करी है ।।१५९।।

अथ दास भाव की भगति

और एक दास भाव की भगति। जे हैं दास जग तिनकौ अति नीकी लगति। जैसै करी हनुमाँन सुमति। तैसें राजा रूप कै निरन्तर सौं सुरति अति ।।

प्रात उठि आइ भाइ भरि हरि मंदिर मैं
प्रेम पद गाइ कें जगाइ छवि छायौ है।
न्हाइकें न्हवाइ तन बसन बनाइ गन
भूषन रचाइ चोवा चंदन चढायौ है॥
नाना भांति भोग भुगताइ घन बीरा दै कें
. .
आग्याकारी दास हनुमांन जैसे नाथ जू सो
रूप भूप ऐसे दास भाव दरसायौ है॥१६०॥

अथ सषाभाव की भगति

एक भगति सषा भाव की। चित हित चाव की। केवल स्रीनाथ ही अनुग्रह धरें। ताही सौं सषा भाव करें। जैसें अरजुन सौं कियौ। तैसें राजा रूपसिंघ जी कौं स्रीनाथ जी अपनो करि लियौ॥

विविध विलास मैं रहसिरहासन मैं
गोपी रस रासन मैं बात न छिपाइ की।
गढ गिरि घाटन विसम सम बाटन मैं
थिर चर थाटन मैं नैंक न जुदाइ की॥
बन घन कुंजन मैं गन जन पुंजन मैं
हरि करि गुंजन मैं आइकें सहाइ की।
अरजुन ज्यौं नाथ जू कें निरंतर संग रहै
रूप भूप जांनि है भगति सषा भाव की॥१६१॥

अथ सर्वस्वात्म निवेदन की भगति

और एक भगति सर्वस्वात्म निवेदन। जातें तन मन धन श्रीनारायन ही कौ अरपन। जैसें राजा बलि कीनौ समरपन। तैसें राजा रूपसिंघ हू कें यहै पन॥

याही के निमित्त तन याही के निमित्त मन
याही के निमित्त जन दौनि नित प्रति की।
वेद विधि वागिन कौ ब्रज के विलासनि कौ
धर्म्म अनुरागिन रौ संपति सुमति की॥

सब धन धॉम कॉम कॉमना समरपन
हरि ही के नॉम थित छिति छितिपति की ।।
बलि जैसै नाथ जू के रूप बलिहारि रूप
सरबस आतम निबेदन भगति की ।।१६२।।

बचनिका

जैसै नवधा भगति मै प्रबीन। स्त्रीनाथ जू सौं करि मन लीन। सुनि सुगीता। भागवत गीता। स्त्रवन कीनौ भारथ। तातै साधि लीनौ स्वारथ परमारथ। बैस्नव मारग के अनुसारी। हरिजन हितकारी। परम उपगारी। अंबरीष अबतारी। सारी बसुधा के रूप। अनूप भूप राजा रूप ।।१६३।।

दोहा

सवत सतर छहौतरै धरी मुँहम खंधार।
राजा रूप बिदा किए पातिसाह करि प्यार ।।१६४।।

साजि हेम नग सा ज सूँ बाजिराज गजराज।
दिए षंधार बिदा किए साहजहाँ सिरताज ।।१६५।।

वचनिका

एक लाष असी हजार असबार। नबाब मुकरब षॉन नबाब किलीचषाँ से सिरदार। भले भले उमराव भए ताबीनदार। गहै सार। मजल दर मजल जाइ पौहते षधार। दुहूँ तरफ भइ बाँनन की मार। हॉ हुँसियार। मरदो षबरदार षबरदार। बोले बीर बार बार। मार देते देते भए षंधार पार। बीच ही किजलवास की फौजे धाई। लड़ै षूब लड़ाई। जुदे जुदे हथियारन की मार मचाई। भले भले यारन यारन की फते पाई ।।१६६।।

सवैया

पौंन प्रताप के जोरन सौ झकझौर हलोरन मारि हलाई।
पारि महा भय भौरकें झौमरै चाक फिरै तिहि ताक फिराई ।।
भूपति रूप जही बिचरचौ अरि की सुधि बुद्धि सबै बिसराई।
षग्गकी धार मैं डारि धकाई षंधारी समेत षंधार बहाई ।।१६७।।

दोहा

सतरै सै सतहोतरै आए साह हजूर।
साहिजहाँ नृप रूप सौं प्यार कियौ भरपूर ॥१६८॥

बचनिका

महाराजा रूप हजूर आया। हजरत फुरमाया। अरज कीजै। जु चहियै सु लीजैं। पातिसाह प्यार की नजर धरी। तब कर जोरि अरज करी। षातर बीच आवै तौ सबलसिंघ भाटी जैसलमेर पावै। अरज मांनी। बात जगत जांनी। जेती राजधांनी। जेते षॉन षवानी। तिनके मुंह याही बांनी। मरदो उपगार कीजै तौ कीजै। जस लीजै। जैसा राजा रूपसिंघ उपगार कीया। जस लीया ॥१६९॥

कवित्त

आवत ही पास नरबर सौं निबास दियौ
ऐसौ प्यार कियौ चाही सोई बात लही है।
पीछैं पातसाह सौं वजिद ह्वै अरज करी
साहजहाँ सबही अरज करी सही है॥
रावल कहायौ गोरहरा गढ पायौ लोक
लोक जस गायौ रबितल बात रही है।
भाटी सब ले समाड देस कौ नरेस भयौ
क्यौं न होइ भूप राजा रूप बाँह गही है ॥१७०॥

छप्पय

तरबर तर लगि ततु लता पसरंत सिषर लग।
जलज बीज जल मूल जलहि परमाँन बिदित जग॥
वाँमन कर कौ बस बढ्यौ ज्यौं बढ़त बिस्नु बप।
सदगुरु निकट सु सिष्य जड सुसम हौंहि ग्यान जप॥
रूपसिंघ संग त्यौं सवलसिंघ पुहँवि भयौ जदुबस पति।
सेवत बड़न तेई सदा बड़े हौंहि यह बचन सति ॥१७१॥

अथ चंद्रायन कुण्डलिया : भाषा मारवाडी

जलह प्रमाँणै पाइणी कुलह प्रमाणै मत्ति।
ज्याँ जेहा नर सेवियाँ त्याँ तेहा फल पत्ति॥

तेहा फल पत्ति सांप्रति देखौ तहति ।
भारमल नंद उपगार कृत तेण भति ।।
सबल नृप किय भूप भाटी सबल ।
तिती पोइन बधै जितौ परमॉन जल ।।१७२।।

दोहा

सतरै सै रुनबोतरै दूजी बार खंधार ।
राजा रूप बिदा किए संक बधी सिरदार ।।१७३।।

गहर सहर लाहोर मै लहर बहर जय लाह ।
महर नजर मनसब दियौ साहिजहाँ नरनाह ।।१७४।।

कवित्त

जब फरमावै तब बॉकी ठौर दौरि जावै
बोलबोला करि आवै साहि बात चाही कौ ।
मालिम जगत अरि जालिम करत जेर
सालिम सरस जस जपै जग ताही कौ ।
गाढ़े कॉम करिबे कौ लोह छोह लरिबे कौ
आवै पातिसाह कौं भरोसौ एक याही कौ ।
तिहजारी जानि दै हजार तीन असबार
नौबत दै कियो रूप रूप पातिसाही कौ ।।१७५।।

साहि सकुचॉनौ औ सिपाह सकुचॉनौ सब
जीय मै नजक सह हीय मै हलचली ।
भूले सुधि भूले बुद्धि भूले षॉन भूले पॉन
भूले अभिमॉन तन मन मैं कलकली ।।
बॉके असबारन सौं बॉकी तरबारन सौं
है की षुर तारन सौं दबटि दलमली ।
कोप करि रूप चढ़यौ सुनि कै षंधार बीच
जॉनी है षलक परी षलकै षलभली ।।१७६।।

दोहा

फेरि घेरि षंधार कौं फौज फेरि चहुँ फेर।
भ्फेरि भ्फेरि समसेर सौं जेर करी बिन भ्फेर ॥१७७॥
कायम करि गज तोल कौं तह तिसरस किय तोल।
कियौ रूप पतिसाह कौं ऊपर बोल अडोल ॥१७८॥
तंरबारिन सौं तोरि अरि फेरी आँन अनूप।
पेसकसी ले अरिन पै आए राजा रूप ॥१७९॥
पाइ हुकम पतिसाह कौ आइ कियौ उछाह।
सतरसै नव ऊपरै तीज दिवस सुदि माह ॥१८०॥

कवित्त

जैसें राव जोध जोधपुर कौं सुबस कीनौ
जैसै राव बीकै बीकानेर नाँव ठायौ है ॥
जैसै महाराजा कुल भूषन किसनसिंघ
॥
तैसे भारमल नद इंद इंदपुर सम
साहिजहाँ पातिसाह आप फुरमायौ है ॥
आप ही के नाँम अभिरांम नाँम राषिवे कौं
राजा रूपसिंघ रूपनगर बसायौ है ॥१८१॥

दोहा

सतरै सै दाहोतरै मुहम तीसरी बार।
तोरि बाँन तरबारि सौं ख्वार करी खधार ॥१८२॥
सतरै इग्यारोतरै दिल्लीपति दरगाह।
तेज भ्फलाहल तप प्रबल साहजहाँ पतिसाह ॥१८३॥

सवैया

स्वामि के कांम कौ पास दयौ है षधार से माट मै जंग जमायौ।
दुरजन के मुष कौ जल घोरि कै षग्ग के घाइन जोरि घुमायौ ॥
छोह सौं लोह के बोह दीए अरु नेह दै दै चटकोलौ बनायौ।
छत्रिय धर्म कौं भूपति रूप भलौ रंग तीसरी बार चढ़ायौ ॥१८४॥

कवित्त

साहिजहाँ पातिसाह रांना सौं रिसांना
तब बदन तै रोस भरे बचन बगबगे।
बैठे ऑम षास बौले मुहीम कबूलौ कोऊ
सबही के मन बात सुनि कै डगडगे ।।
जाके धर बर गिरबर लसकर बर
सोच ही मै रहि गए लोचन टगटगे।
हाँ कही न नॉही कही सब ऐसै भए जैसै
चित्र के से लिषै किधौं काहूक ठगठगे ।।१८५।।

दोहा

सजि पौरिस दिल्लीस सौं करी अरज कमधज्ज।
कज्ज सुधारै स्वाँमि के लीनै भुज रज लज्ज ।।१८६।।

कवित्त

पांऊँ जौ हुकम तौ न लांऊँ वार एक पल
जहॉ पाँऊँ तहाँ तै ली आँऊँ हेरि हेरि कै।
धर चूरि गिर चूरि तरल सकर तोरि
सीधे करि डारौं गज बाजि पेरि पेरि कै ।।
सदन तै बन मॉहि बन तै छपन मॉहि
छपन तै घेरि घाटिन मै घेरि घेरि कै।
रूप कहै खग तै खूमॉन कौं खिसॉनौ करि
फिरकी फिरत त्यौं फिरऊँ फेरि फेरि कै ।।१८७।।

दोहा

ठौर ठौर की ठौर कौं करौं और की और।
एक दौर के दौर मै चौर करौं चीतौर ।।१८८।।

वचनिका

यह अरज सुनि च्यार हजारी का मनसब किया। मॉडलगढ़ बतन करि दिया। पर भूमि जाइ डंका बजाया। बंस कौं पाँन चढ़ाया। सुभ

साइत पाई । तब ही करी चढ़ाई । गढ़ पर चढ़ि नौवति वजाई । सजना वाँटी वधाई । दुसमनाँ दहसत षाई ॥१८६॥

कवित्त

सुनत अवाज रिपु राज तजि लाज तजि
राज साज तजि वंधु जन विछुरत है ।
चमकि चमकि जागै जागि जागि उठि भागै
भागि भागि गिरि वन घन मैं दुरत है ।
भारमल नंद इंद महाराजा रूपसिंघ
जय जस जुत कवि वचन फुरत है ॥
अरिन के उर पर घन के-से घाइ घुरैं
घन की-सी धुनि तेरी नौबति घुरत है ॥१६०॥

महाराजा भारमल नंद राजा रूपसिंघ
एक अद्भुत वात सुनी चित्त चाह तै ।
नई नई गति तेरी नौवति वजति जब
निपट निसक अंक डंका डंक आह तै ॥
दूरि दूरि दुरि रहैं तऊ खन घाइन तै
अरिन के हीय घट फूटैं ठीक ठाह तै ।
जन जन बन तार्कें के तिनकी सु बनिता कें
नीर कौ प्रवाह बहै नैनन की राह तै ॥१६१॥

आयौ रूपसिंघ गढ़ माँडिल वतन पायौ
पलक मै अरि तन करि है पुलक मैं ।
जाकौ ल्हसकर दरवार सरवर जल
सोषि लैहै कुंभज ज्यौं एक ही चुलक मै ॥
षेग षुर तारन सौं चूरि है पहारन कौं
रॉना का षजाँना षैचि भरि है गुलक मै ।
पुर पुर पौरि पौरि घर घर दौर दौर
ठौर ठौर वातें भई मेवारैं मुलक मै ॥१६२॥

पात मै दुराये गात पाइ लपटाये पात
पातन के छतनाव नाय सीस छये हैं ।

पात ही मै साक पात षातू कहूँ पात ही मै
पॉनी पीयै पात ज्यौं कँपात हीय हये है ।।
पात ही के सेज पर परे तरफरे रात
षेद सेद हरिबे कौं पात बात लये है।
राजा रूपसिंघ तेरे त्रास बस बन बसि
डरि अरि डार-डार पात-पात भये है ।।१९३।।

कहौं छोरे हाथी कहौं छोरे घोरे ताती अरु
कहौं छोरे साथी[1] जोरे हाथी जन-जन मै।
कहौं छोरे बास कहौं छोरे है सुबास कहौं
छोरे है निवास सोच कीने मन-मन मै ।।
कहौं छोरे बॉना कहौं छोरे है षजॉना कहौं
दॉना कहौं षॉना कहौं छोरे धन-धन मै।
महाराजा रूपसिंघ तेरे डर तै डरॉना
फिरत दिवॉना भये बैरी बन-बन मै ।।१९४।।

दोहा

मॉडलगढ़ की तलहटी फली फौज सओज।
अबलिया पिय कौं कहत है कछुक बात मै चोज ।।१९५।।

सवैया

हौ तुम सूर सधीर हौ पै मुँह तै जिन जुद्ध की बात कढ़ौगे।
भूपति रूप जहीं बिरच्यौ तिनके षग तेज के दाह डढ़ौगे ।।
क्यौं अनुकूल पनो रहिहै तुम और ही के मनमोह मढ़ौगे।
कै हौं सुजॉन अपछर के बर नाह निदॉन बिमॉन चढ़ौगे ।।१९६।।

दोहा

कह्यौ न मॉन्यौ तीय कौ गयौ रंग रन पीय।
मॉन बुझावत मोह बस दे उरॉहनौं तीय ।।१९७।।

पाठातर—१ हाथी होत होरे हाथी।

सवैया

जाइकै भूपति रूप सौं नांहि मिलौं लरिहौं कबहौं नहिं भागौं।
यौं कहि सार की धार प्रहार तें झूझि परे निवह्यौ अनुरागौं ॥
मेरे कहे जिय मांनि वुरौ कहा सोइ रहे मैं पिय जागौं।
जोई भई सु भई अब हमन मांन कौ छाडि विधै किन लागौं ॥१९८॥

दोहा

रूप विरत्ता राठवर[1] प्रगट रहि सकै नांहि।
हिम्मत हारै दोइ है[2] रांना छप्पन मांहि ॥१९९॥

दोहा

रांन राज हैरांन करि चढि चित्तौर करि चूर।
आए राजा रूपसिंघ स्रीपति साह हजूर ॥२००॥

वचनिका

एक वषत विलद वषत। साहिजहां पातिसाह वैठे हे तखत। मुख पर नूर वरखत। सबके मन करषत। हियैं हरषत। भले-भले मरदौं की हिम्मत कौं परखत। कसै हैं जैसै दरियाव गहर। लेत लहर। जिस पर महरवांन तिस पर महर नजर। जिस पर नां महरवांन तिस पर कहर नजर। ऐसैं परै जैसे वजर। किसी पर निमांसांम किसी पर फजर। एते वीच कछूक चूक पर परुष रुष हेरि काढि समसेर। साहि सनमुष धायौ जस रूप। तिन्है मारि पायौ जस रूप ॥२०१॥

कवित्त

साहन के साह साहजहां पातिसाह वैठे
हुते आंब षास सीस छत्र छवि छायो है।
तहां जसरूप तिहि वेर रोष रुष हेरि
गहि समसेर साहि सनमुष धायो है॥
षांन मीर राव उमराव दाब चूके सब
राजा रूपसिंघ कै विरद हाथ आयो है।

पाठांतर—१ वीर राठौर है। २ यो रहै।

मारि तरबारि अरि मारि उर बार राष्यौ
ऐसौ कियौ बार-बार पार पहुँचायो है ।।२०२।।

सवैया

साहिजहाँ दरबार कियौ जहाँ ठाड़े है ठव्ठ हजारी सदी के ।
साहि सनमुष लै तरबारि धस्यौ जस रूप बिचार बदी के ।।
वृंद कहै न लषो किनहू पतिसाह लषे भए टूक जदी के ।।
तेज कृपाँनी तै दुष्ट के देह के रूप किए तट दोइ नदी के ।।२०३।।

कवित्त

बैठे आँब षास साहिजहाँ सु बिहाँन ताकी
देषि कै करूर दीठ ढीठ मन लहिगौ ।
वृंद कहै सबन कौं छेकि जसरूप जब
साहि सनमुष करबाल कर गहिगौ ।।
ऐसी लघु लाघबी सौ कमध कृपाँनी ठाँनी
साहि लौ न जाँन पायौ बीच ही सु रहिगौ ।
देष्यौ पातिसाह स्वामि द्रोही के सरीर पर
रूप स्वाँमि धरमी कौ अदृष्ट, चक्र बहिगौ ।।२०४।।

वचनिका

आँब षास मै जस रूप कौं मारि । बर बीर बैर संभारि । डेरौं आइ मूँछौं बल भरराइ । पाग मसकाइ । बाँह चढ़ाइ । सबकौं सुनाइ । कोप सौं ओपि बचन बोले सोच संकोच के कपाट षोले ।।२०५।।

कवित

सोई रजपूत है सपूत भूप रूप कहै
जामै अंग रंग रजपूती कौ उदोत है ।
जैमल लीए हे राव माल के नगारे भारे
सारे जग अजौ ऐसी बातन कौ सोत है ।।
छोह छक लोह छक-छक पाइ क्यौं हौं बैर
लीबै कौ धरम कहा और कहा गोत है ।

कहबत सुनी रन बैर न पुरांने होहि
सौ बरस बीते जाके एक दाँत होत है ॥२०६॥

बचनिका

यह बात कही। सब उमरावौं सुनि करी सही। फौजबंधी की मसलति करते थे। जुद्ध की बात चित मै धरते थे। एते बीच। चाहते थे सोई पातिसाह फुरमाया। आगै सिघ भुषा था ही अर भष पाया। सब उमरावौं अरज करी महाराजा सलॉमत। चाकरा कौं सिरपाव दीजै। दुसमन के सिर पाव दीजै। अब बिलंब न कीजै। जुद्ध कीजै। अचलदास कौं मारि बैर लीजै। बड़े लोक कहते हैं। पंथ पाए बैरी धाए। लीजै चाट चढ़ाए ॥२०७॥

छद नीसाणी

साहि हुकुम स्रीनाथ देह थमत्थै धारै।
राजा बोल रहावणे इहु बोल उचारै॥
क्या भाई संबघ की क्या बधु पियारे।
बीराँ अग्गै बैर दै सब लग्गै खारे॥२०८॥

वे कहै बरियाम है जिन बैर बिसारे।
महासिघ रघुनाथ दा जोधा जोधारे॥
जिती गल्लाँ अष्षियाँ कित्ती सब आरे।
अचला उप्पर भेजिया दे ल्हसकर लारे॥२०९॥

अग्गै भी द्दा हरे स (?) यौं दे भारे।
बल भरिए बल छल भरे बिष भरिए भारे॥
रूप बिस्ता पंष राव चित्त बेध चितारे।
जाइ घेरी पिपलाज नू तत घेरे सारे॥२१०॥

अचला भीतर आहु रे करि बंध करारे।
गोले छुट्टे नालि दे दोडे दिसि च्यारे॥
सोर भभक्के सोर सौं हुब घोर अँधारे।
कोट ढहे इक चोट मैं पड़ गए बगारे॥२११॥

बान बिछुट्टे एहड़े झड़ तुट्टे तारे।
पौं तारे भल्लाँ पहाँ हल्लाँ हलकारे॥
सूरा पूरा सत्थियाँ हत्थी हथियारे।
सार संबाहै सामुहै बाहैं बाकारे ॥२१२॥

झडफड षग्गां औ झंडाँ झँडिपडि झूझारे।
हत्थाँ बत्थाँ लत्थ पत्थ जुडि जत्थ जुहारे॥
कर सिर पै धड़ कटि परे भटघट भंभारे।
कित्ता षेत भयाँबणा बहि सहिरौं नारे ॥२१३॥

धाए पलचर मेटि धष आभिष आहारे।
जिता भारमल नंद जंग अणभंग अषारे॥
मेडतिए थे जो मरद सो रद करि डारे।
करि फत्ते जिहि मालदे लित्ते नग्गारे ॥२१४॥

कवित्त

साहि के हुकम पर धरि इक तारी और
कछु न बिचारी है मदति साहि दल की।
स्वाँमि धर्म धारी रूप जाँनैं पातिसाही सारी
कहाँ लौं बड़ाई कीजै भारी भुजबल की॥
कलह करारी बार कीरति कौं बिसतारी
खोदि खोदि खुरनि उखारी जर खल की।
अचल समेत पिपलाज चढ़ि मारी पुनि
ठौर करि डारी चल बिचल अचल की ॥२१५॥

छते ति हजारी चौहजारी औ पंचहजारी
हफत हजारी हू राठौर साहि दल मै।
काहू सिरदार ऐसी बात न बिचारी भारी
लरि बैर लीजै नाँऊ कीजै रबितल मै॥
बैरी कौं बराह रूपसिंघ नरनाह दुहूँ
राह मै सराह जाकै जोर बाहुबल मैं।
नाहर की डाढ़ मै तै गाढ़े गढ़ गाढ़ मै तै
लीने राव माल के नगारे एक पल मै ॥२१६॥

अरि सेना दही डारि रन भूम थाँनी बीचि
उनही के मुष कौं उतारि डार्यौ पानी है।
बुधिवल नेता तरबारि रई गहि लई
नई नई गति चहूँ तरफ फिरॉनी है॥
घाइन घुमाइ हाथ चपल चलाइ मथि
माँषन सुजस लीनौ बात जग जॉनी है।
भारमल नंद इद राजा रूपसिंघ ऐसे
बैरिनि बिलोइ राषी कलि मै कहॉनी है॥२१७॥

महाराजा रूप भुज बिक्रम अनूप रूप
ऐसौं कौंन भूप सरभर कौं बिचारियै।
कोपु करि उर पर पर पुर है उजारे
जारे पर पुर जैसे झुंपरी कौं जारियै॥
मारि तरबारिन सौं अरिन के तोरे गाढ़े
गढ तोरे ज्यौं खिलौना तोरि डारियै॥
वर की-सी जर जेवे जबर सबर अरि
ऐसे ते उखारे जैसे मोथ कौं उखारियै॥२१८॥

दोहा

सतरै वारह जेठ वारसि दिन सु प्रमाँन।
पींपलाज फत्ते करी रीझे साहिजहॉन॥२१९॥

वचनिका

पींपलाज फत्ते पाई। गढ़ मॉडिल आई नौवति वजाई। भादव सुदि तीज पुत्र जनम भयौ। मॉनूँ आदीत उदयौ। ताकौ नाँम मॉनसिंघ दयौ। महाराजा रूप के मन आनंद छयौ। अति उछाह कीयौ। अनेक द्विज जाचकन कौं दाँन दीयौ। जस वास लीयौ॥२२०॥

कवित्त

वरन वरन पट मंडत वितॉन सोई
नाना रंग वादर सरूप दरसायौ है।
वाजत अवाज अति गहरे नगारे सोई
गाजत गहर सुर सघन सवायौ है॥

मोहरैं रुपयैन कौ झूमि झर लायौ द्विज
जाचक पपीहा मोर बोलि जस गायौ है ।।
महाराजा रूपसिंघ मॉनसिंघ के जनम
इंद्र अवतारी इंद्र की-सी छबि छायौ है ।।२२१।।

वचनिका

वाही संबछर मै बिजै दसमी के दिन । कुल देब्या कौ करि पूजन । जलूस करि । आनंद उर धरि । रूप भूप आइ बैठे सिंघासन ऊपरि । छत्र चबर । असिबर । हयबर । गयबर । नगारे नीसॉन । राज लच्छ के कीए बेदोक्त पूजन बिधॉन । तिस समै सुरिंद्र समॉन । बिराजमॉन । रूप राजॉन । तहॉ दीए अनेक इनॉम । इकरॉम ।।२२२।।

कवित्त

जहॉ राजै हंस बंस जहॉ सोम बंस अंस
मंगल करन जहॉ मंगल प्रमॉन है ।
जहॉ बुध जहॉ गुरु जहॉ कवि जहॉ ब्यास
परम प्रकास बिधि सिव कौं बिधान है ।।
जहॉ मंजुघोषा उरबसी औ सुकेसी मिलि
नाचत बजावत करत गुन गॉन है ।
महाराजा इंद्र के समॉन राजा रूपसिंघ
इंद्र सभा जैसौ जाकी सभा कौ बषॉन है ।।२२३।।

वकसीस वरनन

जगमग जोति भरे षासे सिरोपाव नव
अछी अछी वरछीनौ अनीयारी सार की ।
आरवी ऐराकी रग रंग के तुरंग नव
हेम नग वारीनौ कटारी तेज धार की ।।
विजे दसमी के दिन जोधा जस करन कौं
विसेष बधारै दई रेष नौ हजार की ।
भूप रूप करी है अनेक वकसीस तामै
एक एक ऐसी वकसीस एक वार की ।।२२४।।

पत्थर की लागै ताकौं दोइ सै कौ गोली लागै
रुपीए हजार कौ इजाफा करै भाव कौं।
तीर लागै ताकौं द्वै हजार कौ बधारा सेल
लागै तिहजार कौ बधारा देत चाव कौं॥
षरग कटारी लागै च्यार पाँछ हजार की
रेष कौं बिसेष करै दै कै सिरोपाव कौं।
कीजै चाकरी तौ रूप भूप ही की कीजै जाकै
चाकरी की दादि दीजै ऐसै उमराव कौं॥२२५॥

जंग जुरै पत्थर की लागै ताकौ सौ रुपैए
गोली लागै दोइ सौ इजाफै कीजियतु है।
तीर लागै तीन सौ रुपैए तरबार लागै
रुपैए हजार यौं बधारै लीजियतु है॥
एते पर जाकौ जैसौ तोल जाकौ तैसी रीझ
प्यार की नजर देखि देखि जीजियतु है।
कीजै चाकरी तौ भूप रूप ही की कीजै जाकै
चाकर कौं चाकरी की दादि दीजियतु है॥२२६॥

बचनिका

एक बखत बब्बर हमाँऊ अमीर तैमूरलंग के बंस अंस तखत दिली। बखत बली। साहिब किराँनसाँनी। मेरमाँन माँनी। साहाँनसाह। साहजहाँ पातिसाह। आफताब से बिराजमाँन। उदै अस्त लौं बखाँन। जाकौ तेज प्रताप प्रकासमाँन। सारे जहाँन। मग्गह बंगाल। कामरू नेपाल। चीन महा-चीन भुटत। कासमीर कांबोज परजंत। उजबक ईराँन। तुरक्क तूराँन। खुरासाँन। रूम साँम। तहाँ तक नाँम। किजल बास किलमाक। आरब्ब ऐराक। तहाँ तक जाकी धाक। बगस। हबस बलंदेज। फिरंग अँगरेज। सोरठि गुजरात। सक सकात। बगलाँना। थरहराँना। कुंकन कुमिलाँना। लाट कणाट लटपटाँना। तिलंग अंग कुसंग। तहाँ परै भंग। टगटगे सूपकन इक रंग। बाँनूं लष मालव औ सहस मेवार। नवकोटी मारवार। ढूढार नागर चाल। मेवात बहुत्तरि पाल। देस देस जाकी आँन दाँन। माँनै हींदू मुसलमाँन। मुगल पठाँन। ईराँनी तूराँनी। खुराँसानी। खूब-खूब

खाँन खबाँनी। हबसी अरमनी। रूमी रूहिल्लेपनी। हाजरि रहै छोड़ि छोड़ि मनमँनी। दीवाॅन बकसी। मौजूद मुनसी। हिदुस्थाॅनी। राजधानी के धरनहार। सिरदार। छत्रीस बंस के मौर। भले भले राठौर। सीसौ-दिए गौर। कछवाहे तेगबाहे। सोलंषी पमार हाडे। काॅम की बार आवै आडे। तूँबर चहुआॅन। लीनै किरपाँन। सदी तैं लैकै जहाॅ तक नौ सदी ले कै हजारी जहाॅ तक हफत हजारी। राॅना राजा राव ऐसे-ऐसे उमराव। निजूमी हकीम। जौहरी मुकीम। नजरबाज। गोलंदाज। छत्र बरदार। चँवर बरदार। तरवार बरदार। बरछी बरदार। ढाल बरदार। गुरज बरदार। तबलदार। परदार। छड़ीदार। इतमाॅम के करनहार। अपने-अपने औहेदे सैं खबर-दार। अपनी अपनी मिसल ठाढ़े। गाढ़े गढ़ कोट ढाहिबे कौ गाढ़े। हजरत के हरदम। हुकम हुकम। हाथ जौरै। मूढ मरद के माँन मोरै। आलम पनाह के मुख नूर। भरपूर। जागै। जोति जगर जगर। सब देखि रहे टगर टगर। सौंधे सुवास अतर। खिवै ऊँद अतर। अगर तगर। फैली सुवास नगर नगर। एक ऐसे है जिनके आगै दुसमन होइ जाइ जैसे सगर। एक ऐसे हैं जैसे जल अनल के बीच कगर। एक ऐसे है जालिमौं कौ दबटि मारै। जैसें लवा कौ झपटि पछारै। लगर झगर। नौबति बाजती है। घन की-सी तरह गाजती है। ऐसे आॅब खास मै हजरत। पातसाही के हजरत। साहिजादा दारासिकोह हजूर। तिस सौ पातिसाही का मजकूर। साहिजादा सूजा सकस। जिन पूरब करी बस। गुजरात मै मुराद बकस। धरकस। सबसौं करै बरकस। दखिन मैं औरङ्ग साह। रत्ता के एक रहमाॅन के राह। पातिसाहन की न धरै चाह। हाथ तसबी गजगाह। राखै सिपाह। मुलक-मुलक के नलुवे आवते थे। हजरत कूँ हकीकत गुदरावते थे। देस-देस कूँ फरमाॅन भेजते थे। डाकचौकीए चलते जाते थे। मुजरे पर एक कूँ मनसब देते थे। तकसीर पर एक का मन सब छीन लेते थे। करते थे अदालत। अदल ईमाँन मै साबत। पातिसाही मै सबकूँ आॅराॅम था। जैसा बसंत का आराॅम था।

एते बीच रित सौ पलटि गई। किधौं इधर की छाँह उधर छई। डाकचौकी बर-खबर आई। सो हजरत नै पाई। स्याहजादे बागी हुए। जुध के सामान किये। हजरत यिनकी फिकर करते थे। जुध की ततबीर जिय मै धरते थे। हजरत दारासाह कौं कही। और लोगौ ने नाॅ लही। एते बीच साहूकारौ के खबर आई। सो साहूकारौ घर बिध की बिधूवकसी पास

अरज कराई। मूढ लोगों नहीं पाई। अली ऊपर सौं वकसी अरज पहुंचाई। इसारत जताई। हजरत सलॉमत। च्यार सेर वच्चे पालि कीए थे दुरस्त। तिन मैं तीन भेजे थे गस्त। ते हाथ तैं छूटि भये मस्त। चलावतें है दस्त। भए जवरदस्त। इनका इलाज कीजै न कीजै दरगुजस्त। राखियै जेर दस्त। तिन मैं एक तौ सेर की ठौर आइ वैठा। सव के दिल मैं डर पैठा। तिस सेर का वाट अटकाया। और ही वाट चलाया। गजराजकूं विसतारता है। जिसके जेई पॉनि तेई पाव तिसकू पारता है। जैसी खवर आई। तैसी गुदराई। पीछैं हुकम इसारत पाई। यह फुरमाई खूब इलाज करूंगा। घेरि कै जजीरौ के वीच जरूंगा। सव उमराव रुकसद किए। साहिजादा दारासिकोह। महाराजा जसवत सिंघ। मिरजा राजा जेसिंघ। इनकूं गुसलखॉनै वुलाइ लिए। फुरमाया 'हकीकत पाइश' 'हॉं, हजरत सलॉमत।' 'कुछ दिल वीच आई' ? 'कुछ न आई'। महाराजा अरज करी 'हजरत सलॉमत। इस वात कौ क्या चित्त वीच त्यावैं। जिस चाकर कौ फुरमावैं सोई जङ्ग करि पकरि ले आवै। या पीछे ही कूं हटावै। हजरत सलॉमत। इस वात का ऐसा ही खेल है। पातिसाही के लियै मेल ही मैं अमेल है।' जैसी हुई आई। तैसी ही कहि वताई ॥२२७॥

पैंडी छद

लडिके किधौं तिय लई नेस तैं निकारे।
राम गरीव नवाज सौं सुग्रीव पुकारे।
वघु विरोधी वालि के हरि प्रॉंन प्रहारे
रज्ज पियारा रज्जियॉं भाई दु पियारे ॥२२८॥

वली विभीपन वघु के सम्वन्ध विसारे
आइ मिले रघुनाथ सूं घर छिद्र उघारे।
राघव कुंभकरन से रावन से मारे
रज्ज पियारा रज्जियॉं भाई दु पियारे ॥२२९॥

कौरव दुरजोधन किए अपकज्ज अपारे
पासे छल छलि पडवॉं वनवास विहारे।
पारथ भी भारथ पथ छोहणि खैकारे
रज्ज पियारा रज्जियॉं भाई दु पियारे ॥२३०॥

अचरिज क्या इस बातदा अग्गे चलि आई
वहि वहि लेंहि बुराइयाँ भूलि जाँहि भलाई।
जिन्हों लालच तिन्हौ क्या संबंध सगाई
रज्ज पियारा रज्जियाँ भाई दु पियारे ॥२३१॥

जडता अग्गें जीव ज्यूँ कुछ बुज्झै नाँहीं
बिषदा लग्या घाव सो फिरि रुज्झै नाँहीं।
कम्म कमाए पावदे ज्यौं गुज्झै नाँहीं
लालच अग्गे लोगनूँ त्यौं सुज्झै नाहीं ॥२३२॥

वचनिका

यह सुनि फरमाॅन भेजि सताब। ठौर ठौर के बुलाए राजा राव नबाब। फरमाॅन तै पहलै ही समै पाइ महाराजा रूप आॅनि पहुँचे। आवत ही पंच हजारी के मरातब कूँ पुँहचे। पातिसाह राजा जेंसिंघ कौ पूरब कौं बिदा कीया। साहिजादे सलेमा सकोह के साथ दीया। भले भले दाॅने मरदाॅने उमराव ताबीन लै कै नगारे पै डंका दै कै चले। खल दल खलभले। साह सूजा के पुह्ची खबर। ले चला लसकर सबर। इधर सै यह गया। उधर सै वह आइ मुकाबलै भया ॥२३३॥

पद्धडिका छद

सूरति सकोह सलेमा सकोह। छाहे छछोह जेंसिंघ छोह।
पातिसाह हुकम पौरिस्स पूर। सन्नाह सजे गजवाह सूर ॥२३४॥

उस तरफ साहि सूजा अबीह। दुँहुँ ओर नगारे धुरे दीह।
उड़ि सोर अराबा आसमाॅन। अररान लगे धर गिरि अमाॅन ॥२३५॥

छुट्टंत बाॅन तनत्रान छेद। छुट्टंत प्राॅन अरि धर बिछेद।
हुइ जुद्ध क्रुद्ध हुइ बीर हाक। छकि भिरै गिरै भट लोह छाक ॥२३६॥

दूसरौ माॅन राजा दुबाह। अरि हराॅ हरै गहरै उछाह।
हथवाह करै कछवाह हत्थ। तारीफ करै भट जत्थ तत्थ ॥२३७॥

साॅमुहै लरै सूजा सरोस। जुरि जंग अंग सूरत्त जोस।
तत बीर तेज गति बहै तीर। धरपरै एक इक धरै धीर ॥२३८॥

हयवत्थ होइ करि करि हमल्ल। चल्ल सौं करैं जुरि जुद्ध मल्ल।
महि रची परम्पर खग्ग मार। मँडि रही धरनि नभ खग्ग मार ॥२३९॥

सावत सूर वाहत सेल। उर वार पार डारैं उथेल।
गहि गहि गरूर वाहैं गुरज्ज। भुज टूटि परैं मॉनूं भुरज्ज ॥२४०॥

उलटे पातिसाही दल अपार। भट लरत भिरत पर परैं भार।
सुलतांन फते जेसिघ सत्थ। सूजे सिगस्त खाई समत्थ ॥२४१॥

वचनिका

एते वीच यह अरज पहुंचाई। हजरत सलॉमत। ऐसी खवर आई। पातिसाही दल फते पाई। सूजे सिकस्त खाई। यह सुनि पातिसाह खुस भए। खुस वखत। आइ वैठे तखत ॥२४२॥

पैंडी छद

साहिजहाँ जेहा सुरिन्द एहा अवतारी
वषत वली वैठा तपत छत्रपति छत्रधारी।
जोति जगमगै नग जगे जगमग जरतारी
हथ जोडें ठाडे जहाँ पच हफत हजारी ॥२४३॥

वकी रत्ती वजर-सी करि नजर करारी
सवनुँ हलल सुनाइ कै इह गल्ल उचारी।
जित्ती धर औरगजेवे कित्ती असवारी
दिल्ली उप्पर दौर किले लसकर लारी ॥२४४॥

महाराजा उस मॉमुहैं तुम करी तयारी
है तुमसाँ खातर जमाँ हर भाँति हमारी।
होंण न दीज्यो हुकम है नरवदा वारी
मार गही सिरदार हो यह वार तुम्हारी ॥२४५॥

महाराजा अरज

दिल्ली नरहदा हुकम सिर उप्पर ठाँऊं
वांकी ठौर जहाँ भेजै तहाँ जाऊं।

आइ न सबके बार जेहि फिरि पार पुछाऊँ
फुरमावै पतिसाह तौ दरगाह पठाँऊँ ।।२४६।।

करि लित्ती मै लज्ज कज इह अरज अगाऊँ
सनमुख औरंगजेब सूँ रन जंग रचाऊँ ।

हूँ हुकमी हजरत दादुक सारति पाऊँ
तो गोसे बिच्च कमॉन दे गहि एँ चिंलि आऊँ ।२४७।।

पातिसाह बचन

अग्गे भी इस बंस में अबतंस अछेहा
राणा रषण राय ढाल रिणमाल अड़ेहा ।

बंध्या जस हथ मालदे गरुवत्तन गेहा
महाराजा इस बातदा अवचंभा केहा ।।२४८।।

वचनिका

आॅब खास में जाइ यह फुरमाय । षिल बषत मै जाय महाराजा कौं लीने बुलाय । एकांत फुरमाया । यह बोल जताया । जो वह तुम्हारा लसकर सामॉं निसॉन देषि फिर जाय तो जानै दीज्यौ । तुम सौं मिलि जुज्ज लोक लार लै आवै तौ आवनै दीज्यौ । ऐसा न होय कि जंग मै जाया होय । फरजंदी का दुष दुगुन होय । ईजत भंग न होन पावै । ईजत भंग ज्यौ होन पावै तो सलातीन का कुरब जावे । तुम अपनी ठौर कायम रहियो । वह आइ लरै तो लरियो । तब उसकी फौज तोप षॉने सौं उड़ाबौ । जुज लोग रहै तब मिलन का पैगाम कराबौ । तुम अपनी ठौर कायम होय लरौ । घोर वाहने की दिल मै जिन हार न करौ । तद दारासिकौ अरज करी । हजरत कैसी मसलत दिल में धरी । तब पातिसाह फुरमाया । तुम्हें बिरादरी का इषलास है जाद । हमै फरजंदीनहि आती याद । यह पातिसाहनै किन्ना किया । महाराजा को उस ही मसलत का हुकम दिया । तद महाराजा अरज करै है । हमारै हिंदवी मसला मसूर है । सोई होता है यह कॉम । दुविध्या मै दोऊ गए माया मिली न रॉम । लराई के दरम्यॉन लरना अरु अदब करना यह मसलत सौदूर । आज यह सुनि हजरत के हजूर । हमकौ तिस ही भॉति फुरमाबैंगे । जिसहि भॉति हुकम बजाबैंगे । पै हरगिज

यह मसलत नाँही। हजरत जाँनै मन माँही। पातिसाह फरमाया यही मसलत करौ। लोहा गहि सिरदार होय लरौ ॥२४६॥

छद मुमिल

देब प्रसन्न ब्रह्म बर दीनौ। नीति म्रजाद लोप नह कीनौ।
छल बल बुद्धि बिबेक सौं छाए। माँनि अदब हनुमाँन बधाए ॥२५०॥

बचनिका

और हमारे हुकम पर नजर धरियो। हम फुरमाया सोई करियो। जैसे तुम्हारे रॉंम बचन। कीया अगद लच्छमन ॥२५१॥

मुरि छद

अंगद राँम बचन उर धारे। मंदोदरि सिर चिहुर उघारे।
मन बच करम स्वाँमि ध्रम मडै। चाकर सुइ प्रभु बचन न खडै ॥२५२॥

कह्यौ राम सुइ लछमन कीनौ। दिन बनबास जानकहि दीनौ।
छिन भर सत साहस नहिं छडै। चाकर सुइ प्रभु बचन न खंडै ॥२५३॥

बुरौ भलौ जिय कछु न बिचारै। धरम अधरम भरम नहि धारै।
डंडै जिहि जुइ होइ अडडै। चाकर सुइ प्रभु बचन न खडै ॥२५४॥

राजनीति यह रीति रहावै। दिल मै कछू कछू दरसावै।
ज्यौं गजदत दोइ बिधि दौरै। खैबें और दिखैबें औरै ॥२५५॥

वचनिका

यह मसलति ठहराइ। आँब षास के बीच आइ। महाराजा कौं बाजिराज गजराज साज साजि दीए। बड़ी फौज के सिरदार करि रुकसद कीए। दे दे सिरोपाव। ताबीन कीए भले भले उमराव। राजा राव जे जाँनै जुद्ध के दाव घाव उपाव। लीनै सतसील साहस के सुभाव। जुद्ध की बेर जिनके चल हाथ अचल पाव। रीझि रीझि कीए लाख पसाव। बगतर ससतर के करि करि बनाव। चले षलभले षलभले। अचल चले। सेस सलसले। कमठ कलमले। जहाँ जहाँ करे पडाव। तहाँ तहाँ आगले कूँ पाँनी पिछले कूँ कीच। ऐसे होइ जाइ तलाव। ऐसे आवते है जैसा पट्टा उलट्टा दरियाव।

गति ललित मद गलित गजराज। पर सेत लाल रंग के निसाँन। जस प्रताप के निसाँन। जानैं जिहाँन। खाँन सुलतान। जलेब मै सोने रूपे जराव के। साज वनाव के। रंग रंग के तुरंग। उतंग सबज लाल सकलात मुखमल के जीन। नवीन नवीन। जरबफत के जीनपोस कीने। नट की सी गति लीनें। चलते है। दुयन कूं दलते हैं। अराबों के सामॉन लियै। बैहरखैं लिएं। बंदूकची आगै कियैं। धर चतुरंगिनी सेन। आइ डेरे दिए उजेन। उस तरफ आए साहिजादा औरंगजेब। हाथ तसबी कितेब। साथ लसकर अकबर 'वब्बर की सी जेब। भले भले उमराब लागे रकेब। आतसबाजी जवर जंग। जंबूर तुफंग। पषरैत बॉनैत। असबार अपार। आइ परे नर-वदा पार। जासूस भेजि षबर मँगाई। दल देषि आइ गुदराई। आलमपनाँ सलाँमत। ऐसी षबर है। लसकर जबर है। हकीकति सुनि पाई। दिल बीच ऐसी मसलति आई। मुराद साह सूँ मिलि कीजै लराई। यह ठहराई। लिपि भेजियै कौल करार। जिसतै आवै उनकौं इतबार। तब षासे इतबारी चाकरौ अरज करी। हजरत कौल करते हैं। पातिसाहत की न दिल बीच धरते है। यह क्या तब कही। तुम समझते नाँहीं। जो बुजरगौं फुरमाई ॥२५६॥

छप्पय

मित्त भाव मंडियै चित्त विस्वास अचल्लै।
देस नेस दिज्जियै कोस पिज्जियै कबल्लै॥
पच्छिभेद पारियै मुलक मारियै घेरि घर।
ऋद्ध जुद्ध किज्जियै वीर लज्जियै दुगुन वर॥
करि दाव घाव उप्पाव करि राज सचाबन रित्तियै।
यह राजनीति अवरग कहि हर प्रकार अरि जित्तियै॥२५७॥

घट करि पूरित घिरत बाहु षिप्पिय लिय वाहिर।
तिल भाजन महि डारि जिते लग्गै तिल जाहिर॥
तिते दाव्त विकयै सोच संकोच न किज्जै।
बोल कौल दे दॉह दगा दुसमन कौं दिज्जै॥
ऑरंगजेव मसलति अगम आरम्भ चित्त अचित्तियै।
यह राजनीति विवहार हे हर प्रकार अरि जित्तियै॥२५८॥

सुइ सयाँन हर भाँति काज आपनै सुधारै।
यह अयान बंस बिबस बहसि निज काज बिगारै ॥
पुहबि काज पंडबनि किए कल छल बल केते।
राजनीति यह रीति जगै जुध जेता जेते ॥
मिलि कागल छल बल मेल करि लै मुराद आगै लरूँ।
अवरंग कहैं चहुँ चक्क इम करि धमचक्क फते करूं ॥२५९॥

दोहा

कागज साहि मुराद कौं भेजे औरंगजेब।
कीया कौल करार है हम तुम बीच कितेब ॥२६०॥

• दुहुँ तरफ की षातर जमाँ के कौल का दोहा

बैठे पतिसाही करौ छत्तर सीस पर धार।
अमल करौ बरतौ अदल हम तुम यहै करार ॥२६१॥

पवगम छद

दूरि रहै दुइ एक एकही देषियै
लगै एक पै एक इग्यारह लेषियै।
हम तुम सामिल होइ जंग जौं किज्जीयै
लगि फौजै बरजोर फते करि लिज्जियै ॥२६२॥

आया साह मुराद तेज असबारियाँ
धरि आडबर चबर छत्र सिर धरियाँ।
निहचल औरगजेब सु फौज निहारिकै
चकतै पाया चैन सुँ कौल चितारि कै ॥२६३॥

वचनिका

एते महाराजा दूत भेजि कहाया। जोम दिषाय आगै मत आवौ। पीछे ही फिरि जाबौ। पातिसाह फुरमाया है। इस बासतै हम तुम कौं कहाया है। एते पर आबौगे तौ पीछै ही पछिताबौगे। हम लरैंगे। मारि तरबारि दूर करैंगे। तब औरंगजेब कही। यह बात सही। पै हम फिरि जाबैं। तौ जेब न पाबैं। यह कहि दूत कौं रुकसद कीया। यह रुका दीया ॥२६४॥

छप्पय

तुम सु एक सिरदार इते असवार ल आए।
हम सहजादे दोइ दुगुन लसकर दरसाए॥
सीस छत्र हम धरै हुकम जुइ करै सु होई।
कयै अदब नहि कमी सदा हुकमी सह कोई॥
सम बलन मुरातब बुद्धि सम गरवत्तन पद हम गहै।
जसबंत जंग जय किहि जुगति कहौ हमै औरंग कहै॥२६५॥

महाराजा कौ ज्वाब

एकै सीह अबीह गाजि भंजै कुरंग गन।
एकै इन उद्योत उडप खद्योत जोति अन॥
बाघ दोइ के बीच पियै बाराह ऐक पय।
दोइ अयोधन बीच होइ हीरान होइ छय॥
भय कहा तुम जु सॉमिल भऐ जंग जोरि जय जोरिहौ।
तरवारि मारि अरि तोरिहौ साह हुकम नहि मोरिहौं॥२६६॥

वचनिका

यह ज्वाब भेजि महाराजा दीबान किया। लायक लायक उमराव बुलाइ लिया॥२६७॥

छद पद्धडिका

महाराज आज राठौर मोर। आचार सार सरभर न और।
जसवतसिघ अनभंग जंग। साथैत सूर सावंत संग॥२६८॥

रिनमाल जोध राघत रेष। वानैत जैस ऊदा बिसेष।
चक्रवत्ति चित्त चॉदा विचित्र। चतुरंग चाव चॉपा चरित्र॥२६९॥

प्रारम्भ पूर पातॉ प्रसिद्ध। सूरत नरॉ आखाड सिद्ध।
वीरम्म वीर कूंपॉ कंठीर। साहस्स सीह वाला सधीर॥२७०॥

भाइल्ल धवेचे वड़े भींच। सचै सुजस्स नित दॉन सीच।
नव सहस मुरद्धर देस नाह। संग्राम सिद्ध लीनै सिपाह॥२७१॥

राठौर बंस राजा रतंन। जग जेठ करै जस के जतंन।
भुज लिये सज्ज कुल लज्ज भार। उद्दार चित्त ऊँचै अचार ॥२७२॥

निहचल मन माधौसिंघ नंद। मार की फौज हाडा मुकंद।
पाँचूं सबंधु भुजबल प्रचंड। खग बाहि करै खल खंड खंड ॥२७३॥

गह गात गहै अरजन्न गौर। गज थट्ट सुभट की करै गौर।
उमराब मिले तहाँ आँन आॅन। बीरत्ति बत्ति सूरत्ति बाँन ॥२७४॥

रत्ते रुहिल्ल गोरे मुगल्ल। सीदी असेत किलमाक सेत।
भूरे पठाँन लीनै भुथाँन। तानंत तीर मोहंत मीर ॥२७५॥

मसलत्ति करी उमराब मेल। खेलियै मरद्दो खग्ग खेल।
उन कही एक कीजै उपाइ। दीजियै दाइ आबै जुदाइ ॥२७६॥

राखियै नरबदा घाट रोकि। बन गहन बिषम घाटी बिलोकि।
मोरचे बाँधि कीजियै सुमार। औरंग मुराद आबै न बार ॥२७७॥

करि सकै न मसलति ठीक काइ। उतरे नदि रेबा बार आइ।
जोरै मुराद औरंगजेब। फंद जुद्ध बंध जानै फरेब ॥२७८॥

वह कले चले आगै खट्ट। सभले सोर बल घोर सट्ट।
गज सुतर नालि गाजै गहबिक। झिल मिले पेस खाँने झमबिक ॥२७९॥

है जहाँ मँडे भडे. हजार। बिस्तार बस्त उरदू बजार।
दाखिल भए डेरौ दिल दराज। अररात - तोषपखाँनै अबाज ॥२८०॥

बचनिका

साहिजादे डेरौं दाखिल भए। उमराब सब मुजरा करि करि अपने अपने डेरौं गए। महराजा षबरि पाइ। उमराब लीए बुलाइ। सिलह सस्त्र दीए। जुद्ध के सामाँन कीए। सबसौं कही। अब मसलति यही। यह उज्जेन अबंतिका पुरी अभिराँम। इहाॅ कीजै सग्राँम। रहै तिसकौ रहै नाँम। जे आबै काँम। ते पाबै हरि धाँम। तब उमराबाँ कूं अलाहदे ले कै कही राजा रतंन। महाराजा के कीजै जतन ॥२८१॥

उमड़ि उमडि दोऊ दल आबत। हार जीति हरि हाथ बताबत।
कही सुनी यह आदि कहाबत। राजा राषि रमै सुइ राबत ॥२८२॥

धरि छल वल पैदल धुरि आवत । लरै भिरै जिय नहि ललचावत ।
वीच परै सह लगै वचावत । राजा राषि रमै सुइ रावत ।।२८३।।

पैदल पिछा पाव न ठावत । पुँहचै पार मत्रि पद पावत ।
राज काज फिरि आइ रचावत । राजा राषि रमै सुइ रावत ।।२८४।।

वचनिका

सव मिलि अरज करी । भाय भरी । हमकूँ बिदा कीजै । सामान दीजै । एक बेर हम लरै । जो भार परै । तौ महाराज हमारी मदति करै । महाराजा न मॉनी । साथ ही असवार भए इस वॉनी ।।२८५।।

छप्पय

महाराज जसराज पाज सिरताज मुरद्धर ।
स्वॉमि काज ले साज बाज गजराज लसक्कर ।।
राज राज से राजराज सुर राज सरम्भर ।
सोभित राज समाज संग भुज लाज आज भर ।।
गहि गाज दराज कि अरि गंजन गजन नद मृगराज गति ।
करि कोप चढ्यौ ध्रम पाज कजि पच्छ राज अहिराज प्रति ।।२८६।।

वचनिका

गजराज सुतरसाज । वने वाज । वरकंदाज । आसतबाजी के सामॉन लायै । हरौल गोल चंदौल दोऊ बाजू की तजवीज कीयै । इधर सूँ इस ही तरह दोऊ तरफ सौं साहजादे आए । औरंगजेव महाराज के लसकर पर नजर धरता है । दिल वीच यह फिकर करता है ।।२८७।।

छप्पय

मंडि मडि अति मेह एक क्यॉमति के आए ।
किधौं कहर दरियाव लहरि धरि धर पर धाए ।।
जम जमाति सी जाति किधौं जग जंत अंत कर ।
या षुदा य क्या किया गजव भेज्या कि मुज्ज पर ।।
करि फते पातिसाही करूँ यह उमेद संदेह किय ।
अवरंग देषि जसवत दल ए विचार जिय उप्पजिय ।।२८८।।

अथ क्रूर जुद्ध बरनन

महि रचे दुहुँ दिसि मोरचे । खल दलन दल निहचल षचे ।
गजर सुतर असि नर गज्जए । सब साज कटि तटि सज्जये ।।२८६।।

छुटि नालि गोले छुट्टिय । किरि तरित धर तुट्ठिय ।
आतस भभूके उट्ठिय । बरि बजर ओले उट्ठिय ।।२६०।।

धर सु गिर अबर धरहरे । जल जलधि छिल थर थरहरे ।
पर परसपर हित परहरे । झुकि समर सर झर झर हरे ।।२६१।।

उस तरफ छुट्टैं तोप ए । कमधज्ज लरैं सक्कोप ए ।
जो तोपखाना साज के । ताबीन था महाराज के ।।२६२।।

ताका दरोगा चाह सौं । मिल रह्या औरंग साह सौं ।
खाली अबाजैं छोरय । बिन तीर भभकत सोरय ।।२६३।।

ज्यौं सरद घन करि सोर कौं । बरसै न जल कहि ओर कौं ।
उस तरफ गोले छूटहीं । इस तरफ भट घट फूटहीं ।।२६४।।

तब अरज की महाराज सौं । सब सूर धीर समाज सौं ।
हुइ हुकम घोरे बाहियें । अवरंग कौ दल गाहियें ।।२६५।।

कछु करौ धीरज जग कौं । अब पकरि लै अवरग कौं ।
पतिसाह रुकसद के समैं । जो कछुक फरमाया हमैं ।।२६६।।

वह कह्यौ जात न बोत है । हर समैं आडा होत है ।
तब लोक अषताय कैं । अहिराज ज्यौं बल षाय कै ।।२६७।।

सौ सौ पचास पचास के । करि तुंग सजि सजि त्रास के ।
अरि फौज मै अस डार तैं । के उड़े गोलनि मारतै ।।२६८।।

के पुँहचि प्रतिभट जूह सौं । भट लरत सुभट समूह सौं ।
भच भच्च भाले भूचकैं । हिच हिच्च हठि हठि हूचकैं ।।२६६।।

जुरि सेल करबर जोरए । पर जिरह पंजर फोरए ।
तरबारि अरि धर तोरए । मेछाँन दल बल मोरए ।।३००।।

कोतह हथ्यार कटारियाँ । धर उबर बिहरि दुधारियाँ ।
पगि अडिग लरि लरि धरपरैं । धर सिर परैं हू धर लरैं ।।३०१।।

इक मार मार उचारहीं। हुसियार ह्वै हलकारहीं।
सै हथी एक सँभारहीं। दलि उबर करत दुसारहीं ॥३०२॥

खग खेल सुभट खिलावही। मद मरद गरद मिलावहीं।
इक घाव अरि सिर घल्लहीं। झुकि झपक्रि झटके झल्लही ॥३०३॥

खिलि परि उथल्ले खाइकै। उठि लरत फिरि फिरि आइकै।
इक दंत गहि गहि तारियाँ। कर कटै लरत कटारियाँ ॥३०४॥

जौ धराधर परि जावहीं चपि चरन सेल चलावही।
सिर टोप पेटी सज्जहीं। भच भच्च भटघट भज्जहीं ॥३०५॥

लगि लपटि लटि लटि फिरि लरै। पग हाथ सिर कटि कटि परै।
तब महाराजा सोचहीं। मसलत चूक सकोचहीं ॥३०६॥

पतिसाह जो मसलत कही। बिगरी लराई बेगही।
भट काँम आए काम के। थोरे रहे हैं नाम के ॥३०७॥

अब काम निहचै आइयै। तौ पुहमि बिसोभा पाइयै।
महाराज अस चढि मोहए। सजि सिलह आवध सोहए ॥३०८॥

मारे किते दल मेछ के। छल स्वाँमि पौरस तें छके।
सजि राग सिंधू सज्जए। बीरत्ति नौबति बज्जए ॥३०९॥

जसवंत रबि सम रंजियं। भट तिमिर लसकर भंजियं।
औरंग मुराद कि राह ए। रोके दुहूँ मिलि राह ए ॥३१०॥

सत्रु दाँन दाँन समप्पियं। ग्रहराज ग्रह उग्रह कियं।
सुलताँन सिंघ समाँन ए। बाराह राजा बाँन ए ॥३११॥

धर समर असुर बिधुंसियं। पौरस्स जगत प्रसंसियं।
नेठाह अंक निसंक ए। बंका निकासै वंक ए ॥३१२॥

उमराव मसलत मैं भले। ते बाग गहिले नीकले।
डाढार हाथ दिखाइ कै। आथाँन बैठौ आइकै ॥३१३॥

सवैया

साहि मुराद औ औरंगजेब ए नाहर ठाहर ठीक सु ठाँई।
देखत ही खग दाँती लै सूर धरयौ गहपूर मुरद्धर साँई ॥

खैग खुरीन सूँ खूँदि खरे खल ऊख उखारि-उखारि कै खाई ।
यौं निज ठौर निबाह् गयौ रनबार बिरोरि बराह की नाँई ॥३१४॥

महिरतन रतन महेय का । आभरन कुल ऊ देस का ।
खग बाहि खल दल खडियं । मिलि अछर सुरपुर मंडियं ॥३१५॥

अरजन्न गौर अभंग ए । जहाँ परे करि करि जंग ए ।
हाडा मुकद सुहत्थ ए । सघार किय रिपु सत्थ ए ॥३१६॥

महि मोहन डोहन रन समुद्र । रिपु प्रलय करन अवतार रुद्र ।
दलमले दुयन चचल दबट्टि । खग झाट मेछ मारे झपट्टि ॥३१७॥

सूरत्त देखि औरंग साह । स्याबास देत करि करि सराह ।
पाए तृपति पल चार प्रेत । षगबाहि रहे उज्जेन खेत ॥३१८॥

सिब काँन्ह पूजे मुंडसूँ । झूझार झूमइयौ झुंड सूँ ।
घट घाव भक भक घोषए । पल रुहिर पलचर पोषए ॥३१९॥

रहे सतरसै राठौर ए । उमराब केतक और ए ।
ठहरे उजेनी ठाँम ए । करि जुद्ध आए काँम ए ॥३२०॥

कवित्त

भार तरबार साह बचन चितारि जब
पार भयौ सिरदार बार सब तन कौ ।
भार परै भारथ कौ भार निज भुज परयौ
छोह भर भरयौ करयौ लालच न तन कौ ॥
लोहा गहि लरयौ टूक टूक ह्वै कै परयौ ताहि
अपछरा बरयौ हेत खेत मैं पतन कौ ।
नाँहि नै रतन निज तनकौ जतन कियौ
रतन जतन कियौ सुजस रतन कौ ॥३२१॥

बचनिका

साहि मुराद औरंगजेब'फते पाई । करि लराई । सह दांने बजाए । दिल्ली पर चलाए । तब अरज बेगी पातिसाह जी सूं अरज करी । जरूर के कांम मौकूप भुकांम । कूच दरकूच करते । पातिसाही पर दावा धरते ।

साहिजादे चले आबते हैं। किसी कौ षातर बीच न ल्याबते है। सेर पर भए सेर। गहै समसेर। ऐसी खबर सुन। पातिसाह भए दुमन। उमराब मुजरे कूँ गए। हाथ जोरि ठाढ़े भए। साहिजादा दारा सकोह कौ पातिसाह फुरमाया। हमारे दिल यह आया। हम उनकी तरफ जाबै। पकरि ल्यावै। तुम इहाँ रहौ। कछु फेर मत कहौ। तब फुरमाया न किया। पातिसाह कूँ फिरि उत्तर दिया। तब खलक लोक बातै करते है ॥३२२॥

पैडी छन्द

भाइयाँ नाचह भाइयाँ छुटि प्रीति बिछुट्टी
फिरे लुटेरे चक्क फिरि लसकर घर लुट्टी ॥
फैली तल्लाँ ठौर ठौर ई हुगल्लाँ फुट्टी।
साहिजहाँ पतिसाह दी खट्टी निधि खुट्टी ॥३२३॥

दोहा

यौं जन जन कन कन भई कहै न ऐसौ कौन।
ज्यौं बन बन पन पन भयौ दरसै परसै पौंन ॥३२४॥

पैडी

मसलति चुक्का पातिसाह अति आकल ओई।
खटी कमाई खुट्टियाँ अक्कल भी खोई ॥
जो सहजादा जेर था सेर कित्ता सोई।
होणी होइ सु हर तरह होई पै होई ॥३२५॥

जिसनूँ भेजा जिस तरफ फिर बैठा सोई।
साजी बाजी पातिसा सै हाथों खोई ॥
हल्लाँ करता तखत बैठि क्या तरता कोई।
होणी होइ सु हर तरह होई पै होई ॥३२६॥

सही सलामत पातिसा खग लियै खडोई।
जिसनूँ अक्खै हुकम सो मन्नै नह कोई ॥
हालन हिम्मति हौस हिय करि सकै न सोई।
ज्यौं दीपक दिन है छता पै तेज न होई ॥३२७॥

वचनिका

ऐसी अनैसी खलक अवाज । रूपसिंघ महाराज । राजा जसवंतसिंघ । जोधपुर आए । समाचार पाए । सुनी लोकीक । हकीकत तहकीक । भई अलोकीक । बात बारीक । अब पातिसाह के कॉम आवै । जौ स्वाँमि धरमी कहावै । इह रित पर तौ पति पावै । यह करि विचार । महाराजा रूप आए पातिसाह दरवार । स्वॉमि धरम सौ भरी । अरज करी ।।३२८।।

छप्पय

चित उछाह न चाह आज दरगाह उदासी ।
राग न रंग न रीझ रौस रस हाँस न हासी ।।
कहौ हेत संकेत आज कछु देत न उत्तर ।
तुम दिल्लीस जगदीस किए तुम सौं कहा दुत्तर ।।
हुकमी अनेक हाजरि जु.हम गनत गनत न जात गने ।
आलमपनाह पतिसाह तुम आज कहा मन उनमने ।।३२९।।

पातिसाह वचन

पलट्यौ सूजा प्रथम धूम पारी धर पूरब ।
ठौर ठौर ठिक ठई और की और अपूरब ।।
पछिम दछिन पलटि उलटि आई सिर ऊपर ।
सामिल दारासाह देत उत्तर प्रति उत्तर ।।
तन मुज्झ बीच चार्‌यां तरफ गह्यौ कलह आतस गरम ।
इस बषत तषत अरु बषत की कौन भाँति रहि है सरम ।।३३०।।

महाराजा बचन

रोम रोम रमि रह्या लौंन तर बषत तुम्हारा ।
अब मुजरा लीजियै हाथ देखियै हमारा ।।
हमहि हुकम किज्जियै आज आड़े हम आवै ।
समर आँच हम सहै तुमहि तन ताप न तावै ।।
नरनाह रखौ खातर निसाँ निमक हलाली करि लरै ।
छत्रपती सलाँमत हम छतै कहा फिकर एता करै ।।३३१।।

बचनिका

यह बात पातिसाह के दिल बीच आई। तब महाराजा रूपसिंघ कौं सब सरम भलाई ॥३३२॥

कवित्त

साह की सरम दोऊ राह की सरम गज
गाह की सरम तोहि सरभ सिपाही की।
तषत की सरम या रषत की सरम या
बषत की सरम जाहि दई तिहि ताही की।
भारमल नंद राजा रूप कुँ भलाई अब
तुम कौं भलाई है बड़ाइ आ निबाही की।
और काहि दीजै दारा साह की सरम पाति-
साह की सरम और सरम पातिसाही की ॥३३३॥

बचनिका

सब सरम भुलाई। मेहरबॉनगी फुरमाई। पॉच सौ बगतर समसेर है हाथी सिरोपाब दिए। महाराजा रूपसिंघ कौं साहजादे दारा साह के सामिल किए। रुकसद हुइ डेरा आए। ऐसी छबि छाए ॥३३४॥

महाराजा रूप की सोभावन : छद मधुभार

राजाँन रूप। उद्दित अनूप। भरयंभ भूप। स्त्रीपति सरूप ॥३३५॥
राजाधिराज ज्यौं इंद्रराज। सुरभट समाज रिधि राज राज ॥३३६॥
पषि धरम पाज। कृत स्वामि काज। लिय बंस लाज। अबतंस आज॥३३७॥
गह सिंघ गाज। दिल अति दराज। बॉनिक बिराज। बर ज्यौं बिराज॥३३८॥
धीरत्त धीर। धरि बुद्धि धीर। पॉनिप पंडीर। ध्रुव जेम धीर ॥३३९॥
तीरत्थ तीर। सारथ सरीर। बिक्कम्म बीर। बिक्रम सधीर ॥३४०॥
समपै सुबर्ण बरनै सुबर्न। करदॉन कर्न। किरि बॉनि कर्न ॥३४१॥
सतसील संग। आग्या अभंग। रस रास रंग। उर धरि उमंग ॥३४२॥
हरि भक्ति पीन। नित हित नबीन। पाबन प्रबीन। लछिनाथ लीन ॥३४३॥
संग्रहित सार। भुज राज भार। है गै हजार। पैहै न पार ॥३४४॥

सज्जन सधार। दुर्जन विदार। औपम अपार। अविनी अधार ॥३४५॥
करिवर कुठार। सुज कर सहार। अट्ठार भार। परवन प्रहार ॥३४६॥
ऊँचै अचार। सच वच्च सार। हरि चंद वार। रामावतार ॥३४७॥
विधि के विचार। नाना प्रकार। व्रज के विहार। नित के निहार ॥३४८॥
उज्जल उदार। हिम के पहार। जल गग धार। चद्रक प्रचार ॥३४९॥
पय अक उपार। हर हंस हार। मंदार डार। पुहवी प्रचार ॥३५०॥
विस्तार बार। सज सुजस सार। मनि मारवार। सव जग सिंगार ॥३५१॥
आरभ राम। उद्दाम धाँम। थिरि अस्व थाँम। सम सजि सग्राम ॥३५२॥
गुन गाँम गाँम। ध्रुव धाँम धाँम। कर स्वामि काम। वर साम दाँम ॥३५३॥
कुल कुमुद चद। आनद कद। साहस समद। भारमल नद ॥३५४॥

अथ दरवार वरनन पद्धडिका छद

उमराव जुरे दरवार आइ। वर वीर वीर वाँनिक वनाइ।
रिनमल्ल मेले रिन मल्ल रूप। आषाड जोध जोधे अनूप ॥३५५॥

बाँकि सु वीर वीके वषाँनि। काँधिल्य धीर लीनै कृपाँनि।
रज वट्ट लियै भट आइ मलौत। कमधज्ज लज्ज भुज करम सोत ॥३५६॥

जुध करन जैत जोधार जैत। दीपै उदावत सु वर दैत।
जोरवर मिले जहाँ जैम लौत। आहाव अभग भड ईसरौत ॥३५७॥

चाँपावत चाँदावत सु चाव। भारमल जगमल सु भाव।
पातावत रूपावत प्रसिद्ध। रनधीर रूप रनधीर रिद्ध ॥३५८॥

बीरत्तिबाँन चहुवाँन वाँन। पंमार गौर हाडा प्रमाँन।
सीसौदे कूरमबस सूर। सोलकी तूंवर जुद्ध सूर ॥३५९॥

छत्तीस वस सावत छत्ति। दरबार सोह सूरत्ति दत्ति।
राजाँन रूप राजाँन रूप। भारत्थ भार भुज धरत भूप ॥३६०॥

वचनिका

दरबार करि साहनी बुलाए। देखिवे कूं घोरे मँगाए। कैसे कैसे। रवि रथ जैसे। उतग अग के। अनेक रग के। मतंग मोल के। करते अलोल के। लेखिनी कॉन के। बीरत्ति बाँन के। निर्मांस मुख के। दैनहार सुख के।

सालिग्राम नैन के। ऐराक ऐंन के। निरदोष लछन के। प्रतिपच्छी पाछन के। बादी पवन के। दुर्जन दबन के। चंचल गबन के। भूषन भबन के। नट की सी गति के। मोहन मनमति के। साबधान सुरति के। तुरत फुरति के ॥३६१॥

तुरग बरनन छद गीया

ताजी तुरक्की उज्जबक्की थेट काबिल थॉन के
महूबा मुसक्की जेबलक्की बारि तरके बॉन के।
मुबलक मुलक्की अब्बलक्की साज बाज सुहाबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझॉबने ॥३६२॥

ऊँचे ऐराकी दे फराकी अंग उज्जल आनियं
मत्ते मजल्लस पूर पौरस खुरजेखुर सानियं।
कूदंत कछी ओप अछी धाप धरि धर धाबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझॉबने ॥३६३॥

आने अरब्बी गै गरब्बी मैन मूरति मोहने
धाटी अधीरे धूम धीरे मूर सूरति सोहने।
नीके न बल्ले जे अबल्ले धींग धाइ धकाबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझॉबने ॥३६४॥

मत्ते उमत्ते तेज तत्ते हत्थ सारति हल्लने
चाहै चकत्ते रग रत्ते झूझ सारति झल्लने।
धर धम धनत्ते पै धरत्ते धू गिरिंद धुजाबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराजि रिझॉबने ॥३६५॥

साँचै सु ढारी देह सारी मित्र जैसे मित्र के
चित चित्रकारी चित्रकारी चित्रि कीने चित्र के।
षासे षंधारी है हजारी पच्छि सोभा पाबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाबने ॥३६६॥

दौरै सजोरै जेब जोरै पौन पाछै देत है
मृग मान मोरै चित्त चोरै चित्त जीतै लेत हैं।
कपि डॉन थोरै होड छोरै बैनतेय बताबने
ऐसै अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाबने ॥३६७॥

संजाब अबलष स्याह् अबलष सुरंग अबलष सोह् ए
कुमैत अबलष समद अबलष लषी अबलष लषि लए ।
सदली अबलष रंग सबलष भाँति जिय के भावने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ॥३६८॥

मिट्टि बा नीले हरे नीले बोज सुरषा जुत्तए
काँनू समंद सदली कुल्ला और तासिर गाबए ।
सुनहरा सग्रहि किसमिसी केहि फिर कुमैत कहाबने
ऐसे अनूप रूप भूप वाजिराज रिझाँबने ॥३६९॥

कहि स्याह मंदली लाल संमिली रंग ए फुल बारियं
बिल्लौर गरडे और ताजी चीनी ओ मुलतानिय ।
सूरति सुदेसी सुद्ध देसी पाइ ठिम ठिम ठाबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ॥३७०॥

नीके नबीने जीन कीने बिबिध रंग रंगबानी के
सुषमल मिहीने मोल लीने तास रंग बानात के ।
लागे नगीने रंग भीने जोट जोति जगाबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ॥३७१॥

रहबाल चालदु गाँम गाँम सुए बियाँ गति गौंन के
छरे छरे आध सिपोई या धसि चारु नैन चितौन के ।
छिति षुद करते लोह भरते बाह बाह कहाँबने
ऐसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ॥३७२॥

मन होत राजी लेत बाजी फूल झरीसी छोरए
फेरै कलाई गति सुहाई चलत करत मरोर ए ।
निरदोस लछन जे बिचछन जंग रग जिताबने
अैसे अनूप रूप भूप बाजिराज रिझाँबने ॥३७३॥

अथ गजराज वरनन छंद गीया

झारे पषारे जेसबारे बीर बेष बनाइ के
किय रंग कारे अग सारे सुडि लाल सुभाइ के ।
दीरघ दंतारे कपिल बारे कौंम नद कलिद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिघ नरिद के ॥३७४॥

सोभा सिंदूरे पीत पूरे रंग जंगाली रेषियै
सोहै स नूरे रूप रूरे दंत बंगरी देषियै।
संग्राम सूरे है करूरे कलभ जाति करिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७५॥

मद नीर झरने दॉन झरने मत्त बारह मास के
बर सबर बरने स्याम बरने बाघ सिंघ बिलास के।
धर धीर धरने घात धरने गात भाँति गिरिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७६॥

झूलै झिलम्मल बीज बद्दल गाज गहरी गज्जए
बक दंत उज्जल घंट नद कल सोर दद्दुर सज्जए।
किय रंग कज्जल झरत मदजल एह मेह लुरिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७७॥

जकरे जंजीरै चलत धीरै पग अंगूठनि पेलतै
उलटै अधीरै पलटि पीरै मत महावत मेल तै।
नित रहत नीरै भौंर भीरै बास बस मधु बिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७८॥

तरु तोरि डारें लै उषारै सबर गहि गहि सुंड तै
गढमढ पगारै ढाहि डारै धाय रद धर सुंड तै।
छिति रज उछारै रौर पारै असनसर अरबिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३७९॥

भुइ चप्प चरषी सोर बरषी छुटत झपटत झूँमि कै
गडदार घेरै नीठ फेरै घिरत घूरत घूँमि कै।
लगि लोह लंगर घंट घुघ्घर अंग भंग अरिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३८०॥

बनि सीस बंदन षौरि चंदन असन मोद कमोद सुं
आनंद नंदन दुष निकंदन बिबिधि बीर बिनोद सुं।
जनु गौरि नंदन बिस्व बंदन अंग ढंग अनिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३८१॥

मजबूत मूसरसे दंत सर कलित तेज कटारियाँ
धरि सिरो सिर पर पीठ पष्षर वधि द्रुम तरवारियाँ।
गहि सुंडि सकर अति भयकर रन विरोर नरिंद के
गजराज राजै साज साजै रूपसिंघ नरिंद के ॥३८२॥

कवित्त

मछी कैं से गात दरिया वरन पैरि जात
ऊपर तें पीन तरे पतरे चरन के।
भारी धर सुंड के प्रचड सुंडा डंड के सु
बड़ी घरि बड़े पीत बॉन के धरन के ॥
पेट लक लीयैं मयमते औ पलक दते
पलक पलक चल करन करन के।
भारमल नंद महाराजा रूपसिंघ जब के
गाजत मतंग ऐसे वारिद वरन के ॥३८३॥

अथ तरवारि वरनन

मिसरी मगरबी जे जनूवी इलैमानी ओपए
अति इलैमानी गोल आनो ध्रुव हजारा घोपए।
अँगरेज धर की भुज नगर की भिरत खल दल भजनी
ऐसी कृपॉनी जगत जानी रूप भूपति रजनी ॥३८४॥

ऊँनी पुरॉनी मॉंन मॉनी घाट सुदर जे घरी
सादी सिरोही साज सोही पॉन पॉंनिप सूं भरी।
सूधौं टबंकी अक अकी गरब भरि अरि गजनी
ऐसी कृपॉनी जगत जानी रूप भूपति रजनी ॥३८५॥

असिजे असिल्ली फेरि सिल्ली धार धुज्जॉ किज्जियै
षर सॉंन फेरी जे उजेरी लज्ज कज्जॉ लिज्जियै।
रचि मूठि रूरी लोह पूरी मॉंन अरि मन भंजनी
ऐसी कृपॉनी जगत जानी रूप भूपति रजनी ॥३८६॥

जम जीभ जैसी तड़ित तैसी तरत बीजल सार की
धरनी उधरनी धीर धरनी फूल धार सुधार की।

जय सिद्धि करनी सकति बरनी संग संगर संजनी
ऐसी कृपॉनी जगत जानी रूप भूपति रंजनी ॥३८७॥

अथ कटारी बरनन

फरभरे बर की दोइ फर की कितक्क कोतहृ खानियं
इक्क डार घरि घरि बाढ़ धरि धरि अबल करि करि आनियं।
झननंत झल्लरि रहत सुर भरि साज बाज सु धारियॉ
मन रूप मॉंनी ओप आनी कमर सोहृ कटारियाँ ॥३८८॥

षिलचीपुर की रामपुर की थेथ बुंदी ठाहियाँ
बुरहानपुर की जोधपुर की सबर राजा साहियॉ।
जोहाज षॉनी जे बषॉनी तरह बिधि बिधि तारियॉ
मन रूप मॉंनी ओप आनी कमर सोहृ कटारियॉ ॥३८९॥

सादी सुनहरी जे रुपहरी बेलि बूंटेबॉन की
निरदोस नगगन कलित कुंदन अमित छबि उपमान की।
नीकी नबीना मिलित मीना स्याहृ ताब सबारियॉ
मन रूप मॉंनी ओप आनी कमर सोहृ कटारियाँ ॥३९०॥

नेजे बरछी तिछ अछी करद फरस कुठारए
गुजरैं गुपती तबल कत्ती ओप चुग्ग अपारए।
बुगदा भयंकर बॉक षंजर परिघ पट्टि सपेषियं
आयुध अनेके जुद्ध जैके बीर धीर बिसेषीयं ॥३९१॥

अथ कमान बरनन

कहूँ छबि बषॉनि कमॉन की। तूजी घरी मुलतान की।
गुजरात धुर लाहौर की। ठिक रहत ठौर सु ठौर की ॥३९२॥

बर बरनि बिधि बिधि बॉन की। बैठक बनी गुनबान की।
पीयरी हरी भर पै भरी। कज्जल कलित उज्जल करी ॥३९३॥

लषि ललितइक रंग लाल की। जगमगति जोति जंगाल की।
कहूँ सबज बूटि लाल की। कहूँ लाल जाल जगाल की ॥३९४॥

ऑनी अठारह टंक की । अकित असकित अंक की ।
चिल्ला चढाया रेसमी । कहूँ काम मै न करै कमी ।।३९५।।

सजि सरल भल के सार के । दल दुयन करन दुसार के ।
छबि सेल तीछन छोर के । पर फरसि बगतर फोर के ।।३९६।।

कइ अरध चद्राकार ए । अनि अनि प्रकार अपार ए ।
भर सर भरे भूथान ए । अछे अनोपम आँन ए ।।३९७।।

सकलात मुषमल सूँ ढके । रिझवार राजा रूप के ।
तीमाच के जरतार के । बूंटे चिकन बुलगार के ।।३९८।।

केई ढाल गैडा षाल की । कूरमाँ पीठ बिसाल की ।
सूत्रौट अछे साँज की । सोभा जु सुभट समाज की ।।३९९।।

बुलगार साबर डाव की । अग ओट रष्षन आव की ।
फबि फूल सिप्पर स्याह पर । जगमगत उज्जल जोति घर ।।४००।।

उपमाँ बिराजै ऐन के । तारे कि कारी रैन के ।
षट दून फूल सु ढाल के । लषि लगे मींना ताल के ।।४०१।।

जनु अमित ओप उदार के । बर उचित रबि इक बार के ।
सजि ढाल फूल सबर्न के । बारह सु पीरे बर्न के ।।४०२।।

उद्दित अकास अनूप ए । रबि अकस मनु गुरु रूप ए ।
कीए सस्त्र सज्ज सकारने । संग्राम काम सुधारने ।।४०३।।

बगतर करी मजबूत के । सन्नद्ध सोह सपूत के ।
अति टोप ओप अपार के । सिर बंध करीया सार के ।।४०४।।

कई जिरह चिलतह रग के । आँगा सुरच्छक अग के ।
पुनि जी बरषीयाँ पेषीयाँ । जागे हजारह मेषीयाँ ।।४०५।।

पष्षर सिरी पुनि पेटीयाँ । लागे न लोह लपेटीयाँ ।
हथ बास मोजे सोहए । महि रूप भूपति मोहए ।।४०६।।

दोहा

हय हाथी हथीयार फिरि सिलह जुद्ध सामान ।
सज्ज कीए सब रूपसिंघ रन दूलह राजाँन ।।४०७।।

वचनिका

एते वीच खबर आई। उस तरफ सौं पेसषॉने धौलपुर आए। तव इस तरफ सौं पेसषॉने समोगर षड़े कराए ॥४०८॥

डेरो का वरनन : छन्द पद्धडिका

आइ खड़े ताल डेरे अमाप। पसरंत पुहवि प्रगट्यौ प्रताप।
जगमगी कि ज्वालामुखी जागि। दीसंति दहन दुज्जन दवागि ॥४०९॥

असपकै लगी ऊँचै अमॉन। अति छाइ रही छवि आसमॉन।
तॉने वितॉन जहॉ तास तास। जग चखि जोति उज्जास जास॥४१०॥

ताने अनेक रंग के तनाव। वनि रही रसमि कैसे वनाव।
सोभा न और कहि ता समॉन। वॉने वपॉन जाने विमान ॥४११॥

वनि रहे वृत्त दुइ वाद रेस। नट चढ़े वंस ससि सूर वेस।
कर्णाट छीटा छाई कनात। वारीक वने परदे वनात ॥४१२॥

वहुमोल फरस गिलमै विछाइ। छवि रंग रंग की रही छाइ।
पसम के दुलीचे परम पाइ। पगि जाइ तहॉ लगि परम पाइ ॥४१३॥

देषी विलंद कलंदरी। करि सुद्ध वंस षरी करी।
लगि लरकि मोतिन की लरी। झलसलति जगमग झल्लरी ॥४१४॥

समनंद विछी वहु मोल की। अधिपति चित्त अडोल की।
तहॉ नरम मुषमल तास के। नील कज्जल कनिदास के ॥४१५॥

षासे करे सुथरे खरे। धरफर भरे तकीए धरे।
वानिक जलूस वनाइकै। असपति वैठे आइ कै ॥४१६॥

इस तरफ दारासाह के। दिल्लीस के दरगाह के।
उस तरफ सौ रंगजेव के। मुरीयाद औरंगजेव के ॥४१७॥

वचनिका

दारा साह लसकर प्रकर लीयै। आगरे सै कूच कीयै। समोगर आए। उमराव वुलाए। सव सु कही वात सही। उनकी ओर लसकर जोर। क्या करैंगे। कैसी भॉति लरैंगे। तजवीज कीजै। ज्वाव दीजै। जव सव सोचि रहे। तव महाराजा रूप दारा कौं ए वचन कहै ॥४१८॥

छप्पय

धीर धीर धारीयै रहे ताजी सिरताजी।
ह्वै अधीर अकुलाइ जीति हारीयै न बाजी।
जीतै सोई जुद्ध ठीक ठाह पग ठावै।
हारै सोई तहति धारि पहिलै बिस खावै।
यह अरज माँनि लीजै अवसि साहि काज सब सुद्धरै।
रख्खीयै पीठि पग रोपीयें करै जुद्ध फत्ते करै ॥४१६॥

प्रथम पी तप करै गेह तजि रहै गहै बन।
सीत धूप समीर नीर तीख भूख सहै तन।
बहुरि राज पद लहै बाजि गजराज बिभूषन।
सुंदर बपु सुंदरी दरस मंदिर निरदूषन।
भट लरै भूभ्भि जब भू परै भोग बिबिधि सुर पुर भजै।
बर बीर सुनहु नालिक बचन सुष्ष न दुष बिन संपजै ॥४२०॥

कूप लनत जल काज बहुरि जल जंत्र बनावत।
सात बार धर सोधि बीज क्यारिन मैं बावत।
प्रति बासर प्रति रैन बृषभ संग फिरि फिरि पावत।
काटि गाहि कन लेत कस टंके ते तहाँ पावत।
करसनी अन्न को ठार भरि पुनि प्रसन्न सन पेषीयै।
बर बीर सुनहु नालिक बचन दुष बिन सुष्ष न देषीयै ॥४२१॥

दारासाह बचन

छत्रपती तुम छतै चित्त निहचिंत चगत्ता।
तुम गाढ़े अरि गढ़ किबार भंजन अरि मत्ता।
तुम पतिसाही थंभ सबर थंभनन पतिसाहत।
रहैं रहैं गिरि परै गढ़ै ज्यौं अचइ बारत।
भुज लज्ज गहे की लज्ज कुँ लोह लज्ज जस लिज्जीयै।
क्या कहैं बहुत रिनमल किसन करि आए त्यौं किज्जीयै ॥४२२॥

तुम दिल्ली आड़े किबार रष्षन ध्रम रत्ते।
तुम चाकर तषत के सदा इतबार सपन्ने।

तुम जिसही की तरफ होंइ पल्ला सोई भारी।
तुमहि दई पतिसाह हत्थ सब सरम हमारी।
दल रूप रूप दुज्जन दलन दिल दलेल पन दिज्जीयै।
क्या कहैं बहुत निरमल किसन करि आए त्यौं किज्जीयै।।४२३।।

दोहा

यह कहि सुनि सुलतान सुँ रूपसिंघ राजान।
उमराबाँ कूँ आइ कै सौंपे जुद्ध सामॉन।।४२४।।

छप्पय

चिलतह बगतर झिलम टोप हथ बास राग बर।
ससत्र कटरी षडग ढाल को बंड सेल सर।
साज सहित बंदूक रामचंगी बहु रंगी।
गुपती षंजर गुरज चुग्ग कत्ती अति चंगी।
चंचल तुरंग रंग चित्त के अंग उछाह करि प्यार अति।
अधिपति रूप बकसे इते एक एक उमराब प्रति।।४२५।।

वचनिका

जुद्ध सामॉन दीए। अनेक दिष्टांत दे सब के मन दृढ़ कीए। बचन उचारि इहि प्रकार।।४२६।।

छप्पय

त्रीया पतिव्रत धरम राखि पति अपत उधारै।
इकपतिनी व्रत धरम पुरुष सब काज सुधारै।
छत्री छत्री धरम राखि सरनागत रष्षै।
प्रेम नेम पन पकरि चित्त धीरज रस बष्षै।
त्यौं स्वामि धरम सेबक धरै जीय लालच तजि सजि लरै।
जीबै त सुनै सुजस्स स्रबन झूझि परै सुर सुष करै।।४२७।।

सुनि भारथ यह सुन्यौ निमल करि चित्त निरंतर।
कथा पुब्ब मुनि कही चरन एक हे बिसंभर।
लोह छोह नर लरै तुट्टि सिर परै तत्तर।

सहिर खाल बिकराल लुत्थ पर लुत्थ लरत्थर ।
बैताल ताल काली किलक बीर हक्क सूं ध्वजै ।
तहाँ इक्क चरन आगै धरत अस्वमेध फल उप्पजै ॥४२८॥

सगग बाँन संचार अगग अररात तोप तहाँ ।
होत सोर चहुँ ओर घोर अंधार जोर जहाँ ।
सार मार मुख मार मारत तन बार तरफ्फर ।
करै बीर किलकार झपटि पल चार झरप्फर ।
जहाँ बिषम बार कबि वृंद कहि सीस हार संकर सजै ।
तहाँ इक्क चरन आगै धरत अस्वमेध फल उप्पजै ॥४२९॥

बचनिका

महाराजा के बचन सुनि । अनी पाँनी के धरनहार । स्वामि के काँम करनहार । जस भंडार के भरनहार । एक तरफ एक एक तरफ होई अनेक । तौ भी न छाँड़ै अपनी टेक । ऐसे ऐसे सिरदार । एक तै एक सरस उमराव । बोले जुद्ध ही के लीयै चाव ॥४३०॥

छप्पय

साहिजहाँ से स्वामि रूप राजा से सेबक ।
तुम से स्वाँमि सु तहाँ हम सु सेबक हक लेबक ।
तुमहि हुकम पतिसाह कीयौ तुम करहु तयारी ।
हमहि हुकम तुम करहु उमगि किज्जहि असवारी ।
इक मनौं सिद्धि ह्वै है अबसि करहु भरोसा कौन कौं ।
संकलप देह हित स्वाँमि कै दिज्जै बदला लौंन कौं ॥४३१॥

बचनिका

तहाँ बीर बाँनैत । बोले महासिंघ मछरैत । महाराजा सलाँमत । जुद्ध कीजै । हुकम दीजै । ज्यौं गजघंटा बिदारि । भट घट्ट संघट्ट संघारि । ऐसै लरै । जु औरंगजेब के हाथी कुँ जाइ लोह करै ॥४३२॥
एते बीच ।

रिनछोड़ दास । पौरिस प्रकास । माँनसिंघ का बेटा । लाज लोह सुँ लपेटा । तरबारि तोल । बोले ऐसे बोल । महाराजा सलाँमत रन दरियाब

मै किलकिला ज्यौं कूदि परै। तरबारिन सु ँ अरिन के तन टूक टूक करै। ऐसे हाथ दिखाबै जु औरंगजेब से सिरदार की सुद्धि भूलि जावै ॥४३३॥ एते बीच।

बोले रेबत सिंघ मॉनाबत। रनथंभ राबत। महाराजा सलॉमत। किलकार करि लोह मेलै। सेल पेलै। सेल झेलै। असुर भर उथेलै। ऐसा खेल खेलै। तौ तुम्हारे रजपूत ॥४३४॥ एते बीच

हरि करन करन रन। लीनै पन। बोले ऐसे बचन। महाराजा सलॉमत। इक मने हुइ घोरे डारै। ऐसा लोहा मारै। जु अरिन की फौज बिचलाइ डारै ॥४३५॥ एते बीच

केसौदास जगन्नाथ सुतन। कहे कैसे कथन। महाराज सलॉमत। अनीधार प्रहार के सनमुख धसाबै। लोह बजाबै। अरिन कौ मारि हटाबै। औरंगजेब के हजूर तरबारिन की झराझरी का झर लगाबै ॥४३६॥ एते बीच

बोलि उठा जगनाथ का कान्ह। बीर बॉन। महाराजा सलाँमत। ऐसा कीजै घमसॉन। तोरि डारीयै रिपुन के तनत्रान। निकस जाइ दुसमनौं के प्राँन। देषि कै औरंगजेब होइ हैरॉन ॥४३७॥

इस ही तरह रामसिघ भाटी। यही बात ठाटी। मनोहर दास सोनिगरा। जुद्ध कौ मनगरा। गिरधरदास नरुका। चित चाब न चूका। प्रोहित नरू। स्वॉमि सू ँ सदा सुरख रू। बारहट ठाकुरै सी जालपदास। दसौंधी भगौतीदास। एई कथन कबूल कीए। सूरबीरौ के बिरदाब दीए ॥४३८॥

इस बंस मै। महाराजा सलॉमत।

इस बंस मै। राब सीहा सीह। भए अबीह ॥४३९॥

इस बंस मै। राब रायपाल। अरि थल उथाल ॥४४०॥

इस बंस मै। राब रिनमाल। सत्रुन कौ साल ॥४४१॥

इस बंस मैं। राब जोध जालिम। मही मालिम ॥४४२॥

इस बंस मै। राब मालदे महीप। भयौ सातौं दीप कौ दीप ॥४४३॥

इस वंस मै। राजा उदैसिंघ उद्दार। देस देस मै उदै के करनहार ॥४४४॥

इस बस मै। राजा किसनसिंघ कुलमौर राठौर। मालिम ठौर ठौर। जाकी सरभर कौं आवै न और ॥४४५॥

इस बंस मै। राजा सहसमल। राजा जगमल। राजा भारमल। राजा हरिसिंघ दिगपाल से चारयौं वीर। साहस सधीर वीराधिवीर। दातार झूझार। पातिसाह दरवार के सिंगार। जस जंग के जैतवार। भए ऐसे ऐसे सिरदार ॥४४६॥

तिन के पाटि महाराजा रूप। पातिसाही के रूप। दिल्ली की साहिबी के थंभ। इंद्र के से आरंभ। ऐसी बात न थापै तौ दूसरौ कौन थापै। सब बात मै दॉन कृपॉन ही की बात सरस। जिसतै जहॉन मै रहै जस ॥४४७॥

महाराजा अनेक दॉन दीए। जुद्ध कीए। जस लीए। तैसै महाभारथ कीजै। जस लीजै। महाराजा उमरावौं के वचन सुनि कपूर पॉन दीए। सब उमरावौ अपने अपने डेरौं जाइ राग रग आनंद उमंग अरॉम कीए ॥४४८॥

राजंत राजा रूप के। उमराब भाव अनूप के।
चित करन रत अति चाह के। बांने उछाह कि ब्याह के ॥४४९॥

कहुं अवल केसरि आनीय। कहुं औरि अबर छानीयं।
रचि बसन केसरी रंग के। आरभ जंग उमंग के ॥४५०॥

कहुं बिरकि केसरि छाँटने। वर बीर वागे बपब बने।
कहुं करी पागै केसरी। भर रंग छबि गहरी भरी ॥४५१॥

कहूं अरगजा फुरमाईयै। घनसार सहित घसाइयै।
मृगमद गुलाब मिलाईयै। बागे बनाब बनाईयै ॥४५२॥

कहुं अतर मलय गुलाब के। सब अंग रचित सिताब के।
कहुं रचित चोबा चाब सुं। बने बीर बिचित्र बनाब सुं ॥४५३॥

आरासि करीयै अंग की। जीय सुरति धरीयै जग की।
कहुं अमल करत उमंग सुं। कहुं राग सुनीयत रंग सुं ॥४५४॥

कहुँ देत दूहे मार के। सावंत सार संभार के।
कहुँ रीभि मौजै कीजियै। कहुँ दॉन दिज कौं दीजियै ॥४५५॥

कहुँ सस्त्र सार संभारियै। कहुँ तीर सॉचै ढारीयै।
कहुँ पहुँरि बगतर पेषीयै। कहुँ वीर विरद वेसेपीयै ॥४५६॥

छंद पद्धडिका

परभात रूप राजा प्रबुद्ध। कृत प्रात कृत्य सजि देह सुद्ध।
पावन्न दंत धावन सपूर। कीय मुख पषारि कुररे कपूर ॥४५७॥
निरमल मंगाइ कै गंग नीर। सजि मज्जन कीय पावन सरीर।
वप पहरि सुवासित धौत वास। नित दॉन कीयौ सोभा निवास ॥४५८॥
कृष्णागर चंदन कस्तूरि। कुम कुमानीर कर्पूर पूरि।
केसर घसि द्वादस तिलक कीन। पूजन विधॉन पूरन प्रवीन ॥४५९॥
त्रैलोक नाथ स्त्रीनाथ नाथ। हित चित सहित पूजे सुहाय।
झननंत झलरि घन घंट नद्द। संभावि आरती जय सबद्द ॥४६०॥
अन्नेक भोग भुगताइ अन्न। पायौ प्रसाद कीय मन प्रसन्न।
कर जोरि अरज कीय रूप राज। लछिनाथ राषीयै आज लाज ॥४६१॥
वानिक केसरि के अंग वास। वप महमहंत अति अतरवास।
ध्रुव तुलसी मंजरि सीस धारि। जस तिलक भाल सोभा सु धारि ॥४६२॥
निरषीयै नयन लज्या निवास। तंवोल वदन पूरन प्रकास।
जपि नाथ नाथ स्त्रीनाथ जीह। उर ध्यॉन धारि गिरधर अवीह ॥४६३॥
उरवसी स्यॉम मनि की अनूप। उर वसी स्यॉम मूरति सरूप।
भुज दंड अभय धुज धरत भूप। रिच्छपाल प्रजा राजान रूप ॥४६४॥
कर धरत सस्त्र संग्राम काज। सजि कमर कटारी षडग साज।
सोभित सुढाल ढलकंत ढाल। चालंत रूप कुल वट चाल ॥४६५॥
धरि रोम रोम मैं स्वॉमि धर्म। संग्रहित अंग भारथ सर्म।
रोमंच अंग मुष चढ़े रंग। उछाह न मावै रूप अंग ॥४६६॥

दोहा

किही भट केसरि वसन कीय किही सज कीए सनाह।
जुद्ध करन मन क्रुद्ध जुत चढ़े रूप नर नाह ॥४६७॥

बचनिका

अवसांन सिद्ध। बचन सिद्ध। खडग सिद्ध। संग्राम सिद्ध। सौं बिराजमान रूप राजांन। इंद्र अवतारी। करी असवारी ॥४६८॥

सवैया

सज सज्जि कमद्धज रूप चढ्यौ चतुरंग चमू चय संग लई।
हय की खुर तार लतारन सु छिति छार अपार अकास छई॥
तिनकी छबि देखि बिसेषि यहै उपमा कबि वृंद दई।
जनु सूर तुरग चलै निरधार सु खेद निवारन भूमि भई ॥४६९॥

कवित्त

भारमल नंद महाराजा रूपसिंघ चढ्यौ
भारथ करन अंग पौरस अपार सौं।
हय गय पय हर बर दरबर दोरे
मूरछित भई छिति लातन लतार सौं॥
जमुना उछारि बारि बार बार छिरकन
कीनौ दिगपाल पौन बैरष हजार सौं।
वृंद कहै धसी उड़ि धूरि दिब मंडल मैं
बूझन इलाज मानु अस्विनी कुमार सौं ॥४७०॥

महाराजा रूप कमधज चढ्यौ कोप करि
धरि अभिलाष घमाघम घमसांन के।
पैंदल प्रबल चले चंचल चपल भले
हले हैं हरोल हाथी सोहत निसांन के॥
बृंद कहै धूजी धर धूरि धसी ऊरध कौं
धाइ कै धुरटे हैं बिमांन आसमांन के।
आनि मघबांन नैन ढांपे चित्रभानजू के
चित्र मांन ढांपि लीने नैन मघबांन के ॥४७१॥

दोहा

तिंहि छिन पठई उरबसी गिरिधारी की भेट।
मनु कहन परचाकिा मुकरित लाप सहेट ॥४७२॥

वचनिका

इस तरफ सौं बिजाइ पातिसाह । दारासाह । पातिसाही की चाह । लायै दिल्ली दरगाह के सिपाह । केते हिंदू मुसलमान मनसबदार । सिरदार हरौल गोल चंदौल जरंगाल वरंगाल । फौज बनाइ । जबर जंग । तुफंग तुंग । ताते तुरंग । माते मतंग । अपने अपने नाना रंग के निसान फरमाइ रहे है । नौबति के निसान घहराइ रहे है । जिस बषत सूरवीरो के वदन पर रंग । कायरौं रंग भंग । जिस बषत महाराजा रूप कौं हरौल ठहराए । उस तरफ सुँ मुरादसाह औरंगसाह इस ही तरह फौज बनाइ आए । दोनूँ फौजै तुलि रही है । तब महाराजा रूप के उमरावों ने यह वात कही है ।।४७३।।

दोहा

एई साह मुराद है एई औरंगजेब ।
ऐसा लोहा मारीयै भूलि जाइ सब जेब ।।४७४।।

कमधज कुल उजल करै माया धरै न मोह ।
पुरजे पुरजे अरि करै हरै लोह छबि छोह ।।४७५।।

काढ़ि काढ़ि करवाल कौं करते बाट वषाँन ।
एक घाव दुइ टूक का आइ लगा अवसाँन ।।४७६।।

पाए है पतिसाह पै है हाथी सिरपाव ।
कुंभ बिदारै सिंघ ज्यौं दे हाथी सिर पाव ।।४७७।।

सतरै से राठोड़ सजि आए काम उजेन ।
बैर बहोदै बीर वर सार विहादै सैंन ।।४७८।।

अथ जुद्ध बरनन : नगय छंद

चढ़े मतंग रूपसिंघ जंग रंग चाव सुँ
विराजमाँन अंग बाँन सस्त्र के बनाव सुँ ।
किधौ रिभुच्छ वज्र लै पहार पच्छ छेद कौं
भए सदंभ जंभ के असंभ दंभ भेद कौं ।।४७८ अ ।।४७९।

लीयै सधीर सूर बीर जे जीहाज लाज के
कीए सरीर पोषि पोषि स्वामि काम काज के ।

कहै न झूँठ भूलि हूँ वहै बिरद्द बस के
वहै सुभाइ पाइ कै सु भाइ राइ हंस के ॥४७९॥
उमड़ि मंडि मेघ की घटा कटक्क आईयं
छुटंत नालि सोर जोर धूम घोम छाईयं।
झपक्कि ज्वाल जाल डाल बीज ज्यौं झपक्कीयं
धवा धरी ध्रुवे धरा धरा धरा धसक्कीयं ॥४८०॥
सलक्कि सेस नेस ते जलं डलक्कि सायरं
अकप बीव पाय आय कंप काय कायरं।
बरार पारंती[1] जहीं छुटी हजार बंगरी
परै जहाँ तहाँ तहाँ परै हजार बुंबरी ॥४८१॥
धराइ इक लोह के धुबंत धूवि धूनियं
धसै जहाँ तहाँ करै कटक्क धूरि धाँनीयं।
जुराइ तीर लोह के जंबूर जोव जोरए
फिरंग की छुटै तुफंग फौज तुंग फोरए ॥४८२॥
छछोह छोह लोह के कुहक्क बाँन छुट्टहीं
फसै जहीं मतंग के उतंग अंग फुट्टहीं।
पहै भंभार देखीयै अकास बार पार मै
गए कि सिद्ध फोरिकै परी दरी पहार मैं ॥४८३॥
चलंत हग चंगीयाँ बदूक राम चगीयाँ
जराइ अंग धाइ संग तंग हाल जंगीयाँ।
उछट्टि छुट्टि गोलियाँ लगंति आइ आइ कै
खरें खरें लरै गिरै उथेल खाइ खाइ कै ॥४८४॥
अगनि कोट लोह कोट कोट मत्त दंति के
उछेदि भेदि जाइ लींन अस्व बार अंति के।
तहाँ हजार मीर बीर को कहै सु मार कौं
सु सार के प्रहार कौं सहै समारि सार कौं ॥४८५॥
बषाँन रूप भूप के चढ़े तुरंग बाँन के
बिराजमाँन भासमाँन भासमाँन भान के।

---
[1] [अ]न्तर—१ पंगती ?

दुबाह के सुभाइ के जि दौइ हाथ देषीयै
लरै जहीं तहीं तहीं हजार हाथ लेषीयै ॥४८६॥

भिरंत भूप रूपसिंघ वीरभाव भाव सुं
घने घने अरीनि कौं हने अनेक घाव सुं ।
अजॉन वाह वॉन वाह ठीक ठाह ठाव सुं
अमॉन मॉन सुं लरै सुपत्थ के सुभाव सुं ॥४८७॥

कमॉन तॉनि पॉन पानि वॉन कॉन लौं लए
निसंक अंक जोह सु मतंग अंग मैं हए ।
छछोह उच्च लाल लाल रत्त छुछ उछली
सु विंध्य के पहार सै प्रवार डार सी भली ॥४८८॥

सपक्ष तच्छ नाग सेस पच्छवान सार के
विपच्छ पच्छ लच्छ भेदि प्रान के प्रहार के ।
जहीं तहीं तनत्र भेदि तेज तीर जात हैं
परंत मीर तीर तीर होत पीर गात हैं ॥४८९॥

निकारि लेत एक ऑत उझरे पछारि कै
इकेक सेल पेलि झेलि लेत है उछारि कै ।
झपक्कि झुंडि तुट्टि मुंडि खग्ग झाट सु झरी
पतंग रंग सुं भरी परी कि जॉन तुवरी ॥४९०॥

धकाइ धाइ धाइ देत सेल की धमाधमी
घुमाइ घेरि होत घाइ खग्ग की घमाघमी ।
दबाइ जाइ ताकि ताकि झाक झीक दीज्जीयै
करंत कीक ठाक ठीक हाक हीक कीजीयै ॥४९१॥

तरक्कि तुट्टि सुंड मुंड तुंड की तरातरी
झरप्फि लेत होत ग्रिज्झ झंड की झराफरी ।
कराकरी कटंत कंध झाट कै झराझरी
दरादरी परै किसीस खेल के दरादरी ॥४९२॥

कटार मार षग्ग मार मारीयाँ कटारीयाँ
कुठार मार चुग्ग मार तोरि डारि तारीयाँ ।

अपार बार मार मार मारहीं उचारीयाँ
तरप्फरा तगातषे देत वीर तारीयाँ ॥४९३॥

लरत्थरें थरत्थरें अरब्बरें परें लरें
अनेक तुच्छ अभ कच्छ मच्छ ज्यौं तरप्फरें।
पियें रगत्त पूरि पत्त जत्थ जुत्थ जोगिनी
पलास आस पूरयति भूरि भोग भोगिनी ॥४९४॥

दबाइ कै हरौल कौं धक्यट्ट गोल मै दए
हटाइ गोल फौज के चंदोल टोल मैं हए।
इके घमाइ दोइ दोइ टूक रूक सौं करे
समत्थ सत्थ रूपसिंघ सत्रु संघ संघरे ॥४९५॥

छंद भुजंगी

लरें धीर औरंग के मीर लोहैं
छुटें हाथ तें लोह छोहै छछोहै।
फिरंगान के ज्वान जंगी फिरंगी
सजैं सीस टोपी कलंगी सुरंगी ॥४९६॥

रेजे रेज ह्वै कै गिरैं अँगरेजी
किलक्कंत बैताल भक्खैं करैंजी।
परी खोपरी बीखरी भाजि भेजी
भरी भात हंडी मनूँ खेत भेजी ॥४९७॥

बलदेज तेनेज अंगेज बाहै। जोई राह राहै सु राहै सुराहै।
रुहिल्ले लरें रोह के रोह रत्ते। तवे लोह के सेकि ए आगि तत्ते ॥४९८॥

पगट्टे इकट्टे जिपट्टे पठानं। भरे बाँन भू थाँन कट्टीक मानं।
महातेज ते ताकि कै तीर मारै। परे जाइ पारे न भीजे पंखारे ॥४९९॥

तके दक्खिनी कोप कै धोप तोले। बके टाक दे टाक ए ताल बोले।
कलकंत लगूर से रंग काले। भिरै आइ मारै भजाभच्च भाले ॥५००॥

हकारैं बकारैं करैं जोध हल्ला। हटावैं फटावैं तबल्ला हमल्ला।
वहै बाट चाढी गहै गाढ गाढ़। कटारी दुधारी उरा पार काढ़ै ॥५०१॥

फसै खंजरा पंजराँ पुंज फोरै। तही 'कुंजरा संजरा' संज तोरै।
झवक्की जनूबी सीदी सीस झारचौ। परी बीजरी जाँन बैसा पछारचौ॥५०२॥

बरच्छी तिरच्छी करे रूप-बाँही। हन्यौ है हबस्सी धसी तुंद माँहीं।
छछोही जुलोही नकी धार छूटी। भरी लाष कै रंग पष्षाल फूटी॥५०३॥

गही मार चुग्गं कुठारं गुरुज्जं। परै मीर ह्वै कै पुरज्जं पुरज्जं।
दवट्टै धरै धोप षंडा दुधारं। उलट्टं सुलट्टं करै दोइ बारं॥५०४॥

धवा धच्ची मत्ती गुपत्ती धुवत्ती। झवा झब्बि कत्ती भुकत्ती झपत्ती।
हबा थब्बि हत्थं समत्थं समत्थं। लथापत्थि लुत्थं अमत्थं समत्थं॥५०५॥

लगे घंमनै घायलं लोह लागै। जिमाए बराती मनूँ राति जागै।
परे खेत जोधा रजे धार पूरे। परे साथ रे पाथरे खेत पूरे॥५०६॥

बने रूप राजाँन आजान बाहं। लरै साहि औरंग सौ लच्छिलाहं।
हठी रूप राजा करै लोह हत्थं। थभै सूर सूरत देखे सुरत्थं॥५०७॥

बिमानं चढ़ी रंभ देखै सु वेषै। बरं बछ्छली रूप रूपं बिसेषै।
करै साहि औरंग सच्ची सराहं। रहै न्याय तेरी भुजा दोइ राहं॥५०८॥

दोहा

धर गिरि अंबर धरहरे सिलगि सोर लगि सोर।
थर थर कायर थरहरे जुद्ध घोर भय जोर॥५०९॥

लरै सुभट घट नीसरै साह दारा सिरदार।
कहै कहा जानी भले जौ परै बींद मुष लार॥५१०॥

दारा और जु देत है पीयहिं माँन करि पीठ।
ईहि दारा मन माँन तजि दई पीठ अरि दीठ॥५११॥

दारा दहसल खाइ कै गयौ खेत सत खोइ।
कहा करै लसकर जबर हौनी होइ सु होइ॥५१२॥

हीर छंद

बीर लरहि धीर धरहिं तीर करहिं छोरहीं
भीर परहिं भीर करहिं मीर परहिं कोरहीं।

सेल चर्लाहि झेल झर्लाहि खेल खर्लाहि मारहीं
भेल भिर्लाहि मेल मिर्लाहि ठेलि दर्लाहि पारहीं ॥५१३॥

एक धर्साहि एक हर्साहि एक खर्साहि जाइकै
एक फर्साहि एक चर्साहि एक सर्साहि धाइकै।
एक डर्राहि एक लर्राहि एक मर्राहि मारि कै
एक भिर्राहि एक घिर्राहि एक फिर्राहि फारि कै ॥५१४॥

एक अर्राहि आइ कर्राहि खाइ गिरह पेचहीं
एक तर्काहि एक चर्काहि एक छर्काहि देचहीं।
एक बर्काहि मारि सर्काहि एक थर्काहि छोह सुं
एक बर्काहि मारि सर्काहि एक थर्काहि लोह सुं ॥५१५॥

फोरत बर जोरत कर तोरत धर ताकि कै
छोरत सर मोरत भर छोरत थर छाकि कै।
खंजर करि पंजर अरि कुंजर घरि फोरही
गंजन हरि भंजन करि अंजन गिरि तोरहीं ॥५१६॥

सूरन चक चूरन कीय पूरन बल सार कै
सज्जित बल गज्जित गल भज्जित थल मार कै।
स्वारथ परमारर्थाहि यथारथ ध्रम रूप कै
भारथ क्रम पारथ सम सारथ भुज रूप कै ॥५१७॥

दोहा

रूप साथ उमराव भट पौरस प्रबल प्रचंड।
ललकि लोह गहि कै लरै खेत परे रिपु खंड ॥५१८॥

महासिंघ रघुनाथौत कौ कवित्त

दिल्ली दल जोर दुहुँ ओर जुद्ध मच्यौ घोर
ललकि ललकि लोक लरै लसकर कौ।
तीरन की तार तरवारिन की मार तहाँ
देख्यौ सही सावत सबर भुज बर कौ॥
अरि के जिरह फोरे कर धर सिर तोरे
मारि कै कृपाँनी पाँनी राख्यौ मुरधर कौ।

रघुनाथ नंद महासिंघ राजा रूप साथ
गयौ सुरपुर भयौ वर अपछर कौ ।।५१९।।

रिणछोड सिंघ मानसिंघौत कौ कवित्त

देखि दल दुर्ज्जन के अर्ज्जुन समाँन बॉन
बॉनन की आँच मै धर्‌यौ है धीर धरि कै ।
बहसि बहसि कै कमाँन कौ कसिस कसि
मारे तीर बीर रस पारे मीर अरि कै ।।
मानसिंघ नंद मरदाना बीर बाँना लीनै
कीनौ घमसान हथबाह करि करि कै ।
राख्यौ जग नाम रनछोड़दास जोध नॉम
कॉम आयौ स्वाम कै सिधायौ धाम हरि कै ।।५२०।।

रेवतसिंघ मानसिंघौत कौ सवैया

दुहुँ ओर जुध मच्यौ घोर जहॉ आतस सोर जोर अररावत ।
सहि सहि लोह कोह बच कहि कहि गहि गहि षग्ग धीर जहॉ धावत ।।
छुट्टत सर फुट्टत फर बगतर टुट्टत धर सिर झुकत झुकावत ।।
मारे किते मरद मानावत झुझ्यौ खेत रेवतसिंघ रावत ।।५२१।।

हरिकिरन जगनाथौत कौ कवित्त

उमड़ि घुमड़ि दल बादल समड़ि आए ।
बरसत झर सर बुंदन सघन मै ।
गाढ़े गज ढाल पर बगतर ढाल पर
चपला कृपॉनी चमकत जैसै घन मै ।।
रुहिर के खाल वहै परे बिकराल बहैं
मांस मिलि कीच मच्यौ घोर जन गन मैं ।
दुर्जन के तन निज तन कन कन करि
झूझ्यौ जगनाथ कौ हरि करन रन मै ।।५२२।।

केसवदास जगनाथौत कौ कवित्त

ज्वानी के जगत लै कृपाँनी हरि मंदिर कुँ
ढाहत हौ मीर ताहि मार्‌यौ हित नाथ कै ।

ता दिन जिवायौ जगदीस याही औसर कौ
खल दल दलिबे कौ छल बस पाय कै ।।
सार के प्रहार मारि असुर अपार मारे
भूभि परचौ खेत मै बजाइ लोह हाथ कै ।
आदि अंत जोध कुल राह को निबाह कीयौ
राख्यौ जस बास केसोदास जगनाथ कै ।।५२३।।

कान्ह जगनाथौत कौ कवित्त

स्वॉमि काम करिबे कौ बीर हनुमान सम
लरत भिरत एक लाखन मै लेख्यौ है ।
सेल सूल सहै फूल धार मै घजन मारि
पार निकसत बार करत बिसेख्यो है ।।
जंग रंग रत्ता लोह छोह मद मत्ता चित
चकित चकत्ता अवरंग अवरेख्यौ है ।
कै तौ देख्यौ कॉन्ह घमसॉन ही करत कै तौ
कान्ह जगनाथ कौ बिमान चढ़चौ देख्यौ है ।।५२४।।

सूरसिंघ द्वारिकादासौत पगरौत कौ कवित्त

जाकौ जैसौ धनी कौ भरौसौ हुतौ तैसी करी ।
जुद्ध ही की बेर आयौ दूरि तै चलाइ कै ।
आवत ही सूरसिंघ रावत संभार्यौ लोह
डार्यौ रंगभूमि मै तुरंग खमसाइ कै ।।
धीर बीर दॉने दॉने मीर मरदाने मारे
दॉने दॉने करि डारे घाइन घुमाइ कै ।
कूरम खंगार कुल द्वारिका दास कौ नद
चढचौ है बिमॉन बॉन बंस कौ चढाइ कै ।।५२५।।

छद पद्धडिका

बानैत बिहारी मेर मन । कुल रतन रतन सुंदर सुतन ।
घमसॉन कीयौ करि खग्ग घाव । रत भूभि रह्यौ राव मराव ।।५२६।।

कलि मूल किसन करि उबर कुद्ध । जुरि जोध अचल दासौत जुद्ध ।
मारे अनेक करि खग्ग मार । बाघाबत झूझ्यौ बीर बार ॥५२७॥

चत्रुभुज सुतन माधब सु चंग । ऊदाबत झूझ्यौ रन अभंग ।
रघुनाथ भोज सुत बाहि रूक । अबसॉन करमसी कुल अचूक ॥५२८॥

करमसी बंस भट कुभकंन । मछरीक मनोहर अडिग मन ।
आस उत असुर मारे अभंग । सुर थॉन गए नृप रूप संग ॥५२९॥

जैतसिंघ लर्‌यौ जसवंत जॉम । चॉदाबत राख्यौ चॉद नॉम ।
संभारि सार सुत दुइ समेत । खल असुर मारि भट परे खेत ॥५३०॥

जेसिघ सुत केसब करिय जंग । रन रहे बीक पुर चढ़े रंग ।
मोहन सुत केसब लरि मरद । बर सिघ बंस लीने बिरद ॥५३१॥

कुल सताज सानंदन कल्यान । भारथ झूझि गय भेदि भॉन ।
ऊदल बनमाली सुत अभंग । सजि जैम लोत भढ पंच संग ॥५३२॥

अनेक असुर मारे उदाम । करि संगर आए स्वॉमि काम ।
ठाकुर सीसा दूलौत ठीक । जगमाल बजाई लोह झीक ॥५३३॥

भीव सुत रॉम भाटी सुभाव । दलमले दुयन करि खग्ग दाब ।
सोनगिरौ मनोहर सुत दयाल । खल मारि बहाए रुहिर खाल ॥५३४॥

धनराज देई दासौत धीर । झुझि गौन झूकौ समर बीर ।
अनभंग जंग भढ अषैराम । रन चंग रचायौ रिदैरॉम ॥५३५॥

गोरधन लरै गहि गहि गरूर । नरूकै चढ़ायौ बंस नूर ।
चत्रुभुज सुतन ए सूर सचेत । खल मारि किते निठ परे खेत ॥५३६॥

गिरधर सुजान सुत बडै गात । बर बीर गोरधन जग बिख्यात ।
खग बाहि नरूका दुयन खंडि । मडि रहे खेत पग अडिग मंडि ॥५३७॥

रोहितास परस सुत जागौ जंग । रन रह्यौ नरूकौ राखि रंग ।
काधू सुतन कल्यान दास । जुरि जुद्ध रह्यौ रन सुजस जास ॥५३८॥

रंग रोस बिराज्यौ महारूप । रन रत्त तर्‌यौ तहॉ महारूप ।
चूकौ न नरूकौ चाब चेत । जेसिघ सु जा बखित परे खेत ॥५३९॥

सादूल सुतन भढ सहसमल । जुरि जंग रहे रब जैतमाल ।
जोगी भिरंत जोगी सु जाब । चूहड़खॉ राख्यौ जगत चाब ॥५४०॥

हाडौ गरीबदासौत रूप। रिपु षंडि रह्यौ रन राषि रूप।
नौबांवत मन करि पर निबाह। चहुवांन सु झुझ्यौ सुजस चाह ॥५४१॥

मंडि कलौ भलौ भढ सुत महेस। दलि दुयन सूर झूझ्यौ सुदेस।
प्रोहित नरू सजि सिलह पोस। रानावत राज गुरु धरीय रोस ॥५४२॥

षगबाहि कीए रिपु षंडि षंडि। मंडि रह्यौ षेत मरजाद मंडि।
लाषाबत जालप लीयै लोह। छिलि मछर बारहठ अति छछोह ॥५४३॥

सूरत्ति सूर पूरत्ति सचेत। षल षडि षंडि निठ परे खेत।
बारहठ जसाबत बीर बाँन। बीसोतर ठाकुर सी बषान ॥५४४॥

अरि सर मारि मारे अभीत। रन झूझि परे रावत्त रीत।
सजि सिलह भगौती रूप साथ। हरि राम नद षगबाहि हाथ ॥५४५॥

थिर थंभ भयौ मधि सुभट थाट। भरिदी दसौधि रन झूझि भाट।
सावंत सूर हठि करिह मल्ल। भाटी षबास झूझ्यौ सु भल्ल ॥५४६॥

सहसाबत रूपौ साबधाँन। कोठारी झूझ्यौ गहि कृपॉन।
षग षूब लर्‌यौ तहाँ बलोषॉन। पर्‌यौ झूझि अलाबल सुत पठाँन ॥५४७॥

सजि दादनौत लघा सरोस। जुध जुर्‌यौ सुजाबल षग्ग जोस।
महदलौ भलौ कौ षग्ग मार। धसि गयौ सामुहौ सार धार ॥५४८॥

पटदार करीय इतमाम पार। झूझि गौ तषतषाँ कौ झूझार।
करि जुद्ध हमिदा किरनदार। रन झूझि पर्‌यौ करि मन करार। ५४९॥

तखतखाँ दमामी खगतोल। सजि बंब झूझि राख्यौ सुबोल।
इत्यादि काम आए अनेक। बर बीर धीर लीनै बिबेक ॥५५०॥

कवित्त

काहू साथ बीस रजपूत काहू साथ दस
काहू साथ पंन्रह पचीस भट लरे हैं।
काहू साथ पाँच सात काहू साथ तीस जुत
गहि गहि लोह धीर बीर छोह भरे है॥
गाढ़े गाढ़ पाट पढ़े हाथिन के दांत चढ़े
आगै ही कौ धसे पाइ पीछैं कौं न धरे है।

एते उमराब महाराजा रूपसिंघ साथ
स्वॉमि हेत ह्वै सचेत भूभि खेत परे है ॥५५१॥

अथ अमृत ध्वनि छद

खग भल दलमलि खग्गबलि प्रबल भुजा जनु पत्थ।
रूप भूप किय रोख रुख जत्थत्थल मिलि सत्थ॥
जत्थत्थल मिलि सत्थत्थकित समत्थत्थर किय।
कुद्धद्धरीय बिरुद्धद्धसि असि रुद्धद्धर किय॥
तुच्छच्छकिय अतुच्छच्छबि कुल सुच्छच्छल बल।
दक्खक्खचि पय रक्खक्खलु अरि लक्खक्खल भल॥५५२॥

जगमग भय कर असुर पर सजि सर बॉन सगग्ग।
रूप भूप बंस बरन रंग रस लगग्ग रजि अगग्ग॥
लगग्गरजि अंगग्ग गाहिय षरग्गग्गज हनि।
कुंभब्भभक्कि सुंभब्भतिरत कुंभब्भजि भनि॥
भुंडड्डहक्किच मुंडड्षडष मुंडड्गमग।
सज्जज्जय रब गज्जज्जस कमधज्ज जगमग॥५५३॥

थरथर हर नारद हसे रचि मचि धसे मरद्द।
रूप भूप हठि दुयन के मद्दद्बटि गरद्द॥
मद्दद्बटि गरद्दद्दलकीय रद्दद्दलमलि।
तक्कक्करीय झढक्कक्कलह कढक्कक्कलमलि॥
रत्तत्तराल भरत्तत्तन सुपरत्तत्तरतर।
जुत्थत्थकीय समुत्थत्थढ भढ लुत्थत्थर थर॥५५४॥

धर धर कंपीय धर गिरदं तरभर छुटीय तुफंग।
रूप जंग अबरंग सौं अंगग्गहीय उमंग॥
अंगग्गहीय उमंगग्गज थट सगग्गह भरि।
रगग्गहर उतंगग्गति करि भगग्गन अरि॥
जोधद्धसि असि क्रोधद्धरि कीय बोधद्धरधर।
सिद्धद्धनि धनि किद्धद्धरीय प्रसिद्धद्धर धर॥५५५॥

दोहा

छाँडि तुरी सजी आतुरी दुयन पराजय दैन।
रूप धार सनमुख धसे अस्वमेध फल लैन ।।५५६।।

कमध रूप रन रत करत घन घाइन घमसाँन।
जुध मधि औरंगजेब से हेरि रहे हैराँन ।।५५७।।

बचनिका

औरंगजेब गाजी। महाराजा सौं भए राजी। साथ देखि। हाथ देखि। हथबाह देखि। उछाह देखि। जंग देखि। रंग देखि। अंग देखि। ढंग देखि। लागे कहन बचन बिसेखि ।।५५८।।

कवित्त

भागि गयौ दारा निज नाँम गुन धारा जिन
सार न संभारा खोइ डारा जस धन कौं।
ऐसी बेर कमध करारा खूब लोहा मारा
करै ललकारा न बिसारा निज पन कौ ।।
जानै जग सारा राजलाल रखवारा सहै
खरग की धारा बिसतारा रोस रन कौं।
कबकौं करत जंग रंज न घट्यौ है रग
बाह बाह रूप रहमत तेरे मन कौं ।।५५९।।

छप्पय

धरहु रूप तुम धीर करहु हथबाह न कोऊ।
रूप दिली दल रूपखग्ग बल खल दल खोऊ।।
सटक्यौ दारासाह हौहु अब तरफ हमारी।
पंच हजारी हुते करूँ हौ हफत हजारी।।
बर बीर सुनहु मानहु बचन कथन साहि औरंग कीयौ।
कमधज्ज गज्जि सब सुकन कौ मारि खग्ग उत्तर दीयौ।।५६०।।

कवित्त

बाहिनी सी बाहिनी के पार गिरि गज पर
चढ़्यौ अवरंगजेब महल अबारी के।

बहै तेज धार मै अपार बहै जात देखि
करत सबद बीर तारी किलकारी के ।।
महाराजा रूप गजराज के सरूप तामैं
भारी रौर पारी हने गरढ हजारी के ।
ऐसी ऊँची अचल अंबारत के ढाहिबे कुं
ताब करि दाब कीए दसन कढ़ारी के ।।५६१।।

कालकूट भरी जैसी टूटि बीज परी जैसी
काल ही की घरी जैसी लोह छोह लाज कै ।
जम की सी डाढ़ जैसी गाढ़ भरे बाढ़ जैसी
तर की असाढ़ कैसी तेज ग्रहराज कै ।।
हर के त्रिसूल जैसी बज्र सम तूल जैसी
कलह के मूल जैसी सोही लोही साज कै ।
महाराजा रूप ऐसी कोपि कै कटारी मारी
गाढ़े साहि औरंग के गाढ़े गजराज कै ।।५६२।।

साहस की सींब रूप भुज बल भींब भूप
निहचल नींब कुल ध्रुव ज्यौ अटर की ।
वृंद कहै जंग जुर्यौ ही को अभिलाषी साखी
साखी कियो जग लाज राखी सुरधर की ।।
भारी भयकारी कोपि कमध कटारी मारी
कारी घटा बारी जैसी बीज तैसी करकी ।
धूली धर गिरी गज धूजि कै अंबारी धूजी
धरक धरक छाती औरंग की धरकी ।।५६३।।

महाराजा रूप भारमल नंद भूप रूप
बिरचि बजायौ लोह कई यक हजार मै ।
घने घने घाइन घुमाइ घमसान कीयौ
घने हने भट कमध करार मै ।।
वृंद कहै बीर बार मारमार मचि रही
परे है अपार बार आवै न सु मार मै ।
खेत मै पिसाच प्रेत पसु न छुवन पाए
लागि गयौ तन तरबारिन की धार मै ।।५६४।।

छप्पय

असि जमुनाँ छबि अमल सूर मंडल कर संचर ।
गहरी पानिप भरी तेज अति धार निरंतर ।।
झपटि लहरि औं' झरनि धीर भट जंतु धकाये ।
हर नारद हेरंब अंब जस गावन आये ।।
लै अनीदरभ तिल तन अरघ धर तीरथ सनमुख धर्यौ ।
करि भेद सूर मंडल कमध रूप भूप हरि पुर बस्यौ ।।५६५।।

छंद वाटकौ

दिल्ली चाह अथाह दला साहि जादाँ बजि सार ।
भूप भलावे रूप भुज भारथ हुंदा भार ।।५६६।।
भुज भार सधारीय सार भरोसै साहि दलाँ सिणगार ।
अहंकार अपार कमद्ध उपट्टे सार वह सिरदार ।।५६७।।
सिरदार सुभट्ट सुथट्ट लियै संग अंगि उलट्टि उछाह ।
गज थट्ट गरट्ट विकट्ट विघट्टन दैण दबट्ट दुबाह ।।५६८।।
दुय बाह अथाह कुल छल दाषबि मुंछ भुं होंठ बिमेल ।
सजि टोप बग्ग नर आवध सिप्पर भीच भडारण भेल ।।५६९।।
मिलि औरंग साहि मुराद भयकर जग समोगर जूटि ।
छुटि बाँण कबाँण छछोह छड छड़ छोह बिमाँण छूटि ।।५७०।।
छुटि साहस कायर उछल सायर देब दिबायर दीठ ।
अणभंग अषाडै पाँणि पछाड़ै रोस बजाडै रीठ ।।५७१।।
बजि रीठ बलाबलि बीर महाबल साबल ध्री बिस धीर ।
खग झाडीय औझड ठाल खड खड त्राछ तड तड तीर ।।५७२।।
तड तीर अमीर लमीर तडप्फै गिद्ध झडप्फै गात ।
खल खेत खल भल चेत चलच्चल बीजल ज्यौं बिज पात।।५७३।।
बिज पात जिहीं करि घात बिरौलै जोध हिलौलै जंग ।
थट मैंछथरक्कै रूप न थक्कै रूपन थक्कै तकै अवरग ।।५७४।।
पंग चाटि झटक्के घाब भभक्के खेत सलक्के खाल ।
धर भार धभक्के कुम्भ कसक्के लोह छके लोहाल ।।५७५।।

लोहा लहकारे लग्गि धिगारे मारे मेछ मरद्द ।
ढीचाला ठाहे सार संबाहे गाहे मेलि गरद्द ।।५७६।।
रद पाडिर बद्दाँ भैरब सद्दाँ बाट बिरद्दाँ खेत ।
रण रत्त बहाए पत्र भराए पाय धपाए प्रेत ।।५७७।।
प्रेताँ पल पाए खाय अघाए घाए कियौ घमसाँण ।
थिर कीरति थप्पे प्राण समप्पे सूरज बडै अबसाँण ।।५७८।।
सजि अबसाँण बिमाँण चढ़ि बरि अपछर तजि तंत्र ।
रूप मिले हरि रूप सौ भारहमल सुतन्न ।।५७९।।

दोहा

बाच्च जुधिष्ठिर भीम बल बर अरजुन ज्यौ बान ।
रन जुझ्झे अभिमन्यु ज्यौ रूपसिंघ राजान ।।५८०।।
सतपै सै पनरोतरै जेठ सुकल पच्छि जाँम ।
नौमी तिथि कौं रूप नृप करि जुध आए काँम ।।५८१।।

छप्पय

माँन सुता मन सुद्ध रिधू सीसौदनि राँनी ।
इंद्रजाल अंगजा सहित हाड़ी सुख साँनी ।।
सतजुत गिरधर सुता गौडी राँनी गुनबंती ।
सुनीय स्रबन अबसाँन हेत पूरन हुलसंती ।।
सत सील पतिव्रत धरम सौं एकोत्तर कुल उद्धरीय ।
महासती रूप भरता सौं भेदि भाँन मंडल सिलीय ।।५८२।।
अंग जोति उद्योत जोति जरतार जग मग ।
आभूषन अति ओप जोति या भूषन जगमग ।।
चलत तजत आबास जोति संमिलित जगच्चखि ।
जोति रूप जगमगत लखत चक चूँधि जगच्चखि ।।
सतसील धरम लज्या सहित अगनि कुंड मंजन [भि]लीय ।
महासती रूप भरतार सु भेदि भाँन मंडल मिलीय ।।५८३।।
श्री महाराजा रूपसिंघ भूपति भारमल नंद ।
ताकौ जस बरनन कियौ बरबानी कबि वृंद ।।५८४।।

१०

यमक-सतसई

सरसति[1] को नमत नर सरसत कोमल बैन।
गनपति कृपा कटाच्छ तै गन पति सुभ फल दैन ।।१।।
केसब कबि बरने जमक अब्यपेत सब्यपेत।
सुखकर दुखकर[2] भेद सब बरने वृंद सहेत ।।२।।
बिन अतर इक से सबद अब्यपेत सो जान।
अतर सो इक से सबद सब्यपेत पहिचान ।।३।।

अथ अव्यपेत आदि पद यमक

सकर संकर संत कौं मन बंछित को देत।
मन बच क्रम कर कीजियै ताही सौं हित[3] हेत ।।४।।
नर हर नरहर[4] और की करत आस बेकाज।
संत सुदामा रंक तै राव किये[5] महाराज ।।५।।
निसा निसाकर देख री कैसो[3] अमल उजास।
यामै मान न कीजियै करियै बिबिध बिलास ।।६।।

द्वितीय पद यमक

लाज काज छाँड़े तऊ मोहन मोह न कीन।
काहू कौ पिय निठुर सौं नौज होहु[7] मन लीन ।।७।।

तर—१ श्री सरसति २ दुष्कर ३ हिय ४ नरहरि नरहरि ५ कियो
६ कैसे ७. होउ।

कालिंदी के पुलिन पर तरबर तरबर[1] छाँह।
ए री मदन गोपाल[2] सौ मिलियै भर भर[3] बाँह ॥८॥

सिसिर दुस्ट बन करत[4] है पातन पातन पात[5]।
सजन[6] सुरभि तरु करत है सरस सु पल्लब[7] गात ॥९॥

तृतीय पद यमक

पय पाबन जागत जगत अबनी अमल उदोत।
कोक कोकनद मुदित मन प्रगट प्रभाकर होत ॥१०॥

मो चित लागी चपपटी निपट अटपटी बात।
जात जात पिय सौं मिलै[8] बिना मिलै हित जात ॥११॥

चतुर्थ पद यमक

घर बर सौं[9] काम न कछू नेक मदन सर भीन।
ब्रज बाला बन बन फिरत नंद नंद आधीन ॥१२॥

अथ द्विपद यमक १।२

कर मोहित मोहित करी हर हरली[10] कुल लाज।
को सिष माने बिषभरी कौन करै गृह काज ॥१३॥

३।४ चरन

धनुष चढ़न संदेह पै मुनि महिमा अनपार।
अबलोकन लोकन किये जब सुकुमार कुमार ॥१४॥

१।३ चरन

मुरली मुरलीधर धरी अरी परी धुन[11] कान।
जा तन जात न बनत है लाज करी कुल कान ॥१५॥

पाठान्तर—१ तर २ गुपाल ३ भरिभरि ४ करतु ५ बात ६. सुजन ७. स पल्लव ८ सुख पात है ९ बरसौ १० हरि हरिली ११. धुनि।

२।४ चरन

हरि बिन[१] छिन न सुहात है चंद न चदन बात।
तन मन कैसें होत सुष बनत न बन तन जात ॥१६॥

१।४ चरन

देष स्याम घनस्याम घन सुनि[२] मोरन के सोर।
चल[३] री बन मोहन चलित[४] बनिता बन[५] ता ओर ॥१७॥

२।३ चरन

बिछुरें[६] मन मोहन सषी कलप कलप दिन जात।
पलक पलक लागत नहीं कही परत नंहि बात ॥१८॥

अथ त्रिपद यमक १।२।३ चरन

केतक केतक केतकी फूले कदंब कदँब।
बनि बनिता हरि है तहाँ उठि चलि न करि बिलंब ॥१६॥
बट बटपारो[७] बसतु[८] है लट लटकति[९] है भाल।
अरी अरीली जाय जिन हरि लैहै मन लाल ॥२०॥

१।३।४ चरन

लषि लोचन लोचन लग्यो जिय हिय जान सु रग।
जलजातन जात न सुरत लगत कुरंग कुरंग ॥२१॥

१।२।४ चरन

फल तर[१०] साल रसाल पर कोकिल किल कुहकार।
सरस सपल्लब डार तरु मधु मधुकर गुंजार ॥२२॥

२।३।४ चरन

तन ब्याकुल पलक न लगत[११] मन मनमथ भय भीन[१२]।
देष सघन उनये नये[१३] सुधि विरहीन रही न ॥२३॥

पाठान्तर—१ विनु २. मुन ३ चलि ४ चलत ५ वनि ६ विछु
७ वटपारा ८ वमत ६ लटकत १० फलि नर ११ लागत १२ लीन
१३ उनए उनए।

अथ चतुश्चरन यमक

बंसी बंसीबट बजी सुनि सुरभी सुर भीन।
सुरत सुरत गोपिन[1] लगी सुरन सुरन सुष दीन ॥२४॥

एरी ए रीझै अनत मोहि मोहि जिय लैन।
चैन लहौं[2] छिनहूँ न हूँ हरि चित्त हरि चितवै न ॥२५॥

परसौं परसौं रचि रहे रैन[3] बिहान बिहान।
कहौं कहौं अजहौं[4] रहे अरी अरीले जान ॥२६॥

चंद न चंदन मो[5] रुचै बात न बात सुहात।
बिन[6] प्यारे प्यारे न ए कहियै हियै पिरात ॥२७॥

सास सास बिनहूँ करौं[7] ननदी नदी बहाउ।
जिन पैहूँ पैहूँ न छिन[8] षेलन षेल न जाउ ॥२८॥

अथ सव्यपेत–प्रथम पद यमक

सुरभित बन कीनों सुभरासि कोमल मलय[9] समीर।
तहाँ सुरत सुख लेत है नित राधा बलबीर ॥२९॥

द्वितीय पद यमक

कुंजन कुंजत[10] कोकिला अलि गुंजत अलिमाल।
चलि बलि हिलि मिलि लेहु सुष[11] तहाँ रसिक नँदलाल ॥३०॥

तृतीय पद यमक

चलि कुंजन मै राधिका बिचरत नंद किसोर।
सुमन देष फूलत सुमन भूलत मान मरोर ॥३१॥

चतुर्थ पद यमक

तहाँ तिय संग जल केलि सुष लेत रसाल गुपाल।
घेरि लियौ[12] चहुँ ओर तै ताल तमालनि[13] ताल ॥३२॥

ठान्तर—१ सुरति सुरति गोपन २ लहू ३ पै न ४ कहूँ कहूँ अजहूँ ५ मुहि ६ विनु ७ विनहुँ करूँ ८ जिनपै जिनपे हू न छन ९ मलै १० कुजन ११ हित मिलतेऊ सुरन १२ घेर लयौ १३ तमालन।

अथ द्विपद यमक १।२ चरन

ठौर सघन वनि[1] कुंज मै बेर[2], सघन जल पूर।
जाहि सु मन सौंपियै ताहि न करियै दूर ॥३३॥

गमन मैन वन तन कियो घेर लियो मन मैन।
सव तज देषन उठि चली सोभा सुंदर नैन ॥३४॥

३।४ चरन

मोहन डारी मोहनी मो[3] मोही वन माहि।
वत उत रत हैं हरि तऊ हिय तै उतरत नाहि ॥३५॥

याको सुधि[4] न सभार कछु फिरत सु मन नहि[5] साथ।
जहाँ गोकुल संग फिरत हैं ए री गोकुलनाथ ॥३६॥

१।३ चरन

पीत वसन सुदर बदन तिहिं मन नैकु निहारि[6]।
प्रीत वसन करि लेति है[7] समझति नाहि गंवारि[8] ॥३७॥

गति जीत्यो गजराजु तैं करि[9] जीत्यो मृगराज।
मोतिन को गजरा जु तै पिय[10] पै पायो आज ॥३८॥

२।४ चरन

अरध रैन मन मैन करि[11] हरि मुरली सुर भीन[12]।
व्रज बाला बन[13] उठि चली सुनत भए सुर लीन ॥३९॥

१।४ चरन

नई बैस मै होत है अंग ढग रस रग।
तैसै नाहिन होत री नई बैस मै अंग ॥४०॥

पाठान्तर—१ वन २ वैर ३ हो ४ याकी सुध ५ तिहि ६ निहा
७ पीत बस ,न कर लेत हैं ८ गवार ९ कर १० पिव
११ मेन कर १२ लीन १३ वनि।

२।३ चरन

मेरे बरजै ना रहति तू नित बन तन जात।
बनत न बात दुराब की कहत सरेषित गात ॥४१॥

अथ अव्यपेत-सव्यपेत सुखकर-दुखकर मिलित यमक

केसर की सारी बनी सारी बनी बिचारि।
तातें बनता बन[१] रही हार[२] निहारि निहारि ॥४२॥

कुंज बिहारी कुंज मै छरी छरी दिखलाइ[३]।
चित उचकी चितवत[४] चकी पर तन परत न पाइ ॥४३॥

कहों सु नावत सीस हरि कहों सुनाबत बैन।
बन बन[५] बनि बनि फिरत[६] है नैन सरस रस लैन ॥४४॥

देह दही बेचत दही दई दई यह जाति।
गोरस मिस गो रसहि हरि मग भँडराति डराति ॥४५॥

देही देही मै कीयो अरी अरीले हाथ।
इन नीकै[७] चितयो न छिन[८] चितयो तयो अकाथ ॥४६॥

एैन बैन नवनीत से छबि नव नीके गात।
तू नवनीत बनी[९] चलो बनो बनो नहिं बात ॥४७॥

आबन बन कैसै बनत नत ह्वै कहो निहोरि।
सबही मिलि सुदती दती चितबन ही की षोरि ॥४८॥

सहि सहि लीनै मै सबै सबके बके कुबैन।
जब जोरै जोरै बनै कमल नैन सौं नैन ॥४९॥

रसना तौ वह ही[१०] भली रस नातो जिहि माहि।
ना तौ हाॅ तौ करि सखी मोहि सुहाती[११] नाहि ॥५०॥

बनी माहि राधे बनी बनी बनी की भाॅति।
भई देख सिर उनमनी सबै उन मनी काॅति[१२] ॥५१॥

---

१. तो तौ बनि बनता २. हारि ३. दिखराइ ४ चितवन ५. वनि वनि ६. फिरतु ७. नीको ८ विन ९ नवनी नवनी १०. ई ११ सुहातौ १२. क्रांति।

असव्यपेत यमक

बेधत हौं[१] बिन बेध ही खरे अनीरे[२] ऐंन।
तू इन नैनन कौं[३] कहत खरे अनीरे[२] ऐंन ॥५२॥

मिली जु तम की रैन मै प्रीतम की रुचि लेष[४]।
चमकी पुनि[५] तमकी तरुनि[६] दमकी दामिनि[७] देष ॥५३॥

ए री याकौं नैक ही कौंनै कही रिसाय[८]।
कौंनैं मौनैं गहि रही अब गौंनैं तै आय[९] ॥५४॥

सबही तै अनषात है क्यौं न अली अनषात[१०]।
उखरी ऊख तऊ खरी बनि[११] सन सघन सपात[१२] ॥५५॥

बरस न लागे नाह कौं चले छाँड[१३] नब नेह।
तरसन लाग्यो जीयरा बरसन लाग्यो मेह ॥५६॥

कर हाँ रसना तै चली कर हा तै अब नाहि।
कर हाँ रस नातै चली रस नातै बन माहि[१४] ॥५७॥

अथ अव्यपेत-सव्यपेत सुखकर-दुखकर यमक

बिजय देत जय सबद जुत अमित अजय अनुरूप।
जय भंजय मजय दुरित जय जय जोति सरूप ॥५८॥

बानी कौं बदन किये बानी मधुरी होत।
सुबरन की बानी चढे[१५] बानी जगमग जोत[१६] ॥५९॥

ब्रह्म निबेदन करत है बेद न पावै पार।
जन भव बेदन हरत हर[१७] कहत बेदबिद सार ॥६०॥

बार न लाइ जगत पति बारन तारन बार।
बा रन तारन दुष्ट के काज सबारन[१८] सार ॥६१॥

पाठान्तर—१ हैं २ अनीते ३ कु ४ अ-लेपि ५ सुनि ६ तरुन ७ दामन ८ रिसाइ, ९ आइ १०. अनषाति, ११ बन, १२ सपाति १३ छाँडि १४ करि हाँ, रची, करि हा तौ १५ चहै १६ होत १७ हरि १८ सुधारन।

जे गोपी गोपीन सँग गोपी गोपीनाथ।
ते सबही गोपी न तिन करी अगोपी गाथ[१] ॥६२॥

जो ही ही की पूतना हले पूतना प्रान।
जननी ऐसो पूत ना जनम्यौं क़ाहू आन ॥६३॥

हरि से सनमुष कहि सकौ[२] गुन न असेसन[३] भाषि।
हरि सेसनमुष देषबो हरि से सनमुष राषि ॥६४॥

सुबरन दुति पटु तन चितै तन सु बरन घनस्याम।
करि सु बरन बरनन करौ मन[४] सु बरन घनस्याम ॥६५॥

निस तारे केतक, किते जन निसतारे स्याम।
दुष्ट अनिस तारे तिते बिसतारे गुनि[५] नाम ॥६६॥

भये धराधर आप हरि कियो धराधर सैन।
धर्यौ धराधर हाथ पर कर अधरा धर बैन[६] ॥६७॥

भक्त उधारन हरि कहूँ[७] करी उधारन काय।
काज सुधारनहार हरि करी उ धारन[८] काय ॥६८॥

हरि जसु धारन हरि बिषय नाम सुधारन होइ।
वह ई जन बसुधा रतन जनम सु धारन सोइ ॥६९॥

जे अयान गुरु पाप रत जप तप रत नहि होइ।
जो इह रत गुरु पा परत परत सुधारत सोइ ॥७०॥

मन बच क्रम करि आन कौं मो उर आनन आन।
आनन ही तै हरि बिना आन न करौं बषान ॥७१॥

कन कन पाइ न दीन जन लहि कनक न छकि जात।
नाम सुधा कन कन परत मोह कन कन छकात ॥७२॥

करि ताही सौं सोच करि करि ताही सौं हेत॥
करता ही कै बात सब सो कर[९] ताही देत ॥७३॥

पाठान्तर—१ नाथ २ सके ३. गुन ऐसे सन ४. तन ५ गुन ६ भए, कीयौ, परि करि ७ कहौ ८ उधारण सुधारण धारण ९ संकर।

सुन लै करन पुरान गुनि सुनिलै करन अनंद ।
कर निहूजि करुना करन करन पूज नँद नंद ॥७४॥

गोवरधन कर[1] पर धर्यौ गो बरधन[2] कै हेत ।
बर धन माँगै धन मिलै बरधन कौं बर देत ॥७५॥

गन पतितन के ऊधरे गनपति तन की साषि ।
स्रीपति जदुपति बिपति पति हरति बिपति पति राषि ॥७६॥

हरि अरजुन हिय सौं मिले हरि अरजुन हित कीन ।
हरि अरजुन बिप्रहि दिये तरु अरजुन गति दीन ॥७७॥

जोगु नही जप तप नही जो गुन ही गुन हीन ।
हरि गुन ही गुनही सदा तो ह्वै है गुनहीन ॥७८॥

धरत सुदरसन चक्र कर परम सुदरसन स्याम ।
हरत सुदरसन त्यौं हरत ताप तीन हरि नाम ॥७९॥

पदमपान के पद पदम झलकत पदम अनूप ।
दरसै पावै पदम निध परसै पद महि भूप ॥८०॥

देत भजन तें संष निधि लहै निरतर संष ।
लियो संष हरि संष अरि ऐसे विरद असष ॥८१॥

एक निमष हरि भजन तें कलमष कोटि हरत ।
सत-मख हू तें जनम रस[3] सत मख काहि करंत ॥८२॥

हरी विपति पति पच की करी बिपति पति साँति ।
पडव पतिनी को रषी प्रभु पति नीकी भाँति ॥८३॥

वासव सेवत है चरन वास वसे ब्रज माहि ।
सुमन सुवास वसे हरि[4] वासव सेव सनाहि ॥८४॥

पन घट राख्यौ चाहिहैं तो पनघट जिन जाइ ।
ओ[5] पन घट की रहसि कै[6] गोपन घटत न काइ ॥८५॥

जलजातन से नयन जुग जात न छवि नव नेह ।
जा तन चितवत जगत पति जात न सो जम गेह ॥८६॥

पाठान्तर—१ गिर २ वर्द्धन ३ जन सरम ४ हरे ५ ऊ
६ रहि नर्क ।

नाग पछार्यो फेरि कै नाग नथ्यौ बर जोर।
नाग उधार्यो नगधरन नागर नंद किसोर ॥८७॥

गरज समै अगरज बचन पग-रज लावत भाल।
गरजत घन की सी गरज अगरज भये गुपाल ॥८८॥

नगन मिले सँग नगन तन नगन रहत है गात।
नगन फिरत हरि भजन बिनु न गनत द्यौस न रात ॥८९॥

तपन[1] तपे हरि भज भये तपन समान प्रताप।
तप न तपे ते नर इहाँ तपन सहत संताप ॥९०॥

सुरत रँगीली[2] सौं बिरचि सुरत रंग हरि नेह।
सुर तरंगिनी तट लहैं सुर तरंग सुर गेह ॥९१॥

अनत रहै नत साध सौं हरि तजि अनत न जाइ।
ते अनतप ही सुष लहत हैं[3] अन तप रहत सदाइ ॥९२॥

मोहन मदन गुपाल की मदन वदन छवि देख।
मद न रहत निज रूप कौ सब सुख सदन बिसेख ॥९३॥

या कुंजन मन राषिहै या कुं जन मन कोइ।
हरि जन मन कुं[4] राषिबो हरि जन मन हरि कोइ[5] ॥९४॥

गोपन के बछ बछरुवा बिधुजन[6] गोपन कीन।
राषै गोप न गोप पन[7] हरि अद्‌भुत रस लीन[8] ॥९५॥

कमला सन बरनन करे कमलापति जग जोति।
कमलासन धरि हरि जपै कमला सनमुष होति ॥९६॥

दंड कमंडल छाँडि कै दंडक मंडल लेत।
दंडक मंडल मै रहै मुनि धरि हरि सौं हेत ॥९७॥

भजि है तज पाषंडको जोत अखंड उद्दोत।
सोई संत अखंड मत जग दुख खंडन होत ॥९८॥

पाठान्तर—१. नयन २ तरगिनी ३. ते अनत यही सुख लहत ४ कौं
५ होइ ६. विध जव ७ गोपनपन ८. भीन।

छाँड़ि रसा धन देत हैं सुर साधन बिसराइ।
जिनके साधन हर भजन तिनके साध न काइ ॥९९॥

जो दरसन में देखियें निज दरसन मे होत।
तो पट दरसन देखियो हरि दरसन मे होत[1] ॥१००॥

सजग तपति तप रैन दिन जोग जगत पति मागि।
हेत[2] जगतपति भगत को लेत जगत पति राखि ॥१०१॥

जोजन गधा सुत कहत गुन जोजन करि जास[3]।
लहै मुकति सा जो जतन जो जन जुत बिसवास ॥१०२॥

बाद न करि बकवाद तें होत सवाद न कोइ।
हरि अपवादन हरि भजें जस बादन जग होइ ॥१०३॥

मोहत मो घनस्याम सौं मो घनस्याम सुहात।
मोघ न करत मनोरथनि मोह तमो घन जात ॥१०४॥

तर[4] पातन के चीर करि हर पात न लग कोइ।
तन पातन कासी करें तन पात न फिर होइ ॥१०५॥

व्यापक रूप अनत मम जाको नाम अनत।
जोई जपत[5] अनत गुन होत निरतर सत ॥१०६॥

अंतर रहत न स्याम कौं[6] उर अतर जप जाप।
अतरहित जन कौं करत अतरजामी आप ॥१०७॥

वामदेव रत[7] नाम सो हरि सरूप अति वाम।
मोहत वाम अवाम कौं बस किय वाम अवाम ॥१०८॥

उदित धाम निधि कोटि तें जगमगात अति धाम।
नाम सुधामय जो जपत सो पावत हरि धाम ॥१०९॥

धाम[8] काम तजि नाम लगि है पूरन मन काम।
जपत अकाम सकाम सब काम हुतें हरि काम ॥११०॥

पाठान्तर—१ ज्यों, दरसन, त्यों २ देत ३ तास ४ तन ५ जप तप
६. मो ७ रति ८ धरम।

मासन मै अगहन भये अगहन जाकौ रूप।
सेबत अग हन आदि सब अघहन[१] नाम अनूप ॥१११॥

पइयै गुरु उपदेस तै जपहु जगत गुरु स्याम।
गुन[२] नारद मुनि संत जन भाषत गुरु गुन ग्राम ॥११२॥

भव के पोषन भरन हरि भव से करत बषान।
भजियै नर भव पाइकै भवकरता भगवान ॥११३॥

चहैं सुपारस कौन की पारस ढूँढ़त काहि।
तुव पारस हरि हैं सदा ताहि कृपा रस चाहि ॥११४॥

सदा सुरभि रितु सुष जहाँ सीतल सुरभि समीर।
तहाँ चराबत सुरभि हरि चरचत[३] सुरभि सरीर ॥११५॥

चंद न ऐसी छबि धरै चंदन है सुष कंद।
चंदन बैदी संजुगत चंद बदन[४] ब्रज चंद ॥११६॥

सीस कलाधर कौ मुकट बदन कलाधर धाम[५]।
नाम कलाधर काम है कोटि कलाधर स्याम ॥११७॥

ठाढ़ौ कर लकुटी लियै कुंज कुटी के माहि।
भ्रकुटी धनुष कटाच्छ सर भ्रकुटी चूकत नाहि ॥११८॥

परम हंस जिन कौं भजै भजै हंस आरूढ़।
हंसगमनि सँग फिरत है हंस सुता तट रूढ़ ॥११९॥

हरि के तिलक अलीक मै देषि कहौ न अलीक।
गोपी कौं जु अलीक सौं सहत अली न अलीक ॥१२०॥

कोब सती असती कहा बन बसती के माहि।
हैं सबती[६] के स्याम कै कौन जुब सती नाह ॥१२१॥

हरि मुर लीनै बिरद हरि मुरलीधर भर भाइ।
पै मुरली पूरन करत मुरली मधुर बजाइ ॥१२२॥

कुबलय नैनी राधिका कु-बलय-मानि ब्रज चंद।
कुबलय भूषन जुगल छबि ए कुबलय सुष कंद ॥१२३॥

पाठान्तर—१. अगहन २. गुरु ३. चरि चित ४ चहै ५. साँम ६. बसती।

ब्रज लोचन की तारिका दुष प्रतारिका जान।
राधे गुन बिसतारिका अचल तारिका बान ॥१२४॥

तो रति रति क्यौं कहति है प्रेरति रति मति मोहि।
मूरति रति पति स्याम है जोरति रति सम[2] तोहि ॥१२५॥

बरत करत हरि मिलन कौं बरत करत हित मेल।
करतनु राधे प्रेम बस धरत बरत कौ षेल ॥१२६॥

अज अजतन कौं मुनिन कौं जतनन न मिलत दयाल।
अज-जतन राधे बस कियौ तजत न संग गुपाल ॥१२७॥

देषि कमलनी दलन कौं सब अकमलनी होत।
पाइ अकमलनी[3] दलन कौं तुई कमलनी जोत[4] ॥१२८॥

कमलनैन बिन राधिका कमल नैन भर लेत।
कमल नैन ऐसे ढरत कमलन ही के हेत ॥१२९॥

भूख न भूषन की कछू ब्रज भूषन की भूख।
भूषन रुचित न रुचित चित जा बिन चंद मयूख ॥१३०॥

रजनी पति देषै तपति रजनी बिलपति जात।
रजनी रँग भई राधिका रज नीरज न सुहात ॥१३१॥

दुष हरनी राधे सदा हरिनी कैसे नैन।
हरिनी की सी छबि लिये हर नीके मुष बैन ॥१३२॥

सरसीरुह से दृगन तै सरस दृष्टि[5] निहारि।
सरस रसीले हरि किए सुबस रसीली नारि ॥१३३॥

बर नीरज से नैन मुष आबरनी अग्याँन।
बरनी रानी राधिका बरनी पुरुष पुरान ॥१३४॥

मधुरितु मैं मधुमास मै मधु मुरली धुनि कीन।
मधुरिपु ललित लतान कौ मधुकर ज्यौं रसलीन ॥१३५॥

मधुप रचित रबि पुहप के मधुप रचित इक रग।
मधु परचित हरि कुज मै मधुप भए रति संग ॥१३६॥

पाठान्तर—१ प्रणाम २ रस ३ कमलिनी ४ होति, जोति ५ देषि।

राधे कै निस सरद मै सरद रद छद कौन।
सरद स आधे की तपनि[1] सरद करी रसलीन ॥१३७॥

अधर सेज पर स्याम घन अध रति समैं असंक।
अधर मधुर सधु पान किय अधरक हिय भरि अंक ॥१३८॥

चंद्राबलि सिर धर रहे चंद्राबलि कै गेह।
चंद्राबलि उपट्यौ[2] हियै नष चंद्राबलि देह[3] ॥१३९॥

प्रेम दलालन पै बिकै सुनि सुनि लालन बैन।
लोयन लाल न कीजियै लालन जगि जगि रैन ॥१४०॥

रतन कनक भूषन बदन तन कन स्वेद चुचात।
जतन करत न दुराब के हरि तनक न सकुचात ॥१४१॥

रसरीतै माखन रितौ[4] रस रीतै करि जात।
रसरी तै[5] बाँधे पकरि लै रसरी तै मात ॥१४२॥

हसत चलाबत गोपकनि हसत बसत बन माहि।
वह सत गोरस दान कौं दहसत मानत नाहि ॥१४३॥

अस मसखरी तिय बची बाम सरबरी लोच[6]।
हरि बिन इक हू सरबरी रही सरबरी सोच[6] ॥१४४॥

सनमानत हरि राधिके[7] किन मानत हो बैन।
यह न प्रमानत बात कौ मान तजेही चैन ॥१४५॥

जमु नाही नाही नियमु जमुनाही सौं हेत।
जमुनाही दरसै तिन्है जमु नाही फिर लेत ॥१४६॥

हरि के पावन तै चली पावन गंग सदीब।
सुभ गति कौ पावन लगे[8] जिते अपावन जीब ॥१४७॥

पर धन सों नहि काम कछु पर धन सों नहि काम।
ते जग पर धन पति जपै पर धन पति के नाम ॥१४८॥

पाठान्तर—१. सरदस आरति सम असंक २ दुपरी ३ गेह ४. चितै ५ सुन री तै ६. लोचि, सोचि ७. राधिका ८. सब जग कौ पावन करै।

बर ही मो जिय लेत है बर ही करि करि सोर।
किहि बर ही धर हरि धरैं बर ही कीन कठोर ॥१४९॥

मो तन मो मन दरस हो मोहन मोहन कीन।
मो तन मो तन मन कियो मो तन मोहन कीन ॥१५०॥

सोधत कुजन मै गई सोध न पायो बाल।
सो धन धन जिहिं घर बसे परम यसोधन लाल ॥१५१॥

पीत बसन तै लषि गई पीत बसन बल बीर।
गोपी तब सनमुष मिली पीत बस नष सरीर ॥१५२॥

पलकन झारैं पाउ जिय वारि फेरि सुख लैहु[1]।
पलकनि हो हरि तन चितै पलक न लागन दैहु[1] ॥१५३॥

उतपल नैनी राध कहि उत पल नैन अचैन[2]।
उत पल कलप समान है उत पल नैन लगै न ॥१५४॥

काहू को कलपाइयै करि कल बिकल उपाइ।
सो कैसे कल पाइ है समझि कहो समझाइ ॥१५५॥

जिन की रति गोपीन सौं कीरति जिन सम नांहि।
जिन की रति हरि नाम सौं तिहिं कीरति जग मांहि ॥१५६॥

तरकी मनो असाढ की ऐसी तरकी नारि।
तरकी छिरकि गुलाब[3] सौं सीतर की मनुहारि ॥१५७॥

मान निबारहु माननी होत पात उत घात।
ए री आबत पातकी करत काम उतपात ॥१५८॥

उदै कोकनद मित्र कै रहे कोक नद फूलि।
रहे कोकनद सकुच कै रहे कोक नद फूलि ॥१५९॥

आए आबत अरुन ज्यौं अरु न उदै तजि संग।
अरुन बरन लोचन किए अरुन बरन वह अग ॥१६०॥

सरस ठौर सकेत की जहां केतकी बास।
मीनकेत की उमग मै रस निकेत किय बास ॥१६१॥

पाठान्तर—१ लेउ, देउ २ उतपन मैं न अचैन ३. गुलाल।

रूप रचित पर चित हरन होहु न पर चित धीर।
होत न मधु कर बीर मै बिल बिन मधु कर बीर ॥१६२॥

कर नीचै करियै नहीं कर नीकै[1] उपगार।
करनी सोई कीजियै भव दध करनी पार ॥१६३॥

बारी बार न लाउ री बारन दुष की बार।
बारन गति ह्वै ई गई बारन ही के भार ॥१६४॥

घूघर बारे पीय[2] अरु घूघर बारे बार।
तापर घरबारे निरषि गोरे बारे कार[3] ॥१६५॥

सरसीरुह फूले जहाँ हद बिन सरसी तीर।
स-रसी बातैं कहत तैं सर-सी लगत सरीर ॥१६६॥

तीर न प्यारे प्रानपति रतिपति मारत तीर।
कैसैं राधे ती रहै हरि बिन जमुना तीर ॥१६७॥

माया बेरी मोह की जकर्‌यो सब संसार।
माया बेरी पुन्य की कदत उदधि भव पार ॥१६८॥

हरि है जो तेरे हियैं तो हरिहैं सब पाप।
हरि है ममता अजरहौं[4] जरिहैं जग संताप ॥१६९॥

त्रिबिध सदागति कुंज मै हनत सदा गति काम।
तहाँ सदा गति तू करति अरी अनोषी बाम ॥१७०॥

जिन कीरति पतितन करै पतितन ऐसी भास।
जाकी कीरति जगत मै पाबन पतित प्रकास ॥१७१॥

गरज न मेरे और की गरजन लागे मेह।
तजौं न गुरुजन गरज तें नागर जन सौं नेह ॥१७२॥

कुंदन कुंदन कीजियै दसन देह छबि जोर।
चंदन चंदन सम करो मिलि तन लषि मुष ओर ॥१७३॥

पाइ परे सुष पाइकै तजि सब और उपाइ।
मोहन मोहे मानिनी अधर सुधारस पाइ ॥१७४॥

पाठान्तर—१. नीचै २ पाय ३. वार ४. अजरतौ।

न गनत काहू नारि कौं दाधे तुव रस लीन।
नगधर भूषन पहरि कै नग धर तै बस कीन ॥१७५॥

स्याम सुघर सौं मन लग्यो गई सुघर सुधि भूलि।
निस दिन कुंजन मै फिरत कुमद कज सी फूलि ॥१७६॥

काम दहैं मो प्रानपति हित मद है तन प्रान[1]।
काम दहैगो कौन विधि लगत न मो तन बान ॥१७७॥

सरद सुधाकर किरन तै बसुधा भयो प्रकास।
किये सुधा तै परसपर सरद रदन के बास[2] ॥१७८॥

जानत जान समान तै काम समान न आन।
छटत बान कमान के छूटत मान अमान ॥१७९॥

सकुचि तिहारो उर भयो नैकु न सकुचति बाम।
लोगन मै उघरी लगन घरी न ठहरति धाम ॥१८०॥

जकरी बिरह जंजीर तै पल भर जकरी नाहि।
मिलत न सुघरी लाज तै मिलत स्याम बन माहि ॥१८१॥

लाल लाल कोए कीए आए को ए लाल।
सोए नाही रात कौं सो ए नाही[3] बाल ॥१८२॥

भई बस न मो माननी बसन गए तिहि धाम।
जानी सहज सुबास तै बसन बसाए स्याम ॥१८३॥

बरन लगी बिरहागि तै बरन भई तन पीत।
बरन लगै कछु काम तें हरिबर न करत प्रीत ॥१८४॥

घोष घोष मै होत है दधि मथानि के घोष।
घोषत कृष्ण कृपाल कौं नाम प्रेम रस पोष ॥१८५॥

मो जियरा तरसत लग्यो तरस न आवै तोहि।
सुदरसन मुख होइ हरि दरसन दीजै मोहि ॥१८६॥

करत प्रदच्छन स्याम कौं कहियै दच्छिन सोइ।
काम मद च्छन कौं तजै काम प्रदच्छन होइ ॥१८७॥

पाठान्तर—१ त्रान २ किय बसुधा तें परसपर सरद रदन के बास ३ जाहु।

भक्ति बिलच्छन[1] हरि भजै सुभ लच्छन परकास।
लच्छ न ताकौ परहरै कछू न अछित तास[2] ॥१८८॥

हरि मन रामा रमन सौं रमा रमन सौं प्रीत।
भूले पर मन जन धरै पर मन रंजन रीत[3] ॥१८९॥

परम तपस्या जे करत पर मत करत न पोष।
परम तत्त्व सौं मन लग्यौ जग्यौ परम संतोष ॥१९०॥

हेरत जाके रूप सौं हेरत बन मै ताहि।
गहे रतन जिन मथि उदधि अहे रतन नर आहि ॥१९१॥

रत न कहौं बिन राधिका भूषन रतन बनाइ।
रत न करत तिय और सौ करत न और उपाइ ॥१९२॥

अरी निसा नीकै करी दई निसानी मोहि।
आज निसाँ नीकै मिलै हरि हिय सानी तोहि ॥१९३॥

मगन भए हरि भक्त सौं मग न बिचारत और।
जम गन कछू न करि सकै नाम गनत हरि ठौर ॥१९४॥

जगत रैन दिन हरि हियै छाँड़ि जगत सौं मोह।
भजत दुरत तिनके सबै भजत नाम तजि छोह ॥१९५॥

एक बरी इक परहरी एकबरी बिरहागि।
एक बरी सीषे लषन हरि कबरी तट[4] लागि ॥१९६॥

जल जमुना कौं लैन कौं चली जलज मुखी आज।
निज लज तजि रस बस किए जलज नैन ब्रजराज ॥१९७॥

जलज हार पहिरै हियै जलज लियै निज हाथ।
जलज नैन बन बन फिरत जलज नैन की साथ ॥१९८॥

हरित बाँस की बाँसुरी हरि तहाँ मधुर बजाइ।
हरि ततच्छिन मन बाम कौ हरत बिरह बन आइ ॥१९९॥

पाइन चलि मिलि स्याम सौं यह उपाइ नहि आन।
पाइ कृपा इन लाल की पाइ न मधु तजि मान ॥२००॥

पाठान्तर—१ भक्त वछल तू २ कबू न अलच्छन तास ३. प्रीत ४. रीतइ।

अज कहै सु उर धरि मति अज कहैं सु उरधारि।
धरि जक सोई[५] देत है सबकौं रिजक सभारि ॥२०१॥

रास लुगाइन सग निस दिन गाइन सँग जाहि।
सुर गाइन गावत जिनहि गाइ न काहे ताहि ॥२०२॥

परसत पुहुप पराग के मोहि लगत उपराग।
स्याम सरागन स्याम बिन नाहि सुनत उपराग ॥२०३॥

हरि अराधिका राधिका सिद्धि साधिका साधि।
आधि ब्याधि की बाधिका छाँड़ि[२] उपाधि अराधि ॥२०४॥

रूप सारिका राधिका स्याम निहारि निहारि।
धरत दाब परिसारिकै सारि बिसारि बिसारि ॥२०५॥

उठी अलक सानी अहो कहा दुराबत गूढ[३]।
अतर अलकसानी यहै कहै देत है गूढ़ ॥२०६॥

हित समै न समझी सषी कछु उपजी जिय मै न।
मैन मैन सो मन कियौ अब मारत है मैन ॥२०७॥

रमन जाइ बन मै कियौ रमन और तिय सग।
तऊ रमन लागत सखी पर मन[४] होत न भग ॥२०८॥

रमन जाइ बन बन भ्रमन तऊ भ्रम न मन होइ।
जहाँ सुभ्र मन कौ भ्रमन गनौ सु भ्रमन सोइ ॥२०९॥

भ्रमर हैं न जिहि[५] बाग मै तहाँ न सुमन सुबास।
जहाँ भ्रम रहै चित्त मै तहाँ न प्रेम प्रकास ॥२१०॥

सुमन केतकी बास जहाँ कोमल मलय समीर।
मीनकेत की गति तहाँ हरिहु बिरह की पीर ॥२११॥

अलि कुल घेरी पदमिनी सरस सुबास सुरग।
अलि कुल घेरी पदमिनी सरस सुबास सुरग ॥२१२॥

सुमन सु बाग बिलास मैं राग बिलावल होत।
सुमन सु बाग बिलास मै राग बिलावल होत ॥२१३॥

पाठान्तर—१ साँई २ वाम ३ पूठ ४ सन ५ जिन।

गहरी गरजन आप तैं इत आए घन स्याम ।
गहरी गरजन आप तैं इत आए घन स्याम ॥२१४
करत न एते परस कुच जोबन बिन ए काम ।
करत न एते परस कुच जोबन बिन ए काम ॥२१५॥
ए कहैं न मन मान तैं तातैं बोलत नाहि ।
एक है न मन मान तैं तातैं बोलत नाहि ॥२१६॥
उर अंतर धरि रुचिर हित पर चित पर मन कीन ।
उर अंतर धरि रुचिर हित पर चित पर मन कीन ॥२१७॥
करी विभूत्ति जभी तजी करी बिभू तजि मीत ।
तप सी तन बन भीत रहि तप सीत न बन भीत ॥२१८॥
मानत ज्यो सम आनई मान तज्यो सम आन ।
जो गीताकौ जानई जोगी ताकौं जान ॥२१९॥
काहे रत हौ आन सौ का हेरत हौ आन ।
बापर वारी माननी बा परबारी मान ॥२२०॥
तब ऑगन मै खेलती अब ऑग न रस रंग ।
या ही तैं हरि है मिलै याही तै ए ढंग[1] ॥२२१॥
सुर ही मोहित देखि कै सुरही चारत स्याम ।
मुरली सुर ही मैं चुभ्यौ सु रही इक टक बाम ॥२२२॥
जिन पर करनाई नही तिन कर नाई लच्छि ।
नदी नदी पर सब कहै नदी नदी नदी पर तच्छि ॥२२३॥
बिछी बिछौना चॉदनी रही चॉद नी छाइ ।
मोहि चॉद नीकौ लग्यौ मो ब्रज चंद मिलाइ ॥२२४॥
नई बैस मै होत है सरद न बदन सरूप ।
नई बैस मै होत है सरद न वदन सरूप ॥२२५॥
आस पास मुनि मंडली आस-पास तजि दीन ।
आस पास तन पास[2] बन ते नर होइ न दीन ॥२२६॥
इते असम सर सर हनत उते असम हिय पीय ।
अरी असम गति बिरह की भयौ असम सम जीय ॥२२७॥

पाठान्तर—१ पाई तेरो ढंग २ आस वास तन वास ।

अंबर घन की बास जुत अंबर पहिरे अंग।
अंबर घन गरजन समै अब रहे पिय संग ॥२२८॥

सघन कुंज घन सघन धुनि पिय सँग दुगुन हुलास।
सघन पान के खात मुख होत सुरंग सुबास ॥२२९॥

ललित हाब ललित ललन गाबत ललिन बिभास।
ललित लता के कुंज मै ललिता बलित बिलास ॥२३०॥

दंपति ताल तमाल तर कहि कहि बचन उताल।
ताल ताल पर परसपर हसत सु दै दै ताल ॥२३१॥

बात पात की की सुनी आबत है वह आज।
पात पात की गति लियें[1] कॉप्यौ तीरथराज ॥२३२॥

आबप ते तीरथन की तीर थके नर[2] धीर।
तीरथ चढ़ि[3] मनमथ समथ न्हात चलाबत तीर ॥२३३॥

हनूमान कौं लंकपति कह्यौ को नु काहा काम।
कह्यौ तिहारौं पलक मै हनू मान यह नाम ॥२३४॥

सबर[4] अरि के परस तै स बर अरि की पीर।
अंबर[5] हरि हरि हैं सषी सबर दैन सधीर ॥२३५॥

ईहि असार संसार मै स्याम नाम ततसार।
सार करत ससार की ताकौं छिन न बिसार ॥२३६॥

वह गिर तै ढरि धरि ढरै या कौं गिर पर राह।
बिरहनि नैन प्रबाह है तै सौ नैन प्रबाह ॥२३७॥

बार बार मुकता चुनै[6] बार बार बन जात।
कबहू मेलै बार मै ह्वै है री उत पात ॥२३८॥

बन षेलत हरि राधिका उर जलजन के हार।
बन षेलत हरि राधिका उरज लजन के हार ॥२३९॥

पाठान्तर—१ वात वात की गति लषै २ मन ३ चाढी ४ सवर ५ संवर
६ वनै।

घट पट की सुधि ना रही सट पट की गति आन।
मटकी पटकी धरन मैं कान्ह कपट की खान ॥२४०॥

लाल भई अनुराग सौं लाल चष्या तर साल।
लालहि लाल गुलाल सौं लाल किए व्रज बाल[1] ॥२४१॥

हरि सँग बीनत पुहुप वनि रहसि वजावत बीन।
कहा कहौ परबीनता उपजि नवीन नवीन ॥२४२॥

नमत पाकसासन चरन रिपु सासन बल वीर।
ताकी सासन विन कहूँ सास न भरत सधीर ॥२४३॥

गुंजन के हर वा हियै अलि गुंजन के पुंज।
षैलत अलि गुंजन लियै हरि अलि गुंज निकुंज ॥२४४॥

कोकिल स-फल रसाल पर कुहकत सबद रसाल।
हरि कौ करत रसाल तन राधे यौं हरि साल ॥२४५॥

जसुमति नंद रसाल तन हरि सुर गन हर साल।
कहि जीवो हर साल लै[2] देत गिरह हरि साल ॥२४६॥

वरस गाँठि कौं व्रज सकल बरसत घन पढ़ि छंद।
कहत कुबर सत सिव वरस चिरजीवौ नँद नंद ॥२४७॥

होत असोक असोक लषि सोस न सोसन देषि।
लगत रसाल रसाल चित वाग नैन अविरेषि ॥२४८॥

कह कोसन पीतम वसै को सन पूरन काम।
कोसन कोसन कमल के कोसन लागी वाम ॥२४९॥

केसरि रँग पिचकी छुटै तन केसरि रँग वास।
षेलत लाल गुलाब सौं अति पट वास सुवास ॥२५०॥

छई सघन धरकन सलिल घन चमकनि अति कीन।
बिरही हिय धरकन लगे घन धरकनि[3] धुनि दीन ॥२५१॥

पाठान्तर—१. लाल २. सो ३. धमकन।

मिलि गुरुजन पुरुजन दई बचि गुरुजन की मार।
तऊ तिय किय मद मदन कै पिय उरजन पर हार ।।२५२।।

परमानंद कुमार की अपर मान आभास।
सु परमान भाषत निगम परमानंद प्रकास ।।२५३।।

राग रंग सौं हिय रँग्यौ अंगराग रँग अंग[1]।
राग रंग मुषराग जुत रहत राधिका संग ।।२५४।।

तन पट बास बसे पहरि करि पट बास गुलाल।
कपट बास तजि खेलियै अरी खेल पटु बाल ।।२५५।।

पहिरे हार बसंत को गावत राग बसंत।
रितु बसंत षेलत सुघर ब्रज सब संत बसंत ।।२५६।।

बेनी तरकी अतर सौं अतर अगर सौं धूप[2]।
मिली अतर सूँ राधिका हरि सौं नेह निरूप ।।२५७।।

तर की छिरकि गुलाब सूँ सुष तर किय हिय माहि।
बित ईतर की जेठ की कुंजन तर की छाँहि ।।२५८।।

नाह अनारी करत है पर नारी सँग सैन।
घर-नारी के झरन है पर-नारी से नैन ।।२५९।।

नाहक नाह बिदेस किय नाह न नेह निबाह।
राधे चितबत राह कौं राधे हि चितबत राह ।।२६०।।

तनसुष की सारी बनी तिय तन सुष छबि ऐन।
तनसुष की सारी बनी अतन अतन सुष दैन ।।२६१।।

रजनी के रँग अँग भयौ रजनी बिलपत जात।
नीरजनी पति ना रुचै रचनीपति न सुहात ।।२६२।।

नवसत भार भरी चलत न बसंत साजे तीय।
नबस तरुन के होत लषि न बसंत काके हीय ।।२६३।।

सषी स घट घट ऊट ह्वै[3] घट लै निकसी घाट।
घूँघट मैं नट नटत लषि नटवर घेरी बाट ।।२६४।।

पाठान्तर—१. रंग २ अतिर अग सो धूपि ३. सषि सघट उट कै।

मनि मानक बानक बने मानि कहै सब बाल।
मन मानिक लै मिलत ए जग मानिक नँद लाल ॥२६५॥

हरि निसचर मन हरि करी बिरह न जाई बिदेस।
लागत निसचर सरद को निसचर कैसे बेस ॥२६६॥

केसरि मोतिन की हियै पहरै केसरि बास।
केसरि बिरह सतंग कौं अँग केसरि रँग बास ॥२६७॥

कान बीर बीरी बदन अंचल भरे अबीर।
चलहु बीर संग इनन के बन षेलन बलबीर ॥२६८॥

नर कत हति हित रहत है अरि अनर कत सुभाइ।
धरकत कत हरि अनुरकति नर कत हति नही जाइ ॥२६९॥

हर बिरहत जिहि नाम सों बन बिहरत बलिबीर।
बिरहत बिरहि बसंत मै बिरह त मनमय बीर ॥२७०॥

उदित होत मन मै न सुष दोषाकर कौं देषि।
उदित होत मन मै न सुष दोषाकर कौं देषि ॥२७१॥

कुंज सघन चंदन बलित सरबर जुत जल केलि।
अंग सघन चंदन चरचि रचित स्याम जल केलि ॥२७२॥

जपत बिनायक जपत सब सुरगायक सुख भौन।
कृस्न बिनायक दूसरौ भजिबे लायक कौन ॥२७३॥

सनक सनंदन जपत निति नँद नंदन ब्रजराज।
पूजत नंदन सुमन हरि चिर नंदन के काज ॥२७४॥

डगमग सारस गति लियै सुनि हे सारस नैन।
रति सुष सा रस मेटि तन सार स किय जग रैन ॥२७५॥

उरजा तन सी लट लषी उर जा तन लपटात।
उर जात न कब हौ बिसरि उर जातन ही जात ॥२७६॥

राजत उर द्विजराज पद भूषन कुल द्विज राज।
संत सहाई होत है चढ़ि बाहन द्विजराज ॥२७७॥

जनक भक्त मन क्रम बचन सदा जनक है नाम।
जगत जनक जानत सकल जनक सुता पति राम ॥२७८॥

चित लगि पुरुष पुरान सों हित पुरान सों होइ।
स्रवन करत नित भागबत परम भागबत सोइ ॥२७९॥

आसा के आधार तै चित चिंता बिसराइ।
आसा के आधार ज्यौं डिगत देह ठहराइ ॥२८०॥

जैसें परसै नैन तन सरद चंद तै होत।
तैसें दरसै परम सुष सरद चंद तै होत ॥२८१॥

जाकौ लोक अलोक मैं लोक लोक आलोक।
करि अबलोकन चित्त मैं जहि अलोक कहि लोक ॥२८२॥

करत असोकहि सोक हरि सो कहि चित्त बिहार।
सोक असोक बन मै बसै चलि री मान निबार ॥२८३॥

जगमग जोति जराब की जगमग करत प्रकास।
हरति सेबती स्याम को धरति सेबती बास ॥२८४॥

नाब बैठि आबत इतै हौं बरजति हौं नाब।
तन बनाबतें बावरी कहा बन जाइ बनाब ॥२८५॥

तन चंदन की षोर करि चंदन बिंदु बनाइ।
जग बंदन को जग करत पग बंदन सिर नाइ ॥२८६॥

अव्यपेत यमक : सिंहावलोक

आबन बन कैसे बनत नत ह्वै कहौ निहोरि।
हौं रिस रिस ई कौंन तू न तू समझी पिय षोरि ॥२८७॥

दैन हार सुष मैन कै हरि तिय करि हिय हार।
बनिसन हारन मै अरी निस दिन करत बिहार ॥२८८॥

तिलक फूल सी नासिका तिल कपोल परि स्याम।
भाल तिलक पहरै तिलक भली बनी है बाम ॥२८९॥

नारि हाथ मै राखियै भूलि तजो जिन कोइ।
जीवन ताही को गनत नार हाथ मैं होइ ॥२९०॥

रसिक अहीरा तोहि दियौ हीरा सो मन सार।
तूं ही राधे राष री करि हीरा कौ हार ॥२९१॥

बास बसाइ अबीर सौं पहरि कनक की बीर।
तोहि बीर की सौह है बसि करि लै बलबीर ॥२६२॥

सकलनि सारी भवन तैं सकुचि बिसारी नारि।
सकल निसा री रति रमी परी सलबटी सारि ॥२६३॥

तूँ राधे परबीन है तौ बजाइ कर बीन।
कैं फूलन बीनन चलौ ए री करि अरि बीन ॥२६४॥

संत सुदरसन धरन कौ पावै दरस न कोइ।
दरस ससी सुष उदित दुष दरस अदरसन होइ ॥२६५॥

सुषकरता री स्याम घन बलि कर ता पर प्रान।
कर तारी दै गान करि करतारी हित प्रान ॥२६६॥

पहलै पाटी पारि कै पाटी गहि रही सोइ।
पढी न पाटी प्रेम की समझि कहाँ तैं होइ ॥२६७॥

बेनी सुमन सिंदूर भरि भली त्रिबेनी कीन।
काम कु बेनी अलक मै उरझ्यौ हरि मन मीन ॥२६८॥

बनि ठनि बैठी बारनै करी बार नै भूरि।
मनू भरी छबि सलिल तें पार बार नै पूरि ॥२६९॥

जमुना तट नीके अरी बटनीके जतु कुंज।
कामु रली पूरै तहाँ मुरलीधर रस पुंज ॥३००॥

प्रफुलत करुना कुंज मै करुनाकर है स्याम।
करु ना नाचति राधिके करु नाना सुष बाम ॥३०१॥

मुरली धुनि पलकनि लगी पलक न लगी निहारि।
उलट पलट हरि मन कियो लटपट निकरी नारि ॥३०२॥

गरुड़ासन जन जानि कै डासन मो मन कीन।
दुषडासन कौ दुष हर्‌यौ स्री हरि परम प्रबीन ॥३०३॥

लाल चुनी तिय चुनिन मै लालचुनी कै कीन।
उर लगाइली स्याम मनि लाल चुनी रँग भीन ॥३०४॥

नीलकंठ बोलन लगे देषि नील घन माल।
नीलकंठ सुमिरन लगी काम सताई बाल ॥३०५॥

गरुड़ासन कोपन लग्यौ गरुडासन के त्रास।
गरुड़ासन गति भूलि गौ गयौ अनत तजि बास ।।३०६।।

सोभा सीस कलेस की सो कृपा करै सकलेस।
जन अकलेसन रहि सकै रहै न लेस कलेस ।।३०७।।

अकू सारि संसार को अति अपार बिसतार।
नाब नाब अबलंबि कै काहि न उतरै पार ।।३०८।।

बीतत है इत रात री तू इतरात अयान।
तो पति राषत पाइ परि ता पति ही सौं मान ।।३०९।।

तो सौं बिलसत राति दिन बिसतराति है प्रीत।
एते पर सतराति है कौंन सयानी रीत ।।३१०।।

तोसौं बिनती करत है बिनय लियै नँदलाल।
बिन मानै[1] जानत नही बिनसत रंग रसाल ।।३११।।

भयो प्रानपति बिरह तै काम बास सौं बाम।
भए धाम सुष धाम कै काम बाम कै बाम ।।३१२।।

निसा न एकहु जातु है कहत बजाइ निसान।
निसा न मेरी होत है देषत सुरत निसान ।।३१३।।

हस बिबसन सन[2] मुष भई तुम हरि बसन हसात।
कीनो बसन कदंब पर अब कछू बस न बसात ।।३१४।।

का मद ही का मदन ही काम दही इहि हेत।
काम दही कौं जाहि तिहि देत फिरति सुधि लेत ।।३१५।।

कुसम लता रत भौंर ज्यो काम लता रत स्याम।
फूलन मारत मान करि ताहि लतारति बाम ।।३१६।।

फुलबारी मै हरि मिली फुलबारी ज्यौं बाम।
फूल बारी ते स्याम पर फूल वारी भए धाम ।।३१७।।

मित्र मित्र के मित्र कौं मित्र मित्र कौ बारि।
मित्र चित्र कौं देषि कै भई चित्र सी नारि ।।३१८।।

पाठान्तर—१. मानत, २ सत।

ए री याकौं बारि दै कहा बारि दै मूढ़।
बिरबा[1] पे मसबार दै हठ निबार दै गूढ़ ॥३१९॥

काम कपट सब बारि दै लषि बा रिदै अनूप।
ए री तन मन बारि दै राषि बारि दै रूप ॥३२०॥

लोक लाज कौं बारि दै अरी बारि दै नेम।
राषिबा रिदै राधिके कान्ह बारि दै पेम ॥३२१॥

कोप करत है कौंन सौं तोहि रही समझाइ।
किन पकरति सुधि राधिके को पकरत है पाइ ॥३२२॥

छिनकु लीन सुध सुरन की फिर गिर परी कुलीन।
जिहि कु लीन तिहि बस करी किती कुलीन कुलीन ॥३२३॥

जो गोकुल की गोपिका कुलकी मोही स्याम।
कुल की कानि छुड़ाइ कै ब्याकुल की ब्रज बाम ॥३२४॥

गिरि पर दारन मान हरि पर-दारन को नेम।
परदारन के प्रानपति परदारन सौं पेम ॥३२५॥

जुग जुग तिन को अबतरन अजुगति हर सौं हेत[2]।
जुगति उधारे तानकी मुकति संत कौं देत ॥३२६॥

जप तप तन कौ[3] भूलि मति तजि पतितन कौ साथ।
भजिअ पतितन राषपति सजि सुख संपति हाथ ॥३२७॥

गोरषबारो तत चहै गोरषबारो जोइ।
गोरष बारो जपत सो गोरषबारो होइ ॥३२८॥

जो रषबारो जगत को गोरषबारो कोइ।
तो रषबारो प्रभ सदा मो रषबारो कोइ ॥३२९॥

भोग साधना साधियै भोग साधना खोइ।
जोग साधना छोड़ियै जोग साधना होइ ॥३३०॥

ए री तैं सीषी कहाँ ए रीतैं रु[4] कहै न।
हित रीतैं रीतैं तऊ हरि तौ रहित रहै न ॥३३१॥

पाठान्तर—१. विरहा २. हरन सु हेत ३. जग पतितन कौ ४. सु।

लषि पीवत रस रूप को पीवत रस भइ लीन।
लाज तजि निधरक भये नैकहु लाजत जी न ॥३३२॥

जरी रुपहरी कोर की पहरी सारी अंग।
खिली[1] दुपहरी राति मै जरीउ पहरी[2] सग ॥३३३॥

नाम नाकपति लेत नित पुनि पिनाकपति लेत।
भजत पाप ना नाकपति परम नाकपति देत[3] ॥३३४॥

वसत दरी तजि सुदरी नाद रीति करि पोष।
जिन न आदरी हरि भगति तिन न आदरी मोष ॥३३५॥

सुर सरिता धारी कहत सुर सरि ताके नाहि।
सुर सरिता धारी अधर सुरस राषि हिय माहि ॥३३६॥

गुरु कविता के गुन कहत कहत सेस कविराज।
कविता कबि ताकी कहे जो भव[4] समद जिहाज ॥३३७॥

करि सकर मन बुद्धि चित सकर सुमिरत सोइ।
सक रहित जन जपत सो जगत वसकर होइ ॥३३८॥

हालाहल हर[5] सग्रह्यौ हाला हलधर लीन।
हालाहल धरनी धरत कहा कहा विधि कीन ॥३३९॥

छबि मरीचि कर वदन तै यहि मरीचि सबिलास।
कै मृगनयन मरीचिका हे राधे तुव हास ॥३४०॥

हरिनी छौना सी चपल दुष हरनी कै नेह।
हरि नीकै बितई निसा हरिनी तिय कै नेह ॥३४१॥

कानन कुंडल मकर छबि हिमकर मुष छबि घेर।
तेजअ[6] हिमकर लाल सौं मकरि मिलन की भेर ॥३४२॥

कनक कुभ से गोल कुच कुभ कुभ से पीन।
सात कुभ सी गात छबि कुभकरन पुर छीन ॥३४३॥

अलिक तिलक फैली अलक अलकत फैल्यौ पाइ।
अलकसात पग मग धरत लोचन जुग अलसाइ[7] ॥३४४॥

पाठान्तर—१ खुली २ हरी उपरी ३. लेत ४. भजि ५ घर ६. अहि मकर ७. जु अलकसाइ।

षेलत मीन निकेत सौं मीन नयनि सर तीर।
नैन मीन गति चलत तहाँ मीनकेत के तीर ॥३४५॥

भइ रँग पीरे पात सी मन मथ पीरे गात।
पी रे पी रे बकत कछु राधे बिरह बसात ॥३४६॥

अरबीले मोहन इतै अरबीले रहे आप।
अरबीली उत लै रही अरबी हमहि सँताप ॥३४७॥

इतै बेतक[1] ही तू मिली उतै बे तकहै[2] लाल।
जब तक हेरी कुंज मै तब तक हेरे ष्याल ॥३४८॥

पीउ रजनी के उबत ही पीबर जनि रस लीन।
मोहि उरज नीके जगत करजन सोभित कीन ॥३४९॥

करन फूल लै सबन कै करन फूल है कान ॥
करन फूल आनद की[3] चली मिलन भगवान ॥३५०॥

कंकन करन जराइ कै जिय कंकरन सुभाइ।
कंकन से मुकता लगे लगे चित्त मै आइ ॥३५१॥

अँगुरिन मुँदरी नगन की मन मुद रीति बिसेष।
कुमुद रीति नैना लई कुमुद रीति मुष देष ॥३५२॥

लटकन ढिग[4] लटकत ललित लटकत चलत सरागि।
मन पटकन पावै नही लट कत लटकन लागि ॥३५३॥

अटति कुंज बट तटनि अट न टरति जिय तै ष्याल।
मानि अटक अटकति न छिन न टरति अटकी बाल ॥३५४॥

तू अट करति न थल समय पेम अट करत होइ।
इक टक रत निरषत बदन करत कहा सुधि खोइ ॥३५५॥

इत अलबेली राधिका उत अलबेले लाल।
तन अलबेली मिलन की अलबेली की चाल ॥३५६॥

तर तर तर बितरत सुरत[5] कबहु तरत कर नीर।
चित रत उतरत पार तरि तरुनि तरुनिजा तीर ॥३५७॥

पाठान्तर—१. बतक २. बतक है ३. है आन की ४. ही ५. पुरत।

बारत मदन गुपाल सौं बारत तन मन काम ।
काज सँबारत पेम के लाज निबारत बाम ।।३५८।।

सोभन हरि के बदन की सोभ न पावत चंद ।
सोभनपन धरि जन सदा नव नागर नँद नंद ।।३५९।।

बामन होत उन बलि छल्यो धरि बामन बपु स्याम ।।
बलि छलि बामन के मनहि बाम न करियै काम ।।३६०।।

जाकै अरुचित हैं सदा अरु चित चंचल नाहि ।
जिहि अरुचि ब[1] अबिवेक बिधि वहै धन्य जग माहि[2] ।।३६१।।

हिय रुचि उपजत मिलन की घन रुचितन पिय सोइ ।
सुचित हेतु सौं जो मिलै ततौ सुचितई होइ ।।३६२।।

अध्रुब[3] पदारथ जे तजे ध्रुब हरि समझ्यो धीर ।
ध्रुबपदता के सेइ कै ध्रुब पद लह्यौ सधीर ।।३६३।।

काम करम समुझाइ कै कर मनुहार प्रकार ।
करम करम तै ल्याइ कै[4] कर मन धीर करार ।।३६४।।

कज भवन भूलत न छिन भव न तजत छिन साथ ।
कुंज भवन मैं फिरत है तीन भवन के नाथ ।।३६५।।

भवन मई सब होत हैं तीन भवन जिहि बार ।
भवन भवन जहाँ रहत है रहत जु भव करतार ।।३६६।।

कमल कमलनी बन मुदित बन बन मलिनी बास ।
चलि दुष मलिनी होहु बलि कत मलिनी तन बास ।।३६७।।

बसत न छिन घर बन बसत अबस कहत सिष ताहि ।
बसतन उदबस गनत है तिय परबस तन आहि ।।३६८।।

कोटि अहिम रुचि जोति जिन[5] मुष रुचि हिम रुचि जोत ।
ताहि भजन तै अरुचि मिटि क्यो न सुचित चित होत ।।३६९।।

सुचि तन छबि सुचि मन बचन सुचि लोचन झलकंत ।
सुचित आन धरि ध्यान जपि सुचित होत हैं सत ।।३७०।।

पाठान्तर—१ अरुचित २ धन्य जन्य जग माहि ३. ध्रुव ४ हौं ५. जित ।

नवरंगी तन रास रस गोपिन सँग संगीत।
गावन[1] मै संगीत के गीतन मै हरि गीत ॥३७१॥

हरिचंदन कौ चित्र किय कर हरिचंदन डार।
चंद नयौ उदयौ त दिन चितयै नंद कुमार ॥३७२॥

गायन के ब्रज गोप ब्रज संग लियै ब्रजराज।
ब्रज बीथिन मै फिरत है ब्रज राधे तजि लाज ॥३७३॥

कोटि कामना सम करै काम काम ना देत।
मोहि काम ना और सौ है प्रकाम[2] हरि हेत ॥३७४॥

हरि रथ पथ के सारथी रथ पथ रण मै लीन।
रथ पर थपकै रथ किए भारथ पथ मै लीन ॥३७५॥

बाजि राज गज घंट नद[3] बाज राज हिननाहि।
षगनि बाजिराजनि हने पारथ भारथ माहि ॥३७६॥

छूटे बान कमान के जूटे बान कबान।
छूटे प्रान परान[4] के फूटे तन तन त्रान ॥३७७॥

फूलन सेज बिछाइली रही चाँदनी छाइ।
की सब सौत बिछाइली पिय छकाइ छबि छाइ ॥३७८॥

रूप भारती नाहि सम रति भार तियौ है न।
पेम भारती निस जगी किए भारती नेंन ॥३७९॥

रंभा भव जुत पान मुष सो रंभा सुष दैन।
रंभा बन मै राधिका रंभा सी छबि ऐंन ॥३८०॥

नयो नयो रस लेत है नयो नयो रस चाहि।
उनयो जोबन राधिकहि नयो चाहियै ताहि ॥३८१॥

बन गहनो गहनो अबसि नाहिन गहनो गेह।
मोहि अगहनो जग लगत गहनो हिय पिय नेह ॥३८२॥

निरस जान अनिरस तजे सुबस निरस दिन रात।
राधे अनिरस तजि मिलौ है अनिरस यह बात ॥३८३॥

पाठान्तर—१ गावत २. प्रकास ३. तट ४. षरान।

करि उमंग लगि हेत जप मधु मंगल के मित्त।
हरति अमगल संत के करति सुमगल नित्त ॥३८४॥

सगी सबल सु बाहुवल छल बल कर अबिलव।
सब लषि[1] गए सुवाहुबल मार्यौ प्रबल प्रलंब ॥३८५॥

बरन जलद से गज बने जलज बाजि उदोत[2]।
दीयै लाष पर देषियै दियै बिना नहि होत ॥३८६॥

जातरूप भूषन मिलै जात रूप जुत जोत।
जातरूप हरि भजन तै जातरूप जुत होत ॥३८७॥

अकर करतु है जगत कौ जगकरता सौं हेत।
और तियन पै लेत कर तोहि कान्ह कर देत ॥३८८॥

परषत[3] पेमहि नेम कौ करषत[4] राधे चित्त।
न रषत उर अतर कपट निरषत हरि मुष नित्त ॥३८९॥

राधा सँग राधारमन गौरि रमन सुचि नैन।
रति संग रहै काम कै रति सिगार सुख लैन ॥३९०॥

जे बिषईते रहत है बिषय भोग अनुरत्त।
बिष सम मानत विषय सुख जे है बिषय बिरत्त ॥३९१॥

होत असभव भुवन भव उर अनुभव उपजाहि।
भव भव रट जे रटत ते भव भव भटकत नाहि ॥३९२॥

धन जोबन[5] के साथ तब जोबन धन के साथ।
देह बिधाता होहि तौ धन जोबन मै हाथ ॥३९३॥

धन जीबन जेहि जान तिहि जग जीबन सौं नेह।
जीवन जौ लौं जात है समझि देह फल लेह (त) ॥३९४॥

सु कहे सहज सुभाब कोउ जु कहै सु कहै बानि।
सु कहै जु कहै सत जन सु कहै सुक उर ठानि[6] ॥३९५॥

स्त्रुति सुखकारी कहत है स्त्रुति अनुसारी बैन।
हरि अनुसारी राधिके स्त्रुति अनुसारी नैन ॥३९६॥

पाठान्तर—१ लग २. बाल उद्योग ३. परतष ४ परषत ५ जीवन धन
६. तान।

उर मति आनो आन तिय दुरमति दूर दुराइ।
मेरे उर मति फुरत है उरमत है आइ ॥३९७॥

अनिलै निलै न रुचत है उर अनिलै लागत नाहि।
सोई क्यों न लगाइयै सोई सब बन माहि ॥३९८॥

लखि लखि भाव बिभाव री लख बिभावरी बाम।
भरत भौंर की भाँबरी दिन बिभाबरी स्याम ॥३९९॥

तो मत अनहित आवरी इत आब री अयान।
अपनो मन परचावरी हित रचाव तजि मान ॥४००॥

देब देब बसुदेब सुत जिहि पूजै बसुदेब।
तिहि पूजै बसु देबतरु देत हेत भरि[1] भेब ॥४०१॥

मेरो कछू न करि सकै गोप पंच परपंच।
सुधि रही न सरपंच लगि पंचकरन मैं रंच ॥४०२॥

बिधि बिधि कर तिय कर करी उर उरमति जब आइ।
खरी तपति दिनकर करी करक रीत सिय राइ ॥४०३॥

गनि काके काके कहौ गनिका के से दोष।
अगनिकाठ ज्यौं अँगनि दहि अगनित जन किय मोष ॥४०४॥

चितबत रस मै अति मगन चितबन टगी लगाइ।
चितबत मासे दुहुन के चितबत गए बिकाइ ॥४०५॥

मो ही सौं मोहि गई सषि मोही की प्रीत।
मनमोहन सौ कीजियै मनमोहन की रीत ॥४०६॥

अहो दई काहे दियौ यहै निरदई पीय।
दई दई कबकी करत दया न उपजत हीय ॥४०७॥

मिली सु औसर पाइ कै छाँड़ अनौसर बार।
त्रास घनो सरपंच कौ पहरचौ नौसर हार ॥४०८॥

हार तिहारे हिय धरचौ हारति ही छिन चित्त।
अहराति न ठहराति तू जात मिलन हरि मित्त ॥४०९॥

पाठान्तर— १. करि।

ज्यो ज्यो गुरजन कसति हैं त्यो त्यों विकसत चित्त।
जिहि मग निकसत स्याम घन तिहि मग निकसत नित्त ॥४१०॥

ललित लता सी लहलहति उलहति हियो निहारि।
लहति पुन्य के जोग तै ताहि मिलो[1] वलिहारि ॥४११॥

एक ही न छिन चैन है तोसो बात कही न।
भई कहीन कही न कल जैसे मीन क-हीन ॥४१२॥

मै न करी मनुहार कछु मैन करी कुलकान।
मैन करी मोरन[2] कीयो मैन करी लै[3] माँन ॥४१३॥

तजे भोज सब रीत के सबरी के फल पाइ[4]।
बरी कुरूपी कूवरी तहां हरी सतभाइ ॥४१४॥

उत पाती मिल कै लिष्यौ तुम दीज्यो बिष याहि।
उतपाती लषि[5] कै दई हरि कृपया बिष याहि ॥४१५॥

या सरसो सींची लयो सरसौ पीयरो रंग।
सरसो लषि पिय सुधि भई सर सो हई अनग ॥४१६॥

तन छवि अलसी कुसुम सम अलसी बिलसी वाम।
काम अनल सीतल करन वड़े अनलसी स्याँम ॥४१७॥

सू धराई लौंने लला[6] अंबराई लौं जात।
लै अँव राई लोंन कौं सुत पर वारी[7] मात ॥४१८॥

केल कुंज मै लै दई सब व्रज वाल सकेल ॥
हरि राधिका अकेलियै करत कहाँ रस केल ॥४१९॥

संतत हियें बिचार कै सतत सुमिरत वाँम।
संत तहाँ सतसंग है सत तहाँ सुष धाँम ॥४२०॥

जे सेवत[8] सिवरात[9] कौं सिव सिव जपत सुजान।
सिव प्रताप[10] तिन कौं सदा सिवपद लहै निदान[11] ॥४२१॥

पाठान्तर—१ मिल्यो २ मोचन ३ लो ४ पाइ ५ लिप ६ लली ७ वारत ८, सेवक ९, सिवराज १०, प्रापत ११ सुजान।

संत सनेही स्याम के प्रेम सने ही होत।
निसनेही संसार सौं उर जिहि ग्यान उदोत ॥४२२॥

दंत देष[1] छबि लषि षगी रति मुकुंद हिय माँहि।
कुंदन सरभरि करि सकै कुंदन सरभर नाँहि ॥४२३॥

बिसम नयन के ध्यान तै होत समन दुखदंद।
जान देबता समन कोउ[2] हरत समन के फंद ॥४२४॥

परबत सुनि सुनि जात है परब परब को न्हान।
परबत धर क्यों[3] लषि कहौ परबस परिहै प्रान ॥४२५॥

गन कासी पावन पुरी तारन कासीनाथ।
गनका सी बिचरत मुकति कासीबासी साथ ॥४२६॥

सीतापति काहि न भजति काहि भजत सी ताप।
ताके भजन प्रताप तै भजत ताप[4] संताप ॥४२७॥

आनन उनई अरु नई जनु अरुनई प्रभात।
उरज अरुन जोबन लग्यो[5] भई अरु नई बात ॥४२८॥

जैसै कौपर तरुनई होत अरुनई साँझ।
तैसै तन मै तरुनई तरुन तरुन ई साँझ ॥४२९॥

बिछुरत नंदकुमार कै परी मार पर मार।
मार मारगन की करत करी सुमार सुमार ॥४३०॥

किती सुमार सुमार की आवत नाँहि सुमार।
मार मार कौं भजि कितक बाँची नंद कुमार ॥४३१॥

जोर तहाँ ही चलत है जोरत है जिय माँहि।
जोरत ही कैसै बनत जे रति जोरत नाँहि ॥४३२॥

कोमल अधर प्रबाल से अरु प्रबाल से रंग।
ए गुपाल सुष पाइ हौ या प्रबाल के संग ॥४३३॥

हा हा-सी बानी मधुर सुचि हाँसी मुष माँहि।
हा हा सीतल करत है तेरी हाँसी नाँहि ॥४३४॥

पाठान्तर—१. देह २. कौ ३. कौं ४. पाप ५. लग्यो।

सुष सौंबा सी बिध रची तन दीबा सी लोइ।
वा-सी बाही जानियै वा-सी और न कोइ ॥४३५॥

अंत रहित की बात सौं अंतर हित नही रंच[1]।
अंतर रहत न नैक हौं अंतरहित सुष चंद[2] ॥४३६॥

अरी उदबसाई सबै तिय हिय साई पीय।
सुमन बसाई राधिका स्याँम बसाई हीय ॥४३७॥

अमल कमल सी राधिका बिछुरै मिलै सुभाइ।
होत कमल सीमाहि सी होत कमल सीमाहि ॥४३८॥

उत रत री रतरी तरस उत रत नंदकुमार।
बैठ तरी उतरी सबै उतरी जमुनाँ पार ॥४३९॥

उतरे नाहिन जनम कौ उतरे सिब दरबार।
तरे न कबहूँ जात जन तरे समुद संसार ॥४४०॥

जात पाँत की कलपना जहाँ जात ही जात।
खात जात हैं खात हैं जात जात पै भात ॥४४१॥

लीय रस कोरा चद कौ ऐसो मधुर सबाद।
ए रस कोरा साँच ही रस कोरा परसाद ॥४४२॥

नाथ कृपा तै पाइयै बरनाबरन बिचार।
छूटत[3] बरनाबरन कौ बरनाबरन बिचार ॥४४३॥

लेत परसपर हाथ तै बिबिध कवल कौ सबाद।
देत कमल मैं कमल जनु कमला कौ परसाद ॥४४४॥

महिमा महाप्रसाद की प्रभु प्रसाद तै जान।
पावत ही पावत सबै ग्यानबान कौ ग्यान ॥४४५॥

स्री पुरुसोत्तम षेत कौं दरसै परसै कोइ।
दरसै भासै[4] जगत कौं है पुरसोत्तम सोइ ॥४४६॥

करी कलंकित लक कौ वीर कलकित धीर।
हन्यो कलकत लकपति अकलकित रघुवीर ॥४४७॥

पाठान्तर—१ अंच २ सच ३ छूटन ४ भावै।

कोइल सी कुहकै मधुर कोइल सी यह बाम।
कोइ लमैं बहु पुन्य जुत कोई लहै यह बाम ॥४४८॥

उनमन काहे रहत हौ उनमन मोहन कौन।
पाबन मन करिकै मिलौ पाबन मन सुष पीन ॥४४९॥

दई जोग तैं आनि कै उदई पूरब प्रीत।
मुदई छिन तैं लषि करी स्याम दई रस रीत ॥४५०॥

जुदई गनि मत स्याम सौं जु दई दाम सु लेहु।
उदई प्रीत बिचारत न मुद ई छिन लषि जेहु ॥४५१॥

गइयाँ दोहन कौं षरकि गइयाँ जे जे बाम।
सँग लगई यातैं सबै अंग लगइयाँ स्याम ॥४५२॥

धौरी कारी धूवरी धौरी कारी गाय।
उधहौ रीझ कहाँ गई बिसरी ढोरी लाय ॥४५३॥

गोरी गाइ बुलाइ ली मोहन गोरी गाइ।
गोरी बात भुलाइ कै गोरी ढोरी लाइ ॥४५४॥

अंबर चंदन चित्र कीय अंबर पीरे गात।
अंब रसीले लाल बन अब रसीले षात ॥४५५॥

काहि[1] कूपतै बैठि कै अंब रसीले पीउ।
या बारी तै लीजियै अंब रसीले पीउ ॥४५६॥

बारी रहत न जात हैं बारी क्यौं उकताहु।
बारी बारी स्याम पै बारी बारी जाहु ॥४५७॥

बारत हौ लै जाइहै नंदकुबार भुलाइ।
अरी रसीले बार मै बार बार मत जाइ ॥४५८॥

यहई प्रीत उपाउ री सुष पाउ री गवारि।
झारि[2] पाउरी स्याम के धरि पाउरी सुधारि ॥४५९॥

बचन तजत कुबचन कहत[3] बचन निबाहत बाम।
सुनि मुरली धुन बचन कौ बचन न पावत धाम ॥४६०॥

पाठान्तर—१. काठ २. कारि ३. सहत।

चुपरि अतर सन[1] अगर कौं अँगिया ढपे उरोज।
सुर तरसत तन[2] परस कों करसत मनहि मनोज ॥४६१॥
दस सत करतै भूमि कौं रस करसत है भान।
दस दस सतगुन फेर कै रस बरसत भगवान ॥४६२॥
जाने जाने भोर बन यह जु भौर बन चाल।
आएहौ तजि भौर बन मोहि भौरव न लाल ॥४६३॥

सोरठा

लग्यो महावर लाल[3] लगे महा उर जान पिया।
बिन गुन कहा उर माल कहौ कहाउ रह्यौ कहा ॥४६४॥

दोहा

जहाँ गुंजरत भौंर तिहीं भए कुंज रत लाल।
राषी गोपन कौं जरत हियैं गुंज रत माल ॥४६५॥
जाके अनगन गुन गनै अनगन भूषन नाहि।
अनगन मै अन गगन मै अनगन कर हिय माहि ॥४६६॥
कोदंडी दंडी जिते होत अदंडी भाइ।
कासी मान बिमान के जात बिमान बसाइ ॥४६७॥
है श्रीकासी सिबपुरी है सिबपुरी प्रकास।
सेबत सिबपुर पाइयै कै सिबपुर मै बास ॥४६८॥
उदधि माह कासीपुरी कासीपुरी समान।
जामैं मुकता देषियै मुकता प्रगट अमान ॥४६९॥
गोबरबारी गोरटी गोबर नैकु निहारि।
गोबरधन-धर बसि कियो गोबर बारी ग्वारि ॥४७०॥
मेरी कान्ह निसा करी नैक साँ करी नाहि।
मिलन साँक री कुंज की गरी साँकरी माहि ॥४७१॥
पहरी सारी सोसनी बिरह सोसनी बाम।
स्याम नेह सौं सोसनी हिय[4] पोसनी सकाम ॥४७२॥

पाठान्तर—१. सत २. है ३. भाल ४ हित।

बिरह पीर पीरी परी पीरी प्यारी बाम।
पी-री पी-री जक लगी पीर परीकर स्याम ॥४७३॥

पहरी तन सारी हरी गहरी गहरी बाँह।
हरी हरी द्रुम डार तहाँ मिले दुपहरी माँह ॥४७४॥

सबके धुर धारी धरनि धरी धरम धुर धीर।
सिधु रतन गुन के दई सिंधुर गति बलबीर ॥४७५॥

बसुधा री सोहित करी[1] रस बसुधारी स्याम।
तैं बसुधारी प्रीत करि बोल सुधारी बाम ॥४७६॥

फागुन षेलत पीय सँग फागु न सकुचै कोइ।
फगबा लीजै फेंट गहि नेह न फागुन होइ ॥४७७॥

भरत माट केसर सलिल भरत न छबि तजि संक।
भरत परसपर रंग सों भरत परसपर अंक ॥४७८॥

तन सिंगार उदगार हित अनंगारि कुच पुंज।
गनरि घोर भर लाल कौं देत गारि[2] कल कुंज ॥४७९॥

दृग अंजन दै राधिका मनरंजन रसलीन।
कहत निरंजन बेद तिहि अंजन रंजन[3] कौन ॥४८०॥

जोरत जुबति गुपाल सौ भरत जोर रँग चोल।
जोरत नैन चुराइ[4] चित जोरत गाँठ निचोल ॥४८१॥

परवेसन करीयै नही परवेसन मै पीय।
परवेसन की नागरी करि लैहै बस हीय[5] ॥४८२॥

बरजोरी चाहत कीयो बर जोरी हिय[6] प्रीत।
बर जोरी प्रीत न जुरत बर जोरी यह रीत ॥४८३॥

ऐपनबारी आड़की पनबारी परबीन।
बन बारी मै[7] घेरि कै बनबारी बस कौन ॥४८४॥

पाठान्तर—१. वसुधारी सौ हित करी २ गाल ३. रंजित ४. चुकाय ५. बहि जीय ६. हित ७. पनबारी मैं।

पन्नगारि[1] सेबत सदा पूजत[2] पायन गारि।
ताहि न गारि छुबाइयैं दीजै ग्बारिन गारि ॥४८५॥

री कृसोदरी राधि के सुर सोदरी सुबान।
ठाढ़ौ स्याम जसोदरी मिलहु मोदरी मान ॥४८६॥

बाद करत क्यौ[3] बात कौं करत बादरी नाहि।
पिय सौं मिलै सबाद री झरी[4] बादरी माहि ॥४८७॥

तोपर बारी हरि सबै पर बारी जग माहि।
पर बारी से अधर की तू परबारी नाहि ॥४८८॥

भरियै रंग पतंग सौं करियै रँग सषि साषि।
पीजै री रँग प्रेम को लीजै री रँग राषि ॥४८९॥

लोक रती मुष मेलि[5] कै लोक रती न बिचार।
कोक रती जु न होत तो को करती मनुहार ॥४९०॥

स्याम सुधरती बात ज्यो[6] धरती तिय जिय चौंप।
हौं करती[7] मनुहार तौ करती करती सौंप ॥४९१॥

हरि राधा हौं ए कही तोहि एक ही चाल[8]।
एक हीन सो भरत नही एक हीन ज्यों ताल ॥४९२॥

रस बिनोद परसत उरज करत परसपर देत।
रस परबस मन होत है बढत परसपर हेत ॥४९३॥

बहसि बहसि हिल मिल करी करत सराह सिहात।
हस हस दंपति करत है रहस रहस की बात ॥४९४॥

कल हारी कोइल कुहुकि बिरहा री दुष दीन।
बलिहारी पिय स्याम सौं हारी मेल प्रबीन ॥४९५॥

पचि हारी समुझाइ कै हा-री हा-री कीन।
हौं हारो तेरी बिजै मिलौ बिहारी लीन ॥४९६॥

पाठान्तर—१ पनगारी २ -पुजत ३. हैं ४ इसी ५ मलन ६ जो
७. हु करती ८. वाल।

बात बताबत[1] जोत की हियें बताबत स्याम।
उधो एताबत कहौ बेताबत है काम ॥४९७॥

चित दे स्याम बुलाइयै[2] ते भुलाइयै नाहि।
लै बलाइयै[3] काम कौ यह बलाइयै[4] नाहि ॥४९८॥

चित चलाइयै मिलन कौं चित चलाइयै नाहि।
बिचलाइयै न हेत हिय बि चलाइयै सुठाँहि[5] ॥४९९॥

मन मत लीजै और कौ मनमत कीजै नाहि।
पी उनमत तु हूजियै मन उनमत मन माहि ॥५००॥

नाहि पिसुन बल कहत है सुनबत है नँदलाल।
सुन बत मेरी जाइ मिलि सुनबत हौं तोहि बाल ॥५०१॥

फी के तेरे अधर कत धर धर धरकत हीय।
एते पर निधरक फिरत इधर उधर कत तीय ॥५०२॥

बसन कीये कासीपुरी मोह बस न मन होइ।
सिब सनमुष नित ही रहत बसन हीन तन सोइ ॥५०३॥

घाट घाट संघट्ट घट सुबरन घटित सुघाट।
जन घट घट के बदन तै सिब सिब सिब उदघाट ॥५०४॥

अघट सुघट सिब संत कै घट घट माहि प्रकास।
ज्यौ अघटित ब्यापत[6] सदा घट घट माहि अकास ॥५०५॥

सिब सौं बसन बनाय कछु लैहै बसन बसाइ।
बसे बसे कासी बहुरि बसन न करिहै आइ ॥५०६॥

बासी कासी सिबपुरी सिब समान ही जान।
कासी कासी सिब कहत सिब सिब कासीबान ॥५०७॥

सिद्धि सुबेनी सुंदरी न्हात त्रिवेनी प्रात।
मोह उदधि तै मीन मन गहत कुबैनी ध्यात ॥५०८॥

ऐनी नैनी की बनी बेनी सुमन समेत।
ज्यौं ब्रजमंडल मै जमुन बेनी सुमन समेत ॥५०९॥

पाठान्तर—१. बनावत २-३-४. भुलाइयै ५. सुठाम ६. ब्यापक।

बीर होइ रघुबीर ज्यौं धन पर हरै न कोइ।
चतुर चोर लकेस ज्यौं धन परहरै न कोइ ॥५१०॥

कलि मै दाता करन ज्यौं धन पर हरै न कोइ।
चतुर षापरा चोर ज्यौं धन परहरै न कोइ ॥५११॥

राबन की मति जानकी कुल लजान की रीत।
महाजान की जानकी तिय लीनी जु अनीत ॥५१२॥

मधु माधब के मास मै मधु माधव के रंग।
राधा माधब सँग रहत उमा उमाधव संग ॥५१३॥

तोहि न चाबत हाथ मै मुष लगाइ रस पागि।
ताहि नचाबत राधिका मुह लगाइ मुह लागि ॥५१४॥

तू मोहन के लाग मुष राधा दई बुलाइ।
राधा हरि मुह लागि कै दई सबै उकसाइ ॥५१५॥

तपत सलाका लोह की सुर कीने ताहि छेद।
स्रवन सलाका हुइ लगै सुर निकसे सुर भेद ॥५१६॥

लगी रहत सबकन सुबन लगी रहत सब गैल।
अलगी रहत न स्याम सौं बात लगी ब्रज फैल ॥५१७॥

लगी जात छुटि जब लगन लगत न मिलन बनाव।
लगी जात जब हाथ तै लगत न तट सौ नाव ॥५१८॥

नेहन हेरी स्याम तुव अरी न हेरी संग।
काम अहेरी तोहि तब हेरी हेरि निषग ॥५१९॥

बैसाषी साषी सबै साषी कहत न राषि।
बैसाषी कहिहैं सबै सब ब्रज सुष की साषि ॥५२०॥

जहाँ पाउ धारे तहाँ सत उधारे स्याम।
ज्यौं चहै त्यौं देत ज्यौं लिये उधारे दाम ॥५२१॥

जा करनी सौं हरि मिलै करनी करनी सोइ।
गेह राज के काज सब करनी बिना न होइ ॥५२२॥

धरनी कै बिद्या पढ़ै उधर नींद कौ षोइ।
करत उधरनी घोष सत धरनीधर से होइ ॥५२३॥

चलत छाँड़ कुल लीक कौं ताकौ लगै अलीक।
अली कहौ निबहै[1] कहौ जौ रथ चलै अलीक ॥५२४॥

बेर बेर लै ओपनी ओपन करै जु कोइ।
राधे तुव तन ओप सम कुंदन ओपन होइ ॥५२५॥

निरबिद्या लहै रहै अबिद्या खोइ।
कृपा महाबिद्यान कै[2] बिद्याधर से होइ ॥५२६॥

परपारी[3] कोइल कुहकि बटपारी दुष दीन।
क्यौं आपारी राषियै कृस्न कृपा बिहीन ॥५२७॥

होरी होरी करि सबै होरी षेलत फाग।
होरी झकझोरी पिया झौरी भरी पराग ॥५२८॥

उपरी झाँष झरोष मग परी न सषि ही साथ।
रूप परी सी राधिका परी लाल के हाथ ॥५२९॥

हरबर बरूत कृस्न पिय रुकमनि हरिबर आइ।
हरबर बारी अंबिका पूजी हरिबर पाइ ॥५३०॥

इक मुहचंग बजावही एक बजावत चंग।
चाचर[4] चंग मचावही ब्रजबाला हरि संग ॥५३१॥

चकी चकी चित चितइतैं उचको उर आनंद।
बात कहत सषी सौं कहूँ[5] उदित उदधि सुत चंद ॥५३२॥

पिय न साच की बाच की उचको औधि सुछंद।
चकी चकी ज्यौं लषि चकी गति पिसाच की चद ॥५३३॥

चुपरी चुपरी रीझे ललन चुपरी अँगिया चाह।
नेह चिक नई छाँड़ कै करी चिकनई नाह ॥५३४॥

सोरह सै दस सुंदरी जुत सोरह सिंगार।
सो रहसै बहसै हसै नंद किसोर उदार ॥५३५॥

पाठान्तर—१. निवहत २ कृपा महा विद्या वारै ३. पर बारी ४. चावर ५. सषि साँच की।

कर कर सोर हसै कहा नद किसोर निहार।
सो रहसै करीयै नही जोर हसै संसार ॥५३६॥

न करि निरादर बर भरी करि आदर बर बाम।
दरबर कंठ लगाइयै[1] सुंदर बर घनस्याम ॥५३७॥

आज दिबारी रंग है रात दिबारी भात।
षेल जुबारी पीय सौं बारी सारी रात ॥५३८॥

लाल रसद रद छद बिषै स-दरद छत पिय दीन।
राधे सदरद सब करी सौतै सदरद कीन ॥५३९॥

रग भरी अरु रस भरी भरी सुभाग सुहाग।
हरि मुरली राधा धरी भरी राग अनुराग ॥५४०॥

बंस रोस राधा तज्यौ बैन बस कौ साथ।
बस बैन नाहिन तज्यौ क्यौं न तजै[2] हरि हाथ ॥५४१॥

जौ छाँड़ै कुल लाज कौ ताकौ लागै लाज।
लाज छांड़बे कौं कहौ नाहिन बनत इलाज ॥५४२॥

कुल की लीक न छोड़ियै छाँड़ै लगै अलीक।
दई भीख तज लीक कौ लगी सीत कौ लीक ॥५४३॥

पग न धरत मग फूक कै पगन धरत है चूक।
प्रेम पगन[3] कौ राधिका राषी उपगन कूक ॥५४४॥

पाइ पाइ ब्रज सुंदरी जाइ परत है पाइ।
पाइ पियत रस गोपिकन पूरन ब्रह्म कहाइ ॥५४५॥

बरजो नाहि न रहत तू बर जीतै बन जात।
तोकौं घर बर तजन की नाहि बिबरजी बात ॥५४६॥

ताकी सोभा लोक मै ताही को सौभाग।
जो भाषै हरि नाम कौ सो भाषै बड़भाग ॥५४७॥

दिबरानी सी उठ चली दिबरानी के साथ।
बौरानी हौ राधिका रानी हित की गाय[4] ॥५४८॥

पाठान्तर—१ लगाय लै २ चढै ३. मगन ४. माथ।

रूपमंजरी सन करहु रूप मंजरी तीय।
रूपमंजरी पास चलिबे ठाढ़े है पीय ॥५४६॥

हार[1] नाग पुन्नाग कौ नटनागर के हीय।
तैसै नागन गेसहू हार होए परकीय ॥५५०॥

ब्रज की गरी गरीन मै नव नागरी अनूप।
सगरी छबिगुन आगरी सुषसागरी सरूप ॥५५१॥

भगत भाव करि हरि भजै भगत अभाव अहेत।
सु-भगति जन की जानि कै सॉई सुभ गति देत ॥५५२॥

स्रीपति संतत सेइयै स्रीपत संतत दैन।
तीन लोक के लोकपति लोक जपत दिन रैन ॥५५३॥

न्हात बरुन मै ते हरै षोल बसन के पास।
नँद ली आए[2] नंद के नंद बरुन के पास ॥५५४॥

सुभ रज स्री ब्रज भूम की सुभर जहाँ आनंद।
बन बिचरत गोपीन सँग बिचरत जहाँ नँदनंद ॥५५५॥

ब्रज रज परम पुनीत है ब्रजरज अंग लगाइ।
ब्रज रज हरि कै लेत है ब्रजपति अंग लगाइ ॥५५६॥

परम पुरुष पद पदम कौ ब्रज रज परम पगार।
होत परस ही स्याम सौ अरस परस अनुराग ॥५५७॥

नाहि कौन के अंगना गए अंगना बेस।
ऐसी कौन जु अंगना कियौ अंगना पेस ॥५५८॥

नाकी नफरी करत है धरत पिनाकी ध्यान।
दास जना की जहाँ तहाँ करुना की भगवान ॥५५६॥

आन रतन छिन होहु जन हरि गुन रत न बिसार।
करत न काहे सफल भव उत्तम नर तन धार ॥५६०॥

जन जन मन राषत फिरत अजनम करत बिसार।
जन मन राषि गोपाल सौ लेत न जनम सुधार ॥५६१॥

पाठान्तर—१. हीरे २. नदलि आए।

संपूरन सब गुननि ते पूरन ब्रह्म प्रकास।
लोकन पूरन लौं सदा परिपूरन जग आस ॥५६२॥

भूल जात हैं बेषवर सघन बेष बर नाम।
असन बेष बर की तऊ लेत षवर हैं स्याम ॥५६३॥

आठौं जाम न हरि भजं जग जाम न प्रभु सोइ।
हौं जामन या बात कौ फिर जाम न जो होइ ॥५६४॥

लियै जामनी नेह की नीठ जामनी आइ।
ता तजि[1] हरि मो जामनी कहौं जामनी न जाइ ॥५६५॥

नाम मुकति सोपान चढि करहु प्रेम रस पान।
खान पान परिधान की सुधि लैहै भगवान ॥५६६॥

भरी रसबती ऊषलौं सरस सरबती बाल।
करत रसबती सौं करत रस बतियाँ नँदलाल ॥५६७॥

कहौं अपरस कहौ परस कुच कहौं कर परस गात।
अरस परस अनुराग की करत परसपर बात ॥५६८॥

अरस परस ह्वै स्याम घन अरस परस मन कौन।
अरस परस हरि राधिका भए परसपर लीन ॥५६९॥

उदधि प्रबेस पतग कौ तरु कोटरनि पतग।
घर घर प्रगट पतंग रिपु जुब जन अग अनग ॥५७०॥

काम कलपतरु स्याम हैं काम कलपत न स्याम।
काहे कलपत बाम तू स्याम कलप[2] भजि बाम ॥५७१॥

रैंन कहाॅ नीके रहे कहौ क हानी स्याम।
कौन क हानी कुलवधू गोकुल कुलटा नाम ॥५७२॥

लाल पीक है गाल पर तुम्हे पी कहै कौन।
तुम अलीक तहकीक हौ होत कीक प्रति भौन ॥५७३॥

क्यौ पल पी कहियै न हरि[3] पी कहियै परबीन।
जलज रक्त चदन जजै हर पर चंद नबीन ॥५७४॥

पाठान्तर—१. तातहि २. तलप ३. पलकी कहि सैन हरि।

परे षरे पनघट तिय न चितवत परे निसंक।
षरे करे उषरे हियै नष रेषन के अंक ।।५७५।।

घटबारी दधि दूध के पनघट बारी दार।
घटबारी पै लेत है घटबारी घटबार ।।५७६।।

दधि घृत घटबारीन पै माँगत दान मुरार।
घटबारे कौ देत है[1] घटबारी घट बार ।।५७७।।

आसा आसा तू फिर्यौ धर धन आसा काम।
आसा पूरन हरि भजौ हरि आसा बिस्राम ।।५७८।।

पहरी बास आसाबरी आसाबरी अलाप।
पिया ती आसा है बरी आसा पूरन आप ।।५७९।।

कुंज गलिन के बीच री सहज स्याम मिलि जाँहि।
बीच पारि है नीच कोउ बीच पारियै नाहि ।।५८०।।

कंजन के सोतै मिली केसौ तै बिथुराइ।
केसौ तै दुमनो किए के सौतै उकसाइ ।।५८१।।

कहूँ देत गजराज कौ कहूँ देत गज राज।
देत देत मुक्त ब्रजिराज कौ कहूँ मुक्त ब्रजराज ।।५८२।।

भर माया के मोह मै भरमाया संसार।
आन रमाया मोह मै प्रभु माया संसार ।।५८३।।

कंद मूल कोउ खात है कंदमूल कोउ खात।
कंद मूल सुख जगत कौ भजत मूल मनु प्रात ।।५८४।।

षटरस षाँडे राधिका षटरस बन किय धाम।
यह रजनी घनस्याम की मिलौ न क्यूँ घनस्याम ।।५८५।।

परम निरंजनी रंजनी यह निरंजनी जोति।
नैन निरजन अंजनी राधा जनी बहोत ।।५८६।।

मै जानी जानी जगत जातन जानी जात।
राधे तू नित जात है जात न जानी जात ।।५८७।।

पाठान्तर—१. देवता।

स्रवन होत मुख तें बचन स्रवन परत जब आन।
हरि दूषत है ऊषरस और पियूष मिठान ॥५८८॥

कोकहि बीतत निसदिसा को कहि सकै बनाइ।
बार पार सरस रित के आबत जात बिहाइ ॥५८९॥

महा क्रूर अक्रूर है तासो कहत अकूर।
ब्रज जीवन दुष दै गयौ लै गयौ जीवन मूर ॥५९०॥

ब्रज के सब लोकन करी अबलोकन कौं भीर।
कस पछारयौ केस गहि केसब बीर सधीर ॥५९१॥

रग भंग किय कस कौ मारयौ मत मतग।
नँद नदन अद्भुत कियौ रगभूमि मै रग ॥५९२॥

प्रथम कियौ सजोग सुष बहुरौ दियौ बियोग।
अब अजोग ऊधो सषा हमै सिषाबत जोग ॥५९३॥

जोग जोग जोगीन कौ हम सुबिजोगी लोग।
हमकि जोग संजोग है जोग नहीं हम जोग ॥५९४॥

राष कूबरी काष मै साधत जोग प्रजोग।
हमहि कूबरी भेजियो तोरि जोरिहैं जोग ॥५९५॥

उनदोही गइयाँ षरकि दोही करौं अनेक।
उन दोही अषियाँ लषी उन दोही किय एक ॥५९६॥

कनक दोहनी हाथ है धेनु दोहनी काम।
देखत सूरत सोहनी काम दोहनी स्याम ॥५९७॥

देषत मूरत मोहनी सरनि मोहनी काम।
करी मोहनी डारि कै मोह नींद बस स्याम[1] ॥५९८॥

क्यौं हू किये दुरै नही बितई कहाँ दु रैन।
अबलौं छुटी न लालजू भाल लाल पदु रैन ॥५९९॥

अलकाबलि तेरे बदन है अलकाबलि जाउँ।
नैन जु अलि छबि ऐन है काम जु अलि तिहिं ठाँउँ ॥६००॥

ठान्तर—१ मोह नीर घनस्याम।

गजरथ बाहन पालकी होत बाह बेबाह।
जासौं कृपा गुपाल की बेपरवाह निबाह ॥६०१॥

कहौं बिभूत बिलास है कहौं बिभूत बिलास।
कहौ न बासन बास है कहौं नबासन बास ॥६०२॥

कहौं बिबाई पालषी कहौ पालषी पाइ।
एक न कृपा कृपाल की एकन कृपा सहाइ ॥६०३॥

कहौ गिर दरी साथरो कहौं सुंदरी साथ।
कहौ कनक है हाथ मैं कहौ कनक है हाथ ॥६०४॥

कहूँ काम हरिगुन कथन कहूँ काम के काम।
कहूँ काम धर बीर के कहूँ अकाम सकाम ॥६०५॥

जा जन कै मोहन ममत मोहन सर न लगाहि।
समता के रस सौ तृपत कोउ सम ताके नाहि ॥६०६॥

भगत जगत पति कौं भजै रहै जगत कै दास।
जे न जगत पति कौ भजै तिते जगत के दास ॥६०७॥

जे पंडब कुल हत भए कुलहत भए निदान।
कौंन होत प्रतिकूल जिहो सानुकूल भगबान ॥६०८॥

परी जाल उछली परै ज्यौं मछली जलहीन।
परी बिरह जंजाल मै स्याम छली त्यौं दीन ॥६०९॥

चढ़त जुबानी है चढ़ी बदन जु बानी जोर।
कहा जुबानी कहि कहौं जुबा जुनति की जोर ॥६१०॥

झाँष झराषै[1] स्याम तन एरी रोष निबारि।
तोहि सरोस निहार कै हमत परोसन नारि ॥६११॥

नित हरि संग जगी रहत जगी रहत है जोत।
पाई प्रेम जगी रहै सो तो उजगी होत ॥६१२॥

लागन देत न घटन कौ लंगर लागन देत।
नवलागन को नव कटक[2] लाग लाग कै लेत ॥६१३॥

पाठान्तर—१ झरोखन २ भगति।

एक तरुनि तजि राधिका एकत इत उत जात।
एकत लपकि न रहत है एकत मिल[1] दिन रात ॥६१४॥

हरि झगरौ कत करत हौ कत रोकत हौ गैल।
उतै भूल हूँ जाइहौ भूल जाइहौं फैल ॥६१५॥[2]

उलटी बेनी मै फिरचौ[3] उलट पुलट मन होत।
उलटी बैनी मै परचौ जोत न[4] पावत गोत ॥६१६॥

पीन थनी की नासिका पीन थनी की आहि।
मनमथ नीकी जान कै मन मथनी की ताहि ॥६१७॥

ऐसी देषी मेनका देष मैन का बान।
मैंन काय ह्वै जात हरि लाग मैंन का बान ॥६१८॥

गाबत गारि धमार मिलि काम जगाबत बाम।
रंग लगावत अंग सौं अंग लगाबत स्याम ॥६१९॥

गरी गरी मैं रँग भरी गगरी लीने हाथ।
मगरी रोकत स्याम कौ भरत उमग री साथ ॥६२०॥

जुगलत अमृत सु नित पियत लोचन जुगल चकोर।
जुग लग तृपति न पाबहीं लष मुष जुगल किसोर ॥६२१॥

सजल सघन घनस्याम छबि पीत बसन घन जोर।
निरषि निरषि घनस्याम मुष मुदित सुघन मन मोर ॥६२२॥

रबन बनज माला बनी बनी सुबन बनमाल।
बनमाली ब्रज मै बने बनमाली ब्रज माल ॥६२३॥

रति छबि हारी देषि कै प्रीत बिहारी अंग।
राधा छबि हारी मिली कुंज बिहारी संग ॥६२४॥

॥गुप्त यमक अतलापिका ॥

सदा सघन बन कुंज कौं हेर बिरह की पीर।
को गोपिन सँग प्रीत कौं कुंज बिहारी धीर ॥६२५॥

पाठान्तर—१. एक मिलन २ सर्वत्र हौ के स्थान पर है ३ वैजी मैं पर्‌यौ
४. ज्यो मन।

नटत न ज्यौ की त्यौ कहत नट नबली तिय संग।
न टरत अपने सील तै नटत नरी नबरंग ।।६२६।।

कंचन लोभ न मुनिन कौ कंचन काच समान।
लोचन लगे गोपाल सौं लोचन लगत न आन ।।६२७।।

राधे कृस्ना कृस्न कौं कृस्न करी जल माहि।
कृस्न कृस्न सौ पच्छ तै कहा कृस्न हौ नाहि ।।६२८।।

साधारन जिय[1] जान तू साधार न संसार।
मुरली जगत आधार कै है राधा आधार ।।६२९।।

घरबारी सौं रचि बिरचि पर घर बारी तीय।
पर घर बारी कौ भजै जे घर बारी जीय ।।६३०।।

है राधा हरि बल्लभा राधा बल्लभ सोइ।
दुहून प्रेम ही मै अधिक नाहि मही मैं कोइ ।।६३१।।

दास भाव प्रभु दास सौं सदा सुभाव सुसुद्ध।
जग सौं भाव उदास है जे हरि भाव प्रबुद्ध[2] ।।६३२।।

जाके हिरदै ग्यान है नहि अग्यान हिय माहि।
सो साधुन के ग्यान मै और ग्यान मैं नाहि ।।६३३।।

पंचभूत मै पाइयै जग प्रसूत[3] परबेसु।
पंच कहत सो साँच है पंचन मै परमेसु ।।६३४।।

पहिलै पंचीकरन कर परपंची मिल जाँहि।
इन पंचन कौ ले दए इन परपंचन माँहि ।।६३५।।

पंचभूत अदभूत ए पंचभूत घट माहि।
जाकौ लागै जाइकै ताकौ त्यागै नाहि ।।६३६।।

परपंची नारद कही बात बिपंची माहि।
जो न जात दिन कलह मै परै कल हमै नाहि ।।६३७।।

मै अपना इतबार दै ली राधे अपनाइ।
जैसे सीतल कीजियै तपत दूध अपनाइ ।।६३८।।

पाठान्तर—१. जिन २. प्रसिद्ध ३. प्रसून।

कुल मनि सुत मृदु षात मुष व्याकुल देष्यौ जाइ।
जो कुल[1] गोपी गोप तहाँ गोकुल देषे माइ ॥६३९॥

गोधे साथ अनाथ के किय इक साथ सनाथ।
करन सनाथ अनाथ के कबहु नाथ के नाथ ॥६४०॥

मोर पच्छ धर पच्छधर मोरपच्छ धर होइ।
जुगल पच्छ धर बदन छबि मो बिपच्छ धर सोइ ॥६४१॥

होइ असचित औगुननि संचित हरि गुन भेव।
चित चाहत है परम सुष संचित करि हरि सेब ॥६४२॥

जुगल पच्छ सित स्याम ससि जुगल पच्छ सित स्याम।
समन ब्रजन[2] ब्रज चंद के सम न चंद छबि धाम ॥६४३॥

चलत सदा कुल राह मैं छाँड और कुल राह।
छुबत न औगुन राह कौ काहि न होत सराह ॥६४४॥

नाही [नाहर नहर तै नाहक झपटत वाल।
नाह रहे पहरै सदा नेह सनाह रसाल ॥६४५॥

ससि तारन[3] जपत है तारा इन गुन धाम।
पाराइन करिहै अवस जप ताराइन[4] नाम ॥६४६॥

सदा मोद रहिबौ करै सदा मोद रस देत।
पावहु जस आमोद री कर दामोदर हेत ॥६४७॥

दानबारि तें सेट किय दान बार तें मान।
दानबारि के नाम पर क्यौं न बारियै प्रान ॥६४८॥

हर त्रिपुंडरी कर भजै पुंडरीक सो पूज।
तुंडरी कहा मति अघन पुंडरीक चष पूज[5] ॥६४९॥

दरपन सो निरमल हियो जीय मै दरप न लीन।
नहि दरपन कदरप सों मुनि कंदर पन लीन ॥६५०॥

चरन राषियै चित्त कौं चरन राषियै चित्त।
वन बन बिचरत संत कौं यह आचरन नित्त ॥६५१॥

पाठान्तर—१ गोकुल २. ब्रजिन ३ ताराइन ४ नाराइन ५ कूज।

उपबन माली कै रहौ[1] उपबन सुबन बिहार।
सुपबन सीतल सुरभि मृदु उपबन जमुना धार ।।६५२।।

बन बन जन सौ हिल मिलै उर बनजन के हार।
बन बन बातें प्रेम की बन बन चलहु सबार ।।६५३।।

उग्रसेन कंसहि हन्यो करि उग्रसेन प्रताप।
उग्रसेन कौ राज दिय उग्रसेन हरि आप ।।६५४।।

तू हरई करई कहति हरए करए बैन।
हर ए[2] हीय धारत नही हरए हरए है न ।।६५५।।

हरि बरराति रहे कहौं तपत न हिय सियरात।
मारी मदन अरात की अरी परी अररात ।।६५६।।

स्याम सुभग राषत हियै सुभगति कहियै सोइ।
सुभगत सु भगत पाइयै असुभ असुभ गति खोइ ।।६५७।।

कासी सेबन जोकरत सुर सरिता के तीर।
सुर सरि ताके होत है सुर सर ताके तीर ।।६५८।।

अरी मधुर बॉ मान तजि मिल मधुरिपु हस हास।
मधुर मधुर बानी गरजि' धुरबा चढ़े अकास ।।६५९।।

लाल चलावत रस कथा बाल चलाबत चित्त।
देष चलाबत छबि रची हीय चलाबत मित्त ।।६६०।।

सौदामनि की दुति दमक हिय दामन कौ भास।
हरि बिनु दामनि कौ लियौ कियौ[3] राधि के दास ।।६६१।।

तोहि रमावत जान कै स्याम रमावत रंग।
परमावत रति की करत उर मावत न उमंग ।।६६२।।

परमावधि आनंद की अवधपुरी अभिराम।
अवधन बदत उधार की निरबधि गुन जहॉ नाम ।।६६३।।

लेत यग्य बलि मुनिन पै सुर ताकै बलिहार।
बलिहारी तेरी त्रिबलि छल्यौ बल छिन[4] हार ।।६६४।।

पाठान्तर—१ सहै २ महर ३. सो ४ छलन।

अरी सुता वृषभान की सीत भान क्यों होइ।
मनन तपत वृषभान लौं सीत भान हरि सोइ ॥६६५॥

भरत बिस्व कौं और तैं भरत विस्व के काम।
तो ही कौ भरिहै वहै विस्वभर जिहि नाम ॥६६६॥

कदी न करियै दीनता दीनवधु पै जाइ।
दीनवधु पै कीजियै जो दीन दयाल कहाय ॥६६७॥

जोई अपराधी नहै सोई अपराधीन।
जाकी अपराधीन है कहियै सुपराधीन ॥६६८॥

जबै न जोवन बैन तन तबै न बैन समैन।
नैन सैन वस सेन मुष सग सैन मुष चैन ॥६६९॥

कहौ चकित चितवत कहा कित चित है वलि जाँउ।
इन अनचित हू चलत हौ अनुचित तजहु सुभाउ ॥६७०॥

वरजित तरजित हौं अरी वरजित तिनकौं जात।
बरजित सौं वर ना चलै यह वर लगत न वात ॥६७१॥

नगनन की यह तरजि है नगन करी पिय रात।
नगन गगन की जोत 'तै नगन न जानी जात ॥६७२॥

देषन दुतिया चद कौं मिली तिया व्रज माहि।
दुतिया के तन की दिपति ऐसी दुतिया नाहि ॥६७३॥

अति रन बारे जीबते जाने अति रन हार।
तारे तारनहार हरि तारन तारनहार ॥६७४॥

दृगन लषत जालीन मै हरि यह जल जालीन।
मनों परे जालीन मै मीन चपल गति लीन ॥६७५॥

तेरी बात चलाइ दी सौतिन हिय बिचलाइ।
सबै दई बिचलाइ हरि राधे हिब बिचलाइ ॥६७६॥

रतनारी अँखियाँ करी रतनारी लगि पीय।
तऊ करत नारी सखी अहौ अनारी पीय ॥६७७॥

हन अपरन कबहु न कीयौ हिय अपर न हम लीन।
तन अरपन की कहा चली सरबस अपरन कीन ॥६७८॥

बीर बहूटी सालीयै बीर बहूटी साथ।
बीर बहूटी सेबने महदी बिंदु सहाथ ॥६७९॥

मै बाकौ अबतर करी सीतल छिरकि गुलाब।
तै बातै अबतर करी यह कहि कौन हिसाब ॥६८०॥

तेरे गरजत बरस तै गरज सरत प्रति भौंन।
सरिता सरभर कीजियै तेरी सरभर कौंन ॥६८१॥

एरी अरत कहा इती सुरति करति किन फूल।
जो हरि उर उपजी अरत सुरत जाइहै भूल ॥६८२॥

निबरे जाके बोल बँध सबरे जानत नाहि।
बरजे जाइ हरि राधिका अरी बरेजा माहि ॥६८३॥

छली छबीली लाल कौ छिगुनी छला दिखाइ।
तबतै करत छलाब कै छाँड़[1] अरी बछलाइ ॥६८४॥

हम जनपत्री स्याम की जानत है कहा नाहि।
लिषी[2] जोग पत्री लगी[3] पत्री सी हिय माहि ॥६८५॥

हा हा रत हारत नही सुरत महारत बाल।
याके हार बिहार मै हा हा रमै री लाल ॥६८६॥

हुतौ मही मटकीन मैं दीयौ मही मै डार।
हम ही मै तऊ बरत है मोहन मदन मुरार ॥६८७॥

चंपकली सोभित भली चंप करन चित[4] बाम।
चंपक ली राधे मिलहु चंपक बन में स्याम ॥६८८॥

हार हार मै लाल है सुरत हार मै लाल।
हार हार मै लाल है हार लाल[5] मै लाल ॥६८९॥

बात घात तै टूट है ज्यौं तरुजर बलबान।
बात घात तै तोरिहौं त्यौं मानवती कौ मान ॥६९०॥

मातौ दुरद पछार कै लीने दुरद उषार।
करी कंस की दुरदसा मल्ल दुरद किय मार ॥६९१॥

पाठान्तर—१. छीद २ लषी ३. लिषी ४. व्रत ५. हार।

जपत पल छन स्याम कौ तप लच्छन जुत सोइ।
उपलच्छन ताकौं तजै अपलच्छन कौं खोइ ॥६९२॥

सोई सुमति सराहियै जा हिय जसुमति नंद।
जग पावत[1] जसु मति बिमल होत सु बसुमति बंद ॥६९३॥

हरि परहरि हिय राषियै परिहरि जग जंजाल।
परहरि कै पद पद्म पर परि पारियै गोपाल ॥६९४॥

पथर तिरे जिहि नाम ते इहि कथ[2] रत सब लोइ।
दसरथ सुत किन तारहै जो तिहि पथ रत होइ ॥६९५॥

जनमत ही जीवन दियौ जीनन को जग जीय।
हरि जनमत हरि हाथ सब जन मत सोचै हीय ॥६९६॥

भूल जात गति आपनी लष गोपिन गति लेत।
अगतिन के करि दूर हरि अगतिन कौं गति देत ॥६९७॥

दीन बिनती दीनपति सुनियै[3] परम प्रबीन।
हमसे अपराधीन कौं करियै अ-पराधीन ॥६९८॥

धर आसन आस न धरै बास न बासन तंत।
जोबन मै बन मै रहै[4] तापस ताप सहंत ॥६९९॥

परजन मनसा मै पग्यौ कहा भयौ जो कोइ।
जन मन साचै हरि जपै जनम न दूजै होइ ॥७००॥

उपमा रूप अनूप की बरनूँ कहा बिचार।
नख पद पदबी पाइहै नबपद पदबी नार ॥७०१॥

पानप सो सरसे रसे[5] सब सुष सरसे दैन।
कान्ह रस रसे राधिका सरसे तेरे नैन ॥७०२॥

कौन भबन तन जाइ कै करीर बन तन भेर।
मोहि कहै बनत न कछू रबी[6] सुबन तन हेर ॥७०३॥

वनबारी मै षेलती बनबारी सु निहार।
सारी बारी नारि पर सारी बारी नार ॥७०४॥

पाठान्तर—१ पावन २ पथ ३ मानहु ४ रमै ५ भरे ६ रही

तिरछी चितबन तें उतै चितै चितै हरि लीन।
चाहि रहै जिय चाहि कै इतै भए हरि लीन ॥७०५॥

पिया[1] रसीली संग जगि किया[2] आरसी गात।
फिर देखत है आरसी लगी आर सी बात ॥७०६॥

कीनी सुमना राधिका सुमना तै सुमनाइ।
हरि इह सुमना दाम ज्यौं राखौ हियै लगाइ ॥७०७॥

परनारी की प्रेम पगि पर नारी वह धार।
सो पर नारी राधिका परनारी सब बारि ॥७०८॥

हरि अबरज हरि से बदन हरि भब कौ हरि जान।
हरि बिचरत हरि मै सदा हरि से बरन बषान ॥७०९॥

सारँग तारचौ कर धरचौ सारँग मुष छबि जान।
जग प्रताप सारंग सौ भज मन सारँगपान ॥७१०॥

ज्यौं सुबरन के होत है भूषन भाँत अनेक।
त्यौं सु-बरन के अरथ बहु सबद होत है एक ॥७११॥

हरि चरित्र समझै भलै पावै नाही षेद।
सोई जमक दोहान कौ नीकै जानै भेद ॥७१२॥

गुन रस सुख[3] अमृत बरस बरस सुकल नभ मास।*
दूज सुकबि कबि वृंद ए दोहा किए प्रकास ॥७१३॥

आगर नागर नरन[4] कौ नगर मेडतै बास।
जमक सतसया कौ धर्‌यौ नाम सुवृंद बिलास ॥७१४॥

बहुर सतसया ए कहै सुनत होत मन मोद।
सरल अरथ ताके सबै[5] नाम सु वृंद बिनोद ॥७१५॥

पाठान्तर—१. किया २ पिया ३. मुख ४ नगर ५ अरथ गरथ ताके सरै

गूढार्थ—*. गुण=३, रस=६, सुख=७, अमृत=१।

११

सत्य सरूप रूपक

श्री महाराज राजसिंह को गुरा सुलतानी जंग समैं को ग्रन्थ रूपक सत्य सरूप

दोहा

सिध बुध दाता सारदा गनपति गुन भंडार।
सुभ कारज की सिद्धि कौं अखिल जगत आधार ॥१॥

जे प्रभु सौं अरु स्वामि सौं हेत धरत जिय माँहि।
ताको कबहू जगत मै होत पराजय नाँहि ॥२॥

जे प्रभु कौं अरु स्वामि कौं हित[1] चाहत नाँहि।
प्रगट पराजय होत हैं ताही को जग माँहि ॥३॥

प्रभु निज प्रीति पिछानि कै होय सहायक आय।
सुन गज अरु प्रहलाद की कैसी करी सहाय ॥४॥

करी बिजय गज की जहाँ ग्राह पराजय पाय।
भक्त काज अबतार हरि कहैं पुरान बताय ॥५॥

हरनाकुस प्रहलाद कौं केती दीनी त्रास।
दास त्रास हरि क्यौं सहैं भये नृसिंह प्रकास ॥६॥

पाठान्तर—१. हित चित चाहत नाँहि।

दुज मुख सुर दोखी जहाँ रावन जय पद लीन।
रॉम त दिन राखस हन्या भक्त वछल सुध कीन ।।७।।

भारथ पारथ सारथी भये जहाँ भगबान।
ताकी हरि कीनी फते पूरन प्रीति पिछान ।।८।।

हरि के जन जेते भये अरजुन आदि अनंत।
सुने पराक्रम तिनन ह्वै कोउ न पावत अंत ।।९।।

बिरद वहुत ब्रजराज के कापै बरने जाय।
सेस महेसऽरु सारदा तिनहूँ पार न पाय ।।१०।।

ज्यौ सहाय तिंहि जुग करी दास आपने पाय।
त्यौं ही इहि जुग अब भये राजसिह के भाय ।।११।।

हरि गुन के स्रोता जिते कहत सुकवि सो बैन।
कृस्न करी जिहि विधि कृपा कहौं स्रबन सुख दैन ।।१२।।

कवि-वचन

स्रोता सुनियै सुचित ह्वै जस प्रभु दास सुहाय।
गिरधर जिहि सिर पर धरयो सो फल कहूँ सुनाय ।।१३।।

कहैं वृंद कर जोर कैं पाय पूज वर पाय।
सरन उँबारै सेवकन वरनौं सुजस बनाय ।।१४।।

सूर वीर दाता सरस गुन निधि सील समुद्र।
मान नंद आनंद मय रिपु खंडन रन रुद्र ।।१५।।

साँच बाच जुधठिर सुपह भुजबल भीम समाँन।
अरजुन सों वानावली राजसिह राजाँन ।।१६।।

करन दान जैसो करन विक्रम विक्रम वीर।
मॉन तनय मानत जगत मानत नय जय धीर ।।१७।।

बरनत है जस षट वरन असरन सरन अनूप।
चरन चरन राखत सुचित विपति हरन हर रूप ।।१८।।

जोध जोध बंस जानियै रनमल सो रनमल्ल।
केहर के हर कुल कलस हर वल्लॉ हर बल्ल ।।१९।।

कवित्त

करन सो दाता परकाज को करन हार
करन पिता के भो समान भासमान हैं।
बिक्रम नरेस जैसो विक्रम विसेषियत
क्रिया श्री त्रिविक्रम की धीरज निधान हैं।।
वृंद कहैं देब देवराज जैसो नरदेव
बसुदेब मनि बासुदेब गुनगान हैं।
राज राज जैसो हैं बिराजमान मान नंद
महाराजा राजसिंह राजै राजदान हैं।।२०।।

छप्पय

गुन गंभीर बीराधि बीर पंडीर धीर महि।
मान नंद साहस समंद छबि चद वृंद कहि।।
राजहंस तप तेज हंस अवतंस तेज वर।
निधि निवास बासब बिलास जस बार भासकर।।
इक साह उथप्पिय छत्र हरकि इक साहि थपिय छत्रहि धरहि।
महाराज बहादर राजसिंह जो आरंभइ तं करहि।।२१।।

दोहा

सोभित लियैं कृपा-निकर कृपान कर बलबीर।
कलपे कल्पतरु कबिन कौं संगर धीर सधीर।।२२।।
भेटति है जंभारि ज्यौं जंभ अरिन के दंभ।
पतसाही कमठान कौं भर थंभन थिर थंभ।।२३।।

छप्पय

पातसाह दिल्लीस कोप दछिन पर किन्नो।
बीजपुर किय फते गोलकुंडा गढ लिन्नों।।
सिबा समापत भयो पकर संभा को मार्‌यो।
लिये बहुत गढ कोट समझि निज समय बिचार्‌यो।।
अवलिया साह अवरंग को आगम मति यह उप्पजिय।
होय न बिरोध यह जानि के कर बिबेक यह बात किय।।२४।।

पातसाह-वचन : दोहा

आजम कौं ऐसैं कह्यो दिल्ली के सिरताज।
देस दल्लि न तुमकों दयो इहाँ करो तुम राज ॥२५॥

आजम औरंग साह को हुकम न कियो प्रमान।
कछू न प्रत्युत्तर दियो मन मैं धर अभिमान ॥२६॥

बीजापुर की शाहिबी भागनगर को राज।
तहाँ कियो औरंग तब कामबगस सिरताज ॥२७॥

कामबकस कै यह कही कछु जिय समझहि साव।
बड़ि मजलस कर पुहचियो अपनी ठौर सिताब ॥२८॥

आजम भेज उजेन कौ हुकम कियो पतिसाह।
छोटी मजल मुकॉम कौं करते चलियो राह ॥२९॥

ले सूबा उजेन को आजम कियो प्रयान।
अवधि पाय अवरंग को पाछै छूटे प्रॉन ॥३०॥

भये गनीम के मुलक मै पातसाह परलोक।
साजी बाजी असदखॉ राखी साखी लोक ॥३१॥

जाहर करी न असदखाँ राखी बात दुराय।
आजम कौं दुय मजल तै लीनों फेर बुलाय ॥३२॥

संवत सतरै तेसटै सन इक्कावन जास।
असतंगत औरंग ससि अमा फालगुन मास ॥३३॥

वाका औरंग साह को सुनि कै मोजम साह।
उत्तर दिस तै उठि चले धरि दिल्ली की चाह ॥३४॥

हुते अहमदानगर मै आजम साह हजूर।
तखत रखत पतिसाह को लियो खजाना पूर ॥३५॥

तखत बैठि सिर छत्र धरि गज सिक्का ठहराय।
फेर दुहाई दच्छिन मै चल्यो निसान वजाय ॥३६॥

मरदाना आलम मरद असदखॉन रनधीर।
साहिव आलमगीर को वड़ो अमीर वजीर ॥३७॥

खबरदार सब बात मै संग लियो सिर ताज।
बुधि बल तें पतिसाह के किते सुधारे काज ॥३८॥

चौंपई

खाँन बहादर निसरत जग। जुलफिकार खाँ लीनो संग॥
छहैजारी मनसब जाको। प्रबल प्रताप दछिन मैं ताको ॥३९॥

कोप ओप जापर चढ़ि जावै। गढ़ गनीम कौं धूरि मिलावै॥
चिंजी फते जोरबर कीनी। चिंजीबर को दहसत दीनी ॥४०॥

जेइ गनीम के गाढे कोट। ते सब लिये खग्ग की चोट॥
जेइ गनीम मुहारें आवै। कै मारै कै ताहि भजावै ॥४१॥

दोहा

मुर्‌यो न कबहूं जग मै जुर्‌यो जहां तहाँ जंग।
जुलफिकार सिरदार कौं आजम लीनो संग ॥४२॥

दल पति दलपति दूसरो बुंदेला बल बंड।
दोर्‌यो सु बाकी मदत खल कीने खंड खंड ॥४३॥

रामसिह हाड़ा हठी सुत किसोर सिरदार।
लोहो लरि परि परि उठ्‌यो को जानै कै बार ॥४४॥

अमानुला खाँ ओ हठी चो हजारी उमराब।
सलेमान खाँ साहसी जानै जुध के दाब ॥४५॥

सगैलै खाँ आलम हठी भाई मुनिबर खाँन।
जग जुरे न मुरे कहों गाढ़े भरे गुमाँन ॥४६॥

केते मुगल पठान सँग ओर दच्छिनी ज्वान।
आजम लीने समझि कै करिबे कौं घमसाँन ॥४७॥

रिस करि मोजम ऊपरै क्या बाँधो समसेर।
सोटे की इक चोट सो करौं जंग मैं जेर ॥४८॥

कहिबै बचन गरूर के आजम चले अभीत।
साईं गरब प्रहार हैं यह समुझी न अनीत ॥४९॥

दिसि दिसि तै सब साहि सुत चले अकबराबाद ।
अपनी अपनी तरफ तै सबै कहावत ज्वाद ॥५०॥

पूरब दिसि तै प्रथम ही साहिब साहि अजीम ।
आइ पुहुँचे आगरै धरै भुजा बल भीम ॥५१॥

हुतो अकबराबाद मै मुकत्यारखाँ नवाव ।
माँन भंग ताको कियो तामै रही न ताब ॥५२॥

साहि बहादर साह की फेर सहर मै आन ।
गाढ़े साह अजीम जू सजे जुद्ध सामॉन ॥५३॥

आजम सुत गुजरात तै चल्यो आगरो लैन ।
सुन्यौं प्रताप अजीम कों बैठो जाय उजैन ॥५४॥

आजम कौं आयो सुन्यौं लंघि नरबदा सीम ।
कोप समोगर जाय कै डेरा किये अजीम ॥५५॥

साहिब साहि अजीम तब रिस कर भौंह चढ़ाय ।
धरि पोरस ऐसै कह्यो बीरत बचन सुनाँय ॥५६॥

साह अजीम-बचन : छप्पय

कहियै सोई बचन कहै सो निबहै सोई ।
मात पिता पछि के सुभाव पुरुषन मै होई ॥
आज तखत के काज साज दल आजम आयो ।
लोह छोह धरि लरों भयो मेरो मन भायो ॥
ज्यों रूप करी तैसी करों वाहि खग्ग अपछर बरी ।
या करों फते जैसै बिरचि औरंग साहि फते करी ॥५७॥

दोहा

राजसिंह महाराज सों ऐसै कह्यो अजीम ।
आया है सफ जंग का समै निकट अति भीम ॥५८॥

महाराज-वचन

साहिब साहि अजीम सों करी अरज महाराज ।
आजम सों लरि लैहिंगे सब पतसाही साज ॥५९॥

छप्पय

कहा भयो आजम्म दोरि दछिन तै आयो।
कहा भयो आजम्म प्रकर ल्हसकर लै धायो॥
कहा भयो आजम्म धूम धर अंबर धरिहैं।
कहा भयो आजम्म लोह छल बल करि लरिहैं॥
गज थट्ट वट्ट संघट्ट भट दवट दरेरा दैहिंगे।
साहिब अजीस इकबाल तै मार फते कर लैहिंगे॥६०॥

साहि अजीम-बचन : दोहा

आगे भी तुम बंस मै भले भये बरियाम।
फते करी पतिसाह की लस्करि करि संग्राम॥६१॥

भले हूजियो बीर बर है आजम सो कांम।
तुम भुजबल नै हम फते करिहै कर सग्राम॥६२॥

जानत है तुम सौं सदा कृपा करत हैं नाथ।
इहि 'सुलतानी जग' की फते तुम्हारै साथ॥६३॥

कवि वचन

नृपति जुधिष्ठिर की बिजै जैसै अरजुन हाथ।
अरजुन की हरि तै बिजै कहत जगत यह गाथ॥६४॥

साहि बहादर की फते ज्यो अजीम के साथ।
त्यो ही फते अजीम की त्यो गिरिधर के हाथ॥६५॥

एक पदारथ के जहाँ हैं अभिलाखी दोय।
आपस मै अति क्रोध बढि ह्वै बिरोध जुध होय॥६६॥

तैसै दिल्ली तषत की पतिसाही को चाह।
माजम आवत इत उमगि उतकों आजमसाह॥६७॥

छप्पय

चहूँ चक्क चलचलिय भूमि हलहलिय कटक भर।
उदधि सलिल उच्छलिय अट लट लिय गिरधर॥

सेस सकुचि सलसलिय पिछ कलमलिय कमठ कपि ।
दल दरेर दलमलिय धूरि नभ धसिय सूर ढपि ॥
चढ़ि चले भले सामान सों हिय दिल्लीधर हित धरै ।
आवत उत्तर दछिन तैं माजम आजम आगरै ॥६८॥

बलित बिबिध बाहनी खग्ग पानिप गाहर भर ।
गज तुरंग उमराव नक्र चक्रादि भयंकर ॥
कोप लहरि बाड़ब प्रताप अति देत दरेरा ।
बाजि गाजि दुंदुभी कौन करि सकै निबेरा ॥
आजम-समुद्र उलंघो अबनि दछिन दिसि तैं आगबन ।
माजम-अगस्त अति कोप करि करहि तत छिन आचमन ॥६९॥

मिले रत्तमुख मुगल भूरि पठनेटे भूरे ।
मिले सेत किलमाक स्याह हबसी रन सूरे ॥
बीर कमध चहुबॉन गोर हाड़े कछबाहे ।
धरै धोप दच्छिनी चिल बुंदेले चाहे ॥
सन्नाह बाह आयुध सजे सूर तन्नतन अनुसरैं ।
रहक ले नाल आगैं किये आये दुहुँ दल आगरैं ॥७०॥

दोहा

माजम आजम सों कह्यो तुम दछिन पतिसाह ।
बहुरि लीजियो मालबो क्यों करिये गजगाह ॥७१॥
समर बिजय संदेह है समर परै लरि सूर ।
हार ज्ीत प्रभु हाथ है मत कीजियो गरूर ॥७२॥

आजम-बचन

ए कायर के कॉम है रिस छॉड़ै रस काज ।
ऐसे कैसै करि सकै राजा पुहुबी राज ॥७३॥
छिति बूंदै हय खुरन सो खग्ग धार धर धीर ।
बसु पूरन जो बसुमती ताहि भोगबै बीर ॥७४॥

छप्पय

अब तुम माजमसाह वचन मेरो सुनि लिज्जै ।
करि आये पतिसाह काम सोई किन किज्जै ॥

लरे साह औरंग लरो तिहि भाँति लराई।
देहैं जिसै खुदाय सोइ करिहै पतिसाई॥
मानूँ न सुलह कोऊ कहो लोह छोह धरिकै लरो।
कै चढ़ूँ तखत आजम कहै कै तखतो बिच तन धरों॥७५॥

कवि-वचन • दोहा

आजम माजमसाह को बचन न कियो प्रमाँन।
होनहार सुइ होत हैं कहा कोउ करै सयाँन॥७६॥

यह कहबत साँची भई राजनीति की रीति।
सब की समै बिनास कै होय बुद्धि बिपरीति॥७७॥

इततै उततै बुद्धि बल अंग जंग अगेज।
माजम आजम को कटक भयो चहैं मुँहमेज॥७८॥

दोऊ के ल्हसकर जबर दोऊ कै खग्ग जोर।
निहचै ताही की फते स्री गिरिधर जिहि ओर॥७९॥

छप्पय

कायर घर सभरिय सूर सुरलोक संभारिय।
कायर सुदर सुरति सूर अपछर रति धारिय॥
कायर परि मुख सेत अधर सुबिकय भय भग्गिय।
सूर चढ़िय मुख रग मूछ भौंहन सो लग्गिय॥
कायरन काय थर थर करिय धूँम देख धीर न धरहिं।
दुय कटक होत मुँहमेज तब सूरबीर निधरक लरहिं॥८०॥

सूर मोह परहरिय मोह अपछर उर धारिय।
सूर सस्त्र सन्नाह अग अपछर सिंगारिय॥
सूर चढिय केकान चढिय बिम्मान अपछर।
सूर बछि अपछरहि बछि अपछरनि सूर बर॥
बढि रोस बीर चित बिक्कसिय उर अपछर रति रस बढिय।
सग्राम भूमि पथ गगन पथ सूर अपछर संचरिय॥८१॥

सूर समर समुहीय भयसु कायर समूह घर।
सूर चित्त निधरक्क चित्त कायरनि धरक घर॥

सूर छछोहे हत्थ पाय छछोहे कायर[1]
सूर लज्ज संग्रहिय लज्ज तज्जिय कायर[1] ॥
भनि वृंद सूर भारथ भिरहि कायर रन भजि निस्सरहि ।
लरि सूर करहि षत्रबट प्रगट कायर षत्रबट बिस्सरहि ॥८२॥

सवैया

गौरि हसी बिहस्यो गवरी-पति नारद नाचि उठ्यो हितनातै ।
खेचर भूतर प्रेत पिसाच रु आपस माँझ करी मिल बातै ॥
आलम के दल कौं चलकै हरिहै करि बान कृपान कि घातै ।
मान तनै राजसिंह महीपति जीति है जुद्ध स्त्री नाथ कृपा तै ॥८३॥

दोहा

बा दिन थापन जुद्ध कौं माजम चढ़े सिकार ।
साजादे सब साथ लै ओर भले सिरदार ॥८४॥

साहिब साह अजीम जू सीधे अटक चलाय ।
जितै पेसखानाँ तितै चले निसाँन बजाय ॥८५॥

साहि चढ़े सुन कै भये महाराज असबार ।
मुजरा साहि अजीम को चितबत यहै बिचार ॥८६॥

पातिसाह सौं मिलन कौं एक ठौर पर आय ।
ठट्ट लियै ठाढ़े रहे सुधि कौं अनुग बढ़ाय ॥८७॥

बाजि छोड मुजरा कियो जिहि बिधि है दसतूर ।
निकट भये अति तखत कै स्त्रीपति साह हजूर ॥८८॥

पूछि तदि महाराज सौं स्याह आलम पतिसाह ।
आजम के संगी सुभट कहो तिनन की चाह ॥८९॥

सबहिं सुनत ऐसैं कह्यौ समुझि समय की रीत ।
माफ होय तकसीर उन ज्यों उपजै परतीत ॥९०॥
आलमगीरी सुभट जे लिखत अरज कर जोर ।
हम चाहत हजरत कदम ऐहैं, आजम छोर ॥९१॥

पाठान्तर—१. कायर छर

संग बदर का पाय कै आये हजरत पास।
करता अरु पतिसाह की एक जीय धर धर आस ॥९२॥

राजा को दीने तबै लिख राखे फरमॉन।
तखत रबाँ के बीच हे कर दीने सनमॉन ॥९३॥

दे फरमानहि यह कही पहुँचे उनके पास।
जुलफिकार खॉ रामसिह उन उपजै विसबास ॥९४॥

करि सलाम घोरै चढे निज सेना मै आय।
मिलियै अबै अजीम दल सुधि कौं सुभट पठाय ॥९५॥

आजम काबू पाय कै रचि पचि जुध ठहराय।
दोर पेसखानों उपरि परचौ अचानक आय ॥९६॥

अपनो दल पतिसाह दल लीनै आजम साह।
दछिन के सूबा सबै अरु दछिनी सिपाह ॥९७॥

ऐसी भारी फौज कर सकल जुद्ध सामॉन।
कोपि अराबा रोपि कै छोड़े बॉन कबाँन ॥९८।

साहिब साहि अजीम सौं खबरदार सुधि कीन।
आज पेसखानाँ उपरि आनि लराई लीन ॥९९॥

खबर भेजि पतिसाह सौं साहि अजीम सिरदार।
धस्यौ आपनी फौज लै भुज धर भारथ भार ॥१००॥

चढ़चो अजीम हरोल ह्वै आजम ऊपरि कोप।
रुप्यो अरावा रोपि कै अंगद ज्यौं पग रोप ॥१०१॥

छद नाराच

हरोल ह्वै अजीम साह किद्ध जुद्ध कोपि कै।
रहचो सुमेर ज्यौं सधीर वीर पाय रोपि कै॥
चलाय बॉन तोप कौं अमीर मीर हैं हनै।
मतग तुंग अंग भंग ते सुमार को गनै ॥१०२॥

कमान के छछोह बाँन जोर छोर कै हए।
सिपाह के सनाह देह भेद पार ह्वै गए॥

अजीम साह के सिपाह लोह छोह सौ लरै ।
अनेक सत्रु घूमि घूम रंग भूमि पै परै ।।१०३।।

दोहा

साहिब साह अजीम जू पठयो जो करबल्ल ।
कही बहादर साह सौ जुद्ध मच्यो दुहुँ दल्ल ।।१०४।।

करबल साह अजीम कै करी खबर बिन फेर ।
हजरत रन भूमै भभकि निकसे आजम सेर ।।१०५।।

छोह भरचो छल बल भरचो दल बल भरचो अपार ।
हजरत ऐसै सेर की कीजे आनि सिकार ।।१०६।।

उतकों आजम साह अरु साह अजीम इहि ओर ।
महा मत्त गजराज ज्यौं परी जोर अति घोर ।।१०७।।

वह मातो गज बृद्ध बय यह गज मत्त जुबान ।
निहचै फते अजीम की जानी इहि उनमान ।।१०८।।

आजम साह अजीम गज लरत भये चोदंत ।
सोर जोर दुहुँ ओर तै भभकत सोर अनंत ।।१०९।।

साह अजीम महाबली पिता भक्ति गह पूर ।
आजम कौं चाहै कियो तखत छत्र तै चूर ।।११०।।

पातिसाह तब उठि चले सुनी खबर तहकीक ।
महाराज ठाढ़े जहाँ निकसे आय नजीक ।।१११।।

खबर भई या फौज मै नृपति राजसिंह नाम ।
अपनी अपनी तरफ सौं सबन किये पैगाम ।।११२।।

हमकौं काम जरूर है है तुमही को सोय ।
इत आवो हम तुम सवै चलिये सामिल होय ।।११३।।

खातर मै ल्याये नही काहू के पैगाम ।
करी सितावी जान कै मुख स्वामी को काम ।।११४।।

छद भुजगी

लई बाग बीरं सुधीरं रठोरं।
बढो रेनु धुंध परचो चक्क सोरं।
बजे नाक बाज गजे गज्ज राज।
तहाँ सिंधुरं घुग्घरं घन्न राजं ॥११५॥

बजे बाज नीसान ओसान नद्द।
तहाँ नाद स्रोनं सु पूरं सुबद्दं।
बजी पाय बाजं खुर ताल ऐसी।
बज्जी कच्छ तार अपारं सु जैसी ॥११६॥

कटी सार बंधे सु सूरं सम्हारे।
फते हैं फते हैं सुभट्टं उचारे।
बढ़े एक एकं सु कीन गरट्टं।
भयो मुक्ख रंगं सुरत्तं जु थट्टं ॥११७॥

मंही आय कै एक दोरचो सु आगै।
कह्यो नृप्प राजं खगं याहि लागै।
तहाँ बीर बानैत को आय छूट्यो।
खग सूँ तिकट्टी रुघनाथ जूट्यो ॥११८॥

हन्यो खग्ग ऐसो अजैमाल पूतं।
करचो कंध के संध दूर सु छूटं।
करी म्यान चाँदा हरै ते गरत्तो।
रठोर सु ठोर लखी तेग तत्ती ॥११९॥

तहाँ यो पताका लगै पौंन बाजै।
मनो चंग भररा नभ सोभ साजै।
बनी गज्ज थट्टं सु मग्गं ढरारी।
जनूँ दादरी सा दुरी मेघ प्यारी ॥१२०॥

चढी सूँछ भोहैं सु बाहैं चढाई।
हुलस्से बिकस्से भटं सोभ पाई।
चितै चित्त दृड्ढ सु मुश्टं कृपानी।
जगी बीरता धीरता ज्यौं जुवानी ॥१२१॥

सजीले धजीले सनाहै सु पूरी।
तुरंगं सु अंगं सिलै सज्जि रूरी।
बने पक्खरं गज्ज नेजा चमक्कै।
सिरी सोभ साजै सुन्हैरी झमक्कै ॥१२२॥

करी सुंड जंझीर लीन्हे फिरावै।
चलै बेग ऐसं घनं सोभ पावै।
हहाँ हाँह बोले धरै सीस नाथं।
सबै बीर सामत बिद्या समाथं ॥१२३॥

घटा कौंच कारी मनौं मेघ भारी।
हुती ठोर दूरै सुनेरी निहारी।
जुट्यो है भतीजा तहाँ जोट काका।
इतै साह अज्जीम आजम्म पाका।
छुटै बान तोपं सगाग्गै सु गोला।
मनो मेघ बर्षा परे जान ओला ॥१२४॥

दोहा

अंतर जोजन को हुतो हय गय तेज चलाय।
मुजरा कियो अजीम कौं एक घरी मै आय ॥१२५॥

अपने कुल की लाज कौ स्वामि धरम के नेह।
राजा आये चाह पर आग लगी पर मेह ॥१२६॥

खूब करी आये भले रन दूलह राठौर।
अति आगै बायै कछू ठाढ़े रहो उहि ठौर ॥१२७॥

लरत भिरत जा ऊपरै भार परत जब आय।
ताहि कीजो मदत दीज्यो दुयन हटाय ॥१२८॥

राजसिंह कौ यह हुकम कीनौं साह अजीम।
हाथी ऊपर ह्वै खड़े नृपति करी तसलीम ॥१२९॥

करि प्रनाम स्रीनाथ कौ धरि उर अंतर ध्यॉन।
फुरमायो ता ठोर पर रहे ठाढ़े राजॉन ॥१३०॥

फिर गये मुँह गाढ़े बैरी बरिया बनके
रहि गयो शाह तारा नोबल बजावतो ॥
मुँह पर खाय मार मुरगो जुलफिकार
जग मैं बहादुरी को बिरद कहावतो ।
ह्वै ही गई हुती पातिसाही साह आजम की
आलम की भीर राजसिंह जो न आवतो ॥१४२॥

दोहा

उतकौ आजम साह कै जुलफिकार हरवल्ल ।
रामसिंह दलपति दुबौ ओर अमीर अटल्ल ॥१४३॥

इलै बहादर साह कै भुज अजीम जुध भार ।
अधिपति सार अजीम कै राजसिंह सिरदार ॥१४४॥

एक सिंह पारबर धरै अगन सहाई पौंन ।
राजा साथि अजीम कौं करै सरभरै कौंन ॥१४५॥

छद मोतीदाम

लियै गजराज मनूं गिरराज । सजै तरु झंगर पाखर साज ।
बजै घन घुघ्घुर घंट निनाद । सजै मिल कोकिल मोरन साद ॥१४६॥

भुसुंडन सुंडन लागि सिंदूर । उठी मनु जागि दबागि सपूर ।
झरै मद धार कपोलन माँहि । मनों झरनाँ जलधार धसाँहि ॥१४७॥

पटाझर सिंधुर सुंदर स्याँम । घटा जल पूर महा अभिरॉम ।
ससोभित ओपित उज्जल दंत । बिराजत रूप मनों बग पंत ॥१४८॥

चमक्कत सार करी गज सुंड । झमक्कत बिज्जुल के जनु झुंड ।
गरज्जत मत्त बड़े गजराज । सुनै घन लज्जित गाज अवाज ॥१४९॥

चले गति चंचल तेग तुरंग । मनो नट नृत्तु लाहतु रंग ।
परव्वति पाखर सोबन साज । मनो पछिराज सपछ बिराज ॥१५०॥

घने भट पायक घायक धाय । परै नहि पिछ पर छित पाय ।
चढै गज दंत कपै किलकार । सहै मुख संमुख सार प्रहार ॥१५१॥

बने कर बाँन कमाँन बदूक। चलावइ चोट चलाक अचूक।
फिरावइ खग्ग फरी कर फेर। बचावइ घाइ कपै घट घेर ॥१५२॥

छद भुजगी

नरन्नाहरा जेंइ सज्जे सनाह।
बडे वीर वीराधि आजान बाहं।
कटारी कृपानी बरछी कमानं।
कबच्चै कसे भीम भीमं समानं ॥१५३॥
सजे सेत नीसान बज्जे निसानं।

अहकार तै ओप ओपै अमान।
अभै की धुजा सी भुजा आसमानं।
अधारै डिगत धपै आसमानं ॥१५४॥

गजारूढ़ ह्वै कै चढ्यो गाढ़ गाढ़ै।
चमू साह माजम्म की सोह चाढ़ै।
किधौं आइ मैनाक सो चित्त कोप्यो।
अरापत्ति के ऊपपै इंद्र ओप्यो ॥१५५॥

दोहा

दोऊ फौजै साह की वीर खेत पर आय।
दगे अराबा उर दुहूँ धिगे धूम नभ छाय ॥१५६॥

साह आजम की फौज सूँ लरत राजसी बीर।
गाढो गाढे राव पर सावंत संग संधीर ॥१५७॥

नाम जु गाढे राव हो हाथी अति रन धीर।
गाढी गाढी ठौर मै भजत गाढी भीर ॥१५८॥

छद भुजगी

छुटे बॉन उत्तान आकास छाये।
कुहक्के कमान बिमाँनं भजाये।
फसे पंजर कुंजर पुज फोरै।
तन त्रान तोरै तन प्रान छोरै ॥१५९॥

तिरच्छी छरी उच्छरी तुंड तोरै।
तरप्पै सरप्पै झरप्पै झकोरै।
छरी मच्छरी सी परी सेन तालं।
तुरच्छै तरै बीर बाहं बिसालं ॥१६०॥

गिलै तोरि मंसं सुभट्टं सरीरं।
चढ़ै सामुही बाहिनी बाहि नीरं।
फिरै कुंभि देहीन मै चक्र ऐसै।
रसै रत्त को लून मै लाठि जैसै ॥१६१॥

छुटै नालि लंबी रसाला बिसाला।
अगर्भी (?) कियै काल गोला उछाला।
कियै सोर आवै लियै धूँम धूमै।
फटै कुंभ कुंभी परै घूमि भूमै ॥१६२॥

गिर बार दंती परै लागि गोरे।
तुटे सृंग सृंगी मनों बज्र तोरे।
परे लाग गोलान की आगि कारे।
उखारे मनों बृछ्छ दाबागि जारे ॥१६३॥

छुटै राम चंगी सु चंगी सुचंगी।
गिरै लागि गोलो मतंगी उतंगी।
कमानें लई बीर कीरत्ति भीनै।
कसी बान सौं बान संधान कीनै ॥१६४॥

चलै तीर तीखे तसम्मीर चाली।
करै वीर बीराधि तूनीर खाली।
लगै तै तन त्रान कौं भेदि जावै।
महाधीर तेऊ महा पीर पावै ॥१६५॥

अरी सीस मै तीर ऐसो लखाई।
रह्यो पार ह्वै के तुला दंड नाईं।
उलस्यो जुई फौज के आय आगै।
भुई लोट गो सूर की साँगि लागै ॥१६६॥

निकस्यो उलस्यो हस्यो बाहि नेजा।
कियो रेज रेजा करी को करेजा।
मुहारैं लरैं राजसी षेत माँ ही।
फते साहि माजम्म की चित्त चाँही।।१६७।।

हथी आठ नो कोउ तैं जूथ गाढ़ो।
जुदो होय हाथी चढ़्यो एक ठाढ़ो।
चिलतैं बनी लाल रंगी सुरंगी।
बन्यो लाल ही टोप ओपैं उतगी।।१६८।।

बन्यो सेस बीरत्त रत्त बदन्नं।
मनो प्रात को सूर सोभा सदन्नं।
गह्यो भूप होदा पुछ्यो नाँम को हो।
कहो जो कहो आपनों नाम जो हो।।१६९।।

मिरो राजसी नाम राठौर जानों।
मिरो राम हाड़ा यहैं नाम मानों।
मिल्याथे मिल्यो हों मिली प्रीति चाहं।
मिले प्रीति की रीति आजान बाहं।।१७०।।

आवै कौंन हाथी चढ़े फौज माही।
कहा जानियै कौंन हैं ठीक नाँहीं।
दुहूँ साथ ह्वै फौज साम्हैं चलाये।
मिल्यो राम वा फौज मैं छोह छाये।।१७१।।

हठी नाम जादी उतैं राम हाड़ा।
मंड्यो आय आजम्म की फौज आड़ा।
बकारैं हकारैं हड़ो तीर बाहैं।
गरज्जै तरज्जै गजानीक गाहैं।।१७२।।

इतै फौज को जोध जोधार जूटै।
महा मत्त मानो पटा छूट छूटै।
छछोहे छके ताकि कै तीर छोरैं।
फबी फौज के सत्रु के कोंच फोरैं।।१७३।।

लरै साह की फौज सों राम हाड़ा।
लसै जानि भारी भर्यो लाज गाड़ा।
दुहूं धॉ कृपानी बरछी दबट्टै।
करी के अरी के किते कंधे कट्टै ॥१७४॥

इहाँ राम हाड़ा लरे कामि आयो।
चितै रूप रंभा विमानं चढ़ायो।
दलप्पत्ति साम्है सँभार्यो बुंदेला।
अनेकान सौं झूझ झूझ्यो अकेला ॥१७५॥

जिन्है ओर तै यह अभ्यास कीनों।
दछन्नान के गेह बदहि दीनों।
कह्यो हाथ बायै जु लीनै कमानं।
गजारूढ़ आयो गुनै जुक्त बानं ॥१७६॥

मिली भोंह सों ऊठि कै मूँछ सेतं।
वंध्यो मुष्ष बाँना बिधो कीर्ति केतं।
किधों द्वैज के चंद द्वै रूप कीनों।
बकारै बुंदेला महा रोस भीनों ॥१७७॥

महा जुद्ध जाच्यो महा बीर भायो।
गाढ़े राब पेलै मारू राव आयो।
तहाँ राव कासेस कम्मान तानी।
करी कुंडलाक्रांत लों कॉनठ ऑनी[1] ॥१७८॥

कियो दाब ओ राब मन मै बिकस्यो।
तज्यो बान सूरै सु बायै निकस्यो।
मुके बान द्वै च्यार बुंदेल रावं।
महाराब जूटो करे दाब घावं ॥१७९॥

लगे तीर होदा किते कौच माँही।
तिहीं ठौर राठौर कम्मान साँही।
परी मार भारी चले हत्थ तेजं।
कसीसै कमानं बहै पग्ग नेजं ॥१८०॥

पाठान्तर—१. ठांनी।

छक्यो राव जुद्धं सु कुद्धं उपायो ।
लरे वीर दोऊ जसं जग्ग गायो ॥१८१॥

दोहा

बाजषॉन की ओर को पैठ्यो राव बुंदेल ।
तुपक तीर सकती षडग जुध करि जूझ उझेल ॥१८२॥

झूझ पर्‌यो कासेस नृप भयो सहीद पठाँन ।
चले दुहुन के कर भले तीषे वाँन कमान ॥१८३॥

गजहि पेल आयो गरज कर धरि बाँन कमाँन ।
कोप्यो खाँन अमानुला आनि कर्‌यो घमसाँन ॥१८४॥

छद भुजगी

अमानुल्ल खाँ सामुहै तीर मारै ।
महा सूर को तेज को को सँभारै ।
कराली सराली चलै बाहु जोरै ।
असो कोन जो सामुहैं डीठ जोरै ॥१८५॥

महा जेठ को भान मध्यान जैसौ ।
तकै धीर कों खेत मैं वीर कैसौ ।
चढ़्यो मत दंती महा बीर भायो ।
मनो बीर बुंदेल कै वैर धायो ॥१८६॥

महा बाहु राजा तष्यो बीर कोऊ ।
मची सार की मार सग्राम दोऊ ।
दुहूँ वीर बाँके लरै षेत माँही ।
हटै नाँ मिटै नाँ लटै एक नाँहीं ॥१८७॥

किये हाथ कम्मान के बान मारैं ।
हकारैं बकारैं दुहूँ सार झारैं ।
लग्यो बान जो षान के अग माँही ।
जक्यो सो गयो ह्वै छक्यो बीर नाँही ॥१८८॥

अमानुल्ल के हाथ के तीर छूटैं ।
झिलम्मै सु फोरैं शिरे लागि फूटैं ।

बई दाहिनी ओर को सीस माँही।
चली रक्त धारा राजा सोभ पाँही ॥१८९॥

कढ़े सीस तै बान कम्मान जोर्‌यो।
चिलत्तै भली फोरि कै अंग फोर्‌यो।
दुजो बान बाको जु बाँही चलायो।
लग्यो बाँन षाँ कै छिल्यो छोह छायो ॥१९०॥

कमानं लई षाँन अमानुल्ल बीरं।
निकस्यो निषंगं तहाँ सोधि तीरं।
तहाँ जोरि कै बाँन कम्मान तानी।
तज्यो बान अमानुल्ल षाँ क्रोध मानी ॥१९१॥

किहूँनी लग्यो दाहिनी हाथ बानं।
फुट्‌यो कोच दूँ घोंटु हूसेन मानं।
इतै राजसी तीर तीषै चलायो।
लग्यो माहु तैं अंग हस्ती फिरायो ॥१९२॥

तहाँ तम्म किक्कै बान कम्मान डारी।
हुती पास बंदूक ताकों सँभारी।
फिर्‌यो जाँन हस्ती फिर्‌यो आप इत्तै।
कियो कोपि ओप्यो सुतो काज कित्तै ॥१९३॥

अमानुल्ल खाँ हाथ बंदूक लीनी।
महाराज के सामुहै आन कीनी।
तक्यो पैंड नो सात सोहै निसानं।
तिही बेर राजा भये सावधानं ॥१९४॥

दियो तीर ताके भुजा मूल माँही।
डिग्यो हाथ ताको रह्यो ठीक नाहीं।
बंई ओर को छूट गोली निकस्सी।
तन त्रान कों भेद ऐसै परस्सी ॥१९५॥

दोहा

मारत मीरन तीर सौं लरत राजसी बीर।
लग्यो दाहिनी आँखि मै धीर मीर को तीर ॥१९६॥

कहत सुनै हैं हरि करै मुसकल मैं आसान ।
सो परतषि देषी सबै आँषि बची लगि बाँन ॥१९७॥

काढ़ि आँषि के तीर कौं कोपि कियो राजान ।
अमानुल्ल खाँ कौं हन्यो मारि च्यार उर बान ॥१९८॥

छद गीतिका

हठि हमीरुदी षाँ बहादर लर्‌यो सनमुष आइकै ।
गज चढ़्यो उज्जल पहर बगतर मुह मुर्‌यो सर षाइ कै ॥
महाराज ताकी पीठ पर सर तीन मारे ताकि कै ।
लुटि गयो होदे बीच तबही लोह के छकि छाकि कै ॥१९९॥

चौपई

जुलफिकार खाँ तेग बहादर । बाघ नगारा लियो जोर बर ।
गढ़ कौं फौज चहूँ दिस फेरी । घेरि मारि राहेरी घेरी ॥२००॥

छद भुजगी

वहैं फौज आगै जुलफिकार आयो ।
इतै सामुहैं जोध जोधार धायो ।
लरै सूर सावंत बाहैं बरंछी ।
बकारैं दबट्टै तहाँ बाजि कच्छी ॥२०१॥

झमा झम्म खागै बजै षेत माँही ।
सुनै सार के सब्द कछू ओर नाँही ।
लरै बीर राठौर मत्ते मुगल्लं ।
गहैं गाढ जम दाढ़ फोरै बगल्लं ॥२०२॥

लथा पत्थ ह्वै कै गिरै बाज सेती ।
मनो मीर मल्लं जुटै माँही रेती ।
षरे षेत मै के किते वेग भागे ।
घुमै पीठ घोरा किती लोह लागे ॥२०३॥

कढ़्यो बान राजा गढ़े राव पेल्यो ।
नतावै सितावै तिही मुष्ष झेल्यो ।

लरै लोह राजा लगै लोह पूरै।
निलोहै अस्यो कीच मूँचाँ पिचूरै ।।२०४।।

छछोहे जु कम्मान के तीर छोरै।
तके तुंड के मीर के दाँत तोरै।
लर्यो दछिनी फौज सौं खूब लोहैं।
इहाँ भूलि न घाव ओसान जोहै ।।२०५।।

भई सार की मार लै जीव भाग्यो।
लगे बान ग्वालेर की राह लाग्यो।

दोहा

लरत देखि राजान कौं सब सुद गई भुलाय।
खाँन जमाँ सुत गज चढ़्यो लेटचो दहसत खाय ।।२०६।।

पूछ्यो होदा पकरि कै राज सिंह नृप राय।
उर मै जमधर लागि है कै तू नाम बताय ।।२०७।।

नाम कह्यो समसेर खाँ हों निजमुद्दी खॉन।
हरी हनत हों खग्ग सो राखि लियो राजॉन ।।२०८।।

छद रूपमाला

भूरी जु डाढ़ी मूँछ भूरी अंग भूरे रंग
कायरी आखैं माँझ पीठी निजमुदी के संग।
मारे न तिनकों छाँड़ दीने देषि कातर दीन
तव दुहुँन स्री महाराज कौ तहां उन सलामै कीन ।।२०

छद गीतिका

उमराव आजम तनो आयो विसिष तीषे वाहतो।
गज चढ़्यो वगतर पोसु प्रति भट गाजि गज थट गाहतो ।।
भरि रोस भुज वल भीम सरभर छोह वीरत छाइकै।
महाराज ताहि वकार मारचो चपल सेल चलाइ कै ।।२१

सवैया

माजम आजम जग जुरे करवाल करालन चाल परी हैं ।
वृंद कहैं राजसिंह महीपत मान तनै कुल रीत करी हैं ।।
ओप अछी बरछी तिरछी करि बाही भुजा बल रोस भरी हैं ।
फोर फरी जकरी जु करी अरि पंजर कौं चपरै निकरी हैं ।।२११।।

मान तनै राजसिंह महाबलि भीम सो भीम भुजा बल मानों ।
भारथ भार गहैं बिरच्यो हठि मारचो हैं मीर अमीर पठानो ।।
बैरी हन्यो बलकै तिरछी कर सो बल वृंद बिसेष बखानो ।
मारचो है कर्ण बिकोदर को सुत सा बरछी बरछी वह जानों ।।२१२।।

मान तनै राजसिंह महाबत माजम की जय चित घरी हैं ।
आजम के दल ऊपरि कोप तिहाँ बधरी बरछी पकरी हैं ।।
सत्रु के पंजर मै जकरी तन त्रान करी सँकरी जकरी हैं ।
जाल लतान के जाल घिरचो नग फोरि कै नागन सी निकरी हैं ।।२१३।।

छद रूपमाला

जे पातसाही के सिपाही सब किहैं यह गाथ ।
लगि सेल हाड़ा काम आयो राजसिंह के हाथ ।।
अह कहैं राजा आप मुष तै जब चलै प्रस्ताव ।
वह हन्यो सेल चलाय आजम साह को उमराव ।।२१४।।

दोहा

आबत हौ सर मारतो आजम को उमराब ।
मारचो ताको सेल तै कह्यो मारबो राब ।।२१५।।

छद भुजगी

चढे हाथियाँ सत्रु जे जुद्ध चाहैं ।
बिरच्यो राजा राजसी तीर बाहैं ।
किते मीर तीरान सो मारि डारे ।
गये लौटि होदान मैं प्राँन झारे ।।२१६।।

लगे तीर मीरान के देह एही।
मनों सूल के भूल सोहंत सेही।
लगे अंग एकै भये नाम मूँदै।
धसै बीर के तीर ज्यों षाक तूदै ॥२१७॥

चलावै जिकों ताकि ताकों गिरावै।
महा धीर के तीर खाली न जावै।
सची मैनका मंजुघोषा घृताची।
कहै बात साची यहै सिध्य साची ॥२१८॥
तडिता मनों मेघ स्यामं दिषाई।

गजं पीठ बैठै षगं यों चलाई।
लरे षूब राजान के हाथ लागे।
रहे ते जुलफिकार के राह भागे ॥२१९॥

तिन्है मारते मारते तीर भाले।
ते आजम्म की फौज मै घेर घाले ॥

कवित्त

महाराजा मान नंद महाराजा राजसिंह
लीनै संग रंगभूमै सुभट सचेत है।
केतक अमीर मीर तीर तरवारन सों
मार कै गिराये भय कारी कीनों खेत है ॥
सार के प्रहारन सहाहस के प्रतिभट
तिनकी दबाय पीठ अति छवि देत है।
बानन तै मारि मुह आगै धरि लीने जैसै
पौंन बेग मेह कौं धकाय आगै लेत हैं ॥२२०॥

प्रथम जुलफिकार सलेमाँन षॉन षॉन
हमीरुद्दी असॉनुला बीरति बितान के।
हाड़ा रामसिंह ओ बुंदेला दलपति ओर
आजम के उमराव नाना बानि बान के ॥

कोह धरि लोह भरि घेरा करि घेरे राजा
राजसिह प्रबल प्रताप बलबान के।
कर सर लागे अरि ऐसे मुरझाये गये
जैसे ग्रह तारे अस्त होत तेज भान के ॥२२१॥

दोहा

जान परे ते जुद्ध मै कहे तिनन के नाम।
ओर किते भागे लरे परे बीच संग्राम ॥२२२॥

छद पद्धटिका

महि बस रतन महिपति महेस। दलपति भयो जैसो दिनेस।
परताप सिह सत्रसाल नद। सत्रु कौं हनै संगर सुछंद ॥२२३॥
जिन बस भयो राजा रतन्न। उज्जेन लर्यो जस के जतन्न।
परताप करन परताप सिह। ज्यो करत पराक्रम करत सिंह ॥२२४॥
जहाँ परै तीर गोली अपार। सावत धीर बाहत सार।
भरथंभ आइ भाइय जु भीर। धर धीर मुहारै मझ्यो धीर ॥२२५॥
एकलो विभारै अरि अनेक। वीराधिबीर बीरता बिवेक।
भारत्थ भीम जिम भुजा डंड। षगबाहि करै अरि षड षड ॥२२६॥

छद भुजगी

सबै सूर सावत रावत सत्य।
लरै लोह सो छोह सो लत्थ पत्थं।
दुतग उतग तुरगं दबट्टै।
बिकट्टं गटं गज्ज घट्टं बिघट्टै ॥२२७॥

धपट्टै लपट्टै झपट्टै धकावै।
हटक्कै झटक्कै कटक्कै हटावै।
मुलक्कै मटक्कै बकै मार मारं।
उलट्टै पलट्टै थटै षग्ग बारं ॥२२८॥

छुटै तोप धक्कै धरक्कै न छत्ती।
भभक्कै रबक्कै छकै सिंह भत्ती।

चमक्कै नचक्कै झमक्कै झकोरैं।
तमक्कै तरक्कै तकै तुंड तौरै ॥२२९॥

सरक्कै नसक्कै ठठक्कै न थक्कै।
चमक्कै बरच्छी कृपानी चिलक्कै।
धमक्कै धमा धम्म सेलं धवायं।
घमक्कै घमा घम्म बाजंत घायं ॥२३०॥

लरैं सूर सावंत गाढ़े गसीले।
दहल्ले नहल्ले नचल्ले हठीले।
गाढे राव कै आइ रावत आगैं।
लरै यो भुजा डंड आकास लागैं ॥२३१॥

गजारूढ राजा गजारूढ़ कीनों।
भभक्कै हरी रोस पोरस्स भीनों।
हुदे ऐंचि हाथी चढ़े जे निहारे।
झटक्कै अरी केहरी सीस झारे ॥२३२॥

लरै बीर बीरान सौ छोह लागैं।
लट्यो ना हट्यो ना तनं लोह लागैं।
महा बाहु जो गात नौ तीर मारैं।
बरछी चलै सत्रु के पिंड पारैं ॥२३३॥

दोहा

आजम कै चाकर हुतो इक अबदुल्ला षॉन।
गयंद चढ़्यो मार्‌यो हरी तिहि सिर वाहि कृपान ॥२३४॥

हाथिन के असवार पर ह्वै हाथन की चोट।
तेग तडित सिंधुर सघन गजारोह जुत जोट ॥२३५॥

छंद वेअण्परी : भाषा मारवाडी

सभा सिंह सिरदार सहेतो। दाव घाव दुइणा दल देतो।
सिवदानोत सोहियो समहर। भोपति कुल बैरियाँ भयंकर ॥२३६

अडपायत अनूप अहंकारी। कटकाँ हटकै वाहि कटारी।
सुत गोपाल कान्हहर समहर। अरियाँ हणै आजटै असिमर ॥२३७॥

हिमत सिंह मंडियो जुध माहे। सुत गोपाल सूरतन साहे।
बीजल जिम बीजू जल वाहै। हूके बैर हराँ ढिग ढाहै ॥२३८॥

बाघ सिंह बैरियाँ बिरोलै। झटकै असि वर रुहिर झकोलै।
अचलाहरो जैत सुत एहो। जुध जग जेठ जसकरण सजेहो ॥२३९॥

अमर समर भिडियो अडपायत। साहिब रायतणो तिण सायत।
जग जीवण हरष तरी जूटो। कवारण बिच किरबाद्य बिछूटो ॥२४०॥

प्रोत रामचद्र सौं कहि राजा। बाजै कटक बीर रस बाजा।
परिकर कुसल देस पहुँचावो। जाण जरूर साथ थे जावो ॥२४१॥

भड भिडसी भारथ हुइ भेला। बिदा न ह्वै स्यूँ हूँ इण बेला।
मन राषवा कियो फुरमायो। असिबर हथो सिवड फिर आयो ॥२४२॥

प्रोहित राम भिड़ै भरि पोरस। रण हर अवधायो बीरा रस।
अचला सुतन अछंटै असिबर। बणियो घाव बिरोलै जुध फर ॥२४३॥

चोरंग सुहडा सौह चढावै। दपटै षैग षत्रिबट दाबै।
लोहाँ लड भडाँ ललकारै। हथबाहंत छत्तो हलकारै ॥२४४॥

प्रोहित देबीसिह सिंह पर। अचलाहरो बिहंडै अरिकर।
रूक हथो आह बिराँ साबत। रह चैरि माराबताँ राबत ॥२४५॥

जोगीदास जोध जुध जूटो। छलबल छोह पटाभर छूटो।
आणद तण अडियो आषाडै। पिसणा असि साबला पछाडै ॥२४६॥

है थट्टागै थट्टाँ हुबियो। फौज बिभाड फताहर फबियो।
करमसियोत पराक्रम कीधो। लोहाँ लडे प्रबाडो लीधो ॥२४७॥

सुत सुजाण पातल षग साहे। आजम कटक्क झटक अवगाहे।
बीकै नीको सार बजायो। बिहडरि भाव पघाब बणायो ॥२४८॥

सकजो बगतर पोस सिपाही। समहर भिडियौ आजम साही।
झडफ सिरोही पातल झाडी। पिसण काय दुयकर धर पाडी ॥२४९॥

भारथ भिडियो रतन भुजालो । वाघावत रावतॉ वडालो ।
आजम कटक सामुहो आयो । वैरह खॉ सिर सार वजायो ॥२५०॥

ऊदल अटल भुजावल आणे । जगता तणों षत्रवट जाणे ।
मनोरहरो गज थटाँ मोडै । तरवारियाँ वैरियाँ तोडै ॥२५१॥

हठवादी हर भॉण हठालो । भिडियो भारथ भडॉ भुजालो ।
हरि करणोत दुयण दल हणियो । घाव वणाव कुंभ हर वणियो ॥२५२॥

स्याम सुतन फतमल वध सारॉ । धड बेहड करतो षग धारॉ ।
भोपत कुल षत्रवाट भवाडै । नडफर वैरी हरॉ बिभाडै ॥२५३॥

हुय गज गडगड हैवरा हडवड । दौलॉ दलॉ आवियो दडबड ।
स्याम सुतन पुहतो सिरदाराँ । हथवाहॉ भजियाँह हजारॉ ॥२५४॥

नरो भिड रने ठाह नरूको । चाव दावचा पडै न चूको ।
महावतणों अरिहरॉ मारे । वदन घाव वणि वयण उचारे ॥२५५॥

अमरो समर भिरियॉ आगै । जगमालोत स्वामि छल जागै ।
कुसलावत रावत कॉधालो । वधि वधि वयण कहै वॉहालों ॥२५६॥

रूक हथो रुघनाथ रढालो । चाँदावत करतो धकचालो ।
अरजुन सुत वर वीर अषाडै । पूरण हरो सात्रवॉ पाडै ॥२५७॥

समहर सोर जोर सॉभलियो । आतस धोम व्योम ऊछलियो ।
भूल पड्या हुय सक्या न भेला । समर किसी विधि हुवा समेला ॥२५८॥

णहि जमि सकइ पाछै रहिया । कुल छल परस बोलै कहिया ।
असि षंड भडॉ सतावी आवो । वड फर सनमुष सार वजावो ॥२५९॥

ओलै जीव घातियॉ ओरॉ । तिण षिण परसो सरसो तोराँ ।
कहि वाय कायरॉ ढिला कर । पुहतो सेन सावतॉ तणनि पीर ॥२६०॥

कमधराज सॉ मुजरो कीधो । भिल भीरायॉ स्वामि ध्रम लीधो ।
उमग पवास सतावी आयो । वजतॉ लोहाँ लोह वजायो ॥२६१॥

धीर पलासॉ वलाँध मोडै । तरवारियाँ वगतराँ तोडै ।
गोमंद तणो नछर मन गाढै । वैरी हराँ वीजलाँ वाढै ॥२६२॥

मुहतै मेघ पराक्रम मंडे । षग्गॉ वाहि षलॉ दल षंडे ।
सुतन कपूर नॉवतॉ सरभर । सकमल हरो सोहियो समहर ॥२६३॥

सोरठा

दीठो ईसरदास समहर गोबरधन सुतन ।
खल खण्डिया खबास हथबाहै देदाहरै ।।२६४।।

धनो षवासस धीर सुत ईसर हेमाहरो ।
बैरि हराँ बिच बीर रिण वै पाणी राषियो ।।२६५।।

न्यामतषाॅ नेठाह षग झल मोहबत षानरो ।
लोहाँ पग लंगाह लंघै लीक न लंघई ।।२६६।।

साम्है बहतै सार न्यामतषाॅ लंघो निडर ।
बिढि बिढि बारं वार राजा सौं मुजरो कहै ।।२६७।।

ऊदल सुहड अभग करण सुनत भारथ करै ।
चाँदाबत चतुरग पात लहर पाडै पिसण ।।२६८।।

दो मझ गोकलदास चाॅदावत भिडि चापडै ।
बधि बाहै बाणास दुयणा मुथरादास रो ।।२६९।।

बषतो दलाँ दुबाह रढमल भड अषई तणो ।
गजाँ कहै गज गाह राबत रेवतसिहरो ।।२७०।।

समर महासिंघ सूर बेढी मणो षगार कुल ।
गाहै गज गहपूर हरी सुतन रतनाहरो ।।२७१।।

गरिबदास गज गाह कहै धीर षगार कुल ।
दबटै दुयण दुबाह भडसकजो भगबानरो ।।२७२।।

अषई षत्रबट अग कुसलाबत कुल करमसी ।
अरि मारबा अभग बधि बधि बाहै बीजलाॅ ।।२७३।।

चैनसिंघ चित चाब कलहण दूजौ करमसी ।
घणथट्टाॅ दे घाब भिडियो रण भाऊ तणो ।।२७४।।

जोराबर जोधार बस कमासक जोबिढै ।
पिसणाँ सार प्रहार समहर हणै सुजाण सुत।।२७५।।

नाहर सिघन ठाहनी जो अडे अरि नाहराॅ ।
हठ करतो हथबाह आजबाबत आषाड सिंघ ।।२७६।।

समहर बाहै सार जगताबत कर मै जिसोत् ।
मोहकम तिण बार सार प्रहारॉ सो हियो ॥२७७॥

मनीराम मन मोट हठी कान्ह तण राम हर ।
दुयणॉ दे षग दोट भाटी कीधो भूम्फ भर ॥२७८॥

मोहकम लोह मराट बीकाबत बंस आसक्रन ।
षल षंडै षत्रबाट समहर दूजै करमसी ॥२७९॥

गहभरियो तन गोड सूरतसिंघ सूरति सकज ।
ठेलै अरि जुध ठोक राजाबत चत्रभुज हरो ॥२८०॥

दोलतसिघ दुझाल कुसलाबत करि बरहथो ।
जुध दूजो जगमाल राजा हर रहचै रिमॉ ॥२८१॥

सजि सिबदान सधीर जुडियो जगमालोत ।
जुध माहै मीर अमीर कुसलाबत राजसिघ कुल ॥२८२॥

बिनैसिह बद बीर सॉबत सॉबतसिह सुत ।
किसनहरो कंठीर बीको बिहंडै बैरियॉ ॥२८३॥

बषतो भडछा हाल सज सहलोत पिदाग सम[1] ।
षलॉ कहै षैगाल हण षग सॉई दास हर ॥२८४॥

अचलो बदरीदास सज सहलौत बलू सुतन ।
बिहंडै मतंग ब्रहास हठ चढ़ियो गोपाल हर ॥२८५॥

घण थट्टॉ धासीह निडर नरायणदासरो ।
समहर भिडियो सीह भाटी षाटी क्रीत भल ॥२८६॥

बारहट वेणीदास सजसो गोबरधन सुतन ।
बाहंतो बाणास भादथ बिडदा वैभडॉ ॥२८७॥

बारहट अमर दुबाह दुजडॉ हथ बिरदासरो ।
गज थट्टॉ गज गाह जालपहर जुडियो जैठ ॥२८८॥

बारहट बदरीदास कलहणि बार किसोररो ।
पोरस कियो प्रकास हणि पिसहॉ जालप हरै ॥२८९॥

पाठान्तर—१. सुत

हठियो हिरदैराम प्रोहित पिसणाँ पाडिया ।
संगाबत संग्राम भल कीधो भोजा हरै ॥२६०॥

समहर कजो[1] सचेत कूभावत करिके संस्याष ।
लहण पडियो षेत अजबो बरियो अपछरा ॥२६१॥

मदन नरूको मोडि दोलत सुत असिपति दलाँ ।
तरवारचाँ तन तोडि गिरधर सुत सुरपुर गयो ॥२६२॥

झूझारो झूझार रण झूझ्यो राजा तणो ।
बरियो भड तिण बार हूराँ ठाकुर सीहरै ॥२६३॥

कल छल सुनत किसोर जोराबर जोराबराँ ।
जुध बेलाँ षग जोर हठ हणियाँ गिरधर हरै ॥२६४॥

रण भिडियो मन रूप त्रिजडाँ हथ अरजन तणो ।
अरियाँ हणै अनूप बिढै बिहारीदास हर ॥२६५॥

सुंदर षबास सुजाण मुष आगै महाराजरै ।
छुटे बाँण चहुँ बाण लागो लडथडियो नहीं ॥२६६॥

बडफर स्यासो बीर अधपति राजडरो अगीर ।
घूम बिलोके धीर चेलै पाँबन चातरे ॥२६७॥

पीरै रोपे पाय कोतल मुह आगै कियो ।
षल भय दहसत षाय हौंस नाक हठियो नहीं ॥२६८॥

दीठो चरबादार नाथो जुध नेठाह नर ।
समहर बहताँ सार रेबँत कोतल राषियो ॥२६९॥

दोहा

परै बाँन गोले जहाँ लरै सूरबाँ सैक ।
अलहदा दल्याबै षबर करै पाय ती पैक ॥३००॥

सोरठा

हरी भाँड हथबाह सत्रबाँ सिर बाहै सहै ।
सुहडाँ कीध सराह आयो काम उछाह सौं ॥३०१॥

पाठान्तर—१ कमो

कायम कायम कीध जस राजडरो जंग मै।
दुयणा माथे दीध डंका बंक दसामिया ॥३०२॥

जग्गू कर करजोर समहर हिरदैराम सुत।
ठटी नगारों ठोर मन नेठाह नगारची ॥३०३॥

छप्पय

सुत सलेमषॉन की सुदिड्ढ घण थट्टॉ घासी।
बकसो जीवण तणों पिंड पोरस्स प्रकासी।
दे दूहा मार का गुणी मिल कडषा गावै।
रण भिड ताराबतॉ चाय भल छोह चढावै।
राजड नरिंद पाई फते भुबण तरै जस भाषियो।
ढाढी बजाय रब्बाब दृढ़ रण मंडल रस राषियो ॥३०४॥

छंद भुजगी

मारू राब राजॉन म्लेछा मिटावै।
मरद्दं मरद्दं गरद्दं मिलावै।
दुरद्दं समद्दं करै रद्द मद्दं।
बिहद्दं लियै सद्द हद्दं बिहद्दं ॥३०५॥

जंबूरान के जोर तोरै जरद्दं।
परे देख किते हरद्दं जरद्दं।
खिलै बीर खेलै खखद्दं खखद्दं।
झरै रत्त पूरं तनद्दं सनद्दं ॥३०६॥

झटा झट्ट खागाँ झपट्टै झटक्कै।
गटागट्ट बैताल गूदं गटक्कै।
कटाकट्ट बाजै कटै कंध कायं।
लटा पट्ट ह्वै रत्त कायं लगायं ॥३०७॥

तटा तूट तूटंत सीसंत डफ्फै।
झटा पट्ट सौ ग्रज्ज ग्रज्जं जझफ्फै।
छटा छट्ट सौं वीर वाहंत सारं।
चटा चट्ट सौं प्रेत चारं प्रचारं ॥३०८॥

जटा जूट सौं आँत सभू जुटावै।
पटा छट की खाल ओढै त्रिछावै।
उडै मुड लै ग्रद्ध आकास पथ।
भरै रत धारा भरै भान रत्थं ॥३०६॥

कवध उठै हाथ लीनै कृपानी।
भरै पत्र पीवै रगत्तं भवानी।
भरचो खेत की लाल पाथोधि जैसे।
तिरै ढाल कच्छं भुजा मच्छ तैसे ॥३१०॥

परै खेत मै हत्थि हैं वीर ऐसै।
विचित्र वसत्र लिषै चित्र कैसे।
नचै भूत भैरूँ वजै झाक झैरू।
लरै साहि जैसे लरै पंडु कैरू ॥३११॥

तरप्फै तकै देत वैताल ताली।
करै मुड माला महाकाल काली।
परे खेत मै जे लरे लोह पूरे।
वरे अच्छरो वीर सग्राम सूरे ॥३१२॥

दोहा

आजम को दिन पलट गो भयो पौंन प्रतिकूल।
भयो वहादर साह कै पौंन गौंन अनुकूल ॥३१३॥

उततै आवै छूटि कै लगै तूल से वाँन।
इततै छूटै बान ते लागै वज्र समान ॥३१४॥

छद भुजगी

उतै मीर आजम्म के तीर छोरै।
करी छेक सन्नाह कौ नीठ तोरै।
इतै बीर के हाथ तै तीर छूटै।
फरी ओकरी की भरी देह फूटै ॥३१५॥

धसे बीर के षग्ग की तेज धारा।
मनो पूर भादो नदी तेज धारा।

करारे कटै कोर ढाहै बहंती।
बहै जाहि तामै परैं बाज दंती ॥३१६॥

उतै मीर के हाथ छूटै कृपानी।
सनी बीर सन्नाह उत्तू निसानी।
उतै मीर जे तीर गोली चलावैं।
जितै ताकि बाहै तितै चूकि जावैं ॥३१७॥

इतै बीर बैरीन कों तीर बाहै।
ढलै तॉन के पुंज कों ढूकि ढाहै।
महाराज राजान के बीर मानी।
भई भीर देवी प्रसन्नं भवानी ॥३१८॥

दोहा

बार करत प्रति भट जिते रहत बार उर बार।
बार बार इतके करत होत बार तै पार ॥३१९॥

छंद पद्धटिका

फौज सौं लरत हे महाराज। गज गाह करत हे सिंह गाज।
यह समय पाय मुनबर अपार। गज चढ़्यो चल्यो भरि गर्ब भार ॥३२०॥

इहि बेर षान आलम अभंग। उठि चले मुनब्बर बंधु संग।
फौज सो निकसि छल चित्त छाय। आये अभीत छाती चलाय ॥३२१॥

साहिब अजीम अरु पातसाह। जहाँ संग लियै ठाढ़े सिपाह।
आये दै बॉनी दिसि अनीक। अति ढीठ भये ठाढ़े नजीक ॥३२२॥

दोहा

गज असवार अजीम सा पीठ जलाल पठॉन।
गाढ़े गाढ़े गहभरे लीनै बान कमॉन ॥३२३॥

जाने आवत अरज कौं अपनै ई उमराब।
तातै किहुँ अटके नहीं तीर सेल के घाव ॥३२४॥

छद भुजगी

दुहूँ बीर भाई बड़े डील आये।
सजीले धजीले किती सेन गाये।
सजै च्यार होदा सनाहैं सुठाहै।
लियै साथ संगी सु जुद्धै उछाहैं ।।३२५।।

सबै कौंच पूरे झिलम्मैं झलक्कै।
नचै षेत मै प्रेत काली किलक्कै।
सिरै तास चीरा सुधू घी लपेटै।
लियै फौज भारी करारी समेटै ।।३२६।।

जहाँ सेष पट्ठान लीनै मुगल्लं।
किते सैद बीरं सुधीरं अचल्लं।
तहाँ षाँन आलम्म नब्बाब आयो।
लियै संग भाई अनुज्जं सुहायो ।।३२७।।

दोहा

मुनिबर षाँन महाबली सुभट धरै कर सेल।
गजारूढ़ आये दुहूँ साह अजीम पर पेल ।।३२८।।

छप्पय

इतको साह अजीम उतै मुनबर षाँन ओप्यो।
दुहूँ द्रिष्ट अंकुरीय कहर कुह चुगता चित्त कोप्यो।
कर कमाँन किय बॉन सेष[1] बरछी उम्भारिय।
हन्यो तीर सुलताँन षाँन बरछीय सु मारिय ।।
लगि बाँन तहाँ भट आन नहि फुटि तकिया सै हथि फुटिय।
गज गजहि दंत मैंमंत मिलि साह सुभट इहि विधि जुटिय ।।३२९।।
बाँन धरि कम्मान साह तहाँ किरमुष मारिय।
त्योही सकती सेष[1] बीच हौदे लग झारिय ।।
घूमि परचो गज पीठ तहाँ मुनिबर षाँ झूझ्यो।
साहिब फते अजीम भीम सम जग कौं सूझ्यो ।।

पाठान्तर—१ सेल

करि कोप षाँन आलम बलिय अनुज बीर धायो प्रबल।
गज पेल ठेल तहाँ सेल भुज फौरि जंघ जल्लाल थल ।।३३०।।

त्यों ही साह अजीम बाँन कम्मान कसीसिय।
मार भल्ल द्वै च्यार सुतन आजम अति रीसिय ।।
जूझ्यो आलम षॉन परिय चक धमचक ऐसिय।
भट थल लपेट पट षग्ग बजि भाट अनैसिय।
बजि धार मार उम्भार करि सूर धीर अपछर बरहि।
तिहि ठोर साहि आजम सुतन जयत जयत सब मुष करहि ।।३३१।।

दोहा

षाँन जमा को नंद अति अभिमानी अनभंग।
किते षॉन आलम किये जुरि दच्छिन मै जंग ।।३३२।।

संभा की सुध पाय कै दोरचो कोस पचास।
ताकों ल्यायो पकरि कै षॉन जमाँ के पास ।।३३३।।

छंद गीतिका

ता[1] षाँन आलम कौं सिधारचो मारि मुनिबर षॉन कौं।
बल बंड साह अजीम भुज बल तॉन बॉन कमॉन कौं ।।
उड़ि गये केते लगि गोले भड़ भिड़े भाराथ सौं।
धन भाग इनके परे रन मै जाह सुत के हाथ सौं ।।३३४।।

कवित्त

जंग सुलतानी साहजादे लियै अनी पानीं
कढ़ि कै कृपानीं लरै--?--ललकार कै।
बॉनन की मार परै तीरन की तार परै
गोली बे सुमार परै सकै को सँभारि कै ।।
काली किलकार मुंड माली मुँह हार करै
सार के प्रहार अरि सीस डारे भारि कै।
साहिब अजीम साह महाबली बाँन मारि
डारचो षाँन आलम मुनव्वर कौं मारि कै ।।३३५।।

न्तर—१ तहाँ

दोहा

जानत मो बिन मोजदी हैं मरदाना कौंन।
साहिब साह अजीम कै सरभर होय सु कौंन ॥३३६॥

जो सहिजादा मोजदी ताहि कु हाड़ा नॉम।
हिम्मत बैसा बिन परचो जरचौ न एको कॉम ॥३३७॥

पारथ ज्यो भारथ भिरत रार्जासह राजॉन।
माजम साह महाबली सब पै सुने बषाँन ॥३३८॥

ताही समै बुलाय कै लषे सरन के घात।
रार्जासह को बन रह्यो रुहिर लपेट्यो गात ॥३३६॥

सोभा सार प्रहार की देषि बहादर साह।
महाराज राजान की स्त्री मुष करी सराह ॥३४०॥

दीनी तबै बहादरी रिन मै जैसै पाय।
अपनो आषै देषि कै रीझ न खाली जाय ॥३४१॥

झूझि परी आजम अवनि सुत सुभटन के संग।
रार्जासह के खग्ग बल जीते माजम जंग ॥३४२॥

छद गीतिका

असपति आजम काँम आये लगी गोली सीस मैं।
अहकार अंग अपार जैसै सीस दस भुज बीस मै॥
बेदारबाला ज्याँ परे रन तीर गोली लागि कै।
हौंनी न ऐसी भई जैसी जंग पाबक जागि कै ॥३४३॥

सफजंग दिल्ली के चकत्ता लरैं लटकै फिर लरैं।
पुनि जाय पकरे पियै पोसत कैद करत्री तिहि परै॥
दुष सहैं केते परै पर बस मोत बिगरैं हू मरैं।
यह जाँन आजम कामि आयो आय हूराँ तिन वरैं ॥३४४॥

दोहा

मीर लुटे होदा महीं औंधे वदन अचेत।
निहुरे मनो निबाज को आजम साह समेत ॥३४५॥

दुरजोधन कुल सहित ज्यों मरे किये अभिमॉन ।
त्यों आजम हू जोम मै मारे गये निदॉन ।।३४६।।

जय जस सौं दल कुसल सौं फते निसॉन बजाग ।
भये बहादर साह जू डेरों दाखिल आय ।।३४७।।

आजम हुकम अजीम जू डेरों आय निहार ।
महाराज की दिलवरी करि बकसी तरबार ।।३४८।।

सोरठा

बाहे जुध पर बीर तण राजा राजढ़ तणै ।
तिहि मै तेरह तीर फूटा बगतर फोडि कै ।।३४६।।

दोहा

गोली एक बदूक की छूटी निकट संधान ।
निकसी गई बायै खबें परजि मोर तन त्रान ।।३५०।।

सोरठा

हेकण हेकण हाध दुयदुय मुरि अरि दबटिया ।
भल कीधो भाराथ राजड़ आगल राबतॉ ।।३५१।।

राबत कर कर रोस पाड़ै पखरै तॉ पबँग ।
पाड़े बगतर पोस अधिपति राजड़ आगली ।।३५२।।

सवैया

तैसेई सील सुभाब लियें जैसें ग्रंथन मै कबि चंद ही बॉचें ।
धीर महा खग चोटन सौ कहुँ पीठ न देत है भारथ मॉचें ।।
आजम की चतुरंग चमूँ सँग जंग जुरे परमेसुर बाँचै ।
मान तने राजसिह महीपति देखिय रावत सॉबत सॉचे ।।३५३।।

छप्पय

अधिपति आगलीयॉर सार झले साषैतॉ ।
पाडे बगतर पोस पाडि पवॅंगा पषरैतॉ ।।
मोडे मद मद झरॉ नरॉं नाहरॉ निजोडे ।
धडछे अरि धज वडॉ ध्रीन साबलॉ धमोडे ।।

केई कपड़े केइ पड़ि पडि ऊपड़े के निलोह रावत कहैं।
पड़िया साँवत प्रथिराजरा राजडरा साँवत रहे ॥३५४॥

सवैया

स्वामि के काँम सुधारन कारन मान नरिंद को नंद प्रवीनो।
माजम साह की कीनी फते अरु आजम कौं हनि कै जस लीनो॥
नोबत तेग दिए गज भूषन रूपकों भूप मरातव दीनो।
साह बहादुर आदर सौं राजसिंह कौं 'राजा वहादुर' कीनो ॥३५५॥

केहर के कुल कौं राजसिह त्रिविक्रम विक्रम सिंह ज्यौं धायो।
तीरन सौं तरवारन सौं बरछी दल सौं दल मार हटायो॥
वृंद दुंहू बिधि माँन नरिंद के नद को ऐसे वडो जस आयो।
माजम कौं पतिसाही दई अरु आजम कौं जम गेह पठायो ॥३५६॥

छप्पय

सतरै से चोसठो वीर विक्रम संवत्सर।
बदि असाढ पचमी बार रबि भिरे दिलेसर॥
मोहरै साह अजीम महाबल भारथ मड्यो।
ह्वै हरोल कमधज्ज खग्ग बल खल दल खड्यो॥
बहादर साह जय जस दियो साह अजीम सिरताज कौं।
दीनो अजीम जय जस तिलक राजसिह महाराज कौं ॥३५७॥

दोहा

हरि हर हरि जुत नद ते देषि जग को रंग।
भले हुते पै छाँड़ि कै गए भटन के संग ॥३५८॥

बडे कहा छोटे कहा वृंद भले ते दीठ।
राजपूती कौ जुद्ध मै ते न गये दै पीठ ॥३५९॥

नाम धरत हे ओर को रजपूती की चाह।
जे को जाने कित गये किंहि बिरियाँ किंहि राह ॥३६०॥

१२

हितोपदेशाष्टक

नैननि की जोति जो लौं नीके कै निहार हरि
सुन ले पुरान जो लौं सुनै सब कान है।
रसना रसीली जो लौं रसत रसीले बोल
तो लौं हरि गुन गाय जी पै तू सुजान है।।
काँपै नाहि कर तो लौं भली भाँति सेवा करि
पायन प्रदच्छना दे जो लौं बलवान है।
जरा जकरै तै कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगवान जो लौं देह सावधान है।।१।।

भूलि जैहैं सुरति सुमति मति भूलि जैहैं
इत कित भूलि जैहैं एतो सावधान है।
जीभ लरधरि जैहैं कर थरहरि जैहै
कर थिर हरि पै तू हरि अभिमान है।।
मन की फिरन मेटि मन को फिराय फेरि
मनका के फेर मै न फेरियो सयान है।
जरा जकरै तै कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगवान जो लौं देह सावधान है।।२।।

आसन बिछाय पदमासन बनाय मन
मान पदमासन को सासन प्रमान है।

तन साध मन साध नयन बयन साध
स्रोन साध साध जेते साधन बिधान है ।।
विषै बिष परिहर प्राणायाम कर ध्यान
धेय धर धर सुख को निधान है ।
जरा जकरै तै कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगबान जो लौं देह साबधान है ।।३।।

जनम अनेक पाय मानस जनम आय
भूलि जाय नाम या मै तेरी महिमा न है ।
राव कहा रंक कहा पंडित बिबेकी कहा
जेते जग आये तेते सब मेहमान है ।।
जिय मै बिचार यह कीन्हों निरधार नाम
नीकै उर धार यातै तेरो महि मान है ।
जरा जकरै तै कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगबान जो लौ देह साबधान है ।।४।।

ए हो धाम काम बाम काम बाम काम धाम
काम करबे को तेरै पूरन सयान हैं ।
मन बिसराम अभिराम स्याम नाम ता कौं
उर धरबे कौं होत अति ही अयान है ।।
ऐसी बिपरीत रीत छाँड़ दै अनीत प्रेम
पूरन प्रतीत राख भाषत पुरान है ।
जरा जकरै तै कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगबान जो लौं देह साबधान है ।।५।।

प्रथम ही जीब पुनि अंग रंग रूप दीन्हो
दे करि जनम तोहि दीन्हो पय पान है ।
पोषन भरन करि करन बिबेक दीन्हो
बुद्धि बल दीन्हो ताते भये महा जान है ।।
ऐसे उपकार करतार के सँभारि उर
निहचै उद्धार तेरो वाही सौं निदान है ।

जरा जकरै तै कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगवान जो लौं देह सावधान है ।।६।।

छबि सौं वलित गुन कलित ललित अति
गलित पलित होत ऐसो परमान है।
आध नाहि ब्याध नाहि और हू उपाध नाहि
तो लोभ न साध कै अराध जो सयान है।
देषियै संसार सो असार तू समझ ले
तामै यहै तत्त्व सार मान वचन प्रमान है।
जरा जकरै तै कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगवान जो लौं देह सावधान है ।।७।।

सिव सनकादि वेद ब्यास मुनि नारद से
बुद्ध के बिसारद से हारद के जान है।
बिधि वालमीक अंबरीख भज नीक भए
छाँड़ कै अलीक ठीक कीनो गुन गान है ।।
तैसै तू ही वाही सौं मगन ह्वै रहत क्यों
न पढ़त पुरान ऐसो पुरुष पुरान है।
जरा जकरै तै कहा करिहौ कहत वृंद
भजि भगवान जो लौं देह सावधान है ।।८।।

अष्टक हित उपदेस कौं पढ़ै सुनै मन लाय।
तिरत जलधि संसार तै वृंद मनोरथ पाय ।।

१३

पुष्कराष्टक

तीर तीर नित न्रमल नीर धीर धीर न्हात जन ।
हरत पाप बिधि त्रिबिधि ताप संताप जात मन ।।
तप निधान बिधि बिधि बिधान सुभ ध्यान तपत तप ।
जुत बिबेक तहाँ द्विज अनेक चित एक जपत जप ।।
पुहबी प्रसिद्ध जहाँ सिद्ध सब सुष समृद्धि गुन बृद्धि गनि ।
सेबत वृंद आनंद सौं पुष्कर तीरथ मुकुट मनि ।।१।।

कलित···लक···ललित जल भरित कुंभ बर ।
कंक कोक कलहंस करत नित केलि हंस बर ।।
पुष्कर भव किय प्रकट परस पुष्कर भव भंजन ।
पुष्कर भव परकास जगत पुष्कर मन रंजन ।।
अघ ओघ हरन पाबन करन करन भाव कबि वृंद भनि ।
उद्धरन धरन पर उदित अति पुष्कर तीरथ मुकुट मनि ।।२।।

(वंशज)[1]

---

१. वंशजो से प्राप्त गुटिका-सग्रह से लेने के कारण छदो के साथ 'वशज' संकेत दिया है ।

१४

भारत कथा

एक समैं बन सघन मैं बिचरत पाँचों बीर।
भई त्रिषातुर द्रौपदी चाहैं पायो नीर ॥१॥

नृप आग्या तैं जौ गयो नीर भरन सर तीर।
सरबर मैं बानी सुनी भयौ चकित चित धीर ॥२॥

एक एक कौं है कह्यौ इक इक प्रस्न प्रबीन।
उत्तर काहू नाँ दियो किए चेतना हीन ॥३॥

राजा तब आए तहाँ सोचे करें बिचार।
तब जलचर वेई प्रस्न बूझे एकहि बार ॥४॥

कौन मुदित अचिरजु कहा कहा बात पथ केहि।
धर्मराज उत्तर कहौ पांडब जीवत होहि ॥५॥

दिवस पाँचवें या छठैं मिलै साक आहार।
रिण प्रयास तैं जो रहित यहै मुदित संसार ॥६॥

दिन ही दिन यम भौंन कौ है जीवन कौ गौन।
देखि रहे चाहत रहे या तैं अचिरज कौंन ॥७॥

मोह कड़ाहा रबि अगनि करि इंधन नी रात।
मास दरबि प्राणीन कौ काल पचति यह बात ॥८॥
तत्त्व दुर्‌यौ मत हठ पर्‌यौ बहुत मुनिन की बानि।
सतसंगी जहँ संचरै पंथ वह पहिचानि ॥९॥
धर्म बारिचर रूप ह्वै बूझे प्रस्न प्रबीन।
ए उत्तर राजा कहे पांडब जीवँत कीन ॥१०॥
धरम सुवन कौ धरम द्रढ़ देखि धरम हित पीन।
होहु तुम्हारी जय सदा यह बर आसिस कीन ॥११॥

१५

स्फुट छंद

मगलाचरण

कौन हौ, ब्रह्म अपूरब हौ, कहाॅ बास, जहाँ बिधि सृष्टि बनाई।
राखत को है, अनाथ कौं राखै को, कौन पिता, सुधि नाहिन पाई।
चाहौ सो लेहु, त्रिपैड धरा, अति थोरी यहैं, त्रैलोक बताई।
वृ द कहैं बलि कौं छल्यौ बात ही बातन सौं तुम कौं बरदाई ।।१।।

(वशज)

तू नव जोबन गोपबधू कबि वृंद कहैं चित चंचल बारी।
कस सो भूपति गोपन की बिधि अबुज नाल सी ग्रीव सँबारी।
भूलि हू मो बिन ही कबहू जइयो मति कुंज मै कुंजबिहारी।
नंद के बैनन नैन नवाइ लजाइ रहे तिन की बलिहारी ।।२।।

(वशज)

चंदन चंगी प्रेम प्रसगी रसिक रसगी रागगी
हरि अद्भुत अंगी उदित अनंगी अखिल असंगी रसबंगी।
जोगी जोगंगी तत्व तरंगी भेदि भुजगी सिब संगी
गति ललित त्रिभगी अमित उपगी नाना रंगी नव रंगी ।।

........................[1]

नबरंगी नागर नबल अति सुकुंबार सरीर
वृंद जपत जस सरस रस जय जय स्री बलबीर ।।३।।
(वंशज)

....

छंदा बहु बिधि छंदा छाबै छंदा सुच्छंदा ।
जुग जुग चिर नंदा जोति अमंदा आनँद कंदा नँद नंदा ।।४।।
(वंशज)

.. ..

नंद नंद आनंद मय जीत्यो अजित अनंग ।
पीत बसन नब नब बसन चंदन चरचित अंग ।।५।।
(वंशज)

अति सुंदर स्याम की सुंदरता लखि कामहू की सुधि भूलत है ।
नरदेव सबै हिय मै नबाइ लजाइ रहे तिन की बलिहारी ।।६।।

श्री चतुर्भुजजी के कवित्त

फूलित कमल ऐसे चरण कमल जुग
फूलन के लागे प्रीति लागे सुख पाइके ।
फूलन के फेंटा उपरौनी पुनि फूलन की
फूलन की फाग फबि रही छबि छाइ के ।।
अति ही उदार उर हार हिये फूलन के
फूलन के मंदिर मै सुंदर सुभाइ के ।
वृंद कहै ए रे मन भ्रमर सरूप ह्वै के
ऐसे रूप राचि स्री चतुर्भुज राइ के ।।७।।
(वृं० वि०)[2]

लीन भयो मन मीन सु तो तन तें अनतैं छिन एक न खेलैं ।
वृंद कहै सुनि के गुन ग्यान ए कानन आन की बान न झेलैं ।।

---

१ वंशजो से प्राप्त जिस गुटिका-संग्रह से ये छद लिये गए है, उसके आदि अंत के पन्ने खो जाने तथा उसके बीच मे बड़ा-सा स्थान जीर्ण होकर फट जाने के कारण वहाँ का विषय उपलब्ध नही हो सका है। अतः यहाँ लोपनिर्देशक—विन्दुओं द्वारा इस बात का संकेत कर दिया गया है। इसीलिए ये छद त्रुटित हो गये है।

२ वृं० वि० सकेत का अभिप्राय शाकद्वीपीय ब्राह्मण बन्धु पत्रिका के 'वृन्द विशेपाक' जून, १६२८ से उद्धृत है का सकेत है।

राय चतुर्भुज मोहनि मूरति को बरनै बुधि कोटि सकेलै ।
ऐसे भये सब अंग बिमोहित लोचन देखि निमेष न मेलै ॥८॥
(वृं० वि०)

सुंदर स्याम स्वरूप चतुर्भुज मोहनि मूरति मोहि सुहावै ।
मोचन पाप महा रुचि रोचन लोचन पान किये न अघावै ॥
वृंद कहै छबि या तन की नर पुन्य उदै कोउ देखन पावै ।
जो सुख तीनहु लोकन मै नहि सो इन भौंहन कोन मै पावै ॥९॥
(वृं० वि०)

मोहन मूरति सोभित स्त्री नग भूषन जोति उदोत निहारूँ ।
सुंदरता सुख धाम सुधामय वृंद बिसेस यहै उर धारूँ ॥
आज बिराजत या तन की छबि और कहा उपमा सु बिचारूँ ।
कोटिक काम सुधाकर कोटिक कोटिक बेर समेट के बारूँ ॥१०॥
(वृं० वि०)

वेद परमान मो पै परमान कही
जाइ मेटि पर मान परमानद बिधाई हैं ।
सुबरन करिकै सुबरन करि स्याम
सु बरन तन मन सुबरन भाई हैं ॥
बारन उधारयो तहां बार न लगाई वृंद
त्यो ही दुख बारन अबारन लगाई हैं ।
आचतुर मुख गो चतुर के चतुर कहैं
तारन जगत स्त्री चतुर्भुज राई हैं ॥११॥
(वंशज)

लीला के पद

भयो राजा राम हूँ तिनकी तिय सीत हूँ
पठाए पिता बन हूँ वचन सुन रानी के ।
वसे पचवटी हूँ तहाँ तै हूँ जनकजा कौ
रावन हरी हूँ जातुधान राजधानी के ॥
वृंद कहै सोवत समैं मै हरि मात मुष
सुनत ही अपनी पुरातन कहानी के ।

बोल उठे लछमन धनुष बान कहाँ मेरे
दुष्ट न जान पावै बारी ईहि बानी के ।।१२।।
(वंशज)

सीता सुधि ल्यायो हनुमान तब लंक पर
बिजै दसमी को है चढ़ाई महा जान की ।
कारी षरदूषन के मारे षर दूषन को
पाथर की बाँध पाज ...... पार की ।।
क्रुद्ध करि जुद्ध करि जीत्यौ इंद्रजीत कौ
सँभारयौ कुंभकर्न सुधि भूलि है अजान की ।
राबन कौं मारयौ ..... उधारि वृंद
देब काम पूरि कै ली आए राम जानकी ।।१३।।
(दंशज)

कंस करूर ओ कूर महा कबि वृंद हियै रिस घेर घिरायो ।
नंद कुमार महा सुकुमार भयंकर बारन संग भिरायो ।।
मारयौ है कुंभ मैं बज्र मुठी हनि संतन को हिय राजु सिरायो ।
ज्यौ मघबा गिरि देत गिराइ त्यौं गोकुल राइ गयंद गिरायो ।।१४।।
(वंशज)

अति मतबारो अति बारो जानि पीलबान
पेल्यो अ ....चारि कै ।
जान्यौ न महातम महा तम सो कारो देषै
लागै भय भारो ताहि पौरस बिचारि कै ।।
....द लाल झपटि पकरि पूँछ
नाग ज्यौं फिराइ नाग धरनि पछारि कै ।
वृंद कहै बीर बनमाल ....
. . गजदंत गजदंत से उखारि कै ।।१५।।
(वंशज)

देबकी के गेह तै निकरि कै पछारत हो
सोई बैर जोग माया जीय मै धरत है ।
..... कहि वृंद याही अनुमान तै हूँ जानत हौं

कठिन कराल कोप नाहिं विसरत है।
तरकि तरतराइ करकि करकराइ ह्वै
कों दिसि ओ विदिसि विचरति हैं।
नाम तें विरोध बंधु भए तें न वाज्यौ थार
यातें कस कांसे पर वीजुरी परति हैं ॥१६॥
(वंशज)

प्रात ही मात विलौवत ही दधि आन मथानी गही सु विवेकी।
वालक हो जु गुपाल रहो यह सक्ति कहाँ तुम कों मथवे की ॥
खैवे कों माखन देहों लला सुन घोर मथान की वोल हैं केकी।
वृंद कहै मुसकाय हँसे हरि कै सुध समुद्र छीर मथे की ॥१७॥
(वृं० वि०, वंशज)

छीर समुद्र ओ गाइन को पति हैं प्रतिपालक हैं स्रुति भाख्यौ।
जानि सो नंद के नद भयो जिन दूध के लालच ही अभिलाख्यो ॥
वृंद कहैं इन सों पहिचानि भई पहिलैं जे न चाख्यो सो चाख्यो।
देखो उदारता मातहू के तनके पयपान तें ताकह राख्यो ॥१८॥
(वंशज)

आवहु संभु विराजो इहाँ विधि वैठहु आसन वायो विछायो।
छेम षडानन हैं, सुभ मक्र, कुवेर कहाँ अजहू नहि आयो ॥
सोवत नींद मैं वोल उठे हरि वृंद जसोमति सभ्रम छायो।
कान्ह कहा कहै यो कहि कै वुधकार कै मात हिये सों लगायो ॥१९॥
(वंशज)

हरिचरण-वर्णन

कोमल रसाल अति परम प्रकासमान
नीके नव पल्लव से अरुत वरन हैं।
आवत मधुपगन गावत मधुर धुनि
सेवत सुवास लेय आनद करन हैं ॥
केसरि सहित कमलाकर मैं सोहत हैं
सुमन सिगार अरु जीवन सरन हैं।

वृंद कबि लोक बहु बरन बखानै ऐसे
अमल कमल हैं कि हरि के चरन है ।।२०।।
(वृं० वि०)

हरिस्मरण

करन सुनहु गुन ....य करन सुनन करि ।
करि जल तें उद्धरि धरित गोबर्द्धन कर हरि ।।
कर हरि लीन ली...कर भंजन अभिमान मान मोचन ।
सुंदर बर .... ।।
बर बीर धीर बसुदेव तन तन अभिनब जलधर बरन ।
...भव कमल कमल नैन करुना करन ।।२१।।
(वंशज)

रमन रास रस सरस सरस मिलि प्रेम उपावन ।
गावन निज रावन ।।
रावन कुल संहरन हरन जपत नाम जस ।
जस गावत संसार सारदा तार भक्त ...... ।।
बरनै बिबुध लोक आगम निगम मन सुद्ध सेवहु रसिक जन ।
... . रसिक लाल राधा रमन ।।२२।।
(वंशज)

नग गन जटित किरीट सीस सोहत जोति जित ।
केसि कंस संहरन करन निज जन आनंदित ।।
. अधर रहसि राधा चित रंजन ।
नटनागर नँद नंद नेह निधि नाथ निरंजन ।
गुन गुनी कहत जस सकल लोक असरन सरन ।
सनकादि सिद्ध नारद सदा धरत ध्यान स्री गिरि धरन ।।२३।।
(वंशज)

कबहौं तो सुभर सरोबर से जानि तहाँ
मीन ह्वै कै तृषा ताप पाप कौ हरत है ।
सरस कमल जानि कबहौं होम धूप ह्वै कै
लेत है सुबास छकि छोह बिसरत है ।।

कवहों, सुभाइ सुप पाइ पाइ रज
रहै लपटाइ वाल लीला सी धरत हैं।
वृंद कहैं सष चक्रधारी के चरन राचि
मेरो मन ऐसैं हित भावना करत हैं ॥२४॥
(वंशज)

नाम-महिमा

ईस्वर के हेत होम महा · तो
कीजै कौन भाँति एतो काम सव दाम के।
तीरथ को जैवो ओ पुरान को सुनैवो सो तो
कैसैं · · · रहैं घधे धाम के॥
मेरो कह्यो कीजै यामैं गाँठ को न छीजै कछु
होत हैं सफल दिन छिन अ · ···· के।
स्याम नाम लीजै जासौं सीजै सव काम वृंद
नाम विन ओर सव काम कौंन काम के ॥२५॥
(वशज)

पाइ · · · · स्याम नाम ही तैं
नाम ही तै देषीय तरग सुर धाम के।
भव पारावार पार पावैं स्याम नाम ही तै
प्रताप स्याम नाम के॥
जिन स्याम नाम ही तीनो तिनके रहे हैं (नाम)
गीध व्याध गनिका करैया विधि वाम के ॥२६॥
(वशज)

कलिजुग माहि नाम कामधेनु काम कुंभ
कामना के पूरन कौं नाम कामतरु हैं।
भव दधि तरवे कौं नाव ···· ·
· · अभिराम नाम आनद को घर हैं॥
अनुभो की सिद्धि नाम नाम नवनिद्धि वृंद
नाम ही तै अठसठि तीरथ महान हैं।

आठौ जाम स्याम नाम नाम ही सौं काम राखि
सुनि सुनि साखि नाम स्याम सरभर हैं ॥२७॥
(वंशज)

विनय

पुरुष पुरान चतुरानन चतुर जिहि
बेद मै बतायो सनकादिकन गायो है।
भगत बछल ओ भगति प्रिय नाम हरि
सुक बलि पृथु से उधारे जस गायो है ॥
वृंद कहि यह सुनि हियरा थरहरानों
एक बात औरों सुनि जी मै जीय आयो है।
अधम उधार नाम पतित पावन नाम
गीध ब्याध तारे स्याम तातै सुख पायो है ॥२८॥
(वंशज)

कौरव-सभा-समुद्र, गहर बिरोध वारि[1]
कोप वड़बानल की ओप अगमगी है।
जोधा दुरजोधन, तिमिंगलादि जल जंतु[2]
वृंद कहै लोभ की लहर सगमगी है ॥
कुबुधि बयारि तै दुसासन तुफान उठ्यो
चाल्यो बादियान चीर भीर रगमगी है।
प्रीति पतवार लै कै हूजिये करनधार
आज हरि लाज की जहाज डगमगी है ॥२९॥
(वृं० वि०)

केते जुग वितये अनंत गति लेत लेत
धरि धरि बेष सविशेष भाव भिरि कै।
सूछम सथूल अध ऊरध तिरीछो ह्वै कै
उलट पुलट नाच नाच्यो घिरि घिरि कै ॥
अब नंद नंदन सौं विनती करत वृंद
भावै सु करहु तातै राखो मन थिरि कै।

पाठान्तर—१. व्याल २. कुमंडलादि जल पति

जे तो प्रभु रीझै तो परम मौज कीजै
जे न रीझै तो कहो न ल्याऊं सांग फिरि कै ॥३०॥
(वृं० वि०)

छत्रिन पौरुष छाँडि दियो सुख पाइ बसे मृगराह दरी ज्यौं।
साहस धीरज मान कुमान रहो परिमान घर्‌यारि घरी ज्यौं॥
धर्मधरी डर ते झकझोर तरी जल जोर झकोर परी ज्यौं।
वृंद कहैं करुनामय हो प्रभु तो अव कीजे सहाय करी ज्यौं॥३१॥
(वृं० वि०)

उपालभ

ग्राह गह्यो गज राखि लयो तव तो न बिलंब करी जपने की।
द्रौपदि की पत राख लई मिट आँच गई अरि ते तपने की॥
वृंद अनेक कितेक कहूँ ब्रिद ताते सहाय करो अपने की।
नाँहि तो बेद पुरानन की कहि मानि हौं बात सबै सपने की॥३२॥
(वृं० वि०)

जो कछु बेद पुरान कही सुनि लीनी सबै जुग कान पसारे।
लोकहु मै यह ख्यात प्रथा छिन मै खल कोटि अनेकन तारे॥
वृंद कहैं गहि मौन रहै किमि हौं हठि कै बहु बार पुकारे।
बाहर ही के नहीं सुनो हे हरि! भीतरहू ते अहो तुम कारे॥३३॥

आत्मबोध

चहियै यह तो मन भौंर भले नित ही पद पंकज ही रुचि तू।
अरु जो न सुभाव तजै अपनो तो कहै कबि बृंद यहै सजि तू॥
सधि है परमारथ स्वारथ हो सु महा रस लालच ते लचि तू।
प्रभु के पद पानि हियै मुख नैन इतै अरबिंदन सौं रचि तू॥३४॥
(वृं० वि०)

देख्यो चाहै सो दिखाऊं सुन्यो चाहैं सो सुनाऊं
भाँति भाँति तेरो गायो गाऊं बारबार है।
ज्यौं नचावै त्यौं ही नाचौं जाही ताही रंग राचौं
बामा बाम काम हू को कछू न बिचार है॥

कहैं त्यौं करौ पै कहैं लेत हौं कहत वृंद
तू ही मेरो कह्यो एक कीजो निरधार है।
अंत बेर राखियो परम हरि ही सौ हेत
एहो मन मेरो तोसौ यह ही करार है ।।३५।।
(वंशज)

सुर गुरु सुर गुरु गुन ताके गावत
बिचारि ताहि कौं क्यौ न बिचारि है।
नर मन मनि ह्वै कै नर मन रंजै पै तू
नर मन रमन रमा को उर धारि है।।
रा···तिसौं काम काम राम ति सौ काम
तेरे काम तिसै राम तिसै काहे न सँभारि है।
बिपतिक पति पति राषत बिपति पति
रे पतित पति तोहि सो पति उधारि है।।३६।।
(वंशज)

ज्ञान

जनम अनेक तामै मनुष जनम सार
तामै सार उत्तम सुकुल अबतार है।
गुरु सार गुरु के बचन सार वृंद कहै
सार सतसंग सार बिबेक बिचार है।।
तामैं दान दीबो सार जग जस लीबो सार
हरि रस पीबो सार पर उपगार है।
संसार को सब कोऊ कहत असार पै
सार दरसी कौं तौ असार ही मै सार है ।।३७।।
(वंशज)

एक के अनेक नाम भाषा भेद करि होत
जानै ताकौ एक भास भासै रट रट मै।
जैसे ताल जल जो ले आवै सोई मेरो कहैं
वहै जल बिमल कहावै घट घट मै।।
वृंद नट बिद्या मै निपट पटु होत सोई
नट बिद्या एक सी बतावे नट नट मै।

घट माहि जानै सो तो घट घट माहि जानै
घट मैं न जानै सो न जानै घट घट मैं ॥३८॥
(वृं० वि०)

एक की अवग्या तै अनेक की अवग्या होत
एक पूजे ओर सव पूजे ऐसो कहिये।
तो अनेक एक माँहि एक है अनेक माँहि
ऐसे समजानि भाव भेद पै न गहियै॥
सब ही को सगी नाना रंगी सरवंगी ताहि
ताहि प्रेम नेम ही सौं परतीत ही सौं लहियै।
बृंद कहैं ए तो विधि सेस गुरु मुख जानि
जासौं मन लाग्यो होय ताही के ह्वै रहियै ॥३६॥
(वंशज)

अधूरा छद

जानत हौं जब सतसंग तै विवेक आवै
कहाँ रहै वन मै कि तन मै।
वृंद कहै यह बिस्व व्यापक सरूप ताहि
तु ही कहि कहू एक जन ' में॥
(वंशज)

असरन सरन है तिनकी सरन कोऊ
तिनकी सरन बिसरन तो सु रति हैं।
जनपद जनपद जन जन पद फिरे
क्यौं न परिजन मोही भजन पगति हैं।
बृंद छहि भगति उधार
वही सुधा रही सुधार नित प्रति हैं।
भगति षगति ताहि देत सुभ गति
हरि हरि दुष गति '...पति है ॥४०॥
(वशज)

. ...

ताहि दिखाइ परबीनता छिपाही है।
थिर चर जीवन की जीवन की थित कीनी
जीवन की बृत्ति दीनी तिन कौ, तहाँ ही है ।।
परिहरि दोष परितोष को पोष करि
वृंद कहि लहियै सुभर छत्र छाँही हैं।
पोषन भरन को करन लाग्यो सोच कहा
हेरि बिस्वंभर तू रहत बिस्व माँही है ।।४१।।

(वंशज)

मधुर मनोग्य प....... ....न
ब्यंजन बिनान स्वादु बान लीजियत है।
सीरा पुरी छीर पेरे मेवा कबि वृंद कहै
मिसरी मिलाइ ' ''' दूध '''रत है ।।
पेट की सहल रूखे सूखे सौं भरत ऐ पै
जानत हो याकौं ए तो काहे कीजियत हैं।
अंत बेर सरस नाक दाबि हरि गुन गावै
याही तै अगाऊ रसबति दीजियत है ।।४२।।

(वंशज)

ऊपर का प्यार है पै अंदर की रूखी रूह
सक्कर लपेटी जैसी पैनी धार छुरी है।
देखत ही खूब जैसे''' ....
याकी हलभल बीचि दगाबाजी डुरी है ।।
वृंद कहै सुन तो खिलाफ मै न कहता हौं
इस तै फरक ताकी ' ' .... ।।
पासनाई करै तो तू साहिब सौं कर यार
दुनियाँ की आसनाई आसका राबुरी है ।।४३।।

(वंशज)

केता समझाया...... पाया कछु
वहै दिल देखता हौ तेरा अब ताँई का।
जहाँ तहाँ जाता है पै मिलती मिलाबता है
... नाथ जू की ऑई ऑई का ।।

रहबे तनाह बेतमाह राखि उस ही की
जिस ते निबाह सुनि गा ... ।
वृंद कहैं तुऊ कौं हजार बार कहता हौं
सचा दिल बीच राखि साया एक साँई का ॥४४॥
(वंशज)

सुन तो ·नेह·· कहौं होता नाँहि
वृंद कहैं ऐसा ही बनाइ रखा तबका।
चींटी कन भर फील मन भर पावता है
मन भर पावै रतालब तलब का।
जालिम सौं डर न गरीब सौं जुलुम करि
दिल मै महर धर कहता हौं कबका।
दुनिया के काम कौं खबरदार है पै
करि खबर उसी की जो खबरदार सबका ॥४४॥[1]
(वंशज)

हरिहरैक्य-भावना

गंग चरन हरि धरिय धरिय उतमंग गंग हर।
हरि अलछि किय लछि हरहि परतछ गौरि धर॥
हरि सुपुत्र किय काम काम हर कोपि भसम किय।
हरि जन संपति हरत हरत हर बिपति जन सुनिय॥
जप वृंद जगत साधार हरि-हरि सु जगत सब सहरन।
है जदपि एक हरि-हर तऊ कृत बिरुद्ध करुनाकरन ॥४६॥
(वंशज)

बृषभ संग दोऊ रहत दुहून संगीत गीत हित।
दुहून कियो बिषपान दुहून सिर चंद सुसोभित॥
दोऊ भिच्छुक दोऊ चोर दोऊ अरजुन हितकारी।
दुहून गंग उद्धरिय दोऊ मातंग प्रहारी॥

---

१ एक पृष्ठ पर पीछे से आता हुआ कोई छंद यों समाप्त होता है—
मैं पयोनिधि मैं वारिधि मैं नीरधि मैं जलधि मैं याको गहि डारियै॥

निज सक्ति भक्त आसक्त दोऊ दुहून देब सेबत समो।
जन वृंद जपत जस जोरि कर एक रूप हरि-हर नमो ॥४७॥
(वशज)

हर-स्मरण

जो दिग अंबर धरे काम किहि धरे बान धनु।
जो धारे धनुबान भसम लेपन तो किम तनु ॥
भसम लेप जो कियो ततो गिरिजा किहि कारन।
जो गिरिजा संग्रहीत तो किम काम निबारन ॥
यह लखि बिरोध बिधि संभु बपु अनख इन मन लयो।
षडमुड कुमार अफरे गनप भृंगी तन दुर्बल भयो ॥४८॥
(वंशज)

बाम सरीर नबै नहिं नैक हौं कैसै कै पाइन सीस नवाबै।
बाम भयौ तन बाम तहाँ मनुहारि कौं अंजलि कैसै बनाबै ॥
आधी भई रसना जउ भाब तहाँ मधुरे बच कैसै सुनाबै।
मानबती गिरिजा भई तो वह वृंद कहै हर कैसै मनाबै ॥४९॥
(वशज)

कुन्द की कली से कमै कंकनन कमनीय
कौमुदी कलाधर कौ कलित कपाल हैं।
करटि कलेबर के कृति कौं कसत कटि
कालकूट कंठ कर कलित कपाल हैं ॥
काम कौ कदन काम कामना कलप कुज
कैलास के कूल केलि कोप कै कराल हैं।
वृंद कबि कहै काहू काहे कौ कृपाल कहों
कालिया को कंत कित केबल कृपाल है ॥५०॥
(वंशज)

देवी-स्तुति

तेरी इक चाह पर वाह दिल तेरे राह
तो ही सौं निबाह नाम जपत सबेरो हूँ।

राखै जहाँ रहौं औ कहावै सोव बैन कहौं
तेरी कृपा लहौं यह चाहत घनेरो हूँ ॥
तेरे गुन गाऊँ सुख संपति सरस पाऊँ
तेरे पद पदम बसाऊँ मन मेरे हूँ ॥
साँचे सरनाम कबि वृंद कर जोरि कहैं
खाना जात चाकर भवानी मात तेरो हूँ ॥५१॥

बेद बिधि पूरन सौं पूरित कलस थापि
रोपित सु बिधि जव ओपित सुहाति के ।
धूप दीप अच्छत सु कुंकुम सिंदूर फल
इत्यादिक उचित कुसुम भाँति भाँति के ॥
वृंद कहैं ठौर ठौर थानक उछाइ चाह
ध्यान धरै संत भय भंजन अराति के ।
पुन्य जोग पाये नव दुर्गा गुन गाये ऐसे
जन मन भाये दिन आये नवरात्रि के ॥५२॥

एक जन नीके जननी के हेत होम करै
एक होम धूम ते पबित्र करै प्रान है ।
एक जन जाप करै जनन के पाप हरै
एक जन पूजै करि जथा जोग दान है ॥
तीरथ को धावै एक ध्यान मन लावै एक
तन चरचावै एक गावै गुन गान है ।
एक जन दुर्गा पाठ पढ़ै कबि वृंद कहै
आई नवराति सब ऐसे सावधान है ॥५३॥

काम न किरोध साधु पंडित के सोध उर
वोध मै मगन अबिरोध सब ही के हैं ।
दया के निधान जानै पूजन बिधान सदा
भजन मै सावधान जोतिबान जी के है ॥
सिर पर धरै हरि गुरु के चरन सदा
तीरथ बरत करें औ सुबुद्धि ही के हैं ।
आतम गवेषी जन जन के हितैषी कबि
वृंद कहैं ऐसे जन तेई जननी के हैं ॥५४॥

बैनी सुख दैनी सीस सोहत सुमन मोहै
हार हिये वासुकी बिराजै सुछ पानी को।
बिजया के संग रंग सरस कनक सेती
चन्द तै लिलाट नीको सोभा सुखदानी को।
दिसि औ बिदिसि के दुकूल देह नीके नैन
तीन लोक देखै वस होत मन मानी को।
वृन्द कहै कीजिए भजन गुन यहै जानि
भव को सरूप जैसो रूप है भवानी को ।।५५।।
(वृं० वि०)

देवी-स्तुति राग धनाश्री

दरसन की बलिहारी, हे अंबे, दरसन की बलिहारी।
अति सुंदर अभिराम साँवरी सूरत अति सखकारी ।।
हे अंबे, दरसन की बलिहारी ।।१।।

पूरन सरस सुधानिधि मुख पर कोटि चन्द छबि बारी।
लोचन तृप्ति निमिष नहिं पावै निरखत बारंबारी ।।
हे अंबे, दरसन की बलिहारी ।।२।।

देखे सुने अनेक देब पै नाहिन भे अनुहारी।
सब तै सरस तोहि सौं जननी लागी सुरत अमारी ।।
हे अंबे, दरसन की बलिहारी ।।३।।

ब्रह्मादिक सब तेरे ही सेवक सेवा करत तिहारी।
निसि दिन बसो वृंद जन के हिय जिय की प्रेम पियारी।।
हे अंबे, दरसन की बलिहारी ।।४।। ।।५६।।
(वृं० वि०)

ईश्वर-स्तुति

त्रिभुवन चो स्वामी जगत चो तारण। आधारण ब्रह्मंड इक्कीस।
जण जण कतै जाइ की जाचै। जाच एक पूरण जगदीस ।।१।।

भूलन अवर भरोसै भ्रम भ्रम। क्रम क्रम धणी सुधारण काज।
मनिख मनिख आगल की माँगै। माँगि एक दाता महाराज ।।२।।

जग सुख लहै सुदामा जेही। जनम जनमचा मिटै जंजाल।
पुरुष पुरुष कि सौं प्रारथै। प्रारथ एक जगत प्रतिपाल ॥३॥
भगत बछल कवि वृंद सदा भजि। चाव भाव करि करि गुल चाल।
दीन बचन दूजा मति दाखै। दाख भाख मुख दीन दयाल ॥४॥ ॥५७॥

(वृं० वि०)

अमृतध्वनि

कह कह किलकत कालिका निरखि असुर दल निद्ध।
पच्छहि सुर गन वृंद कहि जुद्धद्धरिक विरुद्ध॥
जुद्धद्धरिक विरुद्धद्धसि असि रुद्धद्धस कित।
अब्भब्भट घट गब्भब्भखि भखि भब्भब्भभकत॥
रत्तत्तरफर गत्तत्तकि रन मत्तत्तह तह।
धक्कक्कर धक धक्कक्कटि तक टक्कक्कह कह ॥५८॥

डर अरि प्रवल प्रताप लखि, धुज्जै कुनप अथग्ग।
क्रुद्धद्धरि त्रिपुरे चढिय, बध्धग्गयण विलग्ग॥
बध्धग्गयण बिलग्गग्गहर उमगग्गण सुर।
सुंभम्भरित अबब्भब्भरित निसुभब्भय उर॥
चड प्रसैमित मुडद्दनुज वितुडप्परि हरि।
झुंडप्प्रबल प्रचडड्डगि लखि झुंडड्डरि अरि ॥५९॥

(वृं० वि०)

प्रेम-प्यास

कूप पर धूप ही मैं रूप रस रीझि रहे
ह्वै गये मगन छिन सुख मै बिहात है।
कोक परिहरि ओक लोक लोक डर हरि
ढीली ओक करै त्यौं त्यौं धार पतरात है॥
संग की सहेली तेऊ भूली घट घाट गति
गहैं रस रीति लिखी चित्र की सी भाँत है।
वृंद कहै ऐसी कछु प्रेम प्यास लगी दुहु
पीबत अघात है न प्याबत अघात है ॥६०॥

(वृं० वि०)

सीतल सुगध धीर परस समीर उर
नीरज उसीर नीर चंद न सिरात हैं।
फूले फूले बाग फूल सर से लगत सब
राग रग नित नये सुख मे विहात है॥
भूषन बसन तन करत बनावत न
मन मे न चैन प्रिय बात न सुहात हैं।
वृंद कहै ऐसी कछु प्रेम की अटक तातै
मिलै अनमिलै बाको ऐसे दिन जात है॥६१॥
(वृं० वि०)

वशी के कवित्त

सातो सुर एई सातौ अरचि समान कान्ह
फूँक तै लपट झपटनि पसरत है।
वृंद कहै कोटिक उपाव तै बचाव नाहि
कानन लौं लागि लागि व्याकुल करति है॥
अति फैल रही व्रजवालिनी कै गैल परी
जाकी ज्वाल जाल तातै अवला जरति है।
पी करि दवागि व्रज मंडल बचायो अब
सोई आग वंसी बीच ह्वै कै निसरति है॥६२॥
(वृं० वि०)

बसीधर बस पै विवस करै औरन कौं
निसि दिन रंध्रन के राह निकसति है।
वृंद कहै टेटी गति लीनै विष भीनै चलि
कानन तै कानन कौं आनि कै डसति है॥
उठति लहरि 'हरि हरि' बरराइ उठै
सुधि बिसराइ व्रज सुदरी ससति है।
जानति हौ राग नाग रागिनी, ए नागिनी ह
फनी के कुटुबी माना बसी मै बसति हैं॥६३॥
(वृं० वि०)

नेत्र-वर्णन

आप ही बीच दलाल भये पहिलै ही कछू समझै करि सैना।
चाहक ज्यौं मन गाहक लै हित बात बनावत है दिन रैना॥
वृंद जिती जिय राखौं दुराइ सु देत जताइ कहै बिन वैना।
कीजै कहा, कहिये किन सौं, न बसाइ कछू, ए बड़े ठग नैना॥६४॥
(वृ० वि०)

कान्ह सौं नैन लगे जब तै तब तै दिन रैन कछू न सुहावै।
वृंद यहै चित चौंप चुभी पल ही पल देखन ज्यौं तरसावै॥
सास की त्रास, जिठानि की कानि, कोऊ मिस ले गृह काज को धावै।
आँगन आई, झरोखन झाँखि, अटारी चढै, फिर बाहिर आवै॥६५॥
(वृं० वि०)

वृंद कहैं हरि सौं चित जोरि करो हिय सौं हित हान कियो री।
देबर सास ननंद जिठानी रिसानी रहै करि मान हियो री॥
घेरु चल्यो सिगरे ब्रज मै इह भाँतन जीब कुताबलयो री।
दोस कहा अलि औरन कौं अपुने इन नैनन भेद दीयो री॥६६॥
(अनूप)[1]

नैननि ऐसो सुभाव पर्‌यौ पलही पल देखे बिना न रहाँही।
गैर कुठौर चबाब ठइ हटकाइ रही हठ जांहि तिहाँही॥
वृंद सनेह दुराबत हौ सु बताबत लोक हजारन माँही।
हौं बरजौं, बरजे न रहे, अब कहो सु कहौ सखि मो बसि नाँही॥६७॥
(अनूप)

राधिका रूप-वर्णन

अति सुकुमारि बृषभान की कुमारि रूप
रति अनुहारि मनुहारि कै मनाई है।
वृंद कहै नीलांबर बादर की ओट सखि
सबन की डीठि चतुराई कै बचाई है॥
जोबन की जोति तन बसन की जोति नग
भूषन की जोति जगमग दरसाई है।

---

१ अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, वीकानेर, हस्तलिखित ग्रथ, सख्या १६२ से उद्धृत।

मिलि घनश्याम सौं मिलन घनस्यामजू सौं
कामिनी को रूप धरि दामिनी जु आई है ॥६८॥
(वृं० वि०)

कुच-वर्णन

कमल गुलाब मृदु पल्लव सो अंग तेरो
ए अति कठोर मानों वज्र ही के गढ़े है।
सोभित पदमिनी सो सूछम सरीर तेरो
ए परम पीन गज कुंभन से बढ़े है॥
वृंद कहै तेरो सुधानिधि सो सुमुख, ए तो
देखियत दुर्मुख मलीनता सौ मढ़े है।
जानत हौं याही तै तरुनि तेरे ही तै कुच
बाहिर निकसि फिर छाती पर चढ़े है ॥६९॥
(वृं० वि०)

अति ही कठोर जोर जाबेत दिखाइ देत
अंबर लपेटे नित सोभित समाज के।
स्याही लीयें हीय चढ़े चाहते धनी पै दाम
अति अभिराम देखे पीय सिरताज के।
तन पर करज प्रहार तें न हार धरे
गोलक सें नीके कहीयत बड़े काज के।
करि असबारी कबि वृंद सखकारी कुच
आए कर लैन को करोरी कामराज के ॥७०॥
(प्रतिष्ठान)[1]

चाँदनी-वर्णन

कुसुमित कास के प्रकास को न भास होत
फूले अनफूले से कुमुद गन भये है।
रजत के थार भरे मुकतान जानि परे
वृंद कहै हंस के जुगल बिछुरे (?) है॥
चन्दन चरचि रचि सुमन सिगार सेत
करि अभिराम तेरे अंग छवि छाए है।

१. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, ह० ग्र०, संख्या ४६०६ से उद्धृत।

सरद की चाँदनी मै ऐसे छिपि जैहैं जैसे
पारे मै के पारे तैसे तारे मिलि गये हैं ।।७१।।
(वृं० वि०)

रितु ग्रीषम चंदन चित्र कियैं तन सीतल सूछम सेत निचोलैं।
अति सोभित भूषन मोतिन के छबि जोति भरे सुथरे बहु मोलैं ।।
निसि पूनम छीर समुद्र मैं न्हात भुजान सौं रोहनि लेत भकोलैं ।
पति के पितु सौं पति देखत यौं तिय देत आलिंगन कंचुकि खोलैं ।।७२।।
(वृं० वि०, प्रतिष्ठान)

होरी-वर्णन

अंग अंग रंग भरे तरत तरंग भरे
सखी सखा सग भरे मैन की मरोर तै ।
अंचल अबीर भरे फैंटन गुलाल भरे
रस भरे बस परे भरे बरजोर तैं ।।
मुख हास भरे परिहास भरे बोलैं बैन
चितबत सैन भरे नैननि की कोर ते ।
वृंद कहि केसर के नीर भरे रीझ भरे
खेलत बसंत अरे दोऊ दुहुँ ओर तै ।।७३।।
(वृं० वि०)

रूप रसाल सबै ब्रजबाल अबीर गुलाल लई भरि झोरी ।
हास बिलास कहौं परिहास कहैं कबि वृंद कहौं चित चोरी ।
चंग मृदंग उपंग बजै मुंह चंग सजै मुख हो हो री होरी ।
अंग अनंग तरंग लिये हरि राधिका खेलत रग सौं होरी ।।७४।।
(वृं० वि०)

हिंडोरा के कवित्त

केसरी कुसुंभी सूही सारी जरतारी भारी
लगी हैं किनारी छवि नारी नारी गन मै ।
जोवन के भार भरी सुमन सिंगार भरी
प्रेम मद भार भरी सौंधे भरी तन मै ।।

बृंद कहैं झूलत हिंडोरे गोरे गोरे गात
जगमग जामिनी कि दामिनी ज्यौ घन मैं ।
चलियै गुपाल लाल चमकत चुनिया सी
लाल लाल लाल मुनियासी बाल बन मैं ।।७५।।
(बृं० वि०)

उत स्याम बादर त्यौं सघन तमाल इत
दामिनी सो फबि रही राधे छबि छाई है ।
गाजत मधुर तैसे नूपुर के सुर रंगी
पँचरंग डोर सुरचाप सुखदाई है ।।
झूलत झकोरन तैं बारन तैं हारन तैं
मुकता झरत बूँदे भूमि झर लाई है ।
बृंद कहैं सावन मैं ए हो मन भावन
बिलोको सोभा सघन हिंडारे दरसाई है ।।७६।।
(बृं० वि०)

जाके अंग जगमग जोति को प्रकास भास
चंद्रिका सो हास स्वास बास मकरंद की ।
हीरन के हार गज मोतिन के हार चारु
चोसर चमेली हार सोभा सुखकंद की ।।
राधिका बिचित्र चित्र चंदन रचित कबि
बृंद कहैं चित गति मोही नँद नंद की ।
तास डोरिया की सेत सारी को झिलमिलाट
गंग के तरंग मानौं झिलौ मिल चंद की ।।७७।।
(बृं० वि०)

षड्ऋतु-[illegible]र्णन

ग्रीषम मरीचिका सी हासी मृग मन मोहे
भूमि रस बरसत पावस सुहाई है ।
चंद मुख सरद जुन्हैया जोति की निकाई
सो तैं थर थर काँपै गातैं हिम हाई है ।।

सिसिर की सोभा नुत मजरी प्रकट मोहैं
फूलित नवेली पिक मधु रितु आई है ।
वृंद कहि ऐसे सब रितु सुख लीजे स्याम
बनिता विचित्र छहौं रितु छवि छाई है ।।७८।।
(वृं० वि०)

प्रकृति-वर्णन श्लेष कवित्त

देखे नैन खंजन से दिज कुंद कली सम
बोलै पिक बानी सब सुख बासह पराग की ।
सोभित अधर बिब भूषन कदब संग
सोसन रहतै सुमन रुचि राग की ।।
सदा फलेंल स्रीफल से पयोधर वर
सोहैं फैली अग छबि भले चंपक की ।
वृ द कबि यह काहू बनिता की बात कही
नाँहि ने जू यह तो कही हे बात बाग की ।।७९।।
(प्रतिष्ठान)

श्रृगार-वर्णन

काम भरी ब्रज बाम महा अनुराग भरी हरि अक भरे हैं ।
राबन से हरि · लसे क्रोध के बोध लरे हैं ।।
नंद जसोमति बृंद कहैं सुत मोह पगे जग जानि परे हैं ।
ग्यान बिग्यान धरेई रहै · हि भाइ तरे है ।।८०।।
(वशज)

पनघट बारो घनघट बारो वृ द कहै
बाँकी लट बारो ब्रज बात बिसतारि गो ।
राग रट बारो तन चंदन लपट बारो
निपट कपट बारो निकट निहारि गो ।।
लटक लकुटि बारो मुरली मुकुट बारो
चटक मटक बारो चटपटि डारि गो ।
पीत पट बारो जमुना के तट बारो ए री
बंसी बट बारो बटपारो बट पारि गो ।।८१।।
(वृं० वि०)

श्लेष कवित्त

वहें उरवसी सोभा पुहूची बनत नीकी
वहें कंठ सिरी गुन भरी छबि छाइ कै।
वह ई करन फूल जोति सों जगमगत वह
सीस फूल होत मोहित सुभाई कै॥
वहै हार मोतिन कौ रूप मन मानत हैं
पाइ लसमान अंग संग रंग पाइ कै।
जातें एती बातें बनी आवै कबि वृंद कहै
जात जात वहै ल्यावै भूषन बनाइ कै॥८२॥
(प्रतिष्ठान)

राधिका का परिहास

मोहन खेलत हैं जहाँ फाग बनी बिच काच के आँगन बारी।
केलिकौं चातुर, खेल कौं आतुर आई तहाँ बृषभानु दुलारी॥
जानि के पानी सयानी तऊ चित चौंकि चली है समेटि कै सारी।
वृंद कहै उत कान्ह हँसे, पुनि ग्वारि हँसी सब दै करतारी॥८३॥
(वृं० वि०, अनूप)

कृष्ण का परिहास

रुचि मोहन की जिय मैं धरि कै फुलमा भरि गागरि लै निकसी।
गइ ग्वारि जहाँ हरि हेरत हे गहि लीनी उतारि कै डीठि गसी॥
कबि वृंद कहै मन माखन मानि कै चाखत ही मुख मौन बसी।
जिय कान्ह खिसाइ लजाइ रहे उत कौ तिरछै तकि ग्वार हसी॥८४॥
(वृं० वि०, अनूप)

मंदिर मैं मिलि खेलत ही अति मोहन ढोठ महा जिय जाने।
राधिका काच कपाट के भीतर ठाढ़ो समीप हिये सुख माने॥
वृंद कहै हरि आये अचानक डीठ परे कुच कुंकुम साने।
डारत हाथ न हाथ चढ़े मुसक्यानी सबै भए कान्ह खिसाने॥८५॥
(वृं० वि०, अनूप)

छल मोहन सौं धरिगी दुबा सेज पै सौर सुधार कै उपर दै।
हरि सो कह्यो प्यारी तिहारी क्यौं हौं समुझाय अवेली वै कुंज मै है ॥
कबि वृंद कहै हरि आय तहाँ परिस्यौं पलका परसी न हीयै।
द्रुम रध्रन मैं तकि ग्वार हसो उत कान्ह खिसाय रहे चुप कै ॥८६॥

(अनूप)

नवोढा-वर्णन

प्रान पियारी मनोहर बानी सुनाइये मानि निहोरे।
दास भयो रहौं तेरी · ·············· कहौं कर जोरे॥
मेरो कछू अपराध है तो भुजपास के बंधन देहु सजोरे॥
काम हुतासन ताइ रखे · ··· ·· ·· · ········ ···च गोरे ॥८७॥

(वंशज)

आज ही गौन कियो पिय पै मन मानी धरी इन धन्य जिया की।
बृंद कहै अजहू लगि मोहि सखी इन को जु अयान हिया की।
नैननि बैननि ओज उरोज भई गति आन की आन तिया की।
या तन की द्रुति यौं प्रगटी उक्सायै तै ज्यौं दुति होत दिया की ॥८८॥

(वृं० वि०)

दाउ की सौंह तिहारो सौं मो अपुनी सौह फिर यौं झगरौगी।
आपुही ते उठि आपु गीयौ अँगिया लहँगा हु उतारि धरौगी॥
वृंद करो जु कहे की प्रतीत प्रजंक मै बैठ कै अंक भरौगी।
'हहा करों छोरहु मोहि पिया तुम' आजि कहो सु बिहाने करौगी ॥८९॥

(अनूप)

वृंद बिचक्खिन लाल सुलक्खिन यौं रस खेल हिये अभिलाख्यो।
लाइ सखी बरही तिय सौं पीय सौं मिलइ सु गई मिल दाख्यो॥
आन गही जबही तबही कुच ऊपर अंचर दे गहि राख्यो।
नाँहि हा हा जी, कहा करिहौ, बर हौ ! मोहि छोडहु यौं मुख भाख्यो ॥९०॥

(अनूप)

केतक दाइ उपाइ कीयै रति मंदिर मै पग देत सकाता।
सामुहैं लेउँ तो पीठ दै बैठत सोवत चौंकि उठै बरराता॥

काम कलोल की बात कहा कहौं, बातन हू की न हीं मोहि साता।
मोहि कान्हरो नॉह दीयो बिपरीत करी बिधि भूलि बिधाता ॥९१॥
(प्रतिष्ठान)

प्रौढा-वर्णन

दंपति चातुर खेलति चोपरि दाउ रदच्छद को दुहु कीनौ।
वृंद कहै बहसै बिहसै मुख जीत को दाब पिया हठि लीनौ।
"यौ मत दीजियो यौं" कहि कै तीय पीतम कै रदन छद दीनौ।
हारी तऊ पीय प्यारे सो जीति कीयो प्रउढा रस खेल नबीनौ ॥९२॥
(अनूप)

स्वकीया मान-वर्णन

बदन अरुनताई नैंक न जनाई और
बचन चतुराई की निकाई मै न काई है।
रहसि की बात जो चलाई तौ न मौन ठई
आँखनि रुखाई है न भौंहनि चढ़ाई है॥
वृंद कहै और काहू बात पै न लखि पाई
प्यारी की सरोष रुख याही तै मै पाई है।
पहिले ज्यौं आपने अधीन जु बसत मेरी
आपनी कहत ही ज्यौं कहि न बताई है ॥९३॥
(वृं० वि०)

काहू के कहे री भौहें तरकि तरेरी करि
फीके बच भाखे अब नीके बच भाखि ले।
वृंद कहै जोबन गहेली अलबेली हेली
रिस अभिलाषी अब रस अभिलाषि ले॥
मोहि हितू जानत है तो तू मेरो कह्यो कर
मान रस चाख्यो रति-दान-रस चाखि ले।
आप आय सौतिन के देखत मनाय पीय
तेरो मान राख्यौ अब तू ही मान राखि ले ॥९४॥
(वृं० वि०)

शुद्धि-पत्र

(तारांकित शब्द मूल पाठ मे छूट गये है। अत. इन्हे जोडकर पढना चाहिए।)

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८	२५	४	धूलि	भूलि
३९	२९	४	उलही	उलही उलही*
४०	३२	३	मीठि मीठि	मीठी मीठी
— वही —		५	जस	जस लै कै*
४०	३३	२	अनअ	अनंत
४२	४६	२	निखारियै	निरवारियै
४३	५२	२	वैठिन	वैठि
४३	५४	१	व्यौरि	व्यौरि व्यौरि*
४४	५६	५	अलन	अतन—?
४४	५९	२	नक-वेसिर	नक-वेसरि
४५	६१	५	प्रिय	पिय
४५	६५	१	अन	अैन
४६	६९	६	काही	ताही
४७	७४	१	सोई	सोई चलियै*
४८	७७	२	है	है
— वही —			सारै	सार
४९	८२	३	हारे	हार धरे*
५२	५	३	रति	रति रंग*
५२	६	५	कहत	कहत बृंद*
५२	८	१	रस	रस जाति*
५४	१५	१	रग	रंग रस*
५४	१५	३	निरिष—	निरषि उन्नत ?

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५४	१७	४	चढि वर	चढि गिरिवर*
५५	१६	१	चपत	चंपत
५५	२०	४	फुल	फूल
५६	२१	६	वृंद	वृंद प्रसिध*
५६	२२	६	परस	सरस
५६	२४	४	तप	तरु
५८	२	२	वसाय	वताय
६०	२२	२	पंखा का	पखा को
६१	३३	१	करि सक	करि सकै
६२	४८	२	पति के अबे	पति अबे
६६	६६	१	वैसे	कैसे
६७	११६	२	सीत	सील
६८	१३२	१	छिहिं	जिहिं
६९	१३४	२	दुहिन रुन का	दुहुनि रुकमि
६९	१३९	२	समुर्भौ	समुर्भै
७०	१४८	२	रोति	रीति
७१	१६५	२	समुभौ	समुभै
७१	१६६	२	चिरथ	विरथ
७१	१७१	२	कवू	कवहूँ
७३	१८७	१	ऐस	ऐसो
७३	१८८	१	भागवै जाय	भोगवै आय
७३	१९५	२	विकत	विकल
७५	२२२	१	भलौ	भलौ भलौ*
७६	२३१	२	पर	परि
७६	२३५	१	दोख	दोस
७९	२७२	२	वदली	कदली
७९	२७३	२	वितार	विलाय
८०	२७८	१	गन त	गुन तें
८०	२९०	२	खेत	खेल
८२	३१३	१	वूडो	वूझे
८६	३५८	२	वैसे	कैसे
८६	३६४	२	दीपक कैं	दीपक तैं
८७	३८१	२	लियौ	दियौ
८८	३८२	२	चहा	चूहा

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	३८३	१	घन	घन
८८	३६४	२	घर जायि	घर आयि
८६	३६६	२	निकष	निकस
६०	४१०	१	वुबुघ	कुबुघ
६३	४५१	१	छोडिये	छेडिये
६३	४५६	१	कारन	कारज
६३	४५७	२	लोय	तोय
६४	४६६	२	बर	घर
६५	४८२	२	जलैं	चलैं
१००	५३४	२	छलना	छतना
१००	५४४	१	चतर	चतुर
१०२	५६०	२	बिचार	किबार
१०३	५७८	पाठातर	जिरमूल	निरमूल
१०४	५६५	२	धप	धूप
१०५	६००	१	तालस	तलास
— वही —		२	आघ	आँधी
१०७	६२५	१	समे	सौ
१०७	६३३	२	माटै मोटी	मोटै मोटी
१०७	६३४	१	चिरंचीव	चिरंजीव
१०६	६५४	१	बिहिन	वहनि
११०	६७३	२	जमदानि	जमदगनि
११३	७११	१	अकूर	अँकूर
११५	१	१	सडा डड प्रचंड	सुंडा डंड प्रचंडं
११६	५	२	षेडेवे	षेडेचे
११६	१२	—	सलाखा	सलखा
११६	३५	८	जाइक	जाइक —?—
१२०	३७	३	देव्वाँ	देष्वाँ
— वही —		५	खेसि वसमारत्ती	रोसि चसमारत्ती
— वही —		६	धमकै	धमक्कै
१२०	३८	२	विचलायो	चिचलायो
१२०	३६	२	निदाह	निवाह
१२२	४५	२	पातिसाही	पातिसाह
१२२	४८	१	वैसाख ही	वैसाख ही की*
१२३	५२	१	जैसी	जैसौ

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२३	५२	७	कविता	कवि ता
१२३	५३	२	वाह	चाह
१२३	५४	२	पाठ पाठ	पाठ पठि
१२३	५७	२	तान	वितान
१२४	६०	२	सदर सथान	सुदर सथाँन
१२४	६६	२	भेदात	भेदत
१२४	६६	२	लाँगत	लागँत
१२५	८२	२	प्रत्ताप	प्रताप
१२५	८३	१	विसेसि	विसेपि
१२६	८४	१	मितान । विधि	वितान । विध विध
१२६	८६	१	किम	किय
१२६	९०	२	हाथर	हाथ
१२६	९०	८	जडावरसो	जडाव सो
— वही			किन्या	किया
१२८	९७	१	विवच्छन	विचच्छन
१२८	९९	३	अध घरम	अध घरम
१२८	१००	२	सपति घरी	संपत्ति घरी
१२८	१०१	२	भगतिरमय	भगति मय
१२९	१०४	१	वय उकति सरलममति	वच उकति सरल मति
१३१	११८	२	विसेसि	विसेखि
१३१	११९	२	छिपमहि	छिनमहि
१३१	१२४	१	परजात यह रात	परसात यह तरु
			थहराततरु पात पैं	पात पैं
१३१	१२४	४	सकल	सकत
१३२	१२७	८	मर	जर
१३५	१२९	२	कन	मन
१३५	१३७	२	वलक	वलक
१३६	१३९	२	गत्तर	उत्तर
१३९	१४३	१	पलक	वलक
१३७	१४७	२	पवराएँ	पघराए
१३९	१५१	७	रीति पार्गा	रीति पागे
१४०	१५५	६	भुलि	मूलि
१४१	१६०	वचनिका	निरतर	निरंतर याही*
१४२	१६२	वचनिका	दाजा रूपसिंघ	राजा रूपसिंघ

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१६२	२	दीति	रीति
१४३	१६६	३	हाँ हुँसियार।	हाँ हुँसियार हा हुासयार*
१४४	१६६	२	नजर	नजर
१४४	१७०	७	भाटी सब ले	भाटी सबल
१४४	१७२	१	पाइणी	पोइणी
१४८	१६१	५	खन	धन
१४६	१६३	१	षातू	षात
— वही —		५	रात	पाठातर—गात
१४६	१६५	१	फली	फैली
१५०	१६८	४	वियै	पाठातर—हियै
१५२	२१०	३	विस्ता	विरत्ता
१५३	२१४	१	आभिष	आमिप
१५४	२१६	१	जेठ	जेठ सुदि*
१५४	२२१	१	मंडल	मडप
१५६	२२६	५	तोल ज़ाकौ	तोल ताकौ
१५६	वचनिका	६	कणाट	कर्णाट
१५८	वचनिका	११	हकीकत पाइश	हकीकत पाई ?
— वही —		१३	त्यावै	ल्यावै
१६०	२३६	१	चल्ल	मल्ल
१६०	२४४	४	किले	कीले
१६१	२४७	२	जंग	पाठातर—चग
१६१	वचनिका अन्तिम पक्ति		तिस ही 'जिसहि	जिस ही…तिस हि
१६३	वचनिका	६	धर	धरै
१६३	२५८	३	त्रिकयै	क्किये
१६३	२५८	६	विवहार हे	विवहार है
१६५	२६६	३	ऐक	एक
१६६	२७८	१	वार	पार
१६६	२७६	२	गहविक…झमविक	गहक्कि …झमक्कि
१६६	२८०	२	तोषपखाँनै	तोप खाँनै
१६७	२८६	३	सरम्भर	सरम्भर
१६७	२८७	२	लायै	लोयै
१६८	२६१	१	छिल थर	छिल थल
१६६	३०४	१	खिलि	खिति
१७०	३१६	१	भूमइयौ	भूझ्यौ

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७०	३२१	३	भुज पर्‌यौ	भुज घर्‌यौ
१७०	वच०	३	भुकाँम ' दावा	मुकाँम…धावा
१७१	३२३	२	घर	धर
१७१	३२६	३	क्या तरता	क्या करता
१७२	३३०	५	चार्‌याँ	चार्‌यौं
१७३	३३५	—	भरयंभ	भरथंभ
१७४	३५६	१	काँघिल्य	काँघिल्ल
१७४	३५७	१	उदाव्रत	उदाबत
१७५	३६३	२	पुरजेषुर	घूवजे षुर
१७५	३६४	२	मूर	सूर
१७५	३६७	२	चित्त	चित्त
१७८	३८३	७	जव के	धू के
१७८	३८७	१	तरत	तरल
१७९	३८९	१	थेय	थेट
१८०	४०२	१	उचित	उदित
१८१	४०६	१	ताल	लाल
१८२	४२१	१	लनत	खनत
— वही —		५	सन	मन
१८३	४२३	४	निरमल	रिनमल
१८४	४२८	२	घ्वजै	धूवजै
१८४ वही	—	१	सहिर	रुहिर
१८५	४३६	१	कैसे कथन	ऐसे कथन
१८५	४३८	३	ठाकुरं सी	ठाकुरसी
१८५	४३८	४	सूरवीरो	सूरवीरौं
१८६	४४९	२	रत	रन
१८७	४६०	१	सुहाय	सुहाथ
१८८	४६९	३	विसेषि	विसेषि विसेषि*
१८८	४७२	२	परचाका मुकति	परचारिका मुकति
१८९	४७३	अन्तिम	उमरावौं ने यह	उमरावौं यह
१८९	४७८	२	वहोदं…विहादं	वहोरं…विहारं
१९०	४७९	२	वहै	रहै
१९०	४८०	४	धवा…ध्रुवे	धरा' "ध्रुवे
१९०	४८१	२	वीव	वीर
१९०	४८३	३	पहै	परं

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९०	४८४	१	हंग	रंग
१९१	४८८	२	जोह	छोह
— वही	—	३	लाल रत	लाल रत्त
१९२	५००	२	भजाभच्च	भचाभच्च
१९३	५१२	१	दहसल	दहसत
१९२	५०१	२	गाढ गाढ	गाढ गाढै
१९३	५०७	२	थभै सूर सूरत	थभे सूर सूरत
१९६	५२३	२	वस	वल
१९६	५२४	३	घजन	घसन
१९६	५२६	२	रत	रन
१९७	५२९	१	कुभक्रंन	कुंभक्रंन
१९७	५३९	१	तर्‌यौ	लर्‌यौ
१९७	५४०	१	रहे रव	रहे रन
१९९	५५४	५	तराल	तरल
१९९	५५५	१	गिरदं	गिरंद
२००	५५९	५	राजलाल	राजलाज
२००	५५९	७	रंज	रंच
२०१	५६४	४	भट	भट घट*
२०२	५६७	२	वह	वहा
२०२	५७५	१	पंग	रंग
२०३	५८१	१	सतपै	सतरै
२०५	११	१	चपपटी	चटपटी
२०९	४९	२	जव	अव
२१०	५८	२	जय···मंजय	भय···भजय
२१०	६१	२	सार	हार
२११	६३	१	हले	हते
२१६	१२७	२	अज-जतन	अ-जतन
२१९	१६८	२	कदत	करत
२२०	१७५	१	दाषे	राषे
२२०	१७९	२	छटत	छूटत
२२०	१८६	१	तरसत	तरसन
२२३	२१८	१	जभी	जमी
२२३	२२३	२	नदी नदी नदी	नदी नदी
२२४	२३३	१	आवप	आवन

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२५	२४४	२	पैंलत	पेलत
२२५	२४६	१	कह	कइ
२२६	२५६	२	झरन	झरत
२२६	२६२	२	रचनीपति	रजनीपति
२२७	२७०	२	मनमय	मनमथ
२२७	२७३	१	सुरगायक	सुरनायक
२३०	३०८	१	अकू सारि	अकूँपारि
२३०	३१२	१	वास	वाम
२३३	३४६	२	जगत	लगत
२३७	४०५	१	चितवन	चितवत
२४३	४७६	२	गनरि	गारि
२४७	५२६	१	निरविद्या	निरविद्या विद्या*
२४६	५५७	१	पगार	पराग
२५०	५६४	१	भज	भजै
२५०	५६७	१	सरवती	रसवती
२५२	५६२	१	मत मतग	मत्त मतग
२५२	५६४	२	हमकि	हमहि
२५३	६११	२	हमत	हसत
२५४	६२५	—	अतलापिका	अंतर्लापिका
२५८	६७६	२	हिव	हिय
२५८	६७८	२	अपरन	अरपन
२६०	६६६	१	जीनन	जीवन
२६३	७	२	हन्या	हन्यो
२६४	२०	८	राजदान	राजवान
२६४	२१	५	हरकि	हरहि
२६६	७०	४	चिल	चित्त
२७०	८०	३	मुवकिय	मुक्किय
२७०	८१	४	मूर	सूर
२७२	६२	२	घर घर आस	घर आस
२७५	१२४	५	सगार्गै	सगर्गै
२७६	१३१	१	लरन	लरत
२७६	१३६	१	आथ	आय
२७७	१४२	२	नोवल	नोवत
२७७	१४४	२	सार	साह

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७७	१५१	२	कपै	करै
२७८	१५२	२	कपै	करै
२७८	१५४	४	धपै	धरै
२७८	१५५	४	ऊपपै	ऊपरै
२७९	१६२	२	काल	लाल
२८०	१६९	१	वीरत	बीरत्त
२८१	१७६	२	वदहि	वर्दहि
२८१	१७७	२	विघो	किधो
२८१	१७९	२	वायै	बायै
२८२	१८६	३	मत	मत्त
२८२	१८७	१	तण्यो	लण्यो
२८६	२१३	१	महावत	महावल
२८६	२१६	२	विरच्यो	बिरच्च्यो
२८८	२२६	१	वीरता	वीरत
२८८	२२७	१	रावत सत्यं	रावत्त सत्थं
२८९	२३१	३	रावत	रावत्त
२९०	२६०	२	तणनि	तणी
२९२	२६८	१	सुनत	सुतन
२९२	२७०	२	कहै	करै
वही	२७२	१	कहै	करै
२९३	२८२	२	माहै	मारै
२९३	२८३	१	वद	वर
२९३	२८४	१	पिदाग	पिराग
२९३	२८४	२	कहै	करै
२९३	२८७	२	भादथ	भारथ
२९३	२८८	२	जैंठ	जठै
२९४	२९०	२	सगावत	साँगावत
२९४	३००	२	ती	की
२९५	३०६	२	किते	कित्ते
२९६	३०९	२, ४	छ्रट, रत	छूट, रत्त
२९६	३११	३	भृत	भूत
२९८	३२९	३	उम्भारिय	उम्भारिय
९९	३२१	५	थल	थट
९९	३३१	४	उम्भार	उम्भार

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९९	३३१	अन्तिम	आजम	माजम
२९९	३३४	१	सिधार्‌यो	सिधार्‌यो
— वही	—	२	कमाँन	कम्माँन
— वही	—	अन्तिम	जाह	साह
२९९	३३५	५	मुँह	मु ड
३००	३३७	२	जर्‌यो	सर्‌यो
३०१	३४७	१	वजाग	बजाय
३०१	३४८	१	आजम	माजम
३०१	३४९	१	राजढ	राजड
३०१	३५०	२	परजि	परसि
३०१	३५१	१	हाघ	हाथ
३०१	३५४	२	पवेंगा	पवेंगा
३०२	३५४	१	केई कपडे	केईक पडे
३०४	२	३	लरघरि	लरथरि
३०७	१	१	नीर घीर	नीर घरि
११३	१३	—	दशज	वंशज
३१४	२०	२	अरुत	अरुन
३१६	२७	५	नवनिद्धि	नवनिधि
३२०	४०	५	छहि	कहि
३२२	४६	५	हरि-हरि	हरि-हर
३२३	४८	६	षडमुड	षड्मुख
३२४	५१	१	सोव	सोई
३२४	५३	३	जनन	जनम
३२५	५६	२	सखकारी	सुखकारी
३२५	५७	१	स्लामी	स्वामी
३२६	६०	३	कोक	लोक
३२९	७०	७	सखकारी	सुखकारी
३३१	७६	८	हिंडारैं	हिंडोरैं
३३३	८५	१	ढोठ	ढीठ
३३४	८६	२	अवेली	अकेली
३३४	८८	४	उक्सायें	उकसायें
३३८	१०५	४	तैसो	जैसो
३३९	१०८	१	घरि हैं	घरि कैं
३४४	१२४	४	निरसत	निसरत

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४४	१२५	५	मुक्तनि	मुकतनि
३४७	१३५	२	दारू	दारु
३४७	१३६	३	थंमि थंमि	थंभि थंभि
३४९	१४४	१	वलत	बखत
— वही	—	३	जजिया	जजिया की*
३५१	१४७	१	ओवै	आवै
३५१	१४८	३	कचील	कुचील
३५२	१४८	१	सिदू ंर	सिंदूर
— वही	—	२	चारी	नारी

राग है न रंग है न कहूँ कछु ढंग है
हित चित भग तग बखत सिहाही को।
राजा जसबत जू को आयु बल खूंटत ही
खूट गयो खूबी को खजानो पातिसाही को ॥१४४॥
(वशज)

अदानी दाता

सोबत हैं अब ही तो तेल मैं अनात अब
भोजन करत अब फिरत बताईये।
अदर हैं अब कछु काम है जू खेलत हैं
अब समैं नाँहि जाहु साँझ फिरि आईयै॥
वृंद कवि ऐसी बानि द्वारि दरबान काढ़े
बेर बेर कबिन कौं कहि बहराईये।
घटि गयो दान अभिमान बढ्यो कलिं माँहि
का पे आई गाइ गुन कैसे के रिझाईये ॥१४५॥
(प्रतिष्ठान)

सबन के मन कुच गिरि घाटी बीचि घेरि
रोमराजी बन कटि तट सिंघ हेत हैं।
अधर कपोल हासी बेसरि अलक ए तो
चौंकीदारनें कहौं कहौं न जान देत है॥
तान की चपेट नैन बानत सुमा करि
वृंद कहि हेम नग भूषन समेत है।
कबिन कौं देती बेर साहन के सोच परे
मालजादी[1] ऐसे मुहुं मारि छीन लेत है ॥१४६॥
(प्रतिष्ठान)

पाठान्तर—१ रामजनी।

अकृतज्ञ स्वामी

वे तो रोजगारी रोजगार के उमेदबार
तुम रोजगार देत मैं नेक न डरत हो।
षिजमति चाहै षिजमति बीच आवै तुम
षिजमति करि करि उलटि परत [हो।
राषिय तमाम सिरपाब लीयो चाहै तुम
करिय तमाम सिर पाब ही धरत हो।
वृंद कहै चाकर की चाकरी बनत कैसे
साहिब कहा ऐसी साहिबी करत हो ॥१४७॥[1]
(प्रतिष्ठान)

पूर्व देश के लोगो का वर्णन

तेल मैल मिलत नितंब सिर एकै चोल
काक से कुबोल अति कुटिल कुरंध की।
षोले बाँह कुथल कुरूप औ कचील गात
लंबे लटकात कुच कंचुकी न बंध की ॥
देषीनें सुहावे कान सुनै तै गलानि आवै
दई निरै गति दई पति मति अंध की।

ान्तर—१.
रहै रोजगारी रोजगार के उमेदवार
वहै रोजगारी देत नेक न डरत हैं।
पिजमत चाहै ताकै पिजमत वीच आवै
वहैं पिजमतकर उलट परत है ॥
राखइ तमाम सिरपाव लियो चाहैं वह
करइ तमाम मिर पाव ही घरत हैं।
वृंद कहै चाकर की चाकरी वनत कैसे
साहिव कहाय ऐसी सायवी करत है ॥

कारी कारी सुकरी सिदूंर तैं सँवारी ऐसी
पूरब की चारी दारीदरी दुरगध की ॥१४८॥
(प्रतिष्ठान)

पाहर ठाहर बीचि बसै जहाँ 'गाउ दु' छप्पर की रजधानी ।
लंग धरंग लँगूर से डोलत नोलत हैं मुख लोक कुबानी ॥
साहिब होत सहाइ तहाँ कवि वृंद त समेत की बात बखानी ।
राह चले तब भार लगै फुनि भार लगै पतभार के पानी ॥१४९॥
(प्रतिष्ठान)

◉

नामानुक्रमणिका*

(अंक छंद-संख्या के सूचक हैं)

---

* वचनिका २६८-२७४, ४३२-४३८, ५१९-५५०, तथा नत्य रूपक २३६-३०२ में योद्धाओं के नामों की लम्बी सूचियाँ मिलती हैं, जिन्हें अनिश्चय के कारण प्रस्तुत अनुक्रमणिका में स्थान नहीं दिया गया है।

शुद्धि-पत्र

(ताराकित शब्द मूल पाठ मे छूट गये है । अत. इन्हे जोडकर पढना चाहिए

पृष्ठ	छंद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८	२५	४	ध्रूलि	भूलि
३९	२९	४	उलही	उलही उलही*
४०	३२	३	मीठि मीठि	मीठी मीठी
— वही	—	५	जस	जस लै कै*
४०	३३	२	अनअ	अनंत
४२	४६	२	निखारियै	निरवारियै
४३	५२	२	वैठिन	वैठि
४३	५४	१	व्यौरि	व्यौरि व्यौरि*
४४	५६	५	अलन	अतन—?
४४	५९	२	नक-वेसिर	नक-वेसरि
४५	६१	५	प्रिय	पिय
४५	६५	१	अन	अंन
४६	६९	६	काही	ताही
४७	७४	१	सोई	सोई चलियै*
४८	७७	२	हैं	है
— वही	—		सारै	सार
४९	८२	३	हारे	हार धरे*
५२	५	३	रति	रति रंग*
५२	६	५	कहत	कहत वृंद*
५२	८	१	रस	रस जाति*
५४	१५	१	रग	रंग रस*
५४	१५	३	निरिप—	निरपि उन्नत ?